Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस्था के सोपान

यशपाल शर्मा

am Digital Pres[illegible] Foundation

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4105
Dated 20.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस्था के सोपान

(यात्रा-संस्मरण)

'गर फिरदौस बर-रूए-जमीं अस्त
हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त।'

—फिरदौस

यानी धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो बस यहीं है,
यहीं है, यहीं है.........
जब-जब कश्मीर का जिक्र आता है
तब-तब कश्मीर के बारे में ये पंक्तियां याद आती हैं।

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस्था के सोपान

यशपाल शर्मा

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

☎ 0181-2214196

दीपक पब्लिशर्ज़
माई हीरां गेट, जालंधर – 144 008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Edition : 2018

Astha Ke Sopan
(Travel-Memries)
By
Yash Pal Sharma

ISBN 978-93-85646-54-6

Published by :
DEEPAK PUBLISHERS
Mai Hiran Gate,
Jalandhar-144 008.
Email : deepakpublisher@yahoo.com

आस्था के सोपान
(*यात्रा-संस्मरण*)
यशपाल शर्मा

प्रकाशक
दीपक पब्लिशर्ज़
माई हीरां गेट, जालंधर - 144 008
फोन : 2214196

प्रिंटर
बाला जी आफसेट
दिल्ली

मूल्य
595 रुपये

This book is sold subject to the condition that it shall bot , by wat of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's and author's prior written consent in any form of binding or cover other then in which it is published and without a similar condition including this condition beirng imposed on the subsequent purchaser and without limiting the right under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo copying, recording or otherwise), without the porior written permission of both the copyright owner and the above mentioned publisher and author of this book.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण

हमारी फुलवारी के महकते फूलों– सामन्यु शर्मा, आयुष्का शर्मा, अवनि शर्मा (यू.के.) अनेय शर्मा (यू. के.)

एवं

आने वाले नए मेहमानों को जिनकी भोलीभाली सूरत, मासूम हंसी और किलकारियां मेरा मनोविनोद और हर्ष का आधार बनती हैं।

सहयोग

दिशा साहित्य मंच, सुजानपुर, पठानकोट (पंजाब)

प्रीत साहित्य सदन, लुधियाना (पंजाब)

साहित्य संगम ट्राइसिटी जीरकपुर, चंडीगढ़ (पंजाब)

परामर्श एवं पथ प्रदर्शन

डॉ. दर्शन कुमार त्रिपाठी, गोपाल शर्मा फिरोज़पुरी, मनोज धीमान, मनोज प्रीत, डॉ. सुभाष रस्तोगी, डॉ. केवल कृष्ण शर्मा और राकेश अग्रवाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशेष आभार

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह 'बेदी' (शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार)

प्रो. फूलचन्द 'मानव' (शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार)

वीरेन्द्र मनोहर कौल

स्मृति में

स्वर्गीय श्रीमती पुष्पलता शर्मा को जो
मेरे साहित्य रचना की प्रेरणा स्त्रोत है।

और

देश के वीर सैनिकों, सुरक्षा बलों को
जो सीमाओं और आन्तरिक सुरक्षा व शांति को
बनाएं रखने में पूर्णतयः सजग तथा समर्पित रहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आस्था के सोपान की आस्था"

यशपाल शर्मा हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार हैं। पिछले दो दशकों से लगातार साहित्य साधना में जुटे हुए हैं। पंजाब के हिन्दी साहित्य को उन्होंने उपन्यास, कहानी लेखन एवं कविता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कृतियां प्रदान की हैं। इसी श्रृंखला में उनकी यात्रा-संस्मरण वाली पुस्तक 'आस्था के सोपान' अस्तित्व में आई है। हिन्दी साहित्य में यात्रा एवं संस्मरण की विधा आज से तीन दशक पूर्व लोकप्रिय भी रही है और सार्थक भी। डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय यात्रा व संस्मरण साहित्य का गंभीरता पूर्वक नोटिस लिया था। लेकिन इन दिनों यह विधा बहुत ही क्षीण एवं उपेक्षित हो गई है। पिछले वर्षों में मेरे देखने में यात्रा-वृतांत की विधियां गायब ही हो गई हैं। यशपाल शर्मा की प्रस्तुत पुस्तक इस दृष्टि से विलक्षण है कि इस कृति के केन्द्र में कश्मीर यात्रा की महत्त्वपूर्ण स्मृतियां कलमबद्ध हुई हैं। कोई समय था जब भी कोई लेखक विदेश की धरती पर पांव रखता था, वह स्वदेश लौटते ही अपनी यात्रा के अनुभव पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से देशवासियों के साथ सांझे करता था। धर्मयुग, हिन्दुस्तान, सारिका इत्यादि राष्ट्रीय पत्रिकाओं में लगभग प्रत्येक अंक में यात्रा-वृतांत छपते थे। पाठक रूचि से पढ़ते थे, घर बैठे ही देश-विदेश को जानने की जिज्ञासा शांत हो जाती थी। यात्रा-वृतांत ताज़गी से भरे ज्ञान से ओतप्रोत नई-नई जानकारी पाठकों तक पहुंचा देते थे। ज्ञान के स्त्रोत सीमित होते थे। यात्रा-वृतांत ज्ञान के कोषों की भूमिका निभाते थे।

यशपाल शर्मा की प्रस्तुत कृति में यह सारी बातें निहित हैं। इन वृतांतों में विदेशी पृष्ठभूमि के साथ काश्मीर की आंचलिक धारा का भी गहन अध्ययन प्रस्तुत हुआ है। काश्मीर भले ही भारत की दुखती रग है लेकिन इसकी सांस्कृतिक छटा पाठकों के मन को मोह लेती है। काश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास को यह पुस्तक कई दृष्टिकोणों से रेखांकित करती है। इतिहास, कला, संस्कृति का वर्चस्व भारतीय संस्कृति को गुणात्मक गरिमा से सुसज्जित करती है। विदेशियों ने इसे धरती का स्वर्ग कहा है। ब्रिटिश सामराज के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
समय में पूरा इंग्लैंड इस धरती की ओर भागता था। बागों के सौन्दर्य को चार चांद इंगलैंड के लोगों ने ही लगाए थे। महारानी विक्टोरिया शाही चश्मे का जल पीती थी। यश पाल खुद इंगलैंड की धरती का भ्रमण कर आए हैं। लोगों के रंग, नयन नक्श काश्मीरवासियों से मिलते हैं, यह सोचने की बात है।

काश्मीर का सौन्दर्य भारतीय मनीषियों के लिए अध्ययन और चिंतन का विषय रहा है। उर्दू के प्रसिद्ध शायर इकवाल के पूर्वज भी काश्मीर के रहने वाले थे। भारतीय काव्य शास्त्र का सृजन भी काश्मीरी पंडितों ने किया था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने वाणभट्ट की आत्मकथा की कृति में काश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास का जो रोमांचक वर्णन किया है, उसकी एक प्रतिपूर्ति यह कृति भी करती है। भारत की तस्वीर काश्मीर के बिना अधूरी है। यह कृति 'भारत जानो' की संज्ञा को चरितार्थ करती है। हमें विदेशी की ललक रहती है। लेकिन हम अपने देश की प्रकृति और संस्कृति से अनभिज्ञ रहते है। यशपाल शर्मा की यह कृति राष्ट्रीय संवेदना से ओतप्रोत है, बले ही इनकी आने वाली कृति इंग्लैंड की यादों से ओतप्रोत होगी। लेकिन यह कृति भारत की संस्कृति के माध्यम से दर्पणवत् प्रस्तुत करने में समर्थ है।

यशपाल शर्मा की पृष्ठभूमि इनका बचपन और जवानी काश्मीर भूमि से लगे क्षेत्र से जुड़ी रही है। जम्मू और उसके आसपास के क्षेत्रों को बड़ी गहराई से देखा है। आज भी उनकी स्मृतियों में दरियाओं के पानी लरजते हैं। वह अकसर अपनी बातचीत के दौरान पहाड़ों, जलस्त्रोतों तथा उन इलाकों की वनस्पति के किस्से सहज ही सुना देते हैं। इस कृति में उनकी मानसिकता में कई किस्से पाठकों की संवेदना को झकझोरेंगे। यशपाल द्वारा इस कृति में जोड़े गए ब्यौरे, सूचनाएं, तथ्य और लोकमत कहीं भी अरुचिकर नहीं है। ऐसे स्थलों में लेखक ने अपने अनुभवों द्वारा दिलचस्प बना दिया है। आज विश्व अगर भारत के किसी कोने को जानता है तो यह काश्मीर है।

पंजाबी भाषा के लेखकों ने काश्मीर की सौन्दर्यगाथा गाई है। भाई वीरसिंह की अनेक कविताएं काश्मीर के सौन्दर्य से जुड़ी हुई है। पंजाबी के नाटककार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुरदआल सिंह फुल्ल ने काश्मीर यात्रा का वृतांत 'धरती का स्वर्ग काश्मीर' लिखकर काश्मीर के सौन्दर्य को पंजाबी पाठकों के सामने रखा है। यशपाल शर्मा भी पंजाबी है। हिन्दी के लेखक है। और वह पंजाबी पाठकों के सामने हिन्दी में काश्मीर की यात्रा का वृतांत पेश कर रहे है। इस इतिहासिक प्रसंग में मैं यशपाल शर्मा को बधाई देना चाहता हूं। यशपाल शर्मा ने सरल, स्पष्ट और सुबोध भाषा म़ें इस कृति का सृजन किया है। भाषा में गतिशीलता है। जानकारी तथ्यात्मक है। पूरी पुस्तक में अलग-अलग विचारों को अलग-अलग अध्यायों द्वारा कालक्रम की दृष्टि से इस प्रकार बांधा है कि पाठक लेखक का अनुसरण करते हुए अपने गंतव्य तक पहुंच जाता है। इस कृति के पाठ के दौरान मुझे बराबर महसूस होता रहा कि सूचना के युग में ऐसी कृतियों की बहुत आवश्यकता है। आज भी यात्रा और संस्मरण पाठकों के ज्ञान में बृद्धि करते हैं। रोचक शैली में लिखी गई किताबें आने वाली पीढ़ी को अपनी विरासत से जोड़ जाती हैं। मेरा विश्वास है कि यशपाल शर्मा की यह कृति हिन्दी साहित्य के इस अन्तराल को नये संदर्भ देगी जिसकी चर्चा हिन्दी साहित्य के इतिहासों में उल्लेखनीय मानी जाती रहेगी।

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह 'बेदी'

कुलाधिपति

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका के बहाने..........

अपने मन की बात

जीवन एक निरन्तर बहती सांसों की जलधारा के सम्मान है। मानव जीवन–पथ पर अनेकानेक संघर्षों, समस्याओं, कड़वाहटों, सफलताओं, नाकामयावियों और बाधाओं से जूझ कर जीवन के ध्येय को अर्जित करने वाला यात्री है। प्राणी की यह सांसों के अंतिम छोर तक अनवरत जारी रहती है। नर–नारी मन स्वभाववश जिज्ञासू है। वह अपने समीप, देश–विदेश में सुदूर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक ज्ञान–विज्ञान के बारे में जानकारी हासिल करना चाहता है। पाठ्य–पुस्तकों और किसी दूसरे की जुबान से सुनने के अलावा यायावरी से ही किसी स्थान व भू–भाग विशेष के सम्बन्ध में उचित जानकारी मिल सकती है।

मुझे अपने ही देश में नेक राज्यों में तीर्थ यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिसमें प्रमुख–बद्रीनाथ, केदारनाथ, हेमकुंड साहिब (उत्तराखंड), सोमनाथ मंदिर, द्वारिकापुरी (गुजरात), माता ज्वाला दी, माता ब्रजेश्वरी, चिंतपूर्णी, मक्लोडगंज (हिमाचल प्रदेश), मनसा देवी (हरियाणा), हरिद्वार, ऋषिकेश (उत्तर प्रदेश), वैष्णों देवी (जम्मू–कश्मीर) और प्रजापति ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, पांडव भवन आबू पर्वत, दिलबाडा मंदिर (राजस्थान) प्रमुख हैं।

‘ श्री अमरनाथ यात्रा का प्रभाव मुझ पर अत्याधिक हुआ है। इस यात्रा के अनुभवों ने मेरे साहित्यिक–मन को बड़ा आलोकित किया था। रोमांचित किया था। अतीव पीड़ित व हर्षित भी हुआ। इस पावन यात्रा के दौरान आई मुश्किलों, भौगोलिक दृष्यों, इस राज्य की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विषयों के सम्बन्ध में सोचता तो गहन सोच–विचार में उलझ जाता। इंसान स्वभाव से इहलोक की बजाय परलोक सुधार को अधिक महत्त्व देता है। वर्तमान समय के शुभ–अशुभ कर्म भविष्य की आधारशिला बनते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज का कठिन श्रम, लग्न और ध्येय-सुखद स्वर्णिम भविष्य की नींव है। प्राणी के तप, दान, तपस्या, त्याग, निष्काम सेवा पर हमारे परलोक के भव्य-भवन का निर्माण निर्धारित होना है।

भारत वर्ष की माटी का कण-कण धर्मभावना, सत्य, परमार्थ, करुणा,सेवा, संतोष, अहिंसा, त्याग और ऋषियों, मुनियों, पैगम्बरों सन्तों, भक्तों तथा ज्ञानियों के पावन उपदेशों तथा सन्देशों से परिपूर्ण है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति विश्व से भिन्न और आलौकिक है। इसलिए हजारों वर्षों से हमारी सभ्यता अजर-अमर व दिव्यता लिए हुए है। हमारा प्राचीन इतिहास गरिमामय व महिमा मंडित है, जिससे संसार के दूसरे देशों के नर-नारी अभिभूत हुए बिना नहीं रहते। वह इसी धरती पर रह कर भारत माता का सदैव को हो जाना चाहते हैं। भारत माता की चरण-रज का यही तो कमाल का जादू है। भारत वर्ष की पावन माटी में शांति, प्रेम, करुणा, अहिंसा, धर्मभावना, अपनत्व, त्याग, सहयोग, समानता, निष्काम सेवा, विश्व बंधुत्व और स्वतन्त्रता के गुण विशेष हैं। युग-युगान्तरों से चला आता हमारा प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है।

मेरा पैतृक गांव भारत-पाक सीमा के समीप रावी नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। जम्मू-कश्मीर की उत्तरी सीमा पंजाब प्रांत के साथ सटी हुई है। इस प्रांत के कठुआ-जम्मू जिलों में हमारी रिश्तेदारियां थीं। एक-दूसरे सम्बन्धी के पास खुशी-ग़मी में आना-जाना लगा रहता था। मैं अनेक बार पिता श्री के साथ इन सम्बन्धियों के घरों में गया हूं। मुझे स्मरण है- ज्यों ही हम पंजाब प्रांत की सीमा लांघ कर जम्मू-कश्मीर राज्य की सीमा में सौ-डेढ़ सौ कदम आगे बढ़ते, सड़क के किनारे पूर्व की तरफ एक बूढ़े वट वृक्ष के नीचे तम्बू में कुछ सिपाही और कर्मचारी-अधिकारी बैठे होते थे। हमारी बड़ी गहनता से तलाशी ली जाती। पूछताछ होती। रजिस्टर पर दोनों तरफ के (आने व जाने वाले गांव, स्थान) का पूरा पता लिख कर अंगूठा लगवाया जाता था। फिर हमें जाने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज्ञा मिलती थी। यह सारा सिलसिला–परमिट सिस्टम का था। उस समय मेरे बालमन में अजीबोगरीब किस्म के जिज्ञासा पूर्ण प्रश्न उठते थे।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की देशभक्ति, न्यायप्रियता, निर्भीकता, त्याग और शहीदी से जम्मू–कश्मीर में परमिट सिस्टम समाप्त हुआ था। परन्तु दुःख की बात यह है कि पंडित नेहरू जी की अंधी–बहरी कश्मीर नीति उनके देहांत के पश्चात् भी कांग्रेस सरकारों ने जारी रखी। जम्मू–कश्मीर में धारा 370 को बनाए रख कर देश व जम्मू प्रांत से न्याय नहीं किया है। जम्मू–कश्मीर की 20 प्रतिशत आबादी जो कश्मीर घाटी में आबाद है, इनमें से मुटठी भर लोगों ने अपने घर धन से भरे हैं। भोले, अनपढ़, निर्धन लोगों को बुद्धू बना कर लीडरी चमकाई है। अनुच्छेद 370 की आड़ में अंधी लूट मचाई है। मनमानियां की हैं। लोगों को गुमराह किया है। साड़फूंक, पत्थरबाजी, नारेबाजी करवाई है। हुर्रियत टोले की रोजी रोटी की दुकानदारी अलगाववाद, पाकिस्तान झंडे फहरा कर तथा भारत विरुद्ध जहर उगलकर चल निकली है।

मैंने 'श्री अमरनाथ' यात्रा के अर्जित किए अनुभवों को अपने शब्दों की माला में पिरोने का यत्न किया है। जम्मू–कश्मीर का प्राचीन इतिहास हमें नीलमल पुराण व इतिहासकर कल्हण से प्राप्त होता है। कश्मीर की धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत बहुत विशाल और गरिमामय रही है। परन्तु इस्लामिक सूफी सन्तों, औरंगजेब जैसे कट्टर मुस्लिम शासकों ने साम–दाम–दंड–भेद की नीति से बहुत से हिन्दू आबादी वाले भू–भाग से जनता को मुसलमान बनाया था। ऋषि कश्यप के समय से चली आती धार्मिक सहिष्णुता को बौद्ध मत की करुणा को इस्लामी शासकों ने लोगों की अतीव कोमल भावनाओं, आस्था, विश्वास , भाईचारा, सहयोग को तरह–नहस किया था। इन शासकों, उनके कट्टर समर्थकों ने लोगों को धर्मपरिवर्तन के बदले लोभ–लालच, मुंगेरी लाल के रंगीन सपने दिखा कर लोगों के परस्पर के प्रेम, सहयोग और भाईचारे को गहरी चोट पहुंचाई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज समय और परिस्थितियों की मांग है क जम्मू कश्मीर के सम्पूर्ण विकास व देश की सम्प्रभुता और अखंडता को कायम रखने के लिए संविधान के अस्थायी अनुच्छेद 370 को समाप्त किया जाए। हुर्रियत टोले, अलगाववाद, आतंकवाद पर नुकेल कसी जाए। भारत के समस्त राष्ट्रीय दल व क्षेत्रीय दल भारत वर्ष की एकता, अखंडता, शांति, विकास और धार्मिक सौहार्द के लिए मतभेद अपने भुला कर काम करें।

मैंने 'श्री अमरनाथ' यात्रा में कदम-कदम चलते हुए जैसे अनुभव किया, सुना और देखा-एक निर्भीक, निष्पक्ष और प्रबुद्ध साहित्यकार के रूप में मैंने इस संस्मरण को कलमबद्ध किया है। धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और भौगोलिक परिदृष्य जैसे-जैसे मेरी आंखों के समक्ष और मानस पट पर आते गए-मैंने उन्हें उसी रूप में लिपिबद्ध किया है। कल्हण, शैवमत, अभिनवगुप्त, महायोगिनी लल्लेश्वरी, हब्बा खातून, नुंद ऋषि, शंकराचार्य मन्दिर, हजरत बल, खीर भवानी, वितस्ता, जवाहर टॅनल के इतिहास का गहन अध्ययन करके इस पुस्तक में उल्लेख किया है। डलझील, निशात बाग, शालामार बाग, चश्माशाही की सुन्दरता व महत्त्व का वर्णन करना मेरे प्रलोभन का विषय रहा है।

'श्री अमरनाथ' यात्रा के नौ लघु-दल-सदस्यों के परस्पर का वार्तालाप, चहुलबाजी, हंसी मज़ाक, अपने साथियों संग व्यतीत किए लम्हे जीवन के हसीन क्षण बन गए हैं। सुख-दुख के समय यही स्मृतियां उस समय हमारा मनोरंजन करती हैं। मन को सुकून देती हैं। अनेक कठिनाइयों, उलझनों की गांठें खोल कर समाधान का राह भी प्रशस्त करती हैं। नर-नारी की ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था हमें जीवन के तूफानी पलों में हालातों से दो-दो हाथ करने की शक्ति, प्रेरणा और अदम्य साहस का सोपान बनती है। यही शिव शक्ति-के प्रति विश्वास-जीवन का सम्बल बनती है। भगवान की इस अनन्य आस्था, विश्वास, भक्ति, ज्ञान के बिना मानव अशक्त और खाली हाथ है। क्योंकि धर्म

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमें मानवीय जीवन के अत्यावश्यक और आधारभूत सिद्धान्तों पर चलने का सन्देश देता है। जीवन में इन्हीं मूलभूत उपदेशों को कार्यान्वित करना मानवता के लिए कल्याणकारी है।

पाठकगण इस यात्रा संस्करण को पढ़ते समय अवश्य सोचेंगे सन् 2002 में सम्पन्न की गई 'श्री अमरनाथ' पर लिखा गया संस्मरण सन् 2018 में क्यों प्रकाशित हुआ? साहित्यकार की ऐसी क्या जटिल परिस्तितियां रही होंगी कि इतने वर्षों के पश्चात् यात्रा संस्मरण पढ़ने को मिला है। उन का ऐसा सोचना बाजिब है। सन् 2003 में बस दुर्घटना में धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा का देहांत हो गया था और मैं अपने उपचार हेतु अस्पताल में दाखिल रहा। अस्पतालों में धक्के खाता रहा।

इस संस्मरण का कलेवर बड़ा हो गया है। मैं ज्यों-ज्यों जम्मू-कश्मीर के धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक विषयों पर निगूढ़ता से चिन्तन-मनन करता, कोई नया तथ्य आंखों के समक्ष घूम जाता। मैंने इस संस्मरण को हल्के में न लेकर गंभीर हो उठा था। सोचता- कड़ी मेहनत, लग्न और धैर्य से ही किसी बढ़िया कृति की रचना हो सकती है। इसलिए मुझे इस संस्मरण की पूर्णता में दीर्घकाल तक श्रम करना पड़ा है। कई बार जम्मू व कश्मीर घाटी में जाना पड़ा था।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत वर्ष में रहने वाले नागरिकों का समान रूप से जम्मू-कश्मीर की इंच-इंच धरती पर अधिकार है। यह शांत, रमणीय भू-भाग किसी जाति, राजनैतिक दल का विशेष न हो कर सवा करोड़ भारतवासियों का है। जम्मू-कश्मीर किसी व्यक्ति या सम्प्रदाय की जागीर नहीं है। यह हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग है। पाकिस्तान ज़िदाबाद के नारे लगाने वालों को इस अचल-अटल सच्चाई को हृदय से स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस यात्रा संस्मरण 'आस्था के सोपान' के लेखन में सर्वाधिक सहयोग मुझे प्रिय भतीजे अशोक कुमार शर्मा ने दिया है। इससे मुझे कश्मीर के ठंडे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौसम में अपने पास ठहरा कर हर प्रकार का सहयोग दिया है। कश्मीर में एक जगह से दूसरे जगह पर जाने, लेखन सम्बन्धी पुस्तकों का समुचित प्रबन्ध किया है। मैं इसके लिए अशोक शर्मा का हृदय से आभारी हूं।

छाया शर्मा 'लुधियानवी' ने इस संस्मरण के कई अध्यायों का इंग्लिश से हिन्दी में अनुवाद करके मुझे दिया है। मैं इस मित्र के सहयोग के लिए धन्यवादी हूं।

दोनों बेटों–कुणाल शर्मा, करुणेश शर्मा, पुत्रबधुओं–अम्बिका हंडू शर्मा, परमिन्द्र शर्मा ने समय-समय पर लेखन हेतु मुझे प्रेरित किया है। मैं अपने परिवारिक सदस्यों का सहयोग हेतु हृदय से आभारी हूं।

दोनों पोतियों–आयुष्का शर्मा, अवनि शर्मा व पोते सामन्यु शर्मा, अनेय शर्मा ने अपनी बालसुलभ बातों और किलकारियों से मेरा मनोरंजन करके मेरे तन–मन में शक्ति प्रेरणा का संचार किया है।

हरजीत सिंह रामगोतरा, अजीत पाल शर्मा, पुरुषोत्तम शर्मा सुन्दर चक्किया, नरेश कुमार शर्मा, उमा शंकर तिवारी, अशोक कपूर, राकेश अग्रवाल, अशोक मेहता, ममता मेहता, जैविक अग्रवाल, भूरी लाल 'नूर', प्रि. दया राम, सोमेन्द्र कौल पुनीत वसिष्ठ, सुमित वसिष्ठ ने भी मेरे लेखन कार्य में सहयोग किया है। मैं इन समस्त मित्रों व बन्धुओं का धन्यवादी हूं।

प्रबुद्ध पाठकों की 'आस्था के सोपान' संस्मरण पर बेबाक प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

यशपाल शर्मा

710/2 पंजाब माता नगर, गली नंबर-4

पक्खोवाल रोड लुधियाना (पंजाब)

पिन - 140002

संपर्क सूत्र - 094174-20396, 62398-76947

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय सूची

क्रमांक पृष्ठ

भाग- प्रथम

1. नटखट बाल्यकाल व नन्हीं आस्था 19
2. बिना सिक्योरिटी के अमरनाथ यात्रा 23
3. मौलाना आज़ाद स्टेडियम से यात्रा की रवानगी 27
4. सैनिक अफसर बनने का अधूरा सपना 34
5. बनिहाल-कश्मीर का द्वार 36
6. नुनगांव बेस कैंप में लंगरों की सुव्यवस्था 39
7. चन्दनबाड़ी होते हुए पिस्सू घाटी की चढ़ाई 43
8. कश्मीर में शैव-दर्शन का सूत्रपात-1 47
9. कश्मीर में शैव-दर्शन का सूत्रपात-2 52
10. शेषनाग झील व उसकी प्राकृतिक सुन्दरता 56
11. कश्मीर का नामकरण विद्वानों की दृष्टि में 62
12. लंगर में महारास की कैसेट बजना व शेषनाग झील के नाम की सार्थकता 66
13. शेषनाग के अन्तर्दर्शन व लंगर का मुफ्त माल खाने की सजा 71
14. घोड़े वाली नगीना रहमान की विपत्कथा 76
15. महागुनस की चढ़ाई व हरिनाम की महिमा 81
16. पंचतरणी व वीर सैनिकों की कर्त्तव्यनिष्ठा 85
17. दुर्लभ शिवलिंग के दर्शन, पूजा अर्चना व प्रभु विनती 89
18. श्री अमरनाथ गुफा से प्रस्थान व बालटाल तक थकावट से चूर करने वाला सफर 94
19. स्वामी जी के आश्रम से बालटाल बेस कैंप पर पहुंचना व नुनवाल बेस कैंप पर उग्रवादियों के हमले के समाचार की जानकारी मिलना 98
20. सिक्योरिटी में श्रीनगर के लिए रवानगी व अखंड भारत के विभाजन पर अशोक कुमार के विचार 103
21. कश्मीर के सम्बन्ध में ऐतिहासिक कल्हण और चायवाले अशरफ की आंतकवादियों की वारदातों का वर्णन करना 109

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

22. हाऊस बोट में रात्रि विश्राम व अतीत काल की स्मृतियों का ताजा होना 116

23. लार्ड माऊंटबेटन की खोटी नीयत, पाकिस्तान का कश्मीर पर हमला व कश्मीर का भारत में विलय 122

24. डलझील में रात्रि विश्राम व डल की प्रात: कालीन शोभा 132

भाग-द्वितीय

25. गुलमार्ग के लिए रवाना होना व ऋषि सम्प्रदाय के संक्षिप्त इतिहास का ज्ञान होना 135

26. सन् 1971 का भारत-पाकिस्तान का युद्ध, शिमला समझौते में बंदी सेना व फतेह किए इलाके वापिस करना भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की भारी भूल 141

27. खिलनमर्ग का प्राकृतिक सौन्दर्य, नन्हें प्यारे बच्चे का मेरी गोद में बैठना व भारतीय नेताओं की कश्मीर सम्बन्धी अदूरर्शिता 148

28. सैलानी मित्रों की दिल्लगी, मस्ती और गंडाला से केवल-कार पर सवारी करना तथा धरती पुत्र का धरा से गूढ़ नाता होने का रहस्य 154

29. घोड़े वाले गुलाम नवी की मौजूदा सरकार के सम्बन्ध में राय। 159

30. गुलमर्ग में स्थित शिव मंदिर में साथियों का नाच गाना, सकीना की अद्‌भुत इबादत-वन्दगी और फोटो खींचना। 163

31. अबोध बच्चों से बतियाना, हब्बा ख़ातून कश्मीरी रोमान-गीतों की जननी का नारियों के गम, पीड़ा, प्रताड़ना का गीतों में जिक्र व शालामार बाग की अद्‌भुत शोभा 166

32. मोनालीसा हाऊस बोट में ठहरना, खन्ने वाले सैलानियों से परिचित होना और फिल्म 'आरजू' का कमाल करना 174

33. हाऊस बोट में खन्ने वाले नवयुवक मि. राजू के जन्मदिन पर महफिल सजा कर शेर, और गीतों से आनन्द लूटना 180

34. महायोगिनी लल्लेश्वरी का जीवन दर्शन 191

35. ऐतिहासिक पवित्र, 'हजरत बल मस्जिद' व उसका इतिहास 197

36. ऐतिहासिक देवी मंद्दि खीर भवानी व उसका इतिहास 203

37. चश्माशाही, मिनी झील, परी महल व मशहूर मुगलकालीन उद्यान निशात को देख कर आनन्दित होना 205

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
38. जम्मू-कश्मीर में धारा 370 का अनुचित होना व उसके भयानक परिणाम-(क) 212
30. डलझील की निरन्तर बदलती तटरेखा, घटता आकार और उसके मुख्य कारण 223
40. हरि पर्वत, छटी पातशाही का गुरुद्वारा, अवन्तिपुर, चार चिनारी व नेहरू पार्क को देखकर आनन्द उठाना 228
41. डलझील में हाऊस बोट के मालिक हसन अली से विदा लेना, सन् 1972 में श्रीनगर में डॉ. मोहन लाल भट्ट के घर में मुझसे शुष्क व्यवहार। मेरा दामाद बन पुनः उसके घर जाना, मुर्तांड में श्राद्ध और पितरों को पिंडदान करना 232
42. वितस्ता नदी का इतिहास व ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा उनकी पुष्टि 243
43. इतिहासकार कल्हण 250
44. काजीगुंड मार्किट में ड्राईवर की पिटाई, ढाबे के मालिक की अंधी लूट व सीनाजोरी, ढाबे के मालिक पर पुलिस कारवाई और जेहलम नदी के उद्‌गम स्थल वेरी नाग को जाकर देखना 260
44. पाकिस्तान के ओप्रेरशन टोपाक के अन्तर्गत कश्मीर में उग्रवाद का नंगा नाच, लोगों द्वारा अपनी मातृभूमि से विस्थापित होना और यात्री मित्रों से विदा लेना 269
46. जवाहर टॅनल 275
47. जम्मू में स्थानीय धार्मिक स्थानों के दर्शन करना व पुण्य-लाभ अर्जित करना। 276
48. जम्मू से घर को वापिसी व कश्मीर के सम्बन्ध में महान साहित्यकार 'अब्दुल अहद आजाद' द्वारा अद्‌भुत काव्य रचना करना 283
49. धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा व दोनों बेटों द्वारा 'श्री अमरनाथ यात्रा' संस्मरण लिखने का अनुरोध करना 290
50. स्कूल पहुंचकर अध्यापक साथियों व विद्यार्थियों से मिलना और अजीतपाल शर्मा द्वारा जम्मू-कश्मीर सम्बन्धी नई जानकारियां उपलब्ध करवाना 292
51. मानस पटल पर यात्रा व कश्मीर सम्बन्धी अनेक दृष्यों का अवलोकन व भगवान से अननुय-विनय 298
प्रतिक्रियाएं 302
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नटखट बाल्यकाल व नन्हीं आस्था

यो धत्ते निजमाययैव भुवनाकारं विकारोज्झतो
यस्याहू: करुणाकटाक्ष विभवौ स्वर्गापवर्गाभिधौ।
प्रत्यग्बोधसुखाद्वयं हृदि सदा पश्यन्ति यं योगिन-
स्तम्भै शैलसुत्ता ञिचूतार्द्धवपुषे शश्वन्नमस्तेजसे।।
(शिव पुराण, कोटिरूद्र संहिता)

पृष्ठ-417

"जो निर्विकार होते हुए भी अपनी माया से ही विराट विश्व का आकार धारण कर लेते हैं, स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) जिनके कृपा कटाक्ष के ही वैभव बनाए जाते हैं और योगी जन जिन्हें सदा अपने हृदय के भीतर अद्वितीय आत्मज्ञानानन्द स्वरूप में ही देखते हैं, उन तेजोमय भगवान शंकर को, जिनका आधा शरीर शैलराज कुमारी पार्वती से सुशोभित है, निरन्तर मेरा नमस्कार है।"

मेरे बाल्यकाल से लेकर आजतक पुश्तैनी गांव बहादुरपुर (गुरदासपुर) में कोई शिवालय या देव मन्दिर नहीं है। नवरात्रों में अबोध बालिकाओं को दुर्गा अष्टमी के दिन लाल रंग के वस्त्रों में सजा-संवार कर देवी रूप में रात्रिकाल को बाहर चौगान में चारपाई पर प्रस्तुत किया जाता था। थाली में जगमग-जगमग करती ज्योति-धूप का आकाश की ओर ऊपर उठता स्याह धुआं मेरे मन को बहुत अच्छा लगता था। कंजकों के सम्मुख रखी थाली में बतासे और मीठी फुल्लियों का प्रसाद रखा होता। मैं केवल एक बार थाली में जोर से सिक्का इस अंदाज में रखता कि कंजकों को पता लग जाए कि मैंने श्रद्धावनत पैसे चढ़ाए हैं। कंजकें मेरी ओर भोली सी मुस्कराहट से देखतीं व उनमें मध्य में बैठी कंजक नन्हें से हाथ से मुझे प्रसाद देती। मैं थोड़ी दूर जाकर प्रसाद खाकर आठ दस मिनट के पश्चात् पुन: चारपाई पर बैठी कंजकों के सामने आ खड़ा होता। ज्योति और प्रसाद वाली थाली में हाथ से पैसा चढ़ाने का अभिनय इस तरह करता कि अबोध बालिका मेरी चालाकी को न पहचान पाती और मुट्ठी भर कर फुल्लियों का प्रसाद मुझे दे देती है। मैं बचपन में चटोरा और बहुत नटखट प्रकृति का रहा हूं। एकांत में बैठा कभी-कभी उम्र के उस पड़ाव की बातों को सोचकर मुस्करा उठता हूं। सोचता हूं- बाल्यकाल सा अलमस्त और हसीन समय जीवन में फिर नहीं आता, जिसमें खाने-पीने ओढ़ने का ही काम होता है। गलतिएं माफ होती हैं। जिद्द से बातें मनवाई जाती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बचपन में राधा-कृष्ण, सीता-राम, शिव-पार्वती के भजन अपनी मां से सुना करता था। गांव में किसी के घर भगवती जागरण होता तो जगजननी की भेटें सुनने को मिल जाती थीं। प्रात: काल की मंगलमय बेला में अपनी माता श्री को चक्की में आटा पीसते हुए राधा-कृष्ण का भजनसुना करता था जो वह अकसर गाया करती थी-

वे भज राधे कृष्णा
जन्म नईं औणा बारम्बार।
वे तेरी मिटे तिरिष्मा
जन्म नईं औणा बारम्बार।

तेरे दिल विच्च इक अलमारी ए,
जिथ्थे बैठे कृष्ण मुरारी ए।
ओह कट दे संकट भारी वे,
क्यों सुत्ते रात गुजारी वे।

उठ जप--राधे-कृष्णा,
जन्म नईं औणा बारम्बार।
वे तेरी मिटे तिरिष्णा
जन्म नई औणा बारम्बार..........।।

मां कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। स्वभाव की शांत, निर्मलचित और भोली थीं। मुझे कभी-कभार बताया करती- ''पाले मैं इक बारी बजाड़ें (पाकिस्तान में तहसील शकरगढ़ में मायके) गई दी ही। इक दिन सवेरे गैं बाहर खेतें च जंगलपानी जा करदी ही। तांजे मेरे सामने दा राधा-कृष्ण झिलमिल करदे कपड़ें च लागों लंगे हे। बड़ा प्यारा रूप हा उनें दा। मेरी अख्खियां उनेंगी सिध्धी अख्खीं दिख्खी नईं सकीयां हां।'' कह कर वह राधा-कृष्ण के स्वरूप की याद में खो जाती थी।

मेरे घर के सम्मुख कच्चे घरों, छप्परों से घिरा हुआ चौगान सा था। नि:संतान ब्राह्मण जाति के शिव राम व उसकी धर्मपत्नी वीरो देवी ने पीपल का पेड़ कुएं के समीप लगाया था। थोड़ा बड़ा होने पर एक चबूतरा उसके चारों ओर ईटों से बना दिया गया था। पीपल के वृक्ष का शास्त्रानुसार विधि विधान और पूरी श्रद्धा व आस्था से उसका दम्पति ने पूजन किया था। पीपल के वृक्ष को तने से लेकर उसके शिखर तक स्वच्छ-सफेद वस्त्र से ढका गया था। बड़े भारी यज्ञ का आयोजन किया गया था। लोगों की ऐसी मान्यता है कि जो बे-औलाद पति-पत्नी पीपल का पौधा लगाकर शास्त्रनुसार उसका पूजन-वन्दना करता है तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। और अगले जन्मों में पुत्र रत्न का संग मिलता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीपल का पेड़ दिनोदिन लम्बाई और आकार में फैलने लगा था। उसके तने के समीप लोगों ने दरिया से ऐसे आठ-दस पत्थर लाकर रख दिए थे, जिन पर सफेद रंग की लकीरें होतीं। लोगों की मान्यता थी कि यह सफेद लकीरें शंकर भगवान का यज्ञोपवीत है। यह पत्थर गोल-गोल व चौड़े न होकर अन्य पत्थरों से थोड़ा अलग किस्म व शक्ल के होते थे। इन पत्थरों पर लोग कुएं पर नहाकर शिवलिंग समझकर उन पर जल चढ़ाते समय ॐ नमः शिवाय और

ओम। त्र्यम्वकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्।

उर्वरुकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

महामृत्युंजय मंत्रों का उच्चारण करते।

सोमवार और शनिवार को लोग प्रातः सायं पीपल के पेड़ के नीचे, शिवलिंगों के सम्मुख तेल का दीवा जलाते। धूप जलाते। मेरा बालमन इन पत्थरों को सदैव शिव रूप में देखता और गहन आस्था रखता।

सितम्बर सन् 1970 में मेरी नियुक्ति गांधी मैमोरियल हाई स्कूल गुरदासपुर के हाई स्कूल में हुई थी, जो पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त था। जन्माष्टमी को मैं व्रत रखता और रात्रि को राधा-कृष्ण के मन्दिर माथा टेकने जाता। मेरे ऊपर अपनी माता के संस्कारों और विचारों का प्रभाव था। मैं कृष्ण को अपना इष्ट मानकर ध्यान-साधना करने लगा था। गुरदासपुर नगर में रेडियो या स्पीकर पर बजने वाले रिकार्ड पर भगवान शंकर का कभी भजन सुनता तो मनमयूर नाच उठता था।

सरकारी सर्विस में आया तो सुन्दर चक्क पूर्वीयां का जो मकान हमें किराए पर मिला, घर से निकलने वाली गली के ठीक सामने राधा-कृष्ण का मन्दिर था। और दूसरी ओर निकलने वाली गली में साथ लगते ही छोटा-सा शिवालय बनाया गया था, जिसमें लम्बा और गोल सा पत्थर शिवलिंग के रूप में स्थापित किया गया था। जहां मैं भी अन्य लोगों की तरह शनि के कोप से बचने हेतु सोमवार व शनिवार को जल चढ़ाने जाया करता था। जिन्हें ज्योतिषि ने शनि ग्रह बताया होता, वह उसकी क्रूर दृष्टि से बचने को शिवालय नेम से जाया करते थे। मैंने स्वप्न में अनेक बार अमरनाथ यात्रा की थी। परन्तु बर्फीले और अलसी के फूल के वर्ण के दुर्लभ शिवलिंग के दर्शन न हुए थे। अमरनाथ यात्रा पर लोगों को जाते और उनके अपने-अपने यात्रा संबंधी अनुभव सुनता तो मेरी भी अमरनाथ यात्रा करने की आस्था अंगडाइयां लेने लगती थी। परन्तु इन दिनों दोनों बेटे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। आमदन से अधिक खर्च उनकी पढ़ाई पर होने लगा था। ऐसी परिस्थितियों में अमरनाथ व और कोई तीर्थ-यात्रा करना मियां-बीबी के लिए असम्भव था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ा बेटा कुणाल जम्मू में अपनी छोटी मौसी गिरिजा के पास रह कर कालेज में पढ़ रहा था। वह अपनी मित्र-टोली के साथ अमरनाथ जी के दर्शन कर आया था. उसने घर आकर पति-पत्नी को यात्रा के रोमांचक प्रसंग सुनाए थे। सुनकर मैं भावुक हो उठा था। तथा मैंने शीघ्रातिशीघ्र अमरनाथ यात्रा करके पुण्य कमाना और जीवन लाभ उठाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

सन् 2002 के अप्रैलमहीने मैं अपने प्रिय मित्र राकेश अग्रवाल पठानकोट में उसके पास बैठा गपशप लड़ा रहा था कि उसने अमरनाथ यात्रा का प्रसंग छेड़ दिया। वह दो बार इस यात्रा को सम्पन्न कर चुका था। और मुझे भी अमरनाथ भगवान रोमांचक यात्रा करने का सुझाव दिया था। मन में भगवान शंकर के प्रति आस्था और प्रेम मेरे हृदय-सागर में ठाठें मारने लगा था। मैं इसी ताक में था कि अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले किसी टोले में चलने का काम बन जाए तो जीवन धारा के बहते मधुर झरने से यह धार्मिक अरमान भी पूरा कर लेना चाहिए। परन्तु किसी भी अभिलाषा और कार्य के सम्पन्न होने में विधाता ने समय निर्धारित किया होता है।

जून माह में मैं किसी कामवश जीरकपुर अपने ताया जी के बड़े लड़के विश्वामित्र के घर ठहरा था। भतीजे अशोक कुमार ने मुझे बातों-ही-बातों में बताया कि मैं अपनी मौसी के लड़के के साथ प्रतिवर्ष अमरनाथ यात्रा पर जाने लगा हूं। अंधे को दो आंखों के सिवाए और क्या चाहिए था। मैंने भतीजे अशोक कुमार को अपनी यात्राटोली में नाम दर्ज करवाने को अपनी फोटो दे दी थी। पठानकोट से नरेश कुमार शर्मा ने नौ सदस्यों की अमरनाथ यात्रा पंजीकृत करवाली थी, जिनमें मेरा नाम भी शामिल था।

जून के अंतिम सप्ताह में भतीजे अशोक शर्मा ने मुझे फोन कर सूचित कर दिया था कि हम 2 अगस्त की प्रातः को अपने दलबल के साथ आपके अपने निवास स्थान पर सुन्दर चक्क में पहुंच जाएंगे, अपनी तैयारी पूरी करके रखना। मैं और धर्मपत्नी पुष्पलता शर्मा अमरनाथ यात्रा की तैयारी में जुट गए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना सिक्योरिटी के अमरनाथ यात्रा

2 अगस्त, शुक्रवार सन् 2002 को भतीजा अशोक कुमार व उसके आठ साथी टाटा सूमो लेकर प्रात:काल 4:30 बजे मेरे निवास स्थान सुन्दर चक्क (बनी लोधी) पहुंच गए थे। मैं, मेरी बहन श्रीमती गोदावरी देवी व धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा बाहर दरवाजे पर बड़ी बेसबरी से प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरी जीवनी संगिनी संस्कृत की विदूषी थी। मेरे ससुर श्री लक्ष्मी नारायण जी जम्मू कश्मीर सरकार के हाई स्कूल में संस्कृत के अध्यापक व ज्योतिष के प्रकांड विद्वान थे। वैसे तो कश्मीरी ब्राह्मणों को संस्कृत भाषा में भारत वर्ष ही नहीं, विश्व में निष्णात माना जाता है। कश्मीरी ब्राह्मण की कन्या किसी से कमतर कैसे हो सकती थी। श्रीमती पुष्पलता शर्मा ने भगवान शंकर से सम्बन्धित श्लोक पढ़ा था-

कृपाललित वीक्षणं स्मित मनोज्ञववन्नम्बुजं
शशाङ्क्कलयोज्जबलं शमित धोतरापत्रयम्।
करोतु किमापि स्फूरत्परमसौख्यसनिच्द्वपु।
धराधरसुताभुजोद्वलयतिं महो मंडग्लम।।

(शिवपुराण-कोटि रुद्रसंहिता)

अर्थात् जिसकी कृपापूर्ण चितवन बड़ी ही सुन्दर है, जिसका मुखारविन्द मन्द मुस्कान की छटा से अत्यन्त मनोहर दिखाई देता है। जो चन्द्रमा की कला से परम उज्जवल है। जो आध्यात्मिक आदि तीनों तापों को शांत कर देने में समर्थ है। जिसका स्वरूप सच्चिन्मय एवं परमानन्दरूप से प्रकाशित होता है तथा जो गिरिराज नन्दिनी पार्वती के भुजपाश से आवेष्टित है, वह विश्व नामक कोई अनिर्वचनीय तेजः पुंज सबका मंगल करें।

फिर उस ने थाली में सजाई ज्योति और धूप से मेरी आरती उतार कर माथे पर टीका लगाकर मिश्री के प्रसाद से मुंह मीठा करवाया था। धूप-दीप की थाली बहन श्रीमती गोदावरी जी को पकड़ा कर मुझे प्रणाम किया था। पल-दो-पल के लिए नेत्रमूंदे मेरी निर्विघ्न, सफल यात्रा हेतु भगवान शिव व पार्वती से प्रार्थना की थी। फिर आदिदेव गणेश जी का ध्यान किया था। मेरी व इस समस्त यात्री-दल की कुशल-मंगल से तीर्थ यात्रा सम्पन्न करने और वापिस सकुशल लौटने के लिए स्तुति की थी।

उसके पश्चात् श्रीमति पुष्पलता ने सब को प्रसाद दिया था और फिर सब से हाथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जोड़कर सफल यात्रा हेतु भगवान अमरनाथ से विनती की थी। मैंने बहन गोदावरी देवी को प्रणाम किया। उसने मुझे अपनी छाती से लगाकर प्यार किया था। सिर पर हाथ फेरा। मुझे अपनी मां स्मरण हो आई थी। मेरी आंखें पनीली हो गई थीं। मैंने पुष्पलता शर्मा को स्नेह से देखा। दुर्गम यात्रा की दुश्वारियों के कारण क्षणेक के लिए उसके चेहरे पर चिंता की हल्की सी छाया उतर आई थी। मैं झट से टाटा सूमो के अन्दर जाकर बैठ गया था। गाड़ी चल दी थी। शंकर भक्त पवन कुमार, लाडी और राकेश शर्मा अमरनाथ बर्फानी के बारी-बारी जयकारे बुलाते हुए चले जा रहे थे। थोड़ी ही देर में हमारी गाड़ी अंधेरे में अपनी गति से आगे-ही -आगे बढ़ने लगी थी। माधोपुर पहुंचने से पूर्व ही शिव-प्रेमियों ने भक्तों के लिए भण्डारे का बहुत बड़ा पंडाल लगा रखा था। लखनपुर (जम्मू-कश्मीर) से आगे जगह-जगह पुलिस वालों के नाके लगे हुए थे। कई बार हमारी गाड़ी की तलाशी ली गई व पूछताछ हुई थी। पुलिस वालों की बातों का उत्तर नरेश कुमार शर्मा दे रहे थे। क्योंकि वह स्वयं पंजाब सरकार के पुलिस विभाग में जिला गुरदासपुर के सीनियर पुलिस कप्तान के पसर्नल वायरलैस ओप्रेटर थे। उन्हें इस बात की जानकारी थी कि किस समय क्या जवाब देना है और पुलिस वालों को कैसे आश्वस्त करना है।

राकेश कुमार और पवन कुमार कह रहे थे जैसे- कैसे भी हो, आज हमें पहलगांव पहुंच जाना चाहिए ताकि पंजीकरण की पवित्र गुफा के दर्शन की चार अगस्त की निश्चित तिथि पर हम अमरनाथ की गुफा में स्थित दुर्लभ शिवलिंग के दर्शन करके कृतार्थ हो सकें। गाड़ी का ड्राइवर अशोक दीवाना अभी छोकरा ही था। बड़ा तुर्तफुरत था। वह इससे पहले अनेक बार शिव भक्तों को अपनी गाड़ी में लेकर ज़ा चुका था। उसने हमें राय दी थी कि हमें सिक्योरिटी में ही यात्रा करनी चाहिए। भले ही एकाध दिन अधिक लग जाए। उसकी बात सुन कर सभी ने ना में सिर हिला दिया था। कहते हैं- ''अकेला चला भाड़ नहीं फोड़ सकता।'' अपनी बात का विरोध पाकर ड्राइवर को गाड़ी बाईपास से निकलनी पड़ी थी। राह में पुलिस नाके वाले पूछते तो कह देते- 'हम सभी ऊधमपुर जा रहे हैं जी।' हम सभी प्रसन्न थे कि आज तो हम पहलगांव पहुंच ही जाएंगे। एक पुलिस नाका ऊधमपुर से पीछे लगा था। हमारी पहली भेंट एक सूझवान, शिक्षित और नवेले एएसआई से हुई थी। नाम था उसका- नगीन चन्द्र शर्मा। वह खूब लम्बा-चौड़ा, मुख से आत्मविश्वास, स्वाभिमान, कर्त्तव्यनिष्ठा और मानवता प्रेमी होने की मिश्रित सी आवनाएं परिलक्षित हो रही थी। एएसआई नगीन शर्मा ने गाड़ी खड़ी करवा कर पूछा- ''आप सब जनें कहां जा रहे हो?'' नरेश कुमार इस समय चुप रहा। वह झूठ नहीं बोलना चाहता था। जिम्मेदार पद पर काम करता
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। उसे इस बात का बाखूब ज्ञान था, पुलिस से, जो ऐसे संगीन हालातों में हमारी सुरक्षा हेतु तैनात की गई है, झूठ बोलना महापाप और भारी अपराध है। पवन कुमार ने बिना सोच समझे तपाक से उत्तर दिया- ''श्रीनगर घूमने जा रहे हैं जी।''

''यार सच्ची बात बता दो।'' एएसआई गाड़ी के समीप आकर बोला। हम सभी एक-दूसरे के चेहरे की ओर टुकुर-टुकुर देख रहे थे।

एएसआई हमारी आन्तरिक भावनाओं को जान गया था। बोला- ''झूठ मत बोलना। क्या आप भगवान अमरनाथ जी के दर्शनों के लिए नहीं जा रहे हो?''

लव कुमार बोल पड़ा- ''हां साब जी, सच्ची गल्ल तां एहोई है।''

एएसआई हम सब के एक-एक के चेहरे को देख कर मुस्कराता हुआ बोला- ''दोस्तो! आप बिना सिक्योरिटी के आगे नहीं जा सकते।''

हम सब लव कुमार की ओर गुस्से से घूर-घूर कर देख रहे थे। सोच रहे- यह साला बोलने से बाज नहीं आता। वक्त-बेवक्त नहीं देखता। बस थू सी बात कह देता है। मामला गड़बड़ाता देख कर हम सब जने गाड़ी से बाहर आ गए थे। मिस्टर नगीन शर्मा बोला- ''गाड़ी को सिक्योरिटी चिट लगे, सिक्योरिटी के बीच में ही रवाना किया जाता है, यूं नहीं।'' हम में राकेश कुमार, पवन कुमार और लव कुमार पुलिस अफसर से अनुनय-विनय करने लगे थे- ''साब जी हमारा एक दिन खराब बर्बाद मत करो।''

राकेश कुमार शर्मा व पवन कुमार ने एएसआई को उनके पुलिस विभाग के आला अफसरों की जानकारी दी थी। ए एसआई ने हवलदार को थोड़ा परे जाकर कुछ समझाया था। फिर हमें चाय की दुकान पर लेकर आ बैठा था। चाय-ठंडा पीने का न्यौता उसने हम सबको दिया था। हमने इंकार कर दिया था। रोहित मिस्टर शर्मा से बोला- ''साहिब जी आप हमें आगे जाने दो, ठंडा-बंडा बीच में आ जाएगा।''

एएसआई मुस्कराते हुए बोला- ''जिन आला दर्जे के अफसरों का जिक्र आपने किया है, वह मेरे आत्मीयजन हैं। वह मेरे बड़े मेहरवान हैं। फिर मैं उनके सज्जन व्यक्तियों को राम आसरे यूं मौत के मुंह में नहीं धकेल सकता। आज आप वैष्णों देवी जी के दर्शन कर आओ। मन लगा रहेगा। पुण्य भी कमा लिया जाएगा।'' उसकी सारी बातें समयानुसार सत्य थी। हमारी जीवन रक्षा और कल्याण की थीं। परन्तु इस समय व्यस्क होने पर भी उसकी सारी बातें फीकी-फीकी और बेकार सी लग रही थीं।

राकेश शर्मा व पवन कुमार ने दुकान की एसटीडी से जम्मू-कश्मीर के आला पुलिस अधिकारी को फोन करके सारी बातें बताई थीं। उत्तर में पुलिस अधिकारी ने कहा- ''मैं आप सबको ऊधमपुर तक पहुंचा सकता हूं। उसके आगे आपको कोई भी जाने नहीं देगा। यूं बिना सिक्योरिटी के जाना- मूर्खों वाली बात है। आप सभी परिवार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले हो, जानबूझ कर रिस्क लेना अकलमंदी नहीं है।'' दूसरे पल उस पुलिस अधिकारी ने कह दिया कि इस यात्रा-पार्टी को वापिस जम्मू भेज दो।

राकेश कुमार ने हम सब के समीप आकर कह सुनाया था- ''ऊधमपुर से आगे कोई आगे हमें कोई नहीं जाने देगा। इस समय उग्रवादी इस ताक में हैं कि बिना सिक्योरिटी के तीर्थ-यात्री मिलें और हम उन्हें निशाना बनाएं। आगे जिद्द करके चले भी जाएं तो कोई हादसा हमसे बीत सकता है। यह तो मुफ्त में प्राण गंवाने वाली बात होगी।'' सुनकर हम सब के चेहरे उतर गए थे। उत्साह पर पानी फिर गया था। दस-पन्द्रह मिनट बैठ कर सब साथियों ने खतरनाक हालातों और उग्रवादियों के नापाक इरादों पर गौर किया था। हमने एएसआई के निर्णय पर फूल चढ़ा दिए थे। उसका धन्यवाद करके वापिस जम्मू को चल पड़े थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौलाना आज़ाद स्टेडियम से यात्रा की रवानगी

जम्मू में 'मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद' स्टेडियम में यात्रियों की व उनके सामान की तलाशी ली जा रही थी। चैकिंग की व्यवस्था बड़ी अभूतपूर्व थी। जिस ढंग-तरीके से तलाशी गहनता से ली जा रही थी, उससे कोई बम या छोटा-बड़ा हथियार ले जाना असम्भव था। बैग, अटैचियों, थैलों की तलाशी कई पड़ावों में हो रही थी। गाड़ियों को खड़ा करने वाला गेट साथ ही था। हमारे ड्राइवर ने गाड़ी स्टेडियम के अन्दर समय लगा दी थी। दोपहर के दो और तीन का वक्त रहा होगा। अब तो पेट में चूहे बड़े जोर-शोर से दौड़ने लगे थे। स्टेडियम के अन्दर 'अमरनाथ बर्फानी' के किसी भक्त ने लंगर लगा रखा था। हम सब ने पेट भरकर खाना खाया था। साढ़े चार बजे के करीब ड्राइवर को गाड़ी के पास छोड़कर हम स्टेडियम के बाहर आ गए थे। अगला कल हमारी यात्रा में व्यतीत होना था। इस ख्याल को ध्यान में रख कर हमने होटल में सांय देर तक सो, नहा धोकर स्टेडियम के अन्दर आ गए थे। ड्राइवर अशोक दीवाना ने हमें कहा- "आप सब सुबह यहां चार बजे आ जाना। साढ़े पांच बजे तक गाड़िएं सिक्योरिटी में चल पड़ेंगी। देर मत करना।" हमने 'दीवाना' की बात को पल्ले बांध लिया था। फिर कुछ सामान बाजार से खरीदकर होटल में आ गए थे।

तीन अगस्त शनिवार को हम सब समय पर 'आज़ाद स्टेडियम' में पहुंच गए थे। 'अमरनाथ' यात्रा पर जाने वाली गाड़ियों की लम्बी-लम्बी कतारें लगी थीं। यात्रियों की भारी भीड़ थी। 'भगवान अमरनाथ' यात्रा पर रवाना होने वाली गाड़ियों पर सिक्योरिटी चैक लग रहे थे। लगभग पांच बजे हमारी यात्रा को जाने वाली गाड़ी को सिक्योरिटी चैक वाला एक कागज लगा दिया गया था। सभी यात्रियों को साढ़े पांच अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठने का आदेश दिया गया था। हुक्म की तामील होने लगी थी। जनता यात्रा पर जाने को व्याकुल थी। सभी नर-नारियों के चेहरों पर हर्ष की लाली थी। यात्री भगवान शिव की आस्था और उत्साह से सराबोर थे। प्रतीक्षा की घड़ियां लम्बी होती हैं। काफ़िला कब चलेगा- हरेक यात्री के मन हृदय की चेतना की घड़ी से टिक-टिक हो रहा था। अब इन्तजार समाप्त था। छः बजे के करीब 'भगवान अमरनाथ' यात्रियों का रेला गाड़ियों में भरे हुए मंजिल को रवाना होने लगा था। सिक्योरिटी गार्ड, गाड़ी पर मशीनगन लगाए हुए आगे, मध्य और काफिले के पीछे वाली गाड़ियों में पूरी मुस्तैदी से प्लान बना कर चलने लगे थे।

'जय भगवान अमरनाथ, जय भोले नाथ, हर-हर माहादेव, नीलकंठ भगवान की जै, भारत माता की जय, भारतीय सेना बलों की जय, भारतीय वीर जवानों की जय-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जय-जय' के नारे यात्रा की प्रत्येक गाड़ी से गूंजने लगे थे। गाड़ियों वाला काफिला मनमोहक, आकर्षक और रोमांचित करने वाला था। समस्त यात्रियों के मुख एक अलौकिक प्रसन्नता, उत्साह और भोलेनाथ की भक्ति की आस्था में चमक-दमक रहे थे। राष्ट्रीय राजमार्ग पर सेना के जवान दोनों ओर बड़ी मुस्तैदी से यात्रियों की सुरक्षा हेतु खड़े थे। लोग हाथ हिला-हिला कर उनका अभिवादन कर रहे थे। सैनिक भी हाथ हिला यात्रियों के स्नेह, अपनत्व और विश्वास का उत्तर दे रहे थे। वीर सैनिक बहुत खुश दिख रहे थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सारे उनके कोई अपने ही स्नेही, आत्मीयजन, सम्बन्धी हों। उन पर देश प्रेम, कर्त्तव्य-निष्ठा व दृढ़ विश्वास हो। सुरक्षा बलों के मध्य से उनके रक्षा कवच में यात्रियों का लम्बा-चौड़ा रेला उल्लासमय ढंग से बढ़ा-चला जा रहा था।

ऊधमपुर के समीप पहुंचे तो रोहित कुमार राकेश कुमार जी से बोला- "अरे अंकल! कुछ खिलाओ-पिलाओ। बड़ी भूख लगी है।" अभी राकेश कुमार ने उसका उत्तर देना था। परन्तु बीच में ही लव कुमार बोल उठा- "तू मरा जा रहा है भूख से। कोई लंगर तो आने दो। फिर दो-दो हाथ कर लेना।"

दोनों कुंवारे छोकरे थे। उनमें हल्की-फुल्की नोक-झोंक होती रहती थी। इन सांडों के बीच कोई दखलअंदाजी नहीं करता था।

लव कुमार का सिर मोटा, भारी डील-डौल वाला बांका जवान था। परन्तु सूझबूझ देने में भगवान ने थोड़ी कंजूसी से काम लिया था। वह हर एक साथी से छेड़छाड़ कर रहा था। मेरे साथी नाम उसका कम लेते थे। अरे पनीर! कह कर ज्यादा छेड़ते व बुलाते थे। लव खुशमिजाज भी था। अकसर समाज में देखा जाता है कि मंदबुद्धि प्रसन्न ही रहते हैं। पतनीटाप के अभी थोड़ी दूर ही गाड़ी पहुंची थी। मैंने देखा बादलों के काले-काले झुंड आकाश-प्रान्तर में उड़े चले जा रहे थे। मानों देश-विदेश के शंकर-प्रिय श्रद्धालुओं को खुशआमदीद कह कर आगे अमरनाथ गुफा में भोलेनाथ को हमारे आने की सूचना देने को आकाश-मार्ग से सरपट दौड़े जा रहे हों।

थोड़ी देर में गाड़ी हांफती हुई पतनी टाप पहुंच गई थी। यहां कुछ विशेष रूप से सीधी चढ़ाई थी। मुझे पतनी टाप बड़ा सुखद, मनोरम आकर्षक लगा था। मेरा मन चाहत पैदा कर रहा था कि गाड़ी का ड्राइवर अशोक दीवाना लघु शंका या और कोई बहाना बना कर कुछ देर के लिए गाड़ी रोक दे और मैं इन मस्ताने-दीवाने बादलों से इनके मन की व्यथा पूछ लूं और अपने मन की बात कह सकूं। मुझे ऐसी कल्पना करते-करते महाकवि कालिदास की विश्व प्रसिद्ध 'मेघदूत' नाटक की कृति और वर्णित प्रेमी यक्ष और उसकी पत्नी की रोमांटिक और रोमांचित करने वाली कथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मरण हो आई थी।

पतनीटाप के सामने स्थित पूर्व के पहाड़ों पर हल्की नीलिमा लिए सुन्दर तरू-झुंड चिताकर्षण की विशेष वस्तु थे। टिकटिकी बांधे अपलक मन उनको देखने को लालायित हो रहा था।

ड्राइवर अशोक के पास गिनी-चुनी केवल तीन-चार ही कैसटें थीं। सुबह से वही बज रही थीं। मेरे जेहन में अभी तक सभी कैसेट घूम रही थीं। उनमें एक कैसेट थी- बिल्ली मार दियांगे, डिंग लक-लक, डिंग लक-लक। दूसरी कैसेट में नाके पर लगे पुलसिए गाने-बजाने का प्रोग्राम देकर आए थे। ज्यों ही तीसरी व चौथी बार वही टेप लगती, मुझे सारी बातें आरम्भ से अंत तक याद हो आतीं। उनमें एक टेप मोहम्मद रफी व लता मंगेश्कर के गीतों की थी। बचपन से टेप में रिकार्ड पुराने गीत लाखों बार सुनते आ रहे थे। सारे साथी एक-दूसरे के कान में फुसफुसा रहे थे- 'साले ने बोर कर दिया है। कानों से मैल निकाल दी है। कम्बख्त राह में बताता तो नई कैसेटें खरीद लेते।'

अब बटोत पहुंच चुके थे। मुझे उग्रवाद से पहले का, बटोत स्मरण हो आया था। जब मैं परिवार संग श्रीनगर अपने ससुराल घर जाता, तो बटोत के 'विशाल होटल' में खाना खाता। राजमांह-चावलों की प्लेट में कलछी भर कर देसी घी डाला जाता और साथ पुदीने की चटपटी-स्वादु चटनी मिलती थी। वह भी क्या दिन थे! बाजार में घूमा था। मुझे 'विशाल होटल' का बाहर लगा बोर्ड कहीं दिखाई न दिया था। मेरे मानस झरोखे पर विशाल होटल का वर्षों पूर्व का दृश्य चलचित्र सा घूम गया था। सोचा- घर-परिवार को लेकर 'विशाल होटल' वाला पता नहीं कहां नये कारोबार में अपना भाग्य आजमा रहा होगा। जमा-जमाया कारोबार का अड्डा एक बार उखड़ जाए तो पुन: और कहीं पटरी पर लाना इतना आसान नहीं होता। कश्मीर व दुनिया के कोने में जब बदअमनी फैलती है, शरारती तत्त्व जगह विशेष पर उद्दंडता पर उतरते हैं तो पहली चोट कारोबार को लगती है जो व्यापारी लोगों को आर्थिक रूप से खोखला कर देती है। परिवार व बच्चों के सुनहरे भविष्य की योजनाएं धराछाई हो जाती हैं। कई बार तो रोटी के लाले पड़ने लगते हैं। निराशा, चिंता, बीमारी पारिवारिक जनों को अपनी गिरिफ्त में लेने लगती है। बटोत में कोई गाड़ी रुकती मुझे दिखाई न दी थी।

सड़क के दोनों ओर सैनिक अपनी डियूटी पर तैनात थे। पवन कुमार ने जम्मू से पहले दिन बिस्कुट, नमकीन व खट्टी-मीठी टाफियां खरीद रखी थीं। उसने चिढ़ाने के बहाने सब को एक-एक टाफी दी। रोहित टाफी को देखकर जल भुन गया था। कहने लगा "अंकल पवन! टाफी से कुछ बनने वाला नहीं है। मोटा माल मुहैया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करवाओ, ताकि चूहे अपनी बिल्लों में घुस जाएं।''

पवन कुमार का छोटा भाई विनोद कुमार पंजाबी लोकोक्ति में बोला- ''जिनां खादे गहने गट्टे ओहदा की बने ऊंगल चट्टे।'' सुन कर हम सब खिलखिलाकर हंस पड़े। भतीजा अशोक कुमार पवन की ओर देखकर बोला- ''पवन जी मुंडे को क्यों सता-खपा रहे हो। असल बात तो यह है कि भूख तो सभी को तंग करने लगी है। अब भूख का कोई चारा करना ही मुनासिव है।''

''लओ मोतियां वालियो! बादशाओ! अभी ईलाज किए देते हैं।'' उसने कह कर बड़े से बैग से बिस्कुट, नमकीन सब को बांटकर देना आरम्भ कर दिया। पैप्सी की चार बड़ी बोतलों में हमने पानी भर रखा था। एक छोटी प्लास्टिक-कैनी भी पानी की भर कर गाड़ी में रखी थी। पैप्सी के गिलास भी साथ में रखे हुए थे। लव और बिस्कुट-नमकीन की अभिलाषा में देख रहा था। पवन ने उसके मन की बात जान ली थी। लव कुमार की ओर देख कर पवन कुमार बोला- ''अब मुझे खाओ मरदूद!'' सुन कर वह झेंप गया था। गाड़ी पूरी गति से राजमार्ग पर भागी चली जा रही थी।

समस्त साथी अब तरोताजा थे। मुझे पंजाबी की एक लोकोक्ति स्मरण हो आई थी- ''पेट ना पईयां रोटियां तां सब्बे गल्लां खोटियां।'' सभी साथी अब शांत-स्थिर व सजग थे। भूख भी क्या बला है, जो आदमी का तन निर्बल व शिथिल कर देती है। मुझे अपनी ही काव्य-चिराग की लिखी पंक्तियां मानस-पट पर याद हो आई थीं-

देह-दीप में अन्न तेल,
बनकर जब वह जलता है।
दो टांगों दो बाहों वाला,
तब काया-यंत्र हिलता है।
प्राण-दीप का अन्न रक्षक,
शक्ति-प्रेरणा का संचार।
अन्न से जीवन-लीला संभव,
सूझ-कल्पना का आधार।।
अन्न ही रौनक चेहरे की,
और होंठ गाल की लाली।
इससे मादकता है तन में,
और सूझे इश्क ख्याली।।

दौलत राम ने अब 'अमरानथ बर्फानी' के जयकारे बुलाने शुरू कर दिए थे-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अमरनाथ बर्फानी की जय! कैलाशपति की जय!! नीलकंठ भगवान की जय!!!" हम सब उसके पीछे प्रत्युत्तर में जयकारे बोल रहे थे।

ड्राईवर अशोक दीवाना के साथ अगली सीट पर दौलतराम व रोहित बैठे थे। किंतु वह नींद के मीठे झोंकों में लुढ़क कर ड्राइवर को परेशान करने लगे थे। अंत में ड्राइवर ने तंग आकर गाड़ी रोक दी थी। दोनों को पीछे गाड़ी में बैठने को कहा गया था। अब मुझे व भतीजे अशोक कुमार को आगे बिठाया गया था। ड्राइवर ने हम दोनों के अलावा शेष को नींद के मदमस्द झोंकों में खोते देखा था।

हमारा सफर नुनगांव तक था। सिक्योरिटी चाहती थी यह यात्रियों का काफिला निर्विघ्न रूप से अंतिम पड़ाव तक पहुंच जाए। वह कोई रिस्क लेना नहीं चाहते थे। सिक्योरटी की हिदायतें कड़ी थी।

एक बार फिर सभी भूख-भूख करने लगे थे। नरेश कुमार शर्मा बोले- "अब जहां भी राह में भोलेनाथ का लंगर आएगा, भोजन खा पी लिया जाए।" नरेश कुमार का सुझाव सब को पसन्द आया था। सभी ने हां में सिर हिला दिया था।

सिक्योरिटी वालों ने यात्रियों को कड़ा आदेश कह सुनाया था कि दोपहर के एक और दो बजे के बीच हमने पतनीटाप और तीन-साढ़े तीन बजे जवाहर टॅनल को पार कर जाना है। इसलिए अत्यावश्क पड़ावों को पार करना नितान्त आवश्यक था। क्योंकि जवाहर सुरंग साढ़े पांच बजे बंद कर दी जाती थी। राष्ट्रीय राज्यमार्ग के दोनों ओर वीर सैनिक सौ-दो सौ कदम पर हाथों में हथियार लिए चौकस और सतर्क थे। जहां कहीं भी उग्रवादियों के हमले की आंशका थी, ढलानों और पहाड़ों की चोटियों पर मशीनगन फिट किए सैनिक अपने-अपने मोर्चों पर डटे हुए थे। मैं सोच रहा था- इन सैनिकों की वजह से देश की थल-जल-नभ की सीमाएं सुरक्षित हैं। भारत देश सुरक्षित है। इस वक्त हम सभी 'अमरनाथ यात्रियों का काफिला सुरक्षित ढ़ंग से आगे-ही-आगे बढ़ता जा रहा है।' मुझे याद हो आया- 'मैं 1989 में अपने ससुराल घर वर्ष में तीन बार कश्मीर गया था। इस वर्ष की दीवाली मैंने अपने साले मि. वीरेन्द्र मनोहर कौल के पास जैनाकोट (एचएमटी फैक्ट्री) में मनाई थी। दो नवम्बर को वापिस श्रीनगर से जम्मू को आ रहा था तब कश्मीर घाटी में कुछ गड़बड़ चल रही थी। खन्ना बल में हमारी बस पर कुछ शरारती तत्त्वों ने पथराव किया था। सारे यात्री भयभीत हो उठे थे। मैं अपनी सीट पर शांत मन यूं का त्यूं बैठा रहा था। मैंने स्वाभाविकता से अपने साथ वाली सीट पर बैठी लड़की से पूछा- "बस को यह क्या हुआ था?"

युवती ने मेरी ओर आंखें तरेर कर देखा। फिर रूखे से स्वर में बोली- "बस पर शरारती अन्सरों द्वारा पथराव किया गया है। भगवान का शुक्र है कि हम सब बच गए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। बस ड्राइवर बहुत सयाना निकला। फुर्ती से बस भगा लाया है। अन्यथा- कोई अनर्थ हो सकता था।''

''अच्छा जी!'' सुनकर मेरा दिल भय से धक-धक करने लगा था।

''आप जम्मू से बिलौंग करने हैं?'' पूछा लड़की ने।

''नहीं जी, पंजाब-पठानकोट से हूं मैं।''

''तभी आप निश्चित होकर बैठे रहे।''

''आप जम्मू से हैं।'' मैंने बात को आगे सरकाते हुए पूछा।

''नहीं, मैं श्रीनगर के जवाहर नगर से हिन्दू लड़की हूं।''

''आप जम्मू किसी रिश्तेदार के घर फंक्शन पर जा रही हैं।'' मैंने पूछा।

''नहीं, मेरे पापा एक कार्यालय में सुपरिटेंडैट है। मैं इन दिनों एमबीबीएस के सैंकिड ईयर में बख्शी मैडिकल कालेज में पढ़ रही हूं। मैं और पापा जम्मू में रहते है। बाकी परिवार श्रीनगर में ही रहता हैं।'' लड़की ने उत्तर में कहा।

''आप इधर कहां से आ रहे है।'' पूछा युवती ने।

''मैं अपने ससुराल घर गया था। नाते से आप मेरी साली साहिबा और मैं आपका जीजा श्री लगता हूं। क्योंकि मेरी बीबी भी हिन्दू कश्मीरी महिला है।'' मैंने मुस्करा कर उसकी ओर देखा।

''वह किस मुहल्ले से है दीदी जी?''

''गणपथियार से है मेरी धर्मपत्नी। परन्तु जवाहर नगर मेरे ससुर-सास, मौसा-मौसी भी रहते हैं।''

''वह कौन हैं?'' उत्सुकता से आंखों में चमक लाकर उसने मुझे पूछा।

''श्री सोमनाथ झाडू जी। वह इन दिनों जम्मू हाईकोर्ट में रजिस्ट्रार के ओहदे पर काम कर रहे हैं।'' मैंने कहा।

''खूब! बहुत खूब!! वह हमारे रिश्तेदार हैं। मेरा उनके घर आना-जाना खूब लगा रहता है।''

''फिर मुझे जीजा श्री स्वीकार करती हैं या नहीं।'' मैंने शरारत भरी नजर से उसे देख कर कहा।

वह हाथ जोड़कर मधुर हास अधरों पर बिखेरती हुई बोली- ''सोलह आने आप को जीजा स्वीकार करती हूं।'' फिर हम दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े थे। नाम था उसका कुसुमलता हंडू। उसने मेरा दायां हाथ अपने गरम-नरम हाथों में ले लिया था। आसपास की सीटों पर बैठी सवारियां हमें घूर-घूर कर देख रही थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके पश्चात् सन् 1990 में उग्रवाद कश्मीर घाटी में चरम सीमा पर पहुंच गया था। एचएमटी जैनाकोट फैक्ट्री में कार्यरत मैनेजर को मौत के घाट उग्रवादियों ने उतारा तो मेरा साला अपने परिवार को लेकर जम्मू आ गया था। कानिया कदल, रैनावारी, मीरा कदल, गणपथियार, जवाहर नगर और राजबाग बगैरा में जितने सम्बन्धी थे, सभी फटे हाल, बाल-बच्चों को लेकर जम्मू चले आए थे। उसके बाद मैं श्रीनगर कभी नहीं आया था। इस यात्रा पर आने से पूर्व मुझे बताया गया था कि पहाड़ों पर देवदार और चीड़ के दरख्तों को काफी मात्रा में काटा गया है। यात्रा के दौरान मुझे ऐसा कुछ दिखाई न दिया था। बटोत के पांच-सात किलोमीटर दूर, पहाड़ के खुले-सपाट मोड़ पर किसी शिव श्रद्धालु ने पूड़ी-हलवा, चाय व पकौड़े का लंगर लगाया था। कहावत है- ''अंधे को और क्या चाहिए'' हमारे साथियों के बुझे चेहरों पर लंगर देखकर रौनक आ गई थी। श्रद्धालुओं की और भी कई गाड़ियां वहां खड़ी थीं और शिव भक्त लंगर का माल छक रहे थे। तभी पवन कुमार ने लव कुमार को आवाज़ दी थी- ''खूब लंगर का माल छक लेना।''

''परन्तु तूने कुछ न खाना।''

''क्यों? मेरे लिए तू गुरदासपुर से पापा जी के पनीर के पकौड़े बनवा कर लाया है क्या?'' हल्के-फुल्के मजाक के साथ ही ड्राइवर दीवाना ने गाड़ी एक तरफ सड़क पर खड़ी कर दी थी और लंगर के माल पर डाइवर सहित सभी ने धावा बोल दिया था। पेट-पूजा मेरे साथियों ने अब कर ली थी।

नरेश कुमार शर्मा मेरे समीप आकर बोला- ''यश जी अब यात्रा पर आगे बढ़ा जाए।''

मैंने उसकी बात का उत्तर दिया- ''हमें अपना वक्त यूं फिजूल में बर्बाद नहीं करना चाहिए।'' तभी मैंने अपने साथियों को बारी-बारी से आगे चलने को आवाज़ दी थी। मेरे सभी गाड़ी में आकर बैठ गए थे। ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट कर दी थी। मैंने अनुभव किया कि हमारा हरेक साथी तरोताजा और चुस्ती-फुर्ती में दिख रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैनिक अफसर बनने का अधूरा सपना

बाल्यकाल में मैंने एक सुनहरी सपना मन-हृदय में संजोया था कि मैं सेना में अफसर बनूंगा। मैट्रिक करने के बाद सेना में भरती के लिए दो-तीन बार भर्ती होने का प्रयास किया था। इतफाक से भर्ती वाले स्थान पर वहां पहुंचता तो पता चलता कि रंगरूट अफसर ने भर्ती की तारीख और कोई निश्चत कर दी है। मन मसोस कर संध्या समय घर लौट आता था।

मेरी माता श्री बचपन से मन में तीव्र इच्छा पाले हुए थी कि यह मेरा बेटा एक स्कूल मास्टर बने। सुबह घर से पढ़ाने स्कूल जाए और शाम को घर आ जाए। मेरी आंखों के सामने रहे। क्योंकि मेरे मझोले भाई कस्तूरी लाल अशिक्षित होने के कारण एक सैनिक की हैसियत से भर्ती हुए और चौदह वर्ष बाद अपनी वर्दी के कंधे पर एक सफेद फीती लेकर लैस नायक के रूप में पेंशन लेकर घर में आ गए थे। सन् 1962 की भारत-चीन लड़ाई में उनकी गुमशुदा की तार से जो कुछ दिन व्यथा-पीड़ा, गम और ममता की भीषण अग्नि में मेरी भोली-भाली मां को गुजरना पड़ा था, पुनः उसी पीड़ा और व्यथा सहन करने में वह अब असमर्थ थी। जीवन में ममता की परीक्षा वह एक बार और देने में कतई राजी नहीं थी। शायद मां इसलिए मुझे सरकारी शिक्षा विभाग में एक शिक्षित, सम्मानित और राष्ट्र निर्माता के रूप में अध्यापक बनाने के लिए भगवान से अन्तर्वाणी में विनती करती रहती थी।

पिता जी कथलौर के जमींदारों के गुजारे थे। मैंने उन्हें पठानकोट में एसएमडीआरएसडी कालेज में ग्यारहवीं में दाखिल करवाने का अनुरोध कई बार किया था। उनका एक ही उत्तर था- ''जे शेरपुरिए मास्टर दे (बड़े फूफा जी) त्रिआंने दविन्द्र, किशन ते निंदी कालेज जाईए फेल होए गए तूं केडा फट्ट बाई लैणा ए। तेरा दिमाग उनें कोना कोई बदद् थोड़ा ऐ। तूं कालेज जाईए कामयाब कदे नईं होई सकता। कुथ्थै तालीम याफता पिओ दे बच्चे ते कुथ्थै तूं।'' पिता श्री का नकारात्मक उत्तर सुन मैं उदास हो जाता। पिता जी मेरे प्रति हीनभाव, आयोग्यता, लापरवाही, आलस और लड़कियों के पीछे-पीछे मजनूं बन कर इश्कबाजी का पेचाबाजी करने की मिश्रित सी भावनाएं उनके दिलोदिमाग की अतल गहराइयों में स्थायी रूप से घर कर गई थीं। जिनसे निजात पाना कोई आसान बात न थी। आखिर मां की दुआओं और प्रार्थनाओं का प्रभाव हुआ था कि मुझे नरोट जैमल सिंह के सरकारी स्कूल में अनिच्छा होते हुए भी जे.बी.टी. में दाखिल होना पड़ा था। दो वर्ष की इस टीचर ट्रेनिंग में मुझे ट्रेंड टीचर का डिप्लोमा मिल गया था। अब अध्यापक बनना सौ प्रतिशत ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निश्चित था। मां बहुत खुश थी। उनके लिए प्राईमरी अध्यापक, मास्टर केडर व लैक्चरर केडर में कोई अन्तर होने की जानकारी नहीं थी। वह अनपढ़ होने के कारण मेरे सुनहरे भविष्य के प्रति अनभिज्ञ थी।

रामबन पहाड़ी शहर के बाजार में काफी चहल-पहल थी। थोड़ा-सा आगे निकलने पर विनोद कुमार और दौलत राम ने लघुशंका निवारण के लिए ड्राइवर दीवाना को कहीं ठीक स्थान पर गाड़ी रोकने को कहा था। ड्राइवर ने खाली जगह देखकर गाड़ी रोक दी थी। विनोद व दौलत राम लघुशंका से निवृत्त होने को दूसरी ओर चले गए थे। गाड़ी के समीप सेना के जवान तैनात थे। नरेश कुमार शर्मा ने उन्हें जिला गुरदासपुर के सीनियर पुलिस कप्तान का निजी वायरलैस ओप्रेटर के रूप में अपना संक्षिप्त परिचय देकर अपनी गाड़ी के तीर्थ यात्रियों का उनके साथ ग्रुप फोटो करवाने का अनुरोध किया था। सैनिकों ने अनुरोध स्वीकार कर लिया था। पहले ड्राइवर सहित दस व्यक्तियों ने सैनिकों के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाया था। फिर व्यक्तिगत रूप से एक-एक, दो-दो ने फोटो खिंचवाए थे। सैनिक व हम सब बहुत प्रसन्न थे। मैंने वीर सैनिकों से प्रश्न पूछा-"इस वक्त के मुताबिक आप अपनी डियूटी निभाते हुए कैसा महसूस कर रहे हो?" उन सैनिकों में से एक ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया- "श्रीमद् भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण जी ने क्षत्रिय के लिए मैदान-ए-जंग में मरने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति को कहा है। अपने कर्म को ही परम-धर्म स्वीकार किया है। इस समय उग्रवादियों ने 'श्री अमरनाथ भगवान' की यात्रा पर जाने वाले शिव भक्तों को मारना, डराना-धमकाना, रोकना अपना सुपर ऐम तय किया है। ऐसे में-यह भी एक प्रकार के युद्ध का मैदान है जिसमें हमें सरकार ने यहां सुरक्षा को तैनात किया है। हम बड़े भाग्यशाली है, जो इस धार्मिक-कार्य में यात्रियों की सुरक्षा के लिए यहां खड़े है।"

इतने में राकेश शर्मा व पवन कुमार ने दोनों हाथ, बांध कर उनका धन्यवाद किया और बोले- "धन्यवाद भैया! कुछ बातें और करते और सुनते। परन्तु टाईम पर जवाहर टॅनल को पार करना है।"

सैनिकों ने भी हमारा हार्दिक अभिवादन किया था। ड्राइवर अशोक दीवना ने गाड़ी चला दी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनिहाल-कश्मीर का द्वार

पीरपंचाल पर्वतों को पार करती हुई हमारी गाड़ी निरन्तर बढ़ती हुई चली जा रही थी। कुछेक गाड़ियां हमारे पीछे और कुछ आगे चल रही थीं। कल्हण ने अपने कश्मीर के इतिहास में पीर पंचाल पर्वत श्रंखला के पूर्व की ओर बागशाला का वर्णन किया है। यही वर्तमान समय का बानिहाल यानि बनिहाल है, जिसे कश्मीर भाषा में 'द्रंग' कहा जाता है। हम बनिहाल के बाजार से जा रहे थे। यहां की शीतल-सुखद-स्वच्छ वायु ने हमारा ताजगी देकर स्वागत किया था।

अढ़ाई बजे के करीब हम 'जवाहर सुरंग' पर पहुंच गए थे। सुरंग के सम्मुख काफी खुला स्थान है। मैंने देखा-वहां पर बख्तरबंद गाड़ी पर हमारे वीर सैनिक चौकस और कर्त्तव्यनिष्ठ भावना से मशीनगनों पर तैनात थे। अब आवागमन को दोनों सुरंगें चालू हालत में थीं। हमारे नौ यात्रियों के दल में कुछ तो पहली बार इस मार्ग पर आए थे। जो पहले इधर आते रहे थे, उन्हें तो इधर की काफी जानकारी थी। रोहित, लव कुमार और विनोद कुमार नए यात्री थे। वह गगनचुम्बी पहाडों के नीचे सुरंगें देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न थे।

जब मैं अपने परिवार सहित इधर ससुराल घर को जाने हेतु आता तो श्रीमती पुष्पलता शर्मा अपने माता-पिता से सुना-सुनाया किस्सा बयान करने लगती। कहती मम्मी-पापा जी बतलाते हैं कि जब यह सुरंग नहीं बनी थी, हम नौ सीटों वाली बस में इस सुंरग वाले पर्वत के साथ-साथ सफर तय करते थे। रात राह में पड़ते गांव बनिहाल में व्यतीत करते और दूसरे दिन संध्या समय जम्मू पहुंचते थे। फिर वह कहने लगती- "इस टनल को जर्मनी की कम्पनी ने सन् 1954 में बनाना शुरू किया था। और अपने रिकार्ड टाईम लगभग दो साल में बन कर तैयार हो गई थी। अब सुबह जम्मू से नाश्ता करके चलो, दिनभर अलग-अलग पड़ाबों से खाते-पीते, बतिआते हुए इवनिंग टी श्रीनगर घर जा कर पिओ। रात का डिनर करके आराम से सो जाओ।"

सोचता हूं- जम्मू कश्मीर रियासत का भारत में विलय 26 अक्तूबर, 1947 को हुआ था। 15 अगस्त से 26 अक्तूबर के लघु अन्तराल में भारत ने इस स्वर्ग सी धरती का 2/5 भाग राजा हरिसिंह की अदूर दर्शिता , हठ और पाकिस्तान से की गई संधि के कारण खो दिया था। महात्मा गांधी की और आजाद इंडिया के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के हठ के कारण, सरदार पटेल की समयोजित राय को न मानना कितना हानिप्रद और कष्टदायक सिद्ध हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जम्मू कश्मीर की चिंतनीय स्थिति पर यह शेर सोलह आने चरितार्थ होता है-

वह वक्त भी देखे हैं, तारीख की गहराइयों ने।
लम्हों ने ख़ता की थी, सदियों ने सज़ा पाई।।

इतना बड़ा भूभाग पाकिस्तान के हाथों मुफत में खोने का दुःख जहां राष्ट्र प्रेमी भारतीय जनता को हुआ, सरदार पटेल को उससे कहीं ज्यादा हुआ। जम्मू कश्मीर की इस रियासत के मामलों को, भारत के गृहमंत्री होने के नाते सरदार पटेल को परे रखना, कुछ और भौगोलिक नीतियों में जवाहर लाल नेहरू से मतभेदों की चौड़ी, होती खाई ने उनके मन में कुढ़न, पीड़ा को पैदा किया, जिसका परिणाम उन्हें हृदय की बीमारी ने आ घेरा और 15 दिसम्बर, 1950 को यमलोक ले गई। स्वतन्त्र भारत के लिए लौह पुरुष की मृत्यु एक बहुत बड़ी क्षति थी। जिसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

यह सुरंग भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 22 दिसम्बर, 1956 में अपने कर कमलों से राष्ट्र को सर्मपित की थी। भारत की केन्द्रीय सरकार ने जवाहर सुरंग बना कर जम्मू कश्मीर को सेतु के रूप में जोड़ दिया था। यह कार्य प्रशंसनीय था। कश्मीर घाटी की सुरक्षा के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था।

गाड़ियों के इस काफिले में हमारी गाड़ी भी प्रवेश कर गई थी। लव कुमार मेरे साथ बैठा था। बोला- ''यश अंकल जी।''

मैंने उसे पूछा- ''क्या बात है लव बाबू?''

''सुरंग से डर लग रहा है।''

''नहीं मरेगा तू। तेरी जान निकल रही है।'' रोहित ने उसे सुन कर खीझ कर जवाब दिया था। दोनों हमउम्र थे। कुंवारे छोकरे थे। एक-दूसरे को चिढ़ाने से बाज न आते थे। थोड़ी सी बात पर आफस में सींग फंसा लेते थे। ''अरे पनीर खा कर आदमी ताकतवर और दिलेर बनता है। तू गीदड़ बना है। आगे से पनीर खाना छोड़ दे।'' मजाक के लहजे में पवन कुमार बोला।

''अरे इकलौता पूत है बाप का। उसे अपने बाप का बड़ा ख्याल आ रहा है। मैं मर गया तो पीछे से बूढ़ा कारोबार कैसे चलाएगा।'' राकेश शर्मा का इतना कहना था कि हम सभी साथी-साथी खिलखिला कर हंसने लगे। मुझे बोलने का अवसर ही नहीं मिला था। ड्राइवर अशोक दीवाना की टेप बजने लगी थी- ''बिल्ली मार दियांगे।'' मैं मन-ही-मन सोच रहा था- ''किसी को मारना ही है तो यात्रा के जानी दुश्मन आतंकवादी को मारो। बिल्ली बेचारी ने क्या बिगाड़ा है जो उसे सुबह से मारने पर उतारू हो गए हो और धमकियां दे रहे हो।'' यही बात मैंने अपने साथियों को थोड़े ऊंचे स्वर में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कह सुनाई तो सभी ही-ही-हा-हा करके हंसने लगे थे।

गाड़ी सुरंग से चली जा रही थी। सांय-सांय की घनघोर सी आवाजें आ रही थीं। लव कुमार सुरंग के अंधेरे और भयानक आवाजों से भयभीत हुआ जा रहा था। मेरे कंधे पर हाथ रख कर बोला- ''यश अंकल जी! अगर यह सुरंग अब बैठ जाए तो क्या बनेगा हमारा?'' कहा तो उसने मुझे सुनाने की गर्ज से था, परन्तु राकेश शर्मा ने बात सुन ली थी। वह गुस्से से बोला- ''फिट्टे मुंह तेरा। तेरे मुंह सुआह! ओए गधे शुभ-शुभ बोल। जे टनल हुण बैठ जाए तां सुरंग विच फसे यात्रियां दी चटनी बन जावे।''

लव कुमार राकेश की करारी डांट से चुप हो गया था। मैंने लव कुमार के भय को दूर करे की तरकीब सोची थी। दौलत राम को भगवान शिव शम्भू के जयकारे बुलाने को कहा था. दौलत राम ने जयकारे बुलाने आरम्भ कर दिए थे- ''जय अमरनाथ की! जय त्रिलोकी नाथ की!! नीलकंठ भगवान की जय!!!'' हम सभी साथी दौलतराम के जयकारों का उत्तर ऊंचे स्वर में दे रहे थे। सुरंग की लम्बाई लगभग तीन किलोमीटर थी। ज्यों ही गाड़ी टनल से बाहर निरली-उत्तर पूर्व में कश्मीर घाटी का नजारा अनुपम, अकथनीय और नयनाभिराम था। लव कुमार, रोहित और विनोद कुमार कश्मीर घाटी की मनोरम छटा देखकर मुंह बाये अपलक अनिंद्य प्रकृति-सुन्दरी को निहारने लगे थे।

घान के खेतों में रोपाई हो चुकी थी। खेत और इनकी मेंढें ऐसे प्रतीत हो रही थी, मानो किसी नामी-गिरामी चित्रकार ने धरती-रूपी बड़े कागज पर दत्त चित्त होकर कलात्मक कृति बना डाली हो। लगभग तेरह वर्ष के दीर्घकालीन समय होने पर मैं पुनः अद्वितीय कश्मीर घाटी को देख रहा था। खेतों में जिधर नजर जाती, दूर-दूर तक फैले पेड़ों के झुंड बहुत मनमोहक लग रहे थे। गाड़ी अब ढलान पर चलने लगी थी। पहले अप्पर मंडल गांव दिखाई दिया था। फिर काफी ढलानी-सफर तय करके लोअर मंडल गांव दृष्टिगोचर होने लगा था। घाटी के प्राकृतिक-सौन्दर्य का रसास्वादन करते हुए, हल्की-फुल्की लव कुमार से होती चुहलबाजी में हम काजीगुंड पहुंच गए थे। अब तो मैदानी इलाका था। ठीक अपने पंजाब सा समतल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नुनगांव बेस कैंप में लंगरों की सुव्यवस्था

'गंगा सिन्धुस्तु, विज्ञेया वितस्ता यमुना तथा।'

कश्मीर में सिंधु को गंगा की उपाधि दी गई है। नीलमत में वितस्ता को यमुना और सिंधु को गंगा कहा गया है। अतः इनके संगम को प्रयाग की उपाधि देना उचित है।

कल्हण की साक्षी के अनुसार इस संगम का पुनरूद्धार 'सूय्या' ने किया। यह संगम बहुत ही प्राचीन समय से पावन माना जाता है। यहां श्राद्ध और अस्थि विसर्जन किए जाते हैं। 'सुय्या' ने वितस्ता (जेहलम) के प्रवाह में गतिशीलता लाई थी। कल्हण आगे लिखता है कि संगम पर विष्णुस्वामी और वैयस्वामी नाम के दो मन्दिर थे, जो फलपुर और परिहासपुर (कश्मीर परसपोर) के बहुत निकट थे। इसके अलावा वह लिखता है कि 'सूय्या' ने ऋषिकेश योग स्वामी का भी मन्दिर बनवाया जो उसका इष्टदेव था। यह संगम 'सुन्दरी भवन' नामक स्थान पर निर्मित करवाया था।

आंतकवाद और कश्मीरी पंडितों के कश्मीर से विस्थापित होने से पहले मैं जब भी बस पर काजीगुंड आता, यहां लगभग हरेक बस रुकती थी। लोग चाय-पानी पीकर तरोताजा होते थे। सेब, चैरी, बादाम, अखरोट व अन्य वस्तुओं की खरीद-फरोख्त सैलानी करते थे। परन्तु कुछ दिन पूर्व जहां रुकी हुई गाड़ियों पर और सैलानियों पर उग्रवादियों ने जबरदस्त हमला किया था। काफी मात्रा में अमरनाथ यात्री काल का ग्रास बने थे। अब यहां कोई गाड़ी जाते हुए रुक न रही थी। गाड़ियां निरन्तर अपनी गति से दौड़ी चली जा रही थीं। गाड़ियों में बैठे अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालु भगवान के जयघोष के नारे ऊंचे-ऊंचे लगा रहे थे।

सड़क के दोनों ओर पापुलर के दरख्त सैनिकों की तरह योजनाबद्ध तरीके से खड़े मानो आकाश को छूने का अरमान हृदय में पाले हों। मैंने कुछ फिल्मों में शूटिंग किए वृक्षों के गगनचुम्बी दृष्य देखे थे, जिनकी चिताकर्षक छटा प्रत्येक मानव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ थी।

मार्ग में खन्ना बल पहुंचने पर हमें सुरक्षाबलों का आदेश मिला था कि यात्री अपनी गाड़ी के शीशे पूरी तरह बंद करके रखें। उन्हें ऐसा पता चला था कि कोई शरारती तत्त्व हैंडग्रनेड खुले शीशे वाली गाड़ी में फैंक सकता है। यात्री और सुरक्षाबल कोई रिस्क नहीं उठाना चाहते थे। यात्रियों ने आदेश मिलते ही गाड़ियों के शीशे पूरी तरह बंद कर दिए थे। खन्नाबल से दूर आगे निकंलने पर समस्त यात्रियों ने गाड़ियों के शीशे खोले थे। राजमार्ग के दोनों और सी.आर.पी., बी.एस.एफ. व भारतीय सेना के वीर जवान सुरक्षा हेतु चौकसी में खड़े थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खन्ना बल के बाद जो भी गांव आए, अबोध बच्चे सड़क पर आकर हाथ हिला-हिलाकर अभिवादन कर रहे थे। कुछ यात्री गाड़ी की खुली खिड़कियों से पैसे या खाने-पीने की चीज़ें उनके लिए फैंक देते थे। बच्चे उन्हें सहर्ष उठा रहे थे। प्रसन्न हो रहे थे तालिएँ पीट रहे थे। अमरनाथ भगवान के यात्रियों के जयघोष के उत्तर में वह भी अमरनाथ भगवान के जयघोष करके खुश हो रहे थे। बच्चों के मन दर्पण की तरह साफ व गंगा जल की भांति पवित्र थे। इसीलिए अबोध बच्चों को भगवान का दूसरा स्वरूप माना जाता है- जिन में ऊंच-नीच, राजा-रंक, अपने-पराए व ईर्ष्या-द्वेष के भाव नहीं होते व पूर्णतय: शुद्ध बुद्ध व मुक्त होते हैं।

दूसरी ओर यात्री किसी मुसलमान सिपाही को हाथ हिला कर बाय-बाय करते तो वह बुरा मुंह बना कर अपना मुंह दूसरी ओर फेर लेता। उनका ऐसा करना हमें बहुत बुरा लगता था।

सायंकाल के सात बजे के लगभग हम नुनगांव पहुंच गए थे। गाड़ी के ड्राइवर अशोक दीवाना को हमने तीसरे दिन प्रात: बालटाल के बेस स्टेशन पर मिलने को कहा था। वह गाड़ी लेकर श्रीनगर को रवाना हो गया था।

समस्त अमरनाथ यात्री थक कर चूर हो चुके थे। किसी भी यात्री को बाहर होटल या और कहीं ठहरने पर मनाही थी। बड़े लम्बे-चौड़े एक मैदान को कंटीली तार लगा कर यात्रियों के विश्राम करने व लंगरों का समुचित प्रबन्ध अंदर ही किया गया था। अनेक बार की चैकिंग के उपरान्त यात्रियों को लम्बी कतार बनाने के लिए मुसलमान पुलिस वाले तैनात किए गए थे। मुस्लिम पुलसियों का यात्रियों से व्यवहार अमानवीय था। उनमें खीझ, घृणा व धार्मिक कट्टरता की भावनाएं स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। शैतान की आंत की भांति यात्रियों की पंक्तियां लम्बी बनती जा रही थीं। इन यात्रियों में प्रौढ़ आयु, महिलाएं, नौजवान युवक-युवतियां, बच्चे और बूढ़े व्यक्ति भी थे। कई निर्बल बूढ़े व्यक्ति, महिलाएं व बच्चे बार-बार धरती पर बैठ कर अपनी आगे जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। और इन मुस्लिम सिपाहियों के व्यवहार से ऐसा प्रतीत होने लगा था कि इनका उद्देश्य यात्रियों की सुख-सुविधा व सहयोग देने को नहीं, बल्कि पीड़ित करने के मकसद से इन्हें यहां विशेष रूप से तैनात किया गया है। नरेश कुमार पंजाब के पुलिस विभाग में काम करते हैं। मैंने इन मुस्लिम पुलसियों के यात्रियों से किए जा रहे व्यवहार की ओर ध्यान आकृष्ट किया तो वह कुढ़कर रह गए। वह बोला- "अंकल जी! इस समय हम लाईनों में लगे हैं। नहीं तो इन्हें अच्छा सा सबक सिखा जाता कि पुलिस की ड्यूटी जनता की रक्षा व सुख सुविधा को है। परेशान करने को कतई नहीं। सेना या अर्ध सैनिक बलों के जवानों का यात्रियों से व्यवहार बड़ा मधुर, सहयोगी और अपनत्वपूर्ण था। लगभग नौ बजे रात्रि के कैंप के अन्दर प्रवेश करने की अनुमति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिली थी। शेष यात्री कब कैंप के अन्दर आए व उनकी क्या दशा हुई, इस बात से मैं अनभिज्ञ रहा था।

शिव भक्तों ने यात्रियों के खानपान के लिए चार लंगर साथ-साथ व आमने-सामने लगाए थे। इन लंगरों में शिव भोले भंडारी कीस्पीकर व ऊंची-ऊंची आवाज में भजनों की कैसेटें बज रही थीं। भजन थे-

जय गौरी शंकर, कैलाशपते जय शिव जै शिव।
जय महादेव जय चन्द्रमौलि, जय श्री शंकर जय शिव जै शिव।
जय मृत्युंञजय भालेश्वर जय, योगेश्वर जय शिव जै शिव।
जय पार्वती-पति परमेश्वर जय, कतारि जय शिव जै शिव।
जय गंगाधर त्रिपुरारी विभो, जय भवहारि जय शिव जै शिव।
जय आशुतोष जय महाकाल, कालहुके काल जय शिव जै शिव।
जय ओंकारेश्वर रामेश्वर,जय बैजनाथ जय शिव जै शिव।
जय अभिनाशी जय शम्भो, जय विश्वनाथ जय शिव जै शिव।
जय त्रिगुणातीत महेश्वर जय, निर्विकार जय शिव जै शिव।
सिर नाई जोरि कर विनती है, स्वीकार करो जय शिव जै शिव।
मन हृदय विराजो भक्ति देहू, सब पाप हरो जय शिव जै शिव।
मेटो 84 का चक्कर, कर जन्म सफल जय शिव जै शिव।
शरणागत हूं नाथ मैं, करो मेरी प्रतिपाल।
त्राहि-त्राहि अशरण शरण शम्भो होहु दयाल।।

दूसरे लंगर की कैसेट पर भगवान शिव शंकर के महा-मृत्युंजय मंत्र का जाप हो रहा था-

ओम त्र्यवकं यजामाहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामर्तात्।

अर्थात्- 'तीन नेत्रों वाले, उत्तम गंध से युक्त तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाले भगवानशिव जी की हम पूजा करते हैं। जैसे खरबूजा पूरी तरह पक जाने पर स्वत: अपनी डाल से अलग हो जाता है, वैसे ही हम पूर्ण जीवन पाने के उपरान्त बिना कष्ट के अमरत्व प्राप्त करें।'

सब से पहला काम हमने टैंट किराए पर लेने वाला किया था। यह टैंट मुस्लिम बिरादरी के थे। इन मुसलमानों का बर्ताव हमसे बहुत मधुर था। इनके व्यवहार में आतिथ्य सत्कार, प्रेम और सहानुभूति पूर्ण था। इन व्यापारियों का उद्देश्य हमारी सुविधा व सेवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का ध्यान रखना अधिक था, पैसा नम्बर दो पर था। कहते हैं- हाथ की पांचों ऊंगलियां बराबर नहीं होतीं। अतः किसी भी धर्म व समुदाय में अलग-अलग स्वभाव व नीयत के नर-नारी मिलते हैं। और उनके मूलभूत मानवीयता की तीन कसौटियों के मुख्य सिद्धांतों-आचार, विचार और व्यवहार से पहचान हो जाती है।

टैंट में हमने अपना सामान रखा व रखवाली करते हुए बारी-बारी से खाना खाया। इन लंगरों की बढ़िया सुन्दर व्यवस्था से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह सचमुख ही भोले-भंडारी के लंगर हैं जिनमें बने व्यंजनों की इतनी भरमार थी, जिसका वर्णन करना असम्भव है। लंगरों के स्वामियों का व्यवहार मधुर व शालीनता से भरा था। प्रत्येक लंगर के मालिकों की यही मंशा थी कि ज्यादा से ज्यादा भगवान अमरनाथ प्रेमी यात्री लंगर हमारी ओर से खाएं। लंगरों में बने स्वादिष्ट व्यंजनों में अनेक तरह के मिष्ठान व नमकीन थे। आचार और पिश्ते-बादाम-इलायची वाला गरमामार्ग दूध भी था। शिव भक्त अपने पसंद के व्यंजन इन चारों लंगरों से ढूंढ कर खा पीकर आनन्द ले रहे थे। ऐसा आभास यात्रियों को हो रहा था कि वह धरती पर नहीं, मानो स्वर्ग में लगे लंगर हों। भोले-भंडारी के लगे लंगरों में भला न्यूनता कैसे हो सकती थी? यही अतिथि-सत्कार व परमार्थ सनातन धर्म की सेवा की मूसलाधार भावना और मानव जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य निर्धारित करता है। जिंदगी में सेवा, धर्म पालन और भगवान में दृढ़ आस्था ही सुख-शांति के अलौकिक अमृत-कलश हैं जो प्रत्येक मानव के भाग्य में नहीं हो सकते। ऐसी दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति अनेकानेक जन्मों के पुण्य के फलों के प्रताप से ही अर्जित होती हैं।

हरेक लंगर में रोगी व्यक्तियों के लिए उपचार हेतु डॉ. लोग औषधि व इंजेक्शन लेकर बैठे थे। यह व्यक्ति इतनी दूर कष्ट सहन करके, लाखों रुपया व्यय करके, अपना कारोबार छोड़कर यहां आने वालों का एक ही परमधर्म को आधार मान कर मानव सेवा में जुटे इन पुण्यात्माओं का एक ही लक्ष्य था-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्रणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग् भवेत्।।

हर यात्री यहां लंगर मालिकों की सेवा-भावना, नम्रता व व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा था। कुछेक लंगर कमेटियों के नाम इस प्रकार हैं- 'श्री हरि ओम सेवा ट्रस्ट-बुडलाडा', 'श्री जटाधारी सेवा मंडल', 'जय शिवदीप सेवा सोसायटी', 'अमरनाथ बर्फानी सेवा मंडल', 'त्रिलोकीनाथ सेवा ट्रस्ट'।

लगभग ग्यारह-बजे रात्रि के हम सभी साथी विश्राम को सो पाए थे। सुबह अमरनाथ यात्रा को प्रस्थान करना था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्दनबाड़ी होते हुए पिस्सू घाटी की चढ़ाई

रविवार पांच अगस्त थी। प्रात: काल तीन बजे मेरी आंख खुल गई थी। मैं उठ कर बैठा तो मन में विचार आया- इस विशाल भीड़ के जागने से पहले मुझे शौचादि से निवृत हो जाना चाहिए। नहा-धो लेना चाहिए। इस जनता के रेले से सरकने से पूर्व तो घंटों बारी नहीं आएगी। साढ़े तीन बजे मैंने नहा धो लिया था। ठंडी-ठंडी तेज हवा चले लगी थी। ठंड बहुत ज्यादा थी। बर्फ की तरह शीतल जल से नहाते वक्त मैं बुरी तरह से कांप उठा था। कपड़े पहनकर मैंने कम्बल ओढ़ लिया था। चार बजे मैंने शेष साथियों को हिला-हिला कर उठा दिया था। विनोद और रोहित को बड़ी मुश्किल से उठाया था। पांच बजे के करीब लगभग सभी नहा-धो कर तैयार हो गए थे। सभी प्रसन्न, स्वस्थ व तरोताजा थे। दौलत राम ने लव कुमार को छोड़ते हुए कहा- ''पनीर वाले कैसे हो?''

''तुझे मैं कैसा दीख रहा हूं।'' लव कुमार ने ऐसे शाऊर से कहा कि सभी खिलखिलाकर हंसने लगे थे। फिर सबने अपना-अपना सामान उठाया और लंगर की तरफ चल दिए थे। जिस लंगर पर हम चाय के साथ बिस्कुट खाने लगे थे, वहां भगवान शिव की आरती की कैसेट बज रही थी। शब्द थे-

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।।
ओम हर-हर महादेव।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन राजै।
ओम हर-हर महादेव।
दो भुज चार चतुरभुज दशभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै।।
ओम हर-हर महादेव।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी।
ओम हर-हर महादेव।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे।
ओम हर-हर महादेव।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।
ओम हर-हर महादेव।
त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
भजत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावै।
ओम हर-हर महादेव।

हरेक यात्री शिव भोले की आरती सुनकर भगवान के प्रति अन्नय भक्ति, आस्था, प्रेम में आत्म विभोर हो रहा था। कुछ भक्त आंखें मूंदे थोड़ी-थोड़ी देर का भगवान के चरण कमलों का ध्यान कर रहे थे। हल्का-सा नाश्ता करके हम उस तरफ चल पड़े थे, जिधर चन्दनबाड़ी के लिए मिनी बसें चलती थीं। मेरे मन में अमरनाथ यात्रा की कथा जो मैंने अपने मित्रों से सुनी थी, मानस-पटल पर चलचित्र सी चलने लगी थी। मैं मानस झरोखे से देखता हूं कि माता पार्वती भगवान शंकर से अपनी शंका निवारण हेतु समीप बैठी हुई मंद मुस्कान से पति को देख कर बोली- ''भगवन् आप अपने गले में मुण्डमाला धारण क्यों करते हों?''

अपनी अर्धांगिनी का प्रश्न सुनकर भगवान भोले नाथ कुछ क्षण मौन धारण किए रहे। फिर पत्नी की शंका का निवारण करने को बोले- ''हे पार्वती! जितनी बार तुम्हारा जन्म हुआ, उतने ही मुण्ड मैंने धारण किए हैं।''

पतिदेव का उत्तर पाकर पार्वती बोली- ''हे कैलाशपति नाथ, मेरा तन तो नाशवान है और मृत्यु को प्राप्त होता है। परन्तु आप अमर हैं। इस अमरता का कारण बताने की अनुकम्पा करें।'' सुनकर भगवान शिवने रहस्यमयी मुस्कान से पार्वती की ओर देखा। फिर बोले- ''हे प्रिये! मेरी अनश्वरता अमरकथा के कारण है।''

ऐसा सुनकर पार्वती के मन में भी अमरत्व प्राप्त कर लेने की इच्छा जाग्रत होने लगी थी। वह भगवान शिव को अमरकथा सुनाते हेतु पतिदेव से बार-बार आग्रह करने लगी थी। भगवान भोले नाथ कितने ही वर्षों तक पत्नी के आग्रह को टालते रहे थे। परन्तु पार्वती के बार-बार अनुरोध करने पर त्रिलोकी नाथ को बाध्य होना पड़ा था। परन्तु मुश्किल यह थी कि और कोई जीव इस कथा को न सुने। अतः ऐसे निर्जन और एकांत स्थान की खोज करते हुए शिव भोलेनाथ, पार्वती संग पर्वत शिलाखंडों में पधारे थे। परन्तु अमरकथा सुनाने से पहले भगवान शिव यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि अमरकथा निर्विघ्न पूरी हो। उसमें कोई बाधा उत्पन्न न हो। पार्वती के अतिरिक्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे कोई प्राणी न सुन सके। उचित एवं निर्जन स्थान की खोज करते हुए वे सर्वप्रथम 'पहलगाम' पहुंचे। यहां उन्होंने अपना बैल (नन्दी)को छोड़ दिया। वास्तव में इस स्थान का प्राचीन नाम बैल-गांव था। जो बाद में बिगड़कर तथा क्षेत्रीय भाषा के उच्चारण-प्रभाव से पहलगांव बन गया।

इतने में हम उस स्थान पर आकर खड़े हो गए थे, जहां से चन्दनबाड़ी के लिए मिनी बसों मिलती थीं। मिनी बसें आने लगी थीं। यात्रियों की भीड़ उनमें चढ़ने लगी थी। हम भी एक मिनी बस पर चढ़ गए थे। यात्रियों से ठसाठस भरी बस हमें लेकर 'लेद्री' नदी के किनारे चलने लगी थी। नीचे बहती लेद्री सरिता बड़ी मनमोहक लग रही थी। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर देवदार के वृक्ष बड़ा रमणीय दृष्य बना रहे थे। कहीं-कहीं पर्वतों की चोटियों पर भेड़-बकरियों के झुंड चरते हुए दृष्टिगोचर हो रहे थे। मैं सोच रहा था कि पहाड़ों पर रहने वाले इन गड़रियों, चरवाहों का जीवन कितना संघर्षमय, निर्धनता और यातनापूर्ण है। इतनेमें चन्दनबाड़ी नाम का स्थान आ गया था। अमरनाथ प्राचीन कथा के अनुसार चन्दनबाड़ी में भगवान शिव नेअपनी जटाओं से चन्द्रमा को मुक्त किया था।

पिस्सू घाटी के बारे में पुराणों में विवरण प्राप्त होता है कि एक बार देवता एवं राक्षस भगवान श्री सदाशिव के दर्शनों के लिए आए और पहाड़ पर चढ़कर ईर्ष्याग्रस्त होकर आपस में झगड़ने लगे। देवताओं ने भगवान शंकर का ध्यान किया और भगवान की कृपा से राक्षसों का वध कर दिया। इस स्थल पर राक्षसों की अस्थियों का ढेर लगा गया। वह चोटी के समान बन गया था।

बसों से उतराकर कुछेक यात्री घोड़े वालों से सवारी हेतु पैसे तय करने लगे थे। पिस्सू घाटी का रास्ता कठिन चढ़ाई वाला था। हम सब ने तय किया कि चढ़ाई पैदल की जाए। घंटाभर का मार्ग हमारे लघु-दल ने आघे-पीछे चलते हुए धीरे-धीरे निपटाया था। पर चढ़ाई बड़ी कठिन थी। दस मिंट चलते तो दिल धक-धक करने लगता था। लव कुमार और रोहित ने पिस्सू घाटी की आगे की चढ़ाई में पैदल करने में हाथ खड़े कर दिए थे। नरेश कुमार, अशोक कुमार और मैंने पैदल चढ़ाई करने का निर्णय किया था। बाकी साथियों ने घोड़े पर चढ़ाई करने के लिए घोड़े वालों से पैसे तय कर लिए थे। भगवान के जयकारों के बीच युवक-युवतियां और अधेड़ स्त्री-पुरुष हांफते हुए चढ़ाई का रास्ता निपटा रहे थे। पिस्सू घाटी की चढ़ाई पूरी होने को थी। तभी हमारे पांचों साथी घोड़ों पर सवार राकेश शर्मा व चार दूसरे साथी हमारे बराबर मार्ग पर आ गए थे। दौलत राम पिस्सू घाटी के ऊपर समतल मैदान पर लगे शिव भोले भंडारी के लगे लंगर में सबसे पहले पहुंच चुका था। भतीजा अशोक कुमार अपनी मौसी के लड़के राकेश शर्मा से मजाक में बोला- ''गुरदासपुरिए आ गए हैं। भई यह बहुत ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहादुर और शूरवीर है। और इन लव कुमार और रोहित-दोनों हट्टे-कट्टे कुंवारे नौजवानों को देखो तो। अरे आप से पैदल नहीं चला जाता।'' राकेश कुमार और पवन कुमार सुन कर ही-ही करके हंसने लगे थे। अशोक कुमार व मेरी ओर संकेत करके रोहित कुमार और लव कुमार एक स्वर में बोले- ''आप दोनों चाचा-भतीजा कंजूस मक्खी चूस हो। पैसा खर्च करना नहीं चाहते।'' इस पर हल्के-फुल्के मजाक करते हुए पिस्सू घाटी की चढ़ाई को फतेह कर लिया था। पहाड़ की टेकरी पर खूब हरा-भरा घास का मैदान था। हमारे कुछ साथियों नेवहां फोटो भी खींचे थे। इस पहाड़ की सुखद शीतल पवन के झोकों के स्पर्श ने हमारी यात्रा की थकान को दूर कर दिया था। वहां से उत्तर-पूर्व दिशा की ओर प्राकृतिक दृष्यों से हम सब आनन्दित हो उठे थे।

लंगर में हर तरह का मिष्ठान, नमकीन व शीतल पेय का बढ़िया प्रबन्ध था। स्पीकर पर अमरनाथ बर्फानी की महिमा के टेप बज रहे थे। कुछ छोकरे-छोकरियां यहां मस्ती में नाच रहे थे। अपनी भूख-प्यास के मुताबिक समस्त साथियों ने लंगर से खा पी लिया था। लव कुमार भारी व कर्कश स्वरों में शिव भोले भंडारी के जयकारे बुलाने लगा था। हम अगली यात्रा के लिए पुनः चल पड़े थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर में शैव-दर्शन का सूत्रपात-1

शिवोपासना भारतीय धर्म का एक प्राचीनतम अंग है। सिन्धु घाटी की सभ्यता के अवशेषों से यह बात प्रमाणित हो रही है कि आज से कम से कम पांच हजार वर्ष पहले के प्रागैतिहासिक युग में इस देश में पशुपति शिव की मूर्तियों की तथा शिवलिंगों जैसे प्रतीकों की और स्वस्तिक, त्रिकोण और यन्त्रों की पूजा भारत में हुआ करती थी। साथ ही शैवयोग का और विशेष करके शाम्भवी मुद्रा का अभ्यास भी यहां होता था। द्रविड प्रांतों के और विशेष करके तमिल भाषी प्रदेश के सिद्धांत शैव की धार्मिक परम्परा भी प्रागैतिहासिक युग से चली आ रही है। डॉ. यदुवंशी झा के शोध प्रबन्ध ''शैवमत'' में अनेक प्रमाणों के द्वारा इस बात को सिद्ध करने का यत्न किया गया है कि शिव की उपासना मूलत: भारत के आदिवासियों में लोक प्रचलित थी। धीरे-धीरेवैदिक आर्यों के धर्म में प्रवेश करते-करते महाभारत काल तक वैदिक धर्म का एक प्रधान अंग बन गई।

आचार्य बादरायण के ब्रह्म सूत्र में दिए गए 'पत्याधिकरण' के सूत्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि ईस्वी सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों में भी कोई शैव दर्शन प्रचलित था। उसका आधार शैव आगम थे। वह शैव दर्शन पासुपत दर्शन कहलाता था। उसी दर्शन का अभ्यास करने वाला पाशुपत सिद्धों का उल्लेख महाभारत में मिलताहै। तत्पश्चात् उसी पाशूपत शैव दर्शनका पुन: प्रचार ''पाशुपत सूत्र''और उस पर विरचित 'कौण्डिन्य भाष्य' के द्वारा हुआ। कमाद्, अक्षपाद, भासर्वज्ञ, उदयन आदि न्याय वैशेषिक दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य पाशुपत परम्परा के ही अनुयायी थे। इस तरह से शैव दर्शन का वाङमय सबसे पहले शैव आगमों के रूप में और तदनन्तर पाशूपत सूत्र आदि ग्रंथों के रूप में प्रकट हुआ।

कश्मीर का शैव दर्शन सभी शैव दर्शनों से विलक्षण है। इसका आर्विभाव कलियुग में नए सिरे से शुरू हुआ। और वह लगभग तीसरी चौथी शताब्दी में कैलाश पर्वत पर हुआ था। आठवीं शताब्दी के लगभग इस शाखा के तत्कालीन प्रधान गुरु आचार्य संगममादित्य कश्मीर में आकर वहीं बस गए थे। इस प्रकार इस दर्शन कीस्थापना कश्मीर में हुई। यहां के साधकों की उर्वरा हृदय-स्थली में तथा वैसी ही मस्तिष्क-स्थली में इस दर्शन के बीजों का ऐसा विकास हुआ जैसा आज तक किसी भी दूसरी दर्शन शाखा का नहीं होने पाया था। यहां के शैव गुरुओं को 'त्रिक' नामक आगम शास्त्रों का साक्षात्कार हुआऔर आचार्य वसुगुप्त को शिवसूत्रों का दर्शन हुआ। उन त्रिक आगमों और शिव सूत्रों के आधार पर ईसा की नवम शताब्दी में भट्ट कल्लट ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
'स्पन्द शास्त्र' का निर्माण किया। उसी शताब्दी में आचार्य सोमनन्द ने तर्क-प्रधान ग्रंथ 'शिव दृष्टि' की रचना की। उनके शिष्य आचार्य उत्पलदेव ने ईश्वर प्रत्यभिज्ञा, सिद्धत्रयी और परापंचशिका आदि ग्रंथों द्वारा इस शास्त्र के दर्शन सिद्धांतों के पक्ष को परिपूर्ण विकास स्थिति पर पहुंचा दिया था। उनके शिष्य के शिष्य ने, अर्थात् आचार्य अभिनवगुप्त ने, एक तो उनके दर्शन ग्रंथों की स्पष्ट व्याख्याएं लिखीं और दूसरे इस दर्शन शास्त्र का स्पुट स्पष्टीकरण तन्त्रालोक, तन्त्रसार आदि ग्रंथों के द्वारा किया। स्पन्दशास्त्र की भट्ट कल्लट कृत कारिकाओं की व्याख्या उनके लगभग समकालीन ग्रंथकार आचार्य राम कण्ठ ने की और आगे भट्ट कल्लट की ही परम्परा की छटी पीढ़ी के शिष्य भट्ट भास्कर ने शिवसूत्रों के रहस्यों का स्पष्टीकरण अपने वार्तिक में किया। आगे अनेकों टीकाकारों ने और ग्रंथकारों ने नई-नई रचनाएं कीं और टीकाएं लिखी। उस लेखक कार्य की परम्परा कश्मीर मण्डल में वर्तमान युग तक चलती आ रही है। परन्तु मुख्य ग्रंथकार और मान्य ग्रंथकार वसुगुप्त से लेकर भास्कर तथा अभिनव गुप्त तक ही के हैं। आगे क्षेमराज जैसे लेखकों ने इस शास्त्र में ऐसी नवीनताएं लाने का प्रयास किया जिनमें उनका भी नाम बना। उनके ऐसे प्रयासों से उस शास्त्र की परम्परा में विकृतता आने लगी। परन्तु अभिनवगुप्त तक ग्रन्थकारों और टीकाकारों की रचनाएं इतनी स्पष्ट और समृद्ध हैं कि अगली विकृतता का विशेष दुष्प्रभाव इस शास्त्र पर अभी तक नहीं पड़ सका है।

कश्मीर शैव दर्शन के एक मूल सिद्धांत को आचार्य अभिनव गुप्त ने पारद्वैत सिद्धांत नाम दिया है। इस पारद्वैत सिद्धांत के अनुसार जो कुछ भी है, वह सब कुछ स्वयं शिव ही है। वही अपनी इच्छा के अनुसार अपने पारमेश्वरी लीला का नाटक करता हुआ आपेक्षिक ईश्वरों के रूप में प्रकट के रूप में,जीवों के रूप में और जगत के रूप में प्रकट होता रहता है। खुद जीव रूप में प्रकट होता हुआ बन्धन की लीला का अभिनय करता है और स्वयं अपने पर अनुग्रह करता हुआ तथा गुरु और शिष्य के रूप में प्रकट होता हुआ योग की साधना के द्वारा अपने वास्तविक परमेश्वरतात्मक स्वभावको पुनः पहचान लेने के प्रति आगे बढ़ता जाता है। उस स्वभावको पूरी तरह पहचानता हुआ ही परिपूर्ण कृतकृत्यता के चमत्कार का आनन्द व स्वाद लेता है। यह उस की मोक्षलीला का नाटक है। इतनी सारी लीला का अभिनय करते हुए भी वह अपने वास्तविक शुद्ध चैतन्य स्वरूप से थोड़ा सा भी विचलित नहीं होता। अपने शुद्ध द्वैत-अद्वैत रूप में सदा ठहरता हुआ भी इस समस्त द्वैतात्मक प्रपंच के रूप में भी चमकता रहता है। और इस विश्वात्मक रूप में ठहरता हुआ भी सदैव विश्वतीर्ण स्वरूप में ही ठहरा रहता है। विश्वोतीर्णता और विश्वात्मकता ये दोनों ही रूप उसके असली स्वरूप के दो पहलू हैं। यह पाश्चात्य ईश्वराद्वैतवाद यानी **PANT-HEISM**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डल झील, श्री नगर

इस झील की सबसे बड़ी खासियत हाउस बोट व शिकारे हैं। शाम के समय झील का मनोहर दृश्य मन को अपनी और खींच लेती है। सर्दियों में यह झील पूरी तरह जम जाती है तो तो बच्चे इस पर क्रिक्रेट व स्केडिंग खेलते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

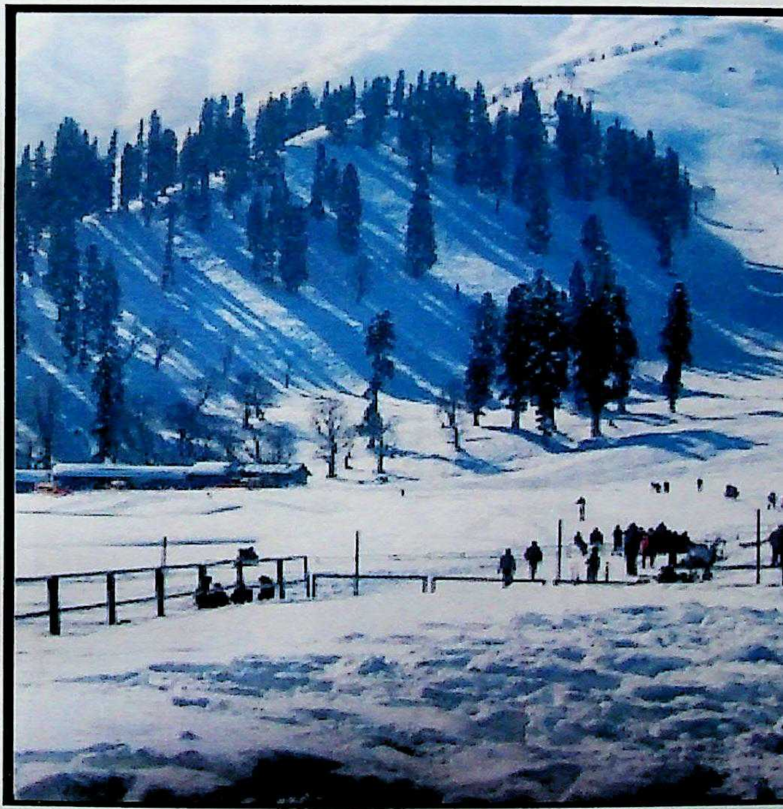

गुलमर्ग, श्री नगर
फूलों की घाटी के नाम से इस प्रसिद्ध यह को पुकारा जाता है। इसे देखकर समझ में आता है कि कश्मीर को धरती का स्वर्ग क्यों संबोधित किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शालामार बाग, श्री नगर
कश्मीर का यह सबसे सुन्दर बगीचा है।
इसका निर्माण मुगल बादशाह जहांगीर ने
अपनी प्रिय एवं बुद्धिमती पत्नी मेहरूत्रिसा
के लिए करवाया था।
जिसे नूरजहां की उपाधि दी गई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

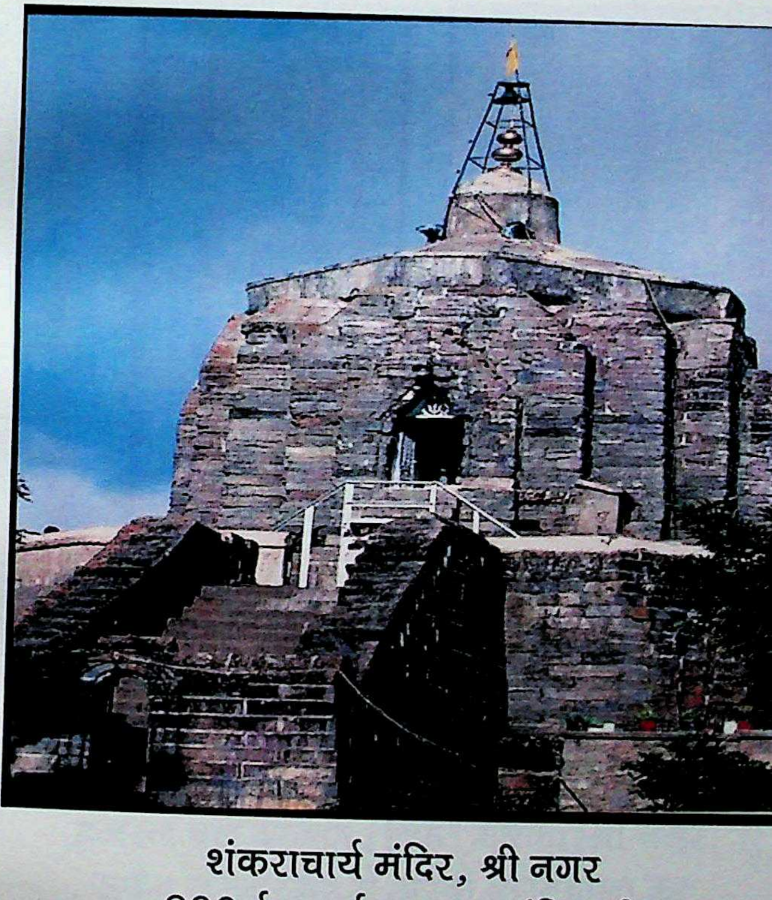

शंकराचार्य मंदिर, श्री नगर
200 ईसा पूर्व बना यह मंदिर की
करीब 240 सीढियां हैं
इस स्थान से पूरे श्री नगर का
मनोहर दृश्य देखा जा सकता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

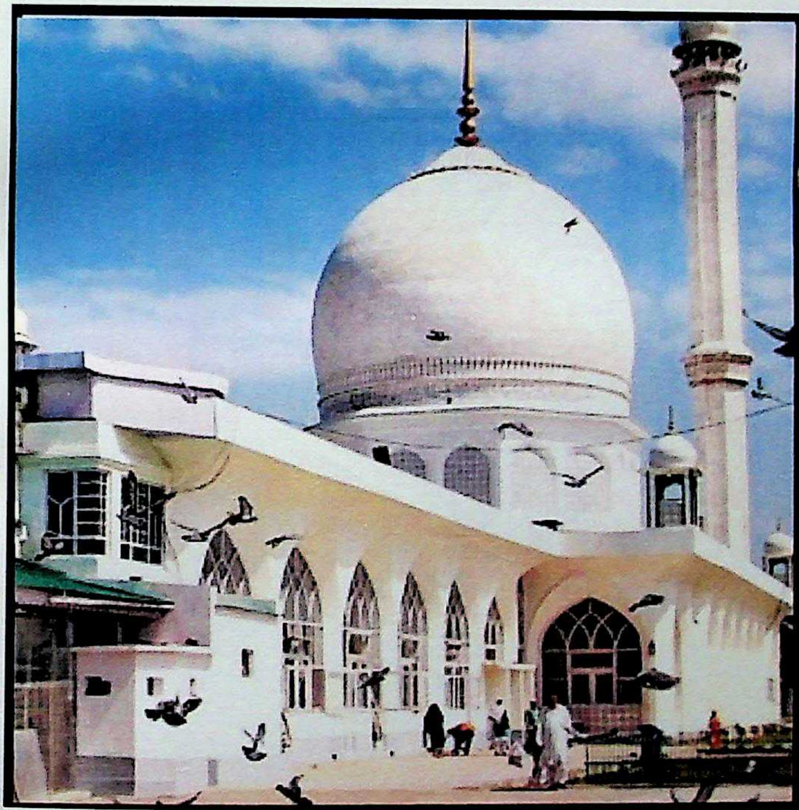

हजरज बल दरगाह (मिनी मक्का)श्री नगर
सफेद संगमरमर से अरबी वास्तुकला का
अदभुत नमूना, जो झल डील के किनारे पर स्थित है
जिसे आस-रे-शरीफ तथा
मदीनत-उस-सनी
के नामों से भी जाना जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

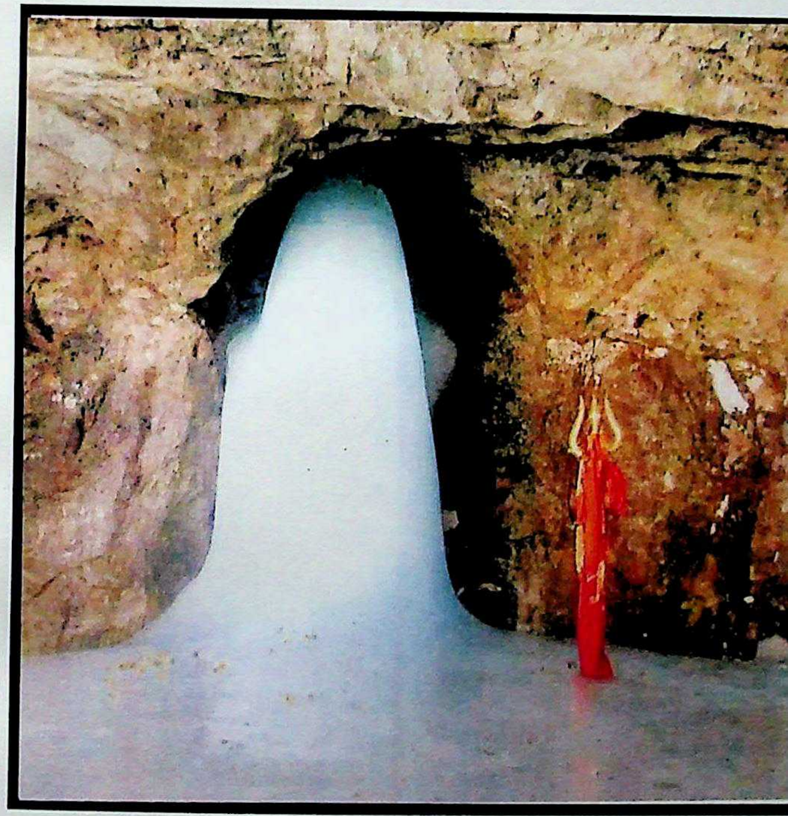

श्री अमरनाथ गुफा भगवान शिव का पवित्र धाम है। यह गुफा करीब 60 फुट लंबी, 30 फुट चौड़ी तथा 5 फुट ऊंची है। हर वर्ष देश व विदेशों से हजारों श्रद्धालु जुलाई/अगस्त में प्राकृतिक शिव लिंग के दर्शन करने आते हैं और महादेव का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान दाएं से
लेखक यशपाल शर्मा, पवन कुमार
लव कुमार, राकेश कुमार, रोहित कुमार
के साथ अन्य नौजवान सैलानी
शिव मंदिर के बाहर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

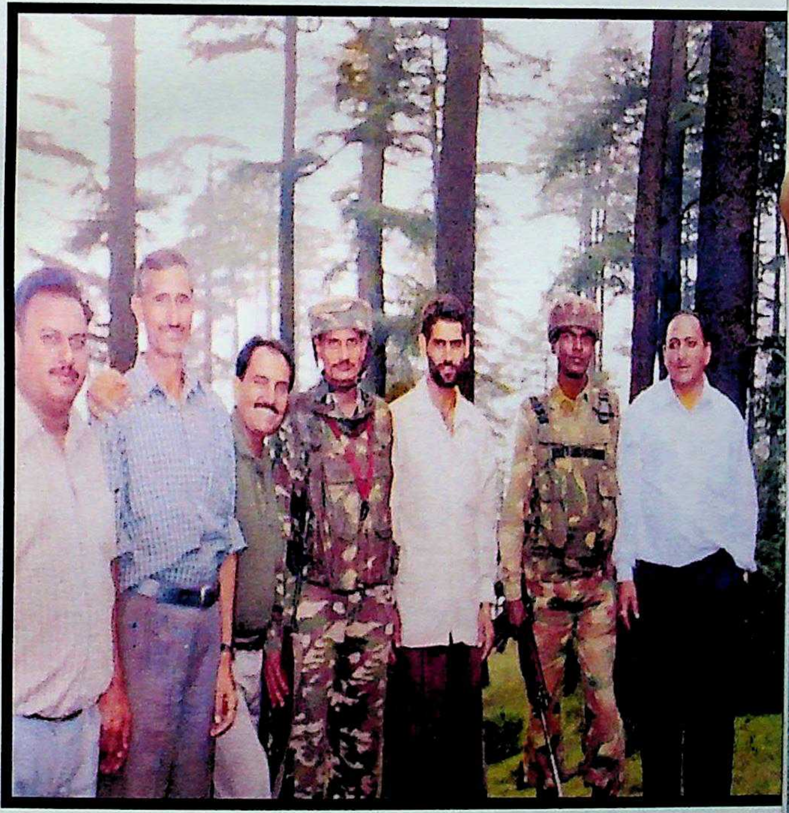

श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान बांए से दाएं
रोहित कुमार, लेखक यशपाल शर्मा,
राकेश शर्मा, सैनिक भाई
दौलत राम, सैनिक भाई, पवन कुमार
देवदारों के वृक्षों में एक याद को
समेटते हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

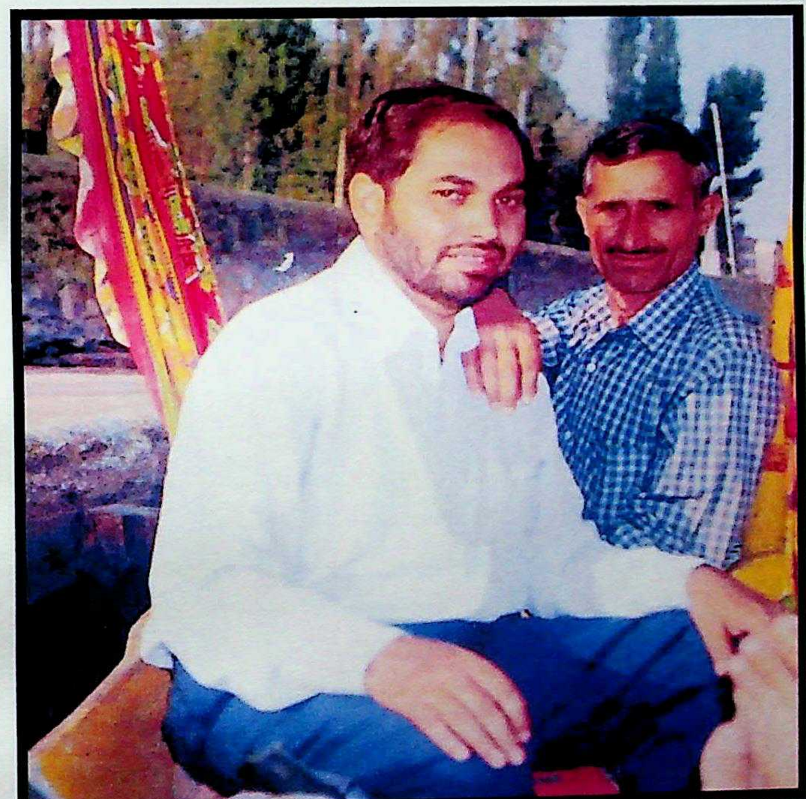

श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान अशोक कुमार शर्मा के साथ प्रसिद्ध उपन्यासकार व कविता लेखक यशपाल शर्मा प्रसिद्ध डल झील के शिकारे में नौका विहार के दौरान आंनद उठाते हुए तथा प्रकृति का सुन्दर दृश्य निहारते हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान प्रसिद्ध मंदिर खीर भवानी में आस्था के साथ दर्शन करते हुए लेखक यशपाल शर्मा के परम व स्नेही मित्र नरेश कुमार शर्मा व अन्य श्रद्धालु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाएं से छोटे सांढू अशोक कपूर व
छोटी साली गिरिजा कपूर,
बड़े सांढू कमल राज व
बडी़ साली वीणा कमल राज
तथा छोटा बेटा अनमोल (शिबू)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रसिद्ध उपन्यासकार व कविता लेखन में
गौरव हासिल लेखक यशपाल शर्मा व उनकी
धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कश्मीर शैव दर्शन में एक बड़ा भारी अन्तर है। स्पिनोजा जैसे पाश्चात्य ईश्वरद्वैतवादी ईश्वर को केवल प्रपंच के रूप में ही ठहरता हुआ मानते हैं। उससे उत्तीर्ण एक शुद्ध चेतना के रूप में नहीं, जबकि कश्मीर के पराद्वैती उसे दोनों रूपों में मानते भी हैं और दोनों रूपों में उसका साक्षात दर्शन भी करते हैं।

गौडपाद और शंकर जैसे अद्वैत वेदान्ती और उनके अनुयायी परब्रह्म को केवल शुद्ध चैतन्यात्मक ही मानते हैं। वे उसे विश्वात्मक नहीं मानते। उन्हें उसे ही विश्वात्मक मामले में यह शंका होती है कि वैसा मान लेने पर परब्रह्म मूल प्रकृति की तरह परिणामशील और विकारवान सिद्ध हो जाएगा, जो बात किसी को भी अपेक्षित नहीं है और श्रुति के भी विरुद्ध है। इसलिए उन्होंने द्वैवात्मक जगत की, सृष्टि संहार आदि की तथा सृष्टि संहार करने वाले ईश्वर की उत्पत्ति के लिए अनादि अविद्या की कल्पना की। वे ऐसा कहते हैं कि परब्रह्म सदैव शुद्ध चेतना के रूप में ही ठहरा रहता है। परन्तु अनादि अविद्या के प्रभाव से अज्ञानी जीवन को ही ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर इस जगत की सृष्टि संहार आदि करता रहता है। उस अनादि अविद्या के चश्में को लगाकर जब अज्ञानी जीव विचार करता है तो उसे पर ब्रह्म ही ईश्वर के रूप में और जगत के रूप में दिखाई देता है। वस्तुतः न जीव ही कोई सत्य वस्तु है, न जगत ही और न ईश्वर ही। यह सब कुछ दृष्टि का धोखा है। भम्र है, अध्यास है। एक मात्र शुद्ध सच्चिदानन्द ही सत्य और सदा विद्यमान रहने वाला तत्त्व है। शेष सब कुछ स्वप्नेभ्रम के समान असत्य है और निःसार है।

परन्तु कश्मीर के शैव इस मिथ्यावाद से सहमत नहीं है। वे जगत के बीज को अनादि अविद्या के भीतर न देख कर परब्रह्म की ही पराशक्ति के भीतर देखते हैं। उनके मत में परब्रह्म की वही पराशक्ति जब उसी की इच्छा से उसी के प्रकाश के भीतर बहिर्मुख प्रतिबिम्बित हो जाती है तो जगत के रूप में प्रकट हो जाती है। इस प्रतिबिम्बित वाद को मान लेने से परब्रह्म में विकारशीलता और परिणामशीलता की शंका भी दूर हो जाती है। निर्मल दर्पण में बीसों वस्तुएं प्रतिबिम्बित होती रहती हैं। उससे दर्पण में कोई विकार नहीं आता। फिर परब्रह्म को परब्रह्म कहते हैं जब वह विश्व का परिबृहंक अर्थात सर्वतोमुखी विकास करने वाला है। ऐसा अभिनवगुप्त ने स्पष्ट रूप से कहा है। उन्होंने यह भी कहा है यदि परब्रह्म जगत की सृष्टि न करता हुआ केवल एक मात्र शुद्ध प्रकाश रूप में ही सदा ठहरा रहता, तो उसने अपनी परब्रह्मता को त्याग ही दिया होता और शून्य गगन की जैसी जड़ता को अपनाया होता। इस तरह से शैव दर्शन की सृष्टि में मूल तत्त्व एक ओर से शुद्ध चैतन्यात्मक ही है। और उसी रूप में ठहरता है। परन्तु दूसरी ओर वह परिपूर्ण परमेश्वर भी है। अतः वह अपनी परमेश्वरी शक्ति से जगत की लीला का भी नाटक करता ही रहता है। इसलिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ओर से ब्रह्म को और दूसरी ओर से अविद्या को अनादि मानना तो एक दूसरे ढंग का द्वैत है। यह पाश्चात्य विचारकों की ईश्वर और शैतान नामक दो तत्त्वों की कल्पना के सामान्तर जैसी धारणा है और द्वैत है, अद्वैत नहीं।

शैव दर्शन के पराद्वैत सिद्धांत के अनुसर सब कुछ परमेश्वर ही है। विश्वोत्तीर्णता के पद पर भी वही चमकता है, विश्वमयता के पद पर भी वही विराजमान है।

बौद्ध, जैन दर्शन श्रमण-दर्शन है। मीमांसा को छोड़ कर शेष पांच वैदिक दर्शन भी प्रयोग पक्ष में श्रमण-साधना का आश्रय लेते हैं। परन्तु साधना के पक्ष में भी कश्मीर के शैव दर्शन में श्रवण-मार्ग को नहीं अपनाया है। अपितु स्मार्त गृहस्थों के मार्ग की सराहना की है। तदानुसार साधक को अपनी गृहस्थी में रहते हुए ही और स्मृतिशास्त्रों में बताए हुए गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए ही साथ-साथ शिवयोग का भी अभ्यास करना चाहिए। उसे बलात्कार से विषयों का त्याग नकरके स्मार्त्त सामाजिक नियमों के भीतर उनका उपभोग करते रहना चाहिए।

आचार्य अभिनव गुप्त ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मन को बलात्कार से दबाना नहीं चाहिए और न ही इन्द्रियों को बलपूर्वक विषयों से रोके रखना चाहिए। क्योंकि वैसा करने से उन में अवांछनीय प्रतिक्रियाओं की बहुत अधिक संभावना है। इसलिए उन्हें समाज के नियमों के भीतर विषयों का उपभोग करने देना चाहिए। साथ-साथ शैवदर्शन के राजयोग की किसी एक परिपाटी का अभ्यास करते रहना चाहिए। जब उसके अभ्यास से साधक को आत्मनन्द की अनुभूति होने लगेगी तो उस आनन्द के सामने विषयसुख स्वयं फीका पड़ जाएगा। तब इन्दियां और मन स्वयंमेव सांसारिक सुखों से विरत हो जाएंगे। ऐसी विरति को उन्होंने अनादर विरक्ति का नाम दिया है। इसी अटल सिद्धांत को दृष्टि में रखकर शैवदर्शन के गुरु, शिष्य की परीक्षा करते हैं। यदि शिष्य के हृदय में भोग की वासना न हो तो उसे तीव्र अनुग्रह के द्वारा ऐसे योग की दीक्षा देते हैं जिससे सद्यः मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है परन्तु भोग की वासना अभी उसके हृदय में है तो माध्यम अनुग्रह के द्वारा उसे भोग और मोक्ष दोनों क्षेत्रों में साथ-साथ अग्रसर कराने वाले उपाय की दीक्षा देते हैं।

जिस शिष्य में मोक्ष की इच्छा की अपेक्षा भोग वासना ही अधिक प्रबल हो, उसे मन्द शक्तिपान के द्वारा अनुग्रह करते हुए ऐसे योग मार्ग पर चलाते हैं जिससे वह उत्कृष्ट लोकों को प्राप्त होता हुआ और उधर के दिव्य भोगों का उपभोग करता हुआ ही क्रम से ऊपर-ऊपर जाता हुआ चिरकाल के अनन्तर मुक्ति को प्राप्त करता है।

कश्मीर के शैव दर्शन का योगमार्ग तान्त्रिक मार्ग है। परन्तु जिस तरह से वाम, कौल आदि तान्त्रिक मार्गों में मादक द्रव्यों तथा मोहक साधनों का उपयोग अत्यन्त आवश्यक होता है, उसी तरह से कश्मीर के त्रिक मार्ग में उन्हें आवश्यक नहीं माना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया है। मादक द्रव्यों और मोहक साधनों के उपयोग के बिना भी इस त्रिक मार्ग में साधक आगे बढ़ सकता है। ऐश्वर्य को भी प्राप्त कर सकता है और त्वरित गति से परमार्थ मुक्ति भी उसे मिल सकती है। कश्मीर शैव दर्शन ने एक ऐसी दृष्टि को अपनाने पर बल दिया है जिसमें सब कुछ शिवरूपतया ही देखा जाए।

इसलिए इस दृष्टि से देखते हुए शैव गुरुओं ने मादक और मोहक साधनों की निन्दा भी नहीं की और न ही उनके प्रयोग का निषेध ही किया है। उनके पराद्वैत मार्ग की उत्कृष्टतर साधनाएं विधियों और निषेधों से बहुत ऊपर चली गई हैं। इसलिए इस मार्ग के अधिकारी सभी हैं। स्त्री, शुद्र, चाण्डाल आदि को भी इस मार्ग पर की दीक्षा दी जा सकती हैं। तभी तो भगवान शिव देवों, असुरों ,दानवों आदि पर भी समान दृष्टि रखते हुए सभी उपासकों पर अनुग्रह ही करते आए हैं। अब भी शिवलिंग पर सभी जल चढ़ा सकते है, चाहे किसी भी वर्ण, आश्रम, लिंग, सम्प्रदाय आदि से उनका सम्बन्ध हो। इस तरह से कश्मीर शैवदर्शन की अपनी अनेकों विशिष्टताएं हैं, जिन के कारण इसे एक विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। परन्तु इस उत्कृष्ट मार्ग के अधिकारी प्राय: बड़ी संख्या में नहीं मिलते हैं। इसी कारण अन्य दर्शनों की अपेक्षा इस का प्रसार और प्रचार बहुत कम हुआ है। इसी बात को दृष्टि में रखते हुए आचार्य अभिनव गुप्त ने कहा है-

केतकी कुसुम सौरभे भृशं भृंडग् एव रसिको न मक्षिका।
भैरवीय-परामाद्वयार्चने कोऽपि रज्यति महेश चोदित:।।

अर्थात् - ''केवड़े के पुष्प की सुगन्ध कारसिक काला भौरा ही होता है, शहद की मक्खी नहीं होती है। पराद्वैतमयी शैवी साधना में भी किसी ऐसे अधिकारी की ही रुचि होती है, जो भगवान शिव के अनुग्रह का पात्र बन चुका हो।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर में शैव-दर्शन का सूत्रपात-2

शैवग्रंथ 'शिवसूत्रविर्शिन' नाम पंचस्वी शब्द वास्तव में एक समस्त पद है, जिसका सामान्य अर्थ भक्ति श्लोकों का ऐसा संग्रह है जिसे पांच स्तवों में विभक्त किया गया है। इस भक्ति काव्य का प्रथम श्लोक ही हमें इस बात का ज्ञान कराता है कि वह संग्रह इन्द्रधनुषी विविधता लिए दिव्य-शक्ति के प्रति श्रद्धा भक्ति की अभिव्यक्ति है। यह दिव्य शक्ति वाक् और ज्योति शब्द और अर्थ का मधुर समन्वय है। इसके अतिरिक्त अ से क्ष तक सारी वर्णमाला इसमें ही प्रसूत है। यह पराशक्ति शब्द-ब्रह्म की जननी है। कभी-कभी इसे पराविद्या, आनन्द और विश्वमय प्रकृति का नाम भी दिया गया है। यह महामाया इस शब्दार्थमय विश्व को जन्म देती है और इसे नष्ट भी करती है। जिसके लिए उसके पास इच्छा, ज्ञान और क्रिया नामक तीन अमोद्य साधन हैं।

पंचस्तवी मूलतः शैव ग्रंथ है। पंच अथवा संस्कृत पंचम का प्रयोग शैवाचार्यों ने कई अर्थों में किया है। 'तन्त्रसदभाव' नामक शैव-ग्रंथ में आदिशक्ति को 'पंचमन्त्रगता' कहा गया है। 'पंचविद्या' भी इसका दूसरा नाम है। इसमें मंत्रोच्चारण के प्रति संकेत दिया गया है जिसमें तत्कालीन सिद्धि समाविष्ट हो। ये - 'ईशान' जिसमें पांच कलाएं, 'सत्पुरुष' में चार, 'अघोर' में आठ, 'वामदेव' में तेरह और 'संधोजात' में आठ। इन सब का जोड़ अठतीस बनता है जो वर्ण माला में व्यंजनों की संख्या है।

शैव-मत में माया की शिव और शक्ति का उन्मूलन शुद्धविद्या द्वारा ही संभव है। शैवमत में माया को शिव और शक्ति की एकाकारता का अभाव माना गया है। इस माया से ऊपर उठने के लिए साधक को पांच दशाओं से गुजरना पड़ता है। ये हैं- सदविद्या, ऐश्वर्य, सदाख्या, शक्तित्त्व और शिवतत्त्व। इन्हीं साधनों की मंजिलों को पार करके परमशिवता प्राप्त होती है, जो शैवानुशासन की पराकाष्ठा है।

'शरीरमाद्य' खलु धर्मसाधनम् इस भाव की व्याख्या मात्र ही है। इस दृष्टिकोण की पुष्टि शैवग्रंथों में मानव शरीर को श्रीचक्र की उपाधि दी गई है। जिसके विश्वमय रूप- स्वक्, अस्त्र, मांस, मेदा और अस्थि हैं, इनका विश्वोतीर्ण रूप तन्मात्राओं में व्यक्त होता है।

शैवागमों के अनुसार पांच कारण स्वीकार किए गए हैं। वे- ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सदाशिव और ईश्वर। पंचस्तवीकार ने इन कारणों का पग-पग पर श्रद्धापूर्वक उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त 'शिव' जो शैवदर्शन का आदि प्रणेता माना जाता है। पंचमुखी समझा गया है और शक्ति के बिना यह 'शव-मात्र' है। शैवानुशासन में भोग योग का संतुलित समन्वय किया गया है। मंत्रसिद्धि के हेतु शैवों ने ध्यान, धारणा, प्रत्याहार, प्राणायाम और समाधि साधनों को ही महत्ता दी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंचस्तवी में पराशक्ति को 'त्रिपुर सुन्दरी' नाम भी दिया गया है। 'त्रि' का अर्थ तीन और 'पुर' के अनेक अर्थों में शरीर का भी इस शब्द से बोध होता है। अतः इस समास विग्रह- ''कोई ऐसी सुन्दरी जिस के तीन शरीर हों'' के रूप में भी किया जाता है। पंचस्तवीकार ने स्वयं इस पद की व्याख्या इस प्रकार की है। तीन देव-ब्रह्मा, विष्णु और महेश। तीन प्रकार की अग्नि-इच्छा, ज्ञान और क्रिया। तीन मूल स्वर - अ, इ, उ। तीन लोक- भूः, भुवः, स्वः।

कश्मीर में हिंदुओं ने हर युग में अव्यक्त को व्यक्त रूप देने में कोई भी कसर उठा न रखी। इसी प्रकार आदिशक्ति के तीन गुणों को उन्होंने 'त्रिपुर सुन्दरी' की साकारता प्रदान की है। सम्भवतः ऐसे कश्मीरी पंडितों को 'त्रिकू' इसलिए कहा जाता है कि वे 'त्रिक सिद्धांत' में विश्वास रखते है। उनकी इष्टदेवी 'त्रिपुरा' अथवा 'त्रिपुरा सुन्दरी' है, त्रिपुरारिशिव की अर्धांगिनी के रूप में त्रिपुरा पूजन वास्तव में शिव और शक्ति के विलय का बोध-चिन्ह है।

अभिनव गुप्तके परवर्ती साहित्यकारों ने अभिनव गुप्त को 'महामहेश्वर' की उपाधि से विभूषित किया है। इस उपाधि शब्द का सम्मानीय अर्थ शैवों के मतानुसार-शिव का परमभक्त अथवा परमशिव। अभिनव गुप्त को कश्मीर की परम्परा में उसके बहुत शिक्षित होने की प्रंशसा की गई है। उसने शैव दर्शन का मंथन किया। फिर भगवद्गीता पर शैव-दृष्टिकोण से एक भाष्य लिखा। आनन्दवर्धन के 'ध्वन्यालोक' पर 'लोचन' नामक वृति लिखी। भरत के नाट्यशास्त्र का सार भी प्रस्तुत किया। आचार्य मम्मट जैसे दिग्गज ने अभिनव गुप्त के साहित्य में इस शैवाचार्य के सम्मान 'पाद' शब्द जोड़ा। भारतीय काव्य शास्त्र में 'रीति' का प्रतिपादन करने वाले कश्मीरी 'वामन' ने बुद्धि में सर्वोपरि होने पर अन्य सहपाठियों के लिए सांप (भयदायक) कहा है। नाम-मुक्तापीड़ा था। यह राजतन्त्र अभिनव गुप्त के समय महाराज ललितादित्य राज्यकाल के समय 755 से 761 ई. में माना जाता है। महाराज ललितादित्य उसके गुणों से बहुत प्रभावित और आकृष्ट हुआ। इस पर अभिनव गुप्त लिखता है- ''महाराज ने उसे कुबेर का अलका की तरह सुन्दर नगरी (श्री नगर) में लाकर, उसके रहने के लिए वितस्ता के तट पर शीतांशुमौलि (शिव) मन्दिर के सम्मुख एख भव्य भवन बनवाया और उसके जीवनयापन के लिएजागीर देदी।'' (तन्त्रलोक अहित्रका)

अभिनव गुप्त तन्त्रलोक में अपने पिता का नाम नरसिंह गुप्त और माता का नाम विमलकला लिखता है। 'जयद्रथ' अभिनवगुप्त को 'योगिनी भू' के नाम से अलंकृत करता है। वह इस उपाधि का अर्थ यह लगाता है कि उसके माता-पिता ने साक्षात शक्ति और शिव होकर तथा भोग-वासना से ऊपर उठकर इसे जन्म देने के लिए सहवास किया। अतः ऐशी सन्तान शैव-दर्शन की व्याख्या करने के लिए उपयोगी साधन मानी जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर का सबसे पुरातन ग्रंथ 'नीलमत पुराण' है। इसमें स्पष्ट रूप से अंकित है कि उस समय शिव और शक्ति की पूजा की जाती थी। अन्य देवताओं-गणेश पौराणिक देवता, वैदिक देवता तथा बुद्ध का अवतार रूप में पूजन किया जाता था।

कल्हण ने हमें इस बात का स्थान-स्थान पर प्रमाण दिया है कि बुद्ध धर्म, शैव धर्म तथा वैष्णव धर्म कश्मीर में सहअस्तित्व में अडिग आस्था रखते थे। जब भी कोई दान इत्यादि धार्मिक कार्यों के लिए दिया जाता था तो उसमें बौद्ध तथा अन्य धार्मिक विश्वासों के साथ-साथ समान व्यवहार किया जाता था। धर्म के नाम पर किसी प्रकार की खटपट देखने में नहीं आती थी।

(शिव सूत्र विमर्शिनी-प्रथम सूत्र क्षेमराज कृत टीका)

परन्तु इस धर्मभाव को नागार्जुन के यहां आने पर धक्का सा लगा। वह यहां 'पड्हतवन' (आधुनिक हार्वन) में निवास करता था। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार में उग्रता लाई।

(शंकर दिग्विजय)

इससे एक अस्वस्थ प्रतिक्रिया हुई। यहां के कट्टरपंथी इस प्रचार कार्य से असन्तुष्ट हुए। उनके घावों पर महाराज कनिष्क (125-60 ईसा) ने बौद्ध धर्म को राजाश्रय देकर लोगों के जख्मों पर नमक छिड़का। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार में बहुत अधिक उत्साह दिखाया। कल्हण इस घटना के सम्बन्ध में यह बात लिपिबद्ध करता है- "नागार्जुन ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को शस्त्रार्थ में हराकर पारस्परिक विश्वासों को इस शत्रु ने नीलमत में अंकित रीति-रिवाजों को वर्जित करवाया।" यह बात कश्मीर के मूलभूत विश्वासों और समभाव दृष्टिकोण के साथ खुले रूप में विद्रोह था। अत: बुद्धिमान ब्राह्मणों ने बौद्ध-विश्वासों के विकल्प के रूप में इससे अधिक सर्वग्राही जीवन-दर्शन की स्थापना की। और यहीं से सम्भवत: शैव दर्शन का श्रीगणेश हुआ। जिसने सम्पूर्ण घाटी को अपने मोहपाश में (ऐन्द्रजालिक) लपेट में ले लिया। मेधावी ब्राह्मणों ने बौद्धिक प्रहारों के सबल माध्यम से बौद्धमत की एक विशिष्ट कमजोरी भगवान के प्रति मौन को बहुत उछाला। कश्मीरी स्वभाव से धर्मभीरू हैं और उनकी नस-नस में भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा समोई हुई है। शैवाचार्यों ने भगवान को 'परमशिव' या 'सदाशिव' का नाम दिया है। तत्पश्चात् कश्मीर में अद्वैत वेदांत के प्रकांड विद्वान प्रचारक आदि शंकराचार्य के आगमन ने बौद्ध धर्म की रही सही साख को मिट्टी में मिला दिया।

इसलिए यह अनुमान सुदृढ़ बन जाता है कि आदिशंकराचार्य की चरण-धूलि से कश्मीर-मण्डल अवश्य पवित्र हुआ होगा। जिस से प्रतिपादित 'अद्वैत' की अनुगूंज हमें शैवों के अभेद में मिलती है। पुन: उनसे रचित 'सौन्दर्य-लहरी' पर कश्मीरी शैव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धांतों तथा तन्त्रों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इतना ही नहीं, इनकी संख्या का भी इस 'लहरी' में अनुमोदन किया गया है–

"चतु: षष्टया तन्त्रै: सकलमभिसंधाय भुवनम्।"

अर्थात- (हे देवि:) आपने ही चौसठ तन्त्रों से इस जगत को बना कर...।

अभिनव गुप्त ने सचेत व्याख्याता के रूप में शिव-दर्शन के लिए एक विचारवान भावभूमि संजोई। इसलिए बहुत ही सार्थक प्रतीत होती है– "अदृष्टं प्रकटीर्कृण। गुरुनाथाज्ञया वयम्।"

"अत: हम (सब) सर्वशक्तिमान गुरू (शिव) की आज्ञा से 'अदृष्ट' को दृष्ट बनाते हैं।"

'त्रिक' का ऐसा संक्षिप्त और सारगर्भित लक्षण उसकी लेखनी का ही चमत्कार हो सकता है–

"शिव शक्ति संघट्टात्मक परत्रिक शब्द वाच्यम।"

"अर्थात् जीवात्मा शिव और शक्ति का सम्मिलन ही परत्रिक शब्द का बोधक है।"

अभिनव गुप्त कर्ता और कर्म को एक-दूसरे से पृथक नहीं समझता। इसी प्रकार वह आत्मा और अनात्मा भी नहीं, अपना आप और पराया भी नहीं। पदार्थों का ज्ञान इन दोनों मानसिक परिस्थितियों के मेल द्वारा होता है। जैसे अंधेरे और प्रकाश में, इसलिए उसका कथन है-डेरा।

"सर्वाकृति: विश्वमय: निराकृति: विश्वोत्तीर्ण:"

"अर्थात् वह परमशिव ही आकार रहित विश्वमय कहलाएगा, और निराकर रूप में विश्वोतीर्ण।"

हम ऐसा देखते हैं कि दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में कश्मीर में संस्कृत के उन्नयन हेतु बहुत ही प्रसिद्ध है। इस समय काव्य, आलोचना, दर्शन और इतिहास तथा मीमांसा की गई। इस प्रकार संस्कृत-देववाणी का यथाचित श्रृंगार करने में यहां के कश्मीरी पंड़ित किसी से भी पीछे न रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शेषनाग झील व उसकी प्राकृतिक सुन्दरता

अब हमारा लक्ष्य शेषनाग झील के महिमामय स्थान पर सायं काल तक पहुंचने का था। अब मार्ग ढलान वाला था। राह के साथ-साथ लेद्री दरिया का दृष्य नयनाभिराम था। पर्वतों से गिरते-बहते स्वच्छ-चांदी से जल के शीतल झरने मन को बरबस अपनी ओर आकर्षित व विस्मित कर रहे थे। जल प्रपातों का अमर संदेश, मधुर-संगीत, मानव को निरन्तर संघर्ष करते हुए जीवन में प्रेम, मानवता, समानता, परमार्थ और धर्म-कर्म जैसे अलभ्य वस्तुओं-भावों के अर्जित करने हेतु गतिशीलता व आनन्द के साथ प्रेरित कर रहे थे। मेरे साथ-साथ अशोक चल रहा था। मैंने अशोक को कहा- ''अशोक बेटा! इन सुन्दर मनमोहक प्राकृतिक नजारों की ओर ज़रा गौर से देखो।''

भतीजे अशोक कुमार ने पल भर रुककर उन पर्वतों पर छाई हरियाली की छटा को निहारा था। फिर धीरे-धीरे चलता हुआ बोला- ''उस परमपिता परमेश्वर ने इन दृष्यों को कितने चाव व यत्न से बनाया है। आज का मानव आधुनिकता की अंधी दौड़ में प्रकृति के संरक्षण के महत्त्व को भूल बैठा है। जिस प्रकृति ने उसके जीवन को सुख-स्वास्थ्य-सम्पदा से परिपूर्ण करना है- वही उसका दुश्मन बन बैठा है। ध्वनि प्रदूषण, जल दोहन, धुंआ-मिट्टी का प्राणलेवा प्रदूषण, वृक्षों को काटकर धरा को छाया-हरियाली से विहीन करके वह खुद अपने विनाश को बुला रहा है। भगवान अमरनाथ मानव- मन के शैतान को सदबुद्धि, विवेक व मानवता से पूर्ण बढ़िया सोच-विचार बख्शे।''

''मैं तुम्हारा धन्यवादी हूं कि तूने जो मेरा इधर आने का प्रोग्राम उलीक कर मुझे यहां पहुंचने का मौका दिया।''

''नहीं चाचा जी, नहीं। यह तो भगवान अमरनाथ जी की अनुकम्पा है जो उसने अपनी चिट्ठी भेज कर हम सब को इधर बुला लिया।'' अशोक कुमार के पास कैमरा था। उसने सुन्दर प्राकृतिक दृष्यों व जल प्रपातों के फोटो खींचे थे। कुछ यात्री अपनी यात्रा सम्पन्न करके वापिस खुशी-खुशी से वापिस लौट रहे थे। हमारे आगे कुछ लड़कियां यात्रा को पैदल ही चल रही थीं। वह रास्ते के बड़े पत्थरों पर कुछ पल दम भरने को बैठ गई थीं। हम थोड़ा सा और आगे चले तो दौलत राम हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ देर के लिए बैठ कर हम आराम फरमाने लगे थे। सोचा-शेष पीछे आ रहे साथियों के संग यात्रा का आनन्द लिया जाए। हम बतियाने लगे थे। इतने में छः साथी छड़ियों का सहारा लिए धीरे-धीरे आते दिखाई दिए थे। नौ साथियों का दल अब गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ने लगाथा। सेना के जवान राह में जगह-जगह सुरक्षा हेतु तैनात थे। राह में कोई झरने का नयनभिमान दृष्य आता तो उसका फोटो खींच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेते। कभी-कभार सैनिक भाइयों से बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाते। उनका हाल-चाल पूछते। हमें व सैनिकों को ऐसा महसूस होता कि जैसे हम परस्पर में एक-दूसरे को एक मुद्दत से जानते पहचानते हैं। आत्मीयता की यह अद्‌भुत डोर हमें हार्दिक आनन्द देती थी।

थके-हारे यात्री आ जा रहे थे। अशोक व दौलत राम आगे निकल गए थे। नौ मित्रों का दल फिर आगे-पीछे होकर बिखर गया था। नरेश शर्मा, विनोद कुमार, राकेश और दो कुंवारे छोकरे अभी पीछे थे। मैं उन के मध्य में चल रहा था। मार्ग में 30-35 वर्ष की नवविवाहित युवती बड़ी कठिनाई से चल रही थी। उसके पास दो भारी-भरकम थैले थे। उसकी दयनीय स्थिति पर मुझे रहम आ गया था। मैंने उसे अपना सामान अगले पड़ाव तक ले जाने हेतु कहा था। इस महिला ने पल भर रुक कर मेरे चेहरे की ओर बड़ी गौर से देखा। इससे पहले वह औरत मुझे प्रत्युत्तर में कुछ कहती, थोड़ा आगे चल रहे भाट बाबे ने जो 60-70 आयु के लगभग होगा, मेरी ओर उसने आंखें तरेर कर देखते हुए बोला- ''नहीं, यह सामान आप को नहीं देगी। मैं इसके साथ हूं।'' मैंने उस भाटडे को बड़ी गौर से देखा। उस बूढ़े भाट-बाबे की लम्बी-सफेद दाढ़ी के साथ भवों के बाल भी सफेद बाने में तबदील हो चुके थे। मन-ही-मन इस महिला और बाबे के सांसरिक रिश्ते का तालमेल बैठाने का असफल यत्न कर रहा था। मेरा मन आयु को आधार बनाकर सम्बन्ध बनाने लगा था- बहन, बेटी, पुत्र-वधू या भार्या जिसे सभ्य मर्यादित समाज में धर्मपत्नी कहा जाता है। धर्मपत्नी शब्द मानस पटल पर आते ही मन की सूई शंका के निशान पर आकर अटक गई थी। मन ने कहा- यह इसकी धर्मपत्नी नहीं नाते से अधर्मपत्नी लगती है। ऐसा ख्याल जेहन में आते ही मेरे होठों पर मुस्कान रेखा खिंच गई थी। दस-पन्द्रह मिंट तक यात्रा करने के पश्चात् एक पड़ाव आ गया था जिसमें लंगर की बहुत बढ़िया व्यवस्था की गई थी। धीरे-धीरे सभी साथी एक बार फिर इकट्ठे हो गए थे। भूख सब को तंग करने लगी थी। सभी साथी लंगर में बने व्यंजनों का लुत्फ उठाने में मशगूल हो गए थे। लंगर के सामने दो-तीन पुरानी किस्म के यात्री-शैड बने थे। भतीजा अशोक कुमार मुझे बताने लगा- ''यह शैड जो आप सामने देख रहे है, अमरनाथ यात्री इस में ठहरा करते थे। तब यात्री भी बहुत कम हुआ करते थे। तभी दो-तीन शैड यात्रियों की संख्या को देखकर उस समय के हुक्मरान ने बनवाए होंगे। पिछले वर्ष इन्हीं में छिपकर उग्रवादियों ने अमरनाथ यात्रियों को मौत के घाट उतारा था। बाद में सैनिकों ने उन आततायियों को मार गिराया था।'' ऐसा सुन कर मुझे बहुत दुःख हुआ था।

हमारे यात्री दल साथी खा-पी कर निपटे तो देखा-वही लाल चूड़े वाली महिला और बूढ़ा खूंसट हमारे सामने बैठ कर खाने-पीने में व्यस्त था। मैंने नरेश कुमार को कहा- ''नरेश जी आप तो पुलिस महकमे में हो, हर रोज कोई-न-कोई झगड़ा-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फसाद,लड़के-लड़की के फरारी के केस थाने-कचहरी में आते रहते हैं। इन दोनों को देखकर बताओ कि इन दोनों का रिश्ता क्या हो सकता है।''

बाकी साथियों ने सुना तो समीप आ गए। सुनकर नरेश कुमार ने उन दोनों को बड़ी गौर से देखा। फिर मंद-मंद मुस्कराने लगा। हमारे दल के समस्त साथी उन्हें घूर-घूर कर देखने लगे थे। तपाक से रोहित बोला-''अरे यश अंकल आज चूड़ा पहनना तो लड़कियों ने फैशन बना रखा है। बैड करैक्टर लड़कियां चूड़ा पहनकर लोगों को गुमराह करती हैं कि मैं मैरिड हूं। चूड़े की आड़ में बदमाशी वाला धंधा करती लड़कियां मेरे संपर्क में भी आई हैं। कौन शादीशुदा है? कौन कुंवारी है? यह तो पहनने वाली खुद ही जानती है। हो सकता है इसने भी शादी वाला फरेब रचा हो। साफ दिखाई दे रहा है कि इस बूढ़े ने यह मुर्गी फंसाई अच्छी है।'' सुन कर सभी ने रोहित की बात का समर्थन किया था। इतनें में तीन-चार मुस्टंडे बाबा भेष में आकर समीप बैठ कर लंगर का तर माल उड़ाने लगे थे।

दौलत राम बोला-''इस जनानी ने अभी-अभी नया चूड़ा पहना है। लगता है-शादी हुए देर नहीं हुई है।''

''बाबे का दु:ख क्यों करता है? रीस कर रीस। क्यों सोच-सोच कमजोर होता है? तू भी कोई छमकछल्लो ले आ।'' कहा लव कुमार ने।

दौलत राम ने सुना तो ही-ही करके हंसने लगा। राकेश कुमार बोला- ''इस साले बूढ़े खूसट के साथ यह फंस कैसे गई? इस बाबे की एक लात कब्र में है और दूसरी बाहर। इसकी पोत्री जैसी है।''

पवन कुमार हंसता हुआ बोला-''सयाने कहते है-इश्क और लड़ाई में सब कुछ जायज होता है। बेचारी झाड़-फूंक करवाने गई होगी। बस! फिर क्या था, बाबा ने ऐसा मंत्र मारा कि लड़की कील दी। देखो-हरामी कैसे उस से (महिला) हंस-हंसकर बातें कर रहा है। हाय नी! मैं मर जावां गुड़ खा के।'' उसने अपनी बात ऐसे अंदाज में कही थी कि सभी साथी ठहाका मार कर हंसने लगे थे। उस अनमेल जोड़े का ध्यान बरबस हमारी ओर खिंच गया था। उन्होंने अनुभव कर लिया था कि यह यात्री-टोले वाले हमारी ही बातें कर रहे हैं। वह वहां से उठ कर दूर परे हट कर जा बैठे थे। हमारा सन्देह, वास्तविकता में तबदील हो गया था। इतमें में भतीजा अशोक कुमार बोला-''चलो यार उठो अब वक्त पर शेषनाग पहुंच जाएं। वहां आराम भी तो करना है।'' अशोक कुमार की मौसी का लड़का राकेश कुमार बोला-''क्यों उस बेमेल जोड़े को देख कर शादी को मन कर आया है?'' सुन कर अशोक कुमार कुछ न बोला। दूसरी तरफ मुंह करके मुस्कराता रहा। लव कुमारनरेश कुमार शर्मा की ओर उन्मुख हो कर बोला-''अरे नरेश अंकल आप के सामने इस बेमेल जोड़े वाला जुल्म हुआ जा रहा है। आप पुलिस डिपार्टमैंट में हो। कोई एक्शन उनपर क्यों नहीं लेते? कोई कानून की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धारा लगा कर इन दोनों को जेल के अन्दर ठीक दो।''

''अरे लव कुमार सियाने कहावत बोलते हैं-मियां-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी। रही इनके खिलाफ कारवाई करने की बात पुलिस के पास एफ.आई.आर दर्ज करने के लिए शिकायत करता की अैपलीकेशन होनी जरूरी होती है।'' मुस्कराते हुए नरेश कुमार ने कहा।

''जो जोड़े लड़के-लड़कियों के घर से फरार होते हैं और पुलिस उन्हें पकड़ कर हवालात में बंद कर देती है। उनके लिए कौन एप्लीकेशन देता है।'' पूछा लव कुमार ने।

''ऐसे आशकी, ऐय्याश जोड़ों के मां-बाप, भाई-बहन थाने आकर लिखती रूप में शिकायत करते हैं तब कहीं जा कर पुलिस हरकत में आती है।'' नरेश कुमार ने पुलिस विभाग के कामकाज करने का ढंग-तरीका समझाते हुए लव कुमार को कहा।

इतने में रोहित बोला- ''लव तू उस लड़की की तरफ से भाई बन कर कम्पलेंट कर दे कि मेरी भोली-भाली बहन को बूढ़ा खूसट बाबा उड़ा ले गया है।''

सब साथियों ने सुनातो खिलाखिला कर हंसने लगे। कई साथियों की आंखों में हंसते-हंसते आंसू भर आए थे। परन्तु बूढ़े बाबा को अपना जीजा श्री बनते देख कर लव कुमार क्रोध में आकर रोहित को मारने दौड़ा था। नरेश कुमार ने उसे पकड़ लिया था। समझाते हुए बोला-''अरे छोटे गुस्सा नहीं करते। रोहित मजाक कर रहा था। तू सच्ची-मुच्ची उस लेडी का भाई थोड़ा बन जाएगा।'' सुन कर वह थोड़ा शांत हुआ था। परन्तु हल्के से स्वर में रोहित बोला-''हर्ज भी क्या है नरेश अंकल जी।''

लव कुमार फिर सांड की तरह क्रोध में भर आया था। राह में उसे किसी खड्ड में धक्का देने की धमकियां देने लगा था। सब ने उसकी धमकियों को गंभीरता से लिया था। नरेश कुमार ने लव कुमार से अपने कान में कुछ समझाया था। रोहित कुमारने लव कुमार से अपने शब्द वापिस लेने की कह कर उसे शांत किया था। दोनों में सुल्ह करवा दी थी। सबको पहले संदेह हो आया था कि मंदबुद्धि, मोटे दिमाग वाले बारीक सोच नहीं रखते कि अमुक काम करने का अंजाम क्या होगा? परन्तु अब दोनों की सुलह हो जाने पर समस्त साथी प्रसन्न हो गए थे। दौलत राम अब अमरनाथ बर्फानी, जय भोले नाथ जैसे जयकारे बुलाते हुए शेषनाग झील के मार्ग पर झंडा उठाए चलने लगा था। शेष सभी भी अपना सामान व यात्रा में चढ़ाई व ढलान पर सहायक छड़ियां हाथ में उठाएं अगली यात्रा को प्रस्थान करने लगे थे।

शेषनाग का अगला मार्ग बड़ा संकरा था। शेषनाग झील आनेसे पूर्व ही हमें पालकी उठाएमजदूर दिखाई दिए थे। सोचा-कोई अमीर आदमी यात्रा सम्पन्न करके खुशी-खुशी वापिस घर को लौट रहा होगा। हम थोड़ा ऊंचाई पर चल रहे थे। पालकी वाले मजदूर थोड़ा नीचे चल रहे थे। उस पर 15-18 वर्ष का युवक मरा पड़ा था। उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई थी। यमराज का शिकार बने नौजवान का मुर्दा चेहरा सफेद वर्ण का था और मुंह खुला था। बार-बार मन में ख्याल आ रहा था कि यह कैसे मरा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होगा? पूछने और बतलाने का वक्त कहां था। पालकी वाले मजदूर बड़ी तेजी से चले जा रहे थे। लग रहा था कि सांयकाल तक इस लाश को चन्दनबाड़ी पहुंचा देना चाहते थे। मेरा और शेष साथियों का मन उदासी से भर उठा था। सब के मन हृदय में रह-रह कर एक बात आ रही थी-घर का चिराग बुझने का समाचार पाकर इस मृतक-युवक के मां-बाप, भाई-बहन, मित्रों-यारों-दोस्तों पर क्या बीतेगी। कितने अरमानों और शगुनों के साथ इसे मां-बहन, भाई-बाप ने अमरनाथ यात्रा पर इसे पुण्य, धर्म-कर्म कमाने को भेजा होगा। बूढ़े मां-बाप की कमर टूट जाएगी। बुढ़ापे का सहारा जब छिनता है, तो बूढ़ी आंखों से गंगा-यमुना की धारा आमरण रात-दिन बहती रहती है। पुत्र-वियोग मनुष्य को अंदर से तोड़ देता है। जीवन कडुवा, नीरस और बेकार लगने लगता है। परन्तु जीवन क्षणभंगुर है। मुझे कबीर साहिब के शब्द स्मरण हो आए थे। अहं में मानव को अकड़ते हुए देख कर उन्होंने लिखा होगा-

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रोंदे मोहे।
इक दिन ऐसा आएगा मैं रोंदूंगी तोहे।
हाड जले ज्यों लाकड़ी, केस जले ज्यों घास।
सब जग जलता देखकर भये कबीर उदास।।

उदासी में यात्रा करते-करते शेषनाग झील दिखाई देने लगी थी। झील उत्तर-पूर्व-दक्षिण से गगनचुम्बी पर्वतों से आवेष्ठित थी। मार्ग के ठीक ऊपर दिशा की ओर वाले पर्वत का उपरी भाग शेषनाग सा प्रतीत हो रहा था जैसे भगवान श्री हरि के सिर के ऊपर क्षीरसागर में शेषनाग की सुन्दर-सुखद शैय्या होती है। साक्षात रूप में शेषनाग की शैय्या लग रही थी। मैं इस अलौकिक दृष्य को देखकर पलभर के लिए स्वयं को भूल कल्पना लोक में खो गया था। शेषनाग झील का ऊपरी आधा भाग सूखा था। ऐसी लोक मान्यता है कि अमर कथा सुनाने हेतु भगवान शंकर अपनी प्रिय भार्या पार्वती के संग यहां से गुजरते हुए उन्होंने अपने गले से सर्पों की मालाओं को यहां झील में उतार दिया था। सम्भवतः इसी कथा के आधारभूत शेषनाग-पर्वत पर नागों की आकृतियां विद्यमान हैं। ऐसा कहते है जब यहां इस झील में शेषनाग जी, पशु, नर-नारियों को नुकसान पहुंचाने लगे तो भगवान नीलकंठ ने झील को श्राप देकर पानी को आधा कर दिया। अब चाहे कितनी भी बर्फ गिरे या वर्षा क्यों न हो, शेषनाग झील आधी ही भरेगी। पूरी झील कभी पानी से नहीं भरती। नीचे झील में कुछ व्यक्ति नहाते हुए दृष्टिगोचर होने लगे थे। सम्भवतः यह सुरक्षा बलों के नौजवान सैनिक थे। दूर से यह नहाने वाले व्यक्ति ऊंगली के आकार में दिखाई दे रहे थे। धीरे-धीरे यात्रा में पिछड़े मित्र एकत्रित होने लगे थे। सभी दोस्तों के चेहरों पर भारी थकान की छाया दिखाई दे रही थी।

शेषनाग झील वाला भू-भाग बड़ा रमणीय था। तीन ओर से ऊंचे पर्वतों से घिरी झील थी। दक्षिण दिशा की ओर पर्वतों के पैरों में शेषनाग झील थी। राकेश कुमार व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भतीजा अशोक कुमार कहने लगे-"पहले लंगर से कुछ खा-पी लिया जाए। और तम्बू का प्रबन्ध कर लिया जाए।" सब ने इनकी बात का अनुमोदन कर दिया था। ऊंचे बर्फीले पर्वतों से आवोष्ठित यह स्थान यात्रियों के विश्राम हेतु लगे तम्बुओं से सारे-का-सारा भरा पड़ा था। तम्बुओं के चारों ओर कंटीली तार लगाई गई थी। भारतीय सेना और बी.एफ.एफ , सी.आर.पी. के सुरक्षा कर्मचारी पूर्णतय: चौकसी और जीजानसे अपना कर्त्तव्य निभा रहे थे। प्रत्येक यात्री उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा से अभिभूत था।

यात्रियों के लिए रात्रि विश्राम के लिए लगाए गए तम्बू मुसलमान ठेकेदारों के थे। अलग-अलग ठेकेदारों ने अलग-अलग पंक्तिबद्ध तम्बू लगा रखे थे। यात्रीगण रात्रि-विश्राम को ठेकेदारों से तोल-मोल तय कर रहे थे। तीर्थ यात्रियों की जिस टोली का मो़ल-भाव तय हो जाता, वह तम्बू में सामान रख कर लगे बिस्तरों पर पसर जाती। कौन टोला कितना किराया तय करके तम्बू ले रहा है। इसका ज्ञान किसी को न था। हमारे कुछ साथियों का विचार था कि यहां पर कुछ लंगर कमेटियों ने फ्री तम्बू यात्रियों के विश्राम के लिए लगाए हैं। क्यों न उनसे तम्बू फ्री लिया जाए। सी.आर.पी. वालों के लगाए फ्री तम्बू और लंगर कमेटी वालों के मुफ्त तम्बुओं से एक तम्बू अपनी टोली के लिए रात्रि-विश्राम को लिया जाए। इस काम के लिए लव कुमार की डियूटी लगाई थी। पन्द्रह-बीस मिंट के पश्चात् लव कुमार ने आकर सूचना दे दी थी कि फ्री टैंट में यात्री आ चुके हैं। एक भी मुफत में मिलने वाला तम्बू शेष नहीं बचा है। नरेश कुमार ने मुसलमान ठेकेदार से रात्रि का दो सौ रूपये किराया तैय करके तम्बू रात्रि-विश्राम को ले लिया था। समस्त साथियों ने अपना-अपना सामान तंबू में बिछे बिस्तरों के सिरहाने आ टिकाया था। रजाइयां ओढ़ कर थके-हारे थकावट में चूर हुए साथी सुस्ताने लगे थे। एक घंटे के विश्राम के साथ यात्री साथी लंगर से रात्रि भोजन करने हेतु टैंट से बाहर आकर गप्पें हांकने लगे थे। मैं और भतीजा अशोक कुमार रखवाली को वहां बैठे रहे थे। राह में राकेश के कान में रोहित ने फुसफुसाते हुए कहा-"अकंल! आखिर हर्ज भी क्या है?" सुनकर राकेश कुमार ठठा कर हंस पड़ा था। बात का संकेत बेमेल जोड़े की तरफ़ था। शेष चार साथियों ने पूछा-"हंसने वाली क्या बात है? हमें भी कुछ बताओ।"

"कुछ नहीं। बस यूं ही किसी बात का ख्याल जेहन में आया तो हंसी छूट गई।" कह कर उसने साथियों को टाल दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर का नामकरण विद्वानों की दृष्टि में

कश्मीर के सम्बन्ध में अनेकानेक इतिहासकारों, साहित्यकारों, विद्वानों और विदेशी यात्रियों ने बहुत कुछ अपने अनुभवों के आधार पर लिखा है। विश्व विख्यात कश्मीर ब्रह्मा की आलौकिक सृष्टि बनी हुई है। कश्मीर के उत्तर में नागपर्वत, पूर्व से हरमुख और दक्षिण में महादेव पहाड़ों से घिरे कश्मीर के इस अद्भुत भू-भाग के विषय में साहित्यकारों ने अपने-अपने कल्पना-लोक के अवलम्बन पर बहुत कुछ लिपिबद्ध किया है।

ब्राह्मांड के इस खण्ड के प्रागौतिहासिक काल से अर्वाचीन काल पर्यन्त विभिन्न अभिधानों के परिपेक्ष्य में अपना-अपना इतिहास है। बात तो स्पष्ट है कि 'कश्मीर' नामकरण से पूर्व इस भू-भाग का नाम कुछ और था। उस समय की वस्तु स्थिति को जानकर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह धरती नागदेश थी। 'नीलमत पुराण' और 'राजतरंगिणी' के अनुसार कल्हण के आदि से छः मन्वन्तर तक क्षेत्र सतीसर नाम का बड़ा सरोवर था।

आसीत सराः पूर्णजलं सुरम्यं सुमनोहरम्।
कल्यारम्भ प्रभृति तत् पुरा मन्वतराणि षट्।
अस्मिन्मन्वन्तरे जातं विषयं सुमनोहरम्।।

–नीलमतपुराण 12, 13

अतः कल्हण की राजतरंगिणी के मतानुसार–

''पुरा सतीसरः कंत्यारम्भात प्रभृति भूरभूत।
कुक्षौ हिमाद्रेरणोंभिः पूर्णा मन्वन्तराणि षट।।

–राजतरंगिणी 1/15

कल्हण कृत राजतरंगिणी प्रथम तरंग श्लोक 25-29

इस सरोवर के तट पर जो मानवजातियां रहती थीं, उनमें नाग जाति प्रमुख थी। इस बात से यह अनुमान सहज से ही लगाया जा सकता है कि यह भू-भाग आदि में नागजाति का निवास स्थान था। सातवें मन्वन्तर में भगवान विष्णु की आज्ञा से अनन्त ने सतीसर सरोवर का जल निकाल कर इसे आवास योग्य बनाया था। इसके बाद कश्यप ऋषि ने यहां पर पिशाच और मनु के वशंज बसाए थे।

अधिकांश विद्वानों का मत है कि (कल्हण कृत राजतरंगिणी, प्रथम तरंग, श्लोक 25-29) नई भूमि पर बसाने वाले पिशाच और मनु की संतानों ने अपने बसाने वाले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के नाम पर 'कश्यपसर' नाम रखा जो बिगड़ते-बिगड़ते 'कश्यपमर' और फिर कश्मीर बना। जीतराज की राजतरंगिणी में कश्मीर का उल्लेख 'काश्यपी' अथवा 'कश्यपपुरी' के रूप में भी आता है।

''कश्मीर काश्यपी भूपैरपालि गुण शालिभिः।

श्लोक - 3

'काश्यपी' कश्मीर का पर्यायवाची शब्द है। एक मत यह भी है कि कश्मीर 'क-समीर' का एक रूप है। जिसका अर्थ पृथ्वी का वह भू-भाग जिसके जल को समीर द्वारा निकाला गया हो। इसी प्रकार 'कंश्मीर' शब्द के कई और अर्थ भी किए गए हैं। परन्तु शब्दों की मात्र व्याख्या करके इतिहास नहीं गढ़ा जा सकता।

कल्हण की राजतरिंगणी में इस भू-खण्ड के लिए 'कश्मीर' दोनों नाम आए हैं। एक विद्वान का कथन है कि नीलमतपुराण में देवी उमा के समान पूज्या जिस 'कश्मीरा' नामक एक पर्वतीय देवी का वर्णन आया है। उसी के नाम पर 'कश्मीरा' अथवा 'कश्मीर' शब्द विचलित हुआ।

यैवदेवी उमा सैव कश्मीरा नृपपुगव।

-नीलमतपुराण, श्लोक 12

द नीलमत पुराण-ए कलचुरल एंड लिटिरेरी

स्टडी-डॉ. वेदकुमारी, पृष्ठ-23

ऋग्वेद के दसवें मण्डल की इस उक्ति के अनुसार-

इमं मे गंगे यमुने सरस्वति

शुतद्रिस्तोमं सचता परूष्ण्या।।

असि कन्या मरूद्वृध्ने वितस्तया

जींकीये श्रृण्ह्या सुषीतया।।

-ऋग्वेद मण्डल, 10

अ-6, सूक्त-75, ऋचा-5

इस बात की पुष्टि हमें 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' से भी होती है, जिसमें कश्मीर देश के लिए 'वैतस्तिक' नाम आया है। अतः पृथ्वी का वह भू-भाग जहां पर वितस्ता नदी है।

(विष्णुधर्मोत्तरपुराण, 1 / 164)

कश्मीर का उल्लेख वायुपुराण, पदमपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण और मार्कण्डे पुराण में भी मिलता है। वैदिक तथा पुराण साहित्य में कश्मीर के वर्णन से यह स्पष्ट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूप में भी मिलता है कि कश्मीर उस युग में आर्यों का आकर्षण केन्द्र रहा है। कश्मीर के शांत, सुरम्य और प्रकृति अलौकिक छटा से प्रकांड विद्वानों और यहां के निवासी पंड़ितों की उत्पत्ति और उन्नति हुई। इतिहांस गवाह है कि कश्मीरी विद्वान पंड़ितों के पास विद्या अर्जित करने हेतु चहुंदिशाओं से लोग आते थे। शड्खायन ब्राह्मण में वर्णन है-

''पथ्यास्वस्तिरू दीचीं दिशं प्राजानात।
वाग वे पथ्या स्वास्ति:।
तस्मादुदीच्यां दिशि प्रज्ञाततरा वागुदयते।
उदन्चेओ एव यान्ति वाचं शिक्षि तुम।.........।''

अर्थात् पथ्यावस्ति ही वाक् है। लोग उत्तर दिशा में भाषा सीखने जाते हैं।

अलबेरूनी की अरबी पुस्तक 'किताबुल हिन्द' भी इस बात का अनुमोदन करती है। यह कहना भी यहां उचित ही होगा कि कश्मीर न केवल शारदापीठ रहा है अपितु सर्वज्ञान पीठ भी रहा है।

बाल्मिकी रामायण के अयोध्या कांड के 68 वें अध्याय में भरत के ननिहाल का कैकय देश नाम से उल्लेख है। कल्हण कृत राजतरिंगणी के सप्तम तरंग में यह क्षेत्र पीरपंचाल पर्वत के दक्षिण में बताया है जो आजकल राजौरी का इलाका है। इसके चारों ओर जो पथरीला क्षेत्र है, वही रामयण क़ाल में कैकय देश था।

समय-समय पर जिन विदेशी यात्रियों ने कश्मीर का भ्रमण किया है, उन्होंने अपने यात्रा वर्णनों में इस भू-भाग का उल्लेख अनेक रूपों में किया है। इन यात्रियों में अधिकांश चीनी यात्री थे। चीनी लोग प्राय: भारत के उत्तरी भागों को 'कि-पिन' नाम से पुकारा करते थे। सर्वप्रथम यूनानी कोफेन (काबूल) को यह संज्ञा दे दी गई थी।

(डब्ल्यू-डब्ल्यू टार्न, दि ग्रोकस इन बेक्ट्रिया एण्ड इंडिया, पृष्ठ-172,173)

कुषाण काल में 'कि-पिन' का अर्थ कुषाण राज्य था, जिसमें कश्मीर शामिल था। महाराज कनिष्क के राज्यकाल में कश्मीर और गन्धार (आधुनिक अफगानिस्तान) का आपस में निकट का सम्पर्क था। कश्मीर और गन्धार प्राचीन भारत के 24 जनपदकों में एक जनपद था।

578 ई. में एक चीनी विद्वान तानयांग कश्मीर की यात्रा पर आया था। उसने कश्मीर को 'शी-मी' कहा है। चीनी भाषा में इसका अर्थ उस क्षेत्र से है जहां अत्यधिक शीत हो और वर्ष के छ: माह तक बर्फ गिरती हो।

एक विदेशी यात्री मार्को पोलो (13 वे शती ई.) कश्मीर का वर्णन करते हुए लिखता है कि यहां के लोगों को अपनी भाषा वाला कहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐतिहासिक दृष्टि से इस नाम का सबसे पहला निर्देश अमीर खुसरो (13वीं शताब्दी) की 'नूर-सिपिह्न' (सि.3) में मिलता है। 'कश्मीरी भाषा' के आदिम कवियों में लल्लेश्वरी और नन्द ऋषि का नाम आता है। नाम के साथ ऋषि शब्द जोड़ना कश्मीर में प्रचलित हुआ। परन्तु आर्य लोग ऐसा प्रयोग नहीं करते थे। लल्लेश्वरी और नुन्द ऋषि का उच्चकोटि के कवियों और सन्तों की परम्परा के संस्थापक बने। ऋषियों और सन्तों की जन्मभूमि होने से यहां के लोगों ने देशी काश्मीरी भाषा के शब्दों से इस भू-भाग का नामकरण 'रेश्यावॉर' किया और यह आज भी प्रचलित है।

फारस आदि मुसलमान देशों से जो लोग यहां आए उनमें किसी के लिए 'कश्मीर', 'फिरदौस' और किसी के लिए 'जन्नते-बेनज़ीर है। अक्तूबर 1947 ई. को विलय भारत में हुआ और इसे 'नया कश्मीर' की संज्ञा दी गई।

कश्मीर की लोकप्रिय संज्ञा 'कशीर' है और राष्ट्रभक्ति के कारण इसे 'मॉज कशीर' से पुकारा जाता है।

अन्तत: यही कहा जा सकता है कि कश्मीर के विभिन्न नाम युगीन सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और भाषायी तथ्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और इसके नामकरण की सार्थकता को प्राचीन से वर्तमान समय का इतिहास की अतल गहराई को दिखाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लंगर में महारास की कैसेट बजना व शेषनाग झील के नाम की सार्थकता

सृष्टि का ज़र्रा-ज़र्रा परमसत्ता के रहस्य से परिपूर्ण है। इस भेद का जितना उद्घाटन हम करने का यत्न करते हैं, उतना ही यह रेशम के बारीक धागों की तरह उलझता चला जाता है। मानव ने उस सृष्टिनियन्ता की अद्भुत रचनासे अभिभूत होकर, चमत्कृत होकर उसकी दुनिया को सर्वशक्तिमान ईश्वर की लीला कहा है। यह विश्व उसकी अनन्त-बेअन्त-शक्ति-सम्पन्न की क्रीड़ा स्थली है। इस संसार की रचना उस परमसत्ता ने खेल-खेल के रूप में की है। संसार की इस अलौकिक रचना के खेल को समझकर कुछ कहने से मानव तो कुछेक पल के लिए हल्का हो जाता है, परन्तु जग-रचना को कितनी भी चतुर, प्रवीण और ज्ञानी-ध्यानी बनकर उसका पार पाने का प्रयत्न करे- वह हर बार अधूरेपन में ही खोकर रह जाएगा। अतः भगवान की लीलामय प्रवृत्ति इस जगत के कण-कण में एक अनवरत थिरकन बनकर व्याप्त है। इसलिए उस असीम, अनन्त परमसत्ता के रहस्य और उसकी अलौकिक रचना का उल्लेख करना असम्भव है। शास्त्रों ने उसके गुणगान और महिमा की पूर्णता के सम्मुख नेति-नेति कह कर इतिश्री कर दी है।

हमारे साथी रात्रिकाल का भोजन करके तम्बू में आ गए थे। मुझे और अशोक को उन्होंने भेज दिया था। सन्धयाकालीन सूर्य अपने दैनिक कार्यकलाप को करते-निपटते पश्चिमी छोर रूपी बिस्तर पर विश्राम करने को धरा को मानव सा आकुल-व्याकुल हो उठा था। लंगर की तरफ हम मौन साधे चल रहे थे। कुछेक मिंटों में हम लंगर में आ गए थे। वहां की सुव्यवस्था, सफाई, सेवाभाव देखकर मैं आचंभित था. इतने दुर्गम स्थल पर राशन पहुंचाना अत्यन्त कठिन और जोखिम भरा काम था। यहां हर प्रकार का व्यंजन तैयार करके रखा गया था। लंगरों में पिस्ते-बादाम वाला मलाईदार दूध की व्यवस्था भी थी। वाह रे भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आधार-परमार्थीभाव! सोचता हूं यदि भारतीय मनीषियों ने सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः वसुधैव कटुम्बकम और बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का अमरता से परिपूर्ण सेवा-भाव का तत्त्व न डाला होता तो भारतीय धरती व संस्कृति कभी इतनी उच्च, पूजनीय और गौरवशाली न हो पाती। निस्वार्थ, बिना लोभ लालच के, अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, नर-नारी में भेदभाव के मानव सेवा अनेरकानेक कष्ट सह कर करना ही भारतीय संस्कृति का आधार है। यही भाव सेवा करना ही मानव-को-मानव से जोड़ता है। मानव हृदय में गौतम बुद्ध सी करुणा, प्रेम, समानता उत्पन्न करता है। इसी मानव धर्म के कारण तो भारत को विश्व गुरु के पद पर सुशोभित किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लंगर में एक कैसेट इस प्रकार बज रही थी- परमात्मा के संकेत पर महारास एक क्षण भी रुके बिना अबाध गति से चल रही है। आदि शक्ति और परमतत्त्व जब स्वयं महारास में मग्न हों तो सृष्टि का कण-कण भी उसी में भावलीन क्यों न हो! प्रकृति तथा पुरुष का, माया तथा मायापिति का मधुर मिलन ही महारास है। इस मिलन में ही सृष्टि की मूल प्रेरणा निहित है। आगे भजन शुरू हो जाता है-

जन्म अवधि हम रूप निहारनु
नयन ना तिरपित मेल।
लाख-लाख युग हियाय राखन
`तवू हिय जुड़ ना गेल।
वचन अभिनय अनुक्षण शुनल्
श्रुतिपथ परश न मेल।।

आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, सब ओर उस परम तत्त्व के लास्य के अतिरिक्त कुछ नहीं है-

तुम बंधु तुमि नाथ, निश दिन तुमि आमार।
तुमि सुख तुमि शान्ति, तुमि हे अमृत पाथार।।
तुम आनन्द लोक जुडावी, प्राण नाशो शोक।
ताप हरन तोमार चरन असीम शरन दीन जानार।।

यदण्डे तद् ब्रह्माण्डे-जो हमारे भीतर है, वही बाहर है-ब्रह्माण्ड में है। इस सिद्धांत के अनुसार आज से पांच हजार वर्ष पहले श्री कृष्ण धाम वृन्दावन में जो रासलीला का प्रकाश हुआ था, वह महारास स्फु लिंग मात्र था। श्री कृष्ण तथा गोपियां क्रमशः परमसत्ता एवं आत्माओं का प्रतीक हैं। ज्योत्स्नाप्लावित वृन्दावन के कुंजों के भीतर से श्री कृष्ण ने मुरली की तान छेडी-

श्याम ने मुरली मधुर बजाई।
सुनत टेर तनु सुधि बिसारी सब गोप बालिका धाई।
लंहगा ओढ़ि ओढ़ना पहिरे, कंचूकि भूलि पराई।
नक बेसर डारे स्त्रवनन मंह, अदभुत साज बजाई।।
धेनु सकल तृनचरण बिसारयो ठाढ़ी स्त्रबन लगाई।
बछुरन के थन रहे मुखन मंह सो पथ पान भुलाई।
पशु पंछी जहं तहं रहे ठाढ़े मानो चित्र लिखाई।
पेड़ पहाड़ प्रेम बस डोले, जड़ चेतनता आई।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कालिन्दी प्रवाह नहिं चाल्यो चराचर सुधि विसराई।
ससि की गति अवरुद्ध, रहे नभ देव विमानन छाई।
धन्य बांस की बनी मुरलिया बड़ो पुण्य करि आई।
सुर मुनि दुर्लभ रुचिर बदन नित राखत स्याम लगाई।

गोपियां सुधबुध भूलकर, अलौकिक रसास्वादन करने दौड़ पड़ीं। नदी समुद्र के पास पहुंच कर शतधा विभक्त होकर आराध्या से मिलने को व्याकुल हो जाती है। वैसी ही दशा गोपीजन की थी। उनके लिए चारों ओर माधुर्य का वातावरण छाया हुआ था। वही माधुर्य जिस की प्रंशसा उपनिषदों में इस प्रकार की गई है- आनन्द से ही सब कुछ उत्पन्न होता है। उसी के सहारे जीता और फिर उसी में लीन हो जाता है। उसी महान में ही वास्तविक सुख है, अल्प में नहीं। उसी को जानना चाहिए।

इस आनन्द में सरोबोर गोपियों की यदि तन की सुध बिसर गई, वस्त्राभूषण के औचित्य का यदि ध्यान नहीं रहा तो कोई आश्चर्य नहीं है। उनका प्रियतम उन्हें हर वेश में ग्रहण करने को बाहें फैलाए खड़ा है।

मैं महारास लीला के दृष्य अपने मानस पट पर देख कर आनन्द विभोर हो गया था। मुझे कोई समय-स्थान का ध्यान न रहा था। मन की चाहत थी कि यह कैसेट बजती रहे और मैं इसी तरह सुधबुध खो कर इसे सुनता रहूं। इतने में अशोक ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर आवाज दी- ''चाचा जी! चाचा जी!!'' मेरी महारास के मानसपट पर हो रहे अद्‌भुत खेल से मेरी तंद्रा भंग हुई। मुझे पल भर के लिए यकीन ही नहीं हुआ कि मैं इस नश्वर संसार में पुनः लौट आया हूं। आनन्द-कलश विनष्ट हो गया था।

''हां बेटा, कहो।'' उसकी ओर देख कर मैंने पूछा।

''अब हमें लंगर से चलना चाहिए। विश्राम कर लें। कल सुबह दोबारा अमरनाथ यात्रा को निकलना है।'' कहा अशोक कुमार ने।

कुर्सी से उठ कर मैं खड़ा हो गया था। अब बम भोले, बम भोले की कैसेट बजने लगी थी। लंगर से बाहर आकर हम खाली जगह पर खड़े हो गए थे। हम दोनों का मुंह उत्तर-पूर्व दिशा को ओर था। मेरा ध्यान बरबस शेषनाग झील के पूर्व दिशा की ओर खिंच गया था। पर्वतों की सात गगनचुम्बी हिमाच्छादित चोटियां खड़ी थीं। सातों चोटियों के मध्य वाली पर्वत श्रृंखला के नीचे पड़ी सफेद-धवल बर्फ निहार कर मुझे शेषनाग के नीचे वाले सात फनों में सफेद भाग जो होता है, स्मरण हो आया था। इन पर्वत मालाओं की भव्य, अदभुत संरचना को देखकर विस्मित हो उठा था।

अशोक कुमार ने कहा-''चाचा जी!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने अपने कल्पना लोक से वापिस आकर सम्मुख सुन्दर और अलौकिक पर्वत श्रृंखला की ओर संकेत करके कहा–"बेटा अशोक सामने वाली इन सात पर्वत चोटियों से ध्यान से देखो। इस स्थान का नाम वास्तव में इन सात पर्वत श्रृंखलाओं के कारण "शेषनाग- उचित है।"

अशोक कुमार कुछ देर के लिए उस रमणीय दृष्य को देख कर गद्गद् हो उठा था। भाव विहव्ल होते हुए वह बोला- "मैं साहित्यकारों की भांति कल्पना तो नहीं कर सकता। हां, इतना अवश्य कहूंगा कि भगवान शिव ने ही शेषनाग के स्मरण हेतु इन सात पर्वत–मालाओं का निर्माण किया होगा।" इन पहाड़ों के नीचे नाला बह रहा था। जिस का जल शेषनाग झील को भर रहा था। पर्वतों से बर्फ पिघल कर शीतल स्वच्छ हल्के नीले रंग में पानी नाले को भर रहा था। जिस स्थान पर मैं खड़ा था, वहां से शेषनाग झील स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही थी। दक्षिण दिशा की ओर गगनचुम्बी पर्वत खड़ा था। पर्वत के मध्य भाग से दूर, बहुत दूर मन्दिर नुमा बर्फीले पर्वत व देवदार के झुंड दिखाई दे रहे थे। जी चाह रहा था–इस भव्य दृष्य को निहारता रहूं। उन पर्वतों से छोटी सी नदी निकल कर जल प्रपात का रूप बना कर पहाड़ के ऊपरी भाग से झील में गिर कर मनमोहक नजारा बना रही थी। काश! मेरे पास दूरबीन होती तो जो नीलिमा लिए अस्पष्ट से दृष्य को ठीक से देख पाता। इन अलौकिक दृष्यों को देखकर दिनभर की हुई थकान मिट गई थी। सोचा- प्रकृति भी क्या चीज है। प्रकृति की हरी–भरी की हुई, सुखद गोद में मानव जाति का जीवन सुरक्षित है। परन्तु आज दुनिया के हरेक देश का नागरिक प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है। उसे प्रकृति के महत्त्व का ज्ञान नहीं है, सो ऐसी बात नहीं है। मानव प्राकृतिक आंचलों को काटकर समतल मैदान बनाने में दत्तचित्त होकर जुट गया है। जहां कल तरू–झुंड, जंगल थे- वहां मनुष्य ने कंकरीट के जंगल उगा दिए हैं। विवेक, बुद्धि, बढ़िया सोच के धनी नर–नारी प्रकृति रूपी मोहनी को, वृक्षों को काट कर चिढ़ा रहे हैं। निरीह युवती सी प्रकृति रानी मानव बुद्धि के दीवालेपन पर चिंतित हो रही है। प्रकृति रानी मानों ऐसा विचार करती है–भगवान की धरती की सबसे सुंदर–चतुर रचना –प्रलय को आमंत्रित कर रही है। आखिर मानव का यह प्रकृति संग घिनौना खेल कब तक चलता रहेगा। इसके किए का अंजाम देर–सबेर आखिर उसे भुगतना होगा।

अशोक कुमार ने मेरे कंधे पर हाथ रखा तो मेरी विचार श्रृंखला भंग हो गई थी। हम दोनों चाचा–भतीजा अलसाए कदमों से अपने तम्बू में आ गए थे। अंधेरे ने आहिस्ता–आहिस्ता अपनी काली चादर फैलानी शुरू कर दी थी। समस्त साथी तम्बू में अपने–अपने बिस्तर में आराम फरमा रहे थे। तभी दौलतराम, पवन कुमार व राकेश दिल्लगी के लिए लवकुमार को चिढ़ाने लगे थे। तम्बू में खूब हंसी–मजाक होने लगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। हम सभी बिस्तर पर उठ कर बैठ गए थे। चार आदमियों की मजाक की बातें सुन कर हम हंसी में लोट-पोट होने लगे थे। सभी उसे पनीर पट्ठा कहकर सता बता रहे थे। सभी साथी थोड़ा गंभीर हुए तो लव कुमार बताने लगा-बीएसएफ के जवान बता रहे थे, इस महीने में रात को दो बार अमरनाथ यात्रियों को शेषनाग देवता ने दर्शन दिए हैं। वह बता रहे थे- उन्हें भी पिछली रात को शेषनाग ने मणियों से जगमगाते हुए दर्शन दिए हैं। इन बीएसएफ वालों ने तम्बुओं में सोए यात्रियों को जगाकर दर्शन करने को जगाया था। जो वक्त पर आलस त्याग कर जागा, उसने शेषनाग झील में शेषनाग देवता के शुभ दर्शन कर लिए थे। मेरे जैसे आलस के मारे मर्द-जनानियां सोए ही रहे।

समस्त साथी ऐसी अद्‌भुत बात सुनकर मन-ही-मन शेषनाग देवता के दर्शन करने की भोलेनाथ से फरियाद करने लगे थे। सभी साथी शेषनाग के दर्शनों से वंचित रह जाने पर हल्की सी उदासी का शिकार हो गए थे। परन्तु निरी उदासी से मानव का कल्याण नहीं होता। साथी मन-ही-मन सोच रहे थे- ''शेषनाग देवता के दर्शन दुर्लभ, भाग्यशाली नर-नारियों को ही होते हैं, लल्लू-पंजू लोगों को नहीं।''

दैनिक कार्यक्रम की रूप रेखा राकेश कुमार व पवन कुमार बनाया करते थे। उन दोनों ने हमें सोने से पूर्व कह सुनाया था कि कल प्रातःकाल 5:30 पर अगले पड़ाव पर निकल जाना है। समस्त साथी सुनकर बिस्तर-रूपी मांद में विश्रामहेतु दुबक गए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शेषनाग के अन्तर्दर्शन व लंगर का मुफ्त माल खाने की सजा

छः अगस्त को सोमवार था। प्रातःकाल मेरी आंख खुली तो मालूम हुआ कि बिस्तर के नीचे पानी था। टार्च से कलाई घड़ी पर समय देखा। सुबह के साढ़े-तीन बजने लगे थे। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। उठ कर तम्बू के बाहर झांका-बाहर सुनसान, सायं-सायं, सियाह डरावना अंधेरा व घोर सन्नाटा छाया हुआ था। मैंने शौच आदि से निवृत होने का मन बनाया। छोटा छाता मेरे पास था। नंगे पांव छाता लेकर बाहर निकला था। चारों तरफ पानी-ही-पानी था। वर्षा अमंद चाल से बरस रही थी। वापिस आते वक्त में अपने तम्बू का रास्ता भूल गया था। दो तीन बार तम्बुओं के चक्कर लगाने पड़े थे। किंतु मुझे तम्बू नंबर स्मरण था। बड़ी कठिनाई से अपने तम्बू में वापिस लौटा था। भोलेनाथ का लाखों बार धन्यवाद किया था। बिस्तर पर बैठ कर थोड़ा नाम ध्यान करने का मन बनाया। रात्रिकाल को शेषनाग के झील में दर्शनों का वाकया याद हो आया था। मैं अपनी मन-बुद्धि व इंद्रियों को संकोच करके ध्यान साधना में लीन होने लगा था। ज्यों ही मैं ध्यान की अतल गहराई में उतरा नाग देवता शेषनाग से विनती को – "हे नागदेव शेषनाग जी! हे भगवान शंकर के गले के आभूषण!! हे विष्णु की क्षीर-सागर शैय्या में उनके सिर पर छाया करने वाले परम वन्दनीय नाग देव!!! हम आप के निवास-स्थान झील के किनारे अमरनाथ यात्रा को आए हैं। आपने सुंदर, अलभ्य मणियो से अलंकृत होकर, अलौकिक जगमगाहट में तीर्थ यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं को शुभ दर्शन देकर, उनके जीवन को धन्य किया है। यात्रियों की चिरसंचित अभिलाषा को पूर्ण किया है। मैं भी अनेकानेक कष्ट सहन करके 'अमरनाथ यात्रा' को सम्पन्न करने हेतु आप के निवास स्थल 'शेषनाग झील' के सन्धिय में, एक तम्बू में विश्राम करने हेतु ठहरा हूं। मेरी भी चिर अभिलाषा है कि आप मुझे भी अपने दर्शन देकर कृतार्थ करें। भाग्यशाली बनाएं। आशा करता हूं-आप अपने श्रीचरणों में आए इस श्रद्धालु को निराश नहीं होने दोगे। तभी ध्यान में अन्तर्नेत्रों से देखता हूं-शेषनाग देवता झील में विराजमान है। उनके सातों फनों का आकार काफी बड़ा है, जिन पर मणियां जगमगा रही थीं। मेरी बिनती को नाग देवता ने कबूल करके शुभ, मंगलकारी दर्शन देकर मुझे भाग्यशाली बना दिया था। सोचने लगा- वह देवता ही क्या जिसमें दया नहीं। शेषनाग के दर्शन देकर मुझे कृतार्थ कर दिया था। मन-ही-मन शेषनाग का कोचि-कोटि बार धन्यवाद किया था। उसके पश्चात् ध्यान-साधना से मेरा मन उचट गया था। सोचा थोड़ा और विश्राम कर लूं। सुस्ता लूं। नींद की झपकी ले लूं। परन्तु बिस्तर के नीचे तो ठंडा-ठंडा पानी भर गया था। अब सोना असम्भव था। बैठा रहा। देर तक बैठा रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन की धारा को प्रभु चिंतन में लाने का प्रयास करने लगा था। सोचने लगा-ब्रह्म-बेला में आत्म-चिंतन ही होना चाहिए। मानव-जीवन निरूद्देश्य नहीं है। इस जीवन के रहते प्रभु-मिलन के उस लक्ष्य को प्राप्त करना ही जीवन के संघर्ष का मधुर फल है। परन्तु जीवन नैया को इस भवसागर से खेह कर पार ले जाना आसान नहीं है। मानव के जीवन-मार्ग पर पग-पग पर मुश्किलें, मुसीबतें खड़ी हैं। शारीरिक, मानसिक रूप से चिंतित नर-नारी कष्ट, यातनाएं भोग रहे हैं। कभी सर्दी तो कभी गर्मी दुःख देती है। कभी बाल बच्चों से मोह होता है तो कभी गरीबी की चक्की में मनुष्य पिसता है। आज यौवन में हर्ष उल्लास है जो कल बुढ़ापे से जर्जर तन की यातनाएं सहन करनी पड़ती हैं। प्रियजनों में पति-पत्नी, पुत्र, मित्र, आत्मीय सम्बन्धियों का मृत्युदंश, वियोग और पीड़ा मानव को तन-मन से पीड़ा-गम देकर तोड़ देती है। जिस से जीवन नीरस और कड़ुवा लगने लगता है। सारांश यह है कि जीवन में पग-पग पर बाधाएं, असफलताएं, रोग-शोक व कठिनाइयां नर-नारी को घेरे रहती हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, पुत्तेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा आदि अनेक मनोअभिलाषाएँ जीवन की किश्ती को डांवाडोल करती रहती हैं। किसी शायर ने कितना मार्मिक लिखा है-

बस कि मुश्किल है हर काम आसां होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना।।

यह मनुष्य जीवन जो चौरासी लाख योनियों को भोगने के बाद मिला है, सब से श्रेष्ठ और दुर्लभ है। जीवन के पल-पल को नष्ट होते देखकर हमारी चेतना ईश्वराधना, भगवान्नाम जाप और इष्टदेव की भक्ति व ध्यान-साधना में अमोद्य शक्ति है। अपने तन, परिवार व नाते-रिश्तों के प्रति अनासक्ति का भाव और परमपिता परमेश्वर की ओर मन को लगाना सुख-शांति व अगले जन्म के लिए मंगलकारी है। श्री हितहरिवंशाचार्य महाप्रभु नेकितने सुंदर शब्दों में कहा है-

तनहि राखि सतसंग में, मनहि प्रेम रस मेव।
सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण कल्पतरू सेव।।

जो काया देखने में इतनी सुन्दर थी और जिसे मनोवांछित वस्तुों से पाला-पोसा, बड़े आराम और सुख से रखा था, कालकवल होने पर वही शरीर को मूंज की रस्सियों से लकड़ी के तख्त पर कसा जाता है। इसलिए इस क्षणभंगुर काया को समय रहते ईश्वराधना, तीर्थ यात्रा, परमार्थ सेवा में लगाना चाहिए ताकि हमें सद्गति की ओर चलने का मार्ग मिले। भक्ति नौ प्रकार की है। वह उनसे किसी का तो दामनथामे। बेड़ा पार हो सकता है। ''नवविद्या भक्ति'' कहा जाता है-

श्रवण, कीर्तन, नाम स्मरण पादसेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यम, सख्यं आत्म निवेदनम्।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थात् (1) श्रवण (2) कीर्तन (3) नाम स्मरण (4) पादसेवा (5) अर्चना (6) वंदन (7) दास्य (8) सख्य (9) आत्म निवेदन।

साढ़े चार बज चुके थे। अशोक कुमार उठ कर बैठ गया था। बिस्तर के नीचे गीला-गीला अनुभव करके बोला- "बिस्तर के नीचे तो पानी भर गया है चाचा जी।" सुन कर मेरी विचारधारा में भक्तिमय, पुण्यमय जीवन, परमार्थी जीवन व निरासक्ति और हरिचरणों में एकाग्रता के भाव भंग हो गए थे।

मैंने अशोक कुमार को टार्च और छाता देते हुए कहा- "बेटा शौचादि से फारिग हो आओ। लोगों का हजूम जाग गया तो जगह मिलना कठिन हो जाएगा।" बीबे व आज्ञाकारी बच्चे की तरह वह उठ कर शौचादि से निवृत होने को चल दिया था। बाहर अभी घुप्प अंधेरा था। हाथ-को-हाथ सूझ न रहा था। पानी अभी भी खूब बरस रहा था। शेष साथी अभी निद्रामन थे। मेरा मन पुनः उपनिषदों में महाऋषियों द्वारा रचित ज्ञान, भक्ति व कर्म की त्रिवेणी धारा में बहने लगा था-

ओउम ईशा वास्यमिंद सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्सेन भुनजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

अर्थात् इस जगती में जो जहान है वह ईश्वर द्वारा अधिनिष्ठ है। इसलिए संसार में भोगों का त्यागपूर्ण भोग करो। किसी दूसरे के धन की इच्छा मत करो।

भारतीय मनीषियों ने सत्य का दर्शन आज से बहुत पहले कर लिया था। उन्होंने कहा था-

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।

अर्थात् मनुष्य की धन-दौलत से अंतिम तृप्ति शांत नहीं हो सकती। राजा से संन्यासी बने भर्तृहरि ने भीउसी बात को बड़े सुन्दर ढंग से कहा है-

भोगाः न भुक्ता वयमेव भुक्ताः।

अर्थात् भोग तो भोगे ही नहीं गए। अतः हम ही भोगों द्वारा भोग लिए गए।

भगवान श्री कृष्ण जी का गीता में कहा गया यह श्लोक बरबस मानस पट पर अंकुरित हो आया-

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांशचरति निः स्पृहः।
निर्भयो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।।

अर्थात् जो मनुष्य सभी कामनों को छोड़कर, इच्छा रहित हो संसार में विचरता है, वह निडर, निरंहकार होकर शांति को प्राप्त करता है।

अशोक कुमार शौचादि से फारिग हो तम्बू के अन्दर आ गया था। मैंने घड़ी देखी तो सवा पांच बजने को थे। मैंने नरेश कुमार, पवन कुमार, राजेश को उठने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation.Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज दी थी। वर्षा इस समय थम गई थी। हल्का-हल्का उजाला वातावरण में होने लगा था। किंतु तेज हवा ने ठंडी में इजाफा कर दिया था। मेरे पास सर्दी से सामना करने को गर्म वस्त्र थे। मैंने उन्हें पहन कर अमरनाथ यात्रा हेतु कमर कस ली थी। रात्रिकाल को सोने से पूर्व रोहित कुमार और विनोद कुमार ने हमें बताया था कि- सन् 1986 में यहीं शेषनाग स्थान पर यात्रा के दौरान बर्फीला तूफान आया था। कहते हैं- तीन-तीन, चार-चार किलोग्राम के बर्फानी ओले गिरे थे। तब अमरनाथ यात्री जो यहां विश्राम को ठहरे थे, बहुत ज्यादा तादाद में मौत की गोद में समा गए थे। सुबह जब मूसलाधार वर्षा हो रही थी, उस समय सहसा मेरे जेहन में ओले गिरने वाली बात ज्यों ही आई, मैं सिर से पांव तक कांप उठा था। मन-ही-मन भगवान शिव से विनती की थी कि सभी तुम्हारी तीर्थयात्रा पर आए तीर्थ यात्री अपनी-अपनी यात्रा सम्पन्न करके स्वस्थ चित, सकुशल अपने घरों को लौट जाएं।

सन् 1986 को मैं परिवार सहित, चौधरी सरजंग बहादुर व उसके परिवार को साथ लेकर श्री नगर में अपने साला-सलहज के पास ठहरे थे। उन दिनों अमरनाथ यात्रा आरंभ हो चुकी थी। किसी रेलवे कर्मचारी मित्र ने पहलगांव स्थित रेलवे हालीडे होम क्वांटर में ठहरने का प्रबन्ध कर दिया था। पैसे बचाने की गर्जसे हम अमृतसर निवासी लाला के लंगर में तीनों समय भोजन करने आते थे। एक दिन का वाकया था- मुश्किल से साढ़े चार फुट का दुबला-पतला, काला सा, मरियल सा बाबा लंगर में वहां आया तो दो कम्बलों की डिमांड करने लगा था। लंगर का मालिक उसे एक कम्बल देने पर महात्मा को राजी कर रहा था। परन्तु महात्मा नहीं मान रहा था। हम तौ दो ही कम्बल लेईगा। एक नाहीं लेंगा। राजहठ, त्रियाहठ, बाल हठ और योगी हठ- चारों जगत में हठ को प्रसिद्ध हैं। अंत में लंगर मालिक ने दो बढ़िया कम्बल महात्मा को देकर उसके चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया था। महात्मा कम्बल लेकर वहां से चला गया था। मैंने सेठ जी से पूछा- "आपने इस काले-मरियल-जिद्दी महात्मा को दो बढ़िया कम्बल क्यों दिए। महात्मा तो त्यागी-बैरागी होते हैं। लालची ही बनना है तो महात्मा बनने की आवश्यकता ही क्या? कुछ और भी-भिखारी बगैरा बना जा सकता है। भगवे वस्त्रों में महात्मा-योगियों के बाने को ऐसे लोग बदनाम क्यों करते है? उस महात्मा को एक कम्बल की जरूरत थी, यह जिद्द करके दोले गया। एक कम्बल बचता तो किसी जरूरतमंद के काम आता।"

"यह कोई ऐरा-गैरा महात्मा नहीं है बेटा जी।" सहजता से सेठ कह गया था।

"इस महात्मा में क्या कोई खास खूबी है? मुझे तो इसमें लालचपन की खूबी दिखाई दी है।" मैंने कहा।

"नहीं बेटा नहीं। इस ने 'शेषनाग झील' के पड़ाव पर बर्फीले तूफान में से बर्फ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से नंगे-पाव-बंदन में नौ लोगों को निकाल बाहर करके जिंदगी बख्शी है। तभी तो मैं उसके आगे एक कम्बल लेने को तरले-मिन्नतें करने लगा था।'' कहकर सेठ मुस्करा कर मौन साध गया था।

सुनकर हम सब के आश्चर्य में मुंह खुले रह गए थे। सोचा- 30-35 किलोग्राम का यह बंदा कई फुट ऊंचे बर्फ के अंबार से भारी-भरकम काया वाले आदमी-महिलाएं उठा कर कैसे उठा बाहर लाता होगा? यह आदमी है या जेसीपी भार उठाने वाली मशीन! आखिर लाला की बात से मन-ही-मन सहमति जताने के अलावा और कोई चारा न था।

मानव स्वभाव भी क्या चीज है। महात्मा का लालच तो मुझे कतई अच्छा न लगा था। परन्तु तीनों वक्त उसी सेठ के लंगर से खाना-पीना करके अपनी जेब खाली होने से बचाना क्या महालालच नहीं था? जबकि लंगर अमरनाथ यात्रियों के लिए लगाए गए थे। इन में दान देना तो दूर रहा, उल्टे हम पैरों के बल होकर लंगरों में बनने वाले व्यंजनों का लुत्फ उठाते थे। बिना भगवान शिव की अमरनाथ यात्री के लंगर खाना अनुचित था। भगवान अमरनाथ ने मेरे परिवार को इस लंगर का माल खाने की बाखूब सजा दी थी, जो आमरण जेहन में रहेगी। वापिस घर पहुंचने के पश्चात् मुझे व मेरे परिवार को खारिश का रोग हो गया था। ऐलोपैथी, आयुवैदिक, होमोपैथी व हकीमों से जैसे-जैसे हम उपचार करवाने में जुटे, रोग बढ़ता जा रहा था। मेरी हिप पर 14-14 फुन्सियां निकली थीं। अन्तरंग वस्त्र मावाद से भर जाते थे। सारी रात फट्टे की नाई सीधा सोना पड़ता था। 50-60 किलोमीटर के दायरे में तालाब, चश्मा, बौली हमने न छोड़ी थी, जिसमें सपरिवार न नहाया था। दो वर्ष तक यही लम्बा सिलसिला चलता रहा था। बच्चे सूख कर कांटा हो गए थे। यार-दोस्त, पड़ोसी और रिश्तेदार हम जैसे खारिश के मरीजों से कोसों दूर रहते थे। ऐसी छूत वाली नामुराद बीमारी को कौन अपने गले बांधने के तैयार होता है? जैसे हमें पहलगांव वाले लंगर का तरमाल मुफ्त उठाने का अपराध स्मरण हुआ, मैंने सपरिवार अमरनाथ को याद करके कई दिन बिना नागा नाक रगड़ा था। भगवान भोले नाथ ने हमें माफ कर दिया। फिर कभी ऐसे लंगर की तरफ बिना यात्रा के मुफ्त माल खाने की सोचना तो दूर मैं वह रास्ता ही छोड़ देता हूं जिधर ऐसा कोई लंगर चल रहा हो।

छः बजे तक नौ यात्रियों का दल-मुंह-हाथ धो, दातुन-कुल्ला करके, अमरनाथ यात्रा को सहर्ष, स्वस्थ तन-मन, हर्षित मन से, आस्था से भरपूर अगले पड़ाव को 'भगवान अमरनाथ' जी की यात्रा को शेषनाग स्थान से प्रस्थान करने लगा था। क्योंकि आज की इस यात्रा में अमरनाथ भगवान की गुफा में 'दुर्लभ शिवलिंग' के दर्शन करके, रात्रिकाल को बालटाल पहुंचने का आदेश-दल के मुखिया राकेश कुमार ने चलते समय जो सुना दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घोड़े वाली नगीना रहमान की विपत्कथा

धूप खिल गई थी। परन्तु वातावरण में अभी भी काफी मात्रा में ठंडक थी। अमरनाथ गुफा तक पहुंच कर दर्शन करना फिर वापिसी में बालटाल तक पहुंचने के लिए सफर लम्बा था। टीम कमांडर का हुक्म था कि यात्रा लम्बी व कठिन है, इसलिए सभी के लिए घोड़ों का प्रबन्ध किया जाएगा। कुंवारे छोकरे-लव कुमार व रोहित कुमार सब से पहले घोड़ों पर सवार हुए थे। मैंने, अशोक कुमार और नरेश कुमार ने घोड़ों पर यात्रा करने से इन्कार कर दिया था। हम तीनों को घोड़ों पर बैठने में दिक्कत आती थी। खैर, छः आदमी घोड़ों पर सवार होकर यात्रा करने लगे थे। हमारे समस्त यात्री दल ने स्वैटर-कोटियां पहन रखी थीं। राकेश कुमार ने अपनी जर्सी नुनवाल से ड्राईवर को दे दी थी कि अपने साथ ले जाए। क्योंकि इतना वजन यात्रा में उठाना कठिन है और इसकी आवश्यकता भी तो नहीं है। परन्तु सुबह वह ठुठंरने लगा तो मेरे पास स्वैटर जरूरत से ज्यादा था। मैंने उसे पहनने को दे दिया था। उसने बार-बार सब साथियों को कह सुनाया था- "अगर यश अंकल ने मुझे पहनने के लिए अपना स्वैटर न दिया होता तो निमोनिया से बीमार हो जाता। सच ही कहते है-सयाने आदमी को साथ लेकर चलना फायदेमंद हुआ करता है। मैं आज इस तथ्य को समझा हूं। अपने सभी गर्म कपड़े अटैची में रखकर टैक्सी ड्राईवर के हाथ वापिस भेज देना, मेरी भारी भूल थी।" वह कथा सुनाने लगा था। कहते हैं- एक बार लड़की वालों ने बारात में किसी भी बुजुर्ग को साथ लाने को मना कर दिया था। परन्तु लड़के वाले एक बड़े ट्रंक में कपड़ों का बहाना करके घर के बुजुर्ग आदमी को साथ बारात में ले गए थे। लड़की वालों में दुल्हे राजा से लड़की के फेरे देने से पहले दो शर्तें रखी थीं। पहली शर्त-सौ गांठ वाला बांस लाओ। परन्तु ऐसा तो कोई बांस आज तक जमीन पर पैदा ही नहीं हुआ, लाएं कहां से। बाराती छोकरों का दिमाग चक्करा गया, उन्होंने कमरे में रखे ट्रंक में घुपा रखे बुजुर्ग से लड़की वालों का प्रश्न कह सुनाया था। बुजुर्ग ने उन्हें ऐसे घास का पता बताया-जो जमीन पर लम्बे रूप में बिछा होता है। जिस की डेढ़-दो सौ गांठें होती है। घास रूप में वह बांस की किस्म है। बारातियों ने वह घास का लम्बा सा बूटा लाकर ला कर दे दिया था। इस पर खुश हो कर लड़की वालों ने बारातियों को चाय पिलाई थी।"

"दूसरी शर्त क्या थी अंकल?" तपाक से लव कुमार ने पूछा।

"इतना बेसबरा क्यों होता? बताता हूं। लड़की वालों ने बारातियों की गिनती की तो पता चला-चालीस की तादाद में बाराती आए हैं। लड़की वालों ने चालीस बकरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ला कर बाराती छोकरों के सामने खड़े कर दिए। वह बोले-यह सारे-के-सारे बकरों का मांस बना कर खाना होगा। साथ में चालीस मन बोरी में चावल भी रख दिए थे। तभी एक बाराती लड़का चोरी से कमरे के अंदर गया। ट्रंक खोल कर लड़की वालों की रखी शर्त कह सुनाई थी। बूढ़ा बजुर्ग छोकरे से बोला-''एक-एक करके बकरा मार कर बनाओ जो तुम खा सको। फिर दूसरा बकरा मार कर बनाने में वक्त तो लगेगा ही। तब तक चालीस आदमियों द्वारा खाया हुआ बकरा और चावल हजम हो चुके होंगे।''

''अंकल फिर क्या हुआ? सच्ची-मुच्ची उन बारातियों ने ऐसा किया जैसा बुजुर्ग आदमी ने बताया था।'' लव कुमार ने बेताव हुए पूछा।

राकेश कुमार ने कहा- ''हां लव बाबू बारातियों ने बजुर्ग के कहने के अनुसार एक-एक करके बकरे मारे, चावल बनाए और मौज से खाए। लड़की वालों को आखिर लड़की की शादी लड़के से करनी पड़ी। क्योंकि बारातियों ने उनकी दोनों शर्तें पूरी कर दी थीं। इसलिए बाबू लव कुमार जी, यश अंकल ने सही मानों में मुझे निमोनिया होने से बचा कर मेरे ऊपर बड़ा परोपकार किया है।''

मैंने राकेश कुमार की सारी कहानी सुनी कहानी तो ठठा कर हंस पड़ा। नीचे पानी का नाला बह रहा था। उस पर लकड़ियों का छोटा सा पुल बनाया गया था। मैं न संभलता तो नीचे नाले में घम्मसा आ गिरता। किंतु भगवान का लाख शुक्र था कि नीचे गिरने से मैं बाल-बाल बच गया था। हमारा यात्री दल पैदल व घोड़ों पर आगे-पीछे हो कर बतियाते, हंसते चला जा रहा था।

तभी अपने सम्मुख जो वास्तविवकता मैंने देखी, पलभर के लिए उसे दिवा स्वप्न ही समझने लगा था। सामने आने पर देखता हूं- एक पचपन-साठ वर्ष की आयु का व्यक्ति, जिस की दोनों टांगें पोलियो से मारी जा चुकी थीं, अपने कंधों पर रखकर, हाथों में लकड़ी के गुटके लिए इंच-इंच यात्रा करता हुआ, भगवान अमरनाथ का नाम स्मरण करता हुआ चला जा रहा था। यह उसी त्रिलोकी नाथ की अपार कृपा थी कि टांगों से विहीन व्यक्ति ऐसी दुर्गम, नाना यातनाओं व बाधाओं से परिपूर्ण यात्रा भगवान में अपनी अचल-अटल आस्था, प्रेम और समर्पण भाव से सरोबार हुआ, प्राणों, कष्टों की परवाह किए बिना अमरनाथ यात्रा को घर से प्राण हथेली पर रखकर निकला था। मैंने उसे मन-ही-मन शत-शत बार प्रणाम किया। मैं उसके अदम्य साहस के सम्मुख नतमस्तक हुए बिना न रह सका था। मुझे सहसा तुलसीदास की पंक्तियां स्मरण हो आई थी-

मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ई गिरिवर गहन।
जासु कृपा सोदयाल, द्रवउ सकल कलि-मल दहन।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसी बातें पढ़ी-सुनी थीं। परन्तु प्रत्यक्ष में आज आंखों से देखी थी। सचमुच भगवान की असीम कृपाके बिना ऐसी प्रेरणा, प्रेम, साहस और लग्न किसी प्राणी के हृदय-गहव्र में नहीं आ सकती। प्रभु तू दया का सागर है। करुणानिधान है। भक्त वत्सल है। गरीब नवाज है। तू भी धरती पर ऐसे कौतुक,करिश्मे करता है कि तेरी हस्ती को मानने के अतिरिक्त और कोई चारा मानव के पास रह नहीं जाता। साथ में उस व्यक्ति के साथ एक उसी की आयु का व्यक्ति कम्बल व और सामान उठाए उसके साथ पीछे-पीछे चला जा रहा था। उस व्यक्ति को भी प्रणाम किए और भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना रह न सका था। उस साथी व्यक्ति में कितनी सहनशीलता थी, इसका अनुमान लगाना कठिन था। उसकी मित्रता, सहायता की जितनी प्रंशसा की जाए, कम है। धीरे-धीरे मैं इन दोनों दोस्तों के सहयोग, प्रेम व विश्वास पर नाज़ करता हुआ, सोचता हुआ उनसे दूर होता चला गया था। रह-रह कर, रुक कर उन्हें तब तक देखता रहा, जब तक मेरी आंखों से वह ओझल न हो गए थे।

मैं और अशोक कुमार यात्रा के एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए थे, जिसके दोनों ओर ऊंचे पर्वत थे। पूर्व दिशा की ओर पथरीला, काला सा घास, पेड़ पौधों से विहीन नंगा पहाड़ था। जिसकी ओट में बादलों के झुंड-के-झुंड दिखाई दे रहे थे। वह बादल आकाश में ऊपर उठ कर तैरते हुए अज्ञात दिशि में आहिस्ता-आहिस्ता जा रहे थे। जैसे छोटे बच्चे बारात देखने की जिज्ञासा में घरों की छत पर चढ़ जाते हैं। मार्ग में जगह-जगह सेना के जवान तैनात थे। घोड़े पर मैंने कभी सवारी नहीं की थी। मुझे तो पैदल ही चलना सुखद व सुगम लगता है।

राकेश कुमार हमें बार-बार आदेश के स्वरों में कह रहा था- ''आज अमरनाथ भगवान की गुफा में दुर्लभ शिवलिंग के दर्शन करके हर हाल में बालटाल पहुंचना है। सफर लम्बा है। बहुत थक जाओगे। आगे चल न पाओगे। हिम्मत हार जाओगे। चलो घोड़ों पर बैठो।'' उसने हम पैदल चलने वालों के लिए घोड़े किराए पर कर दिए थे। दल-मुखिया का कहना तो आखिरकार मानना ही पड़ा था। मुझे जो घोड़ा चढ़ने को मिला, घोड़े के साथ चलने वाली 14-15 वर्ष की छरहरी सी, लम्बी व फुर्तीली कन्या थी। वह नंगे पांव थी। प्लास्टिक के बूट एक हाथ में, दूसरे हाथ में घोड़े को चलाने, डांटने, मारने को चावुक नुमा छड़ी थी। मुझे उस लड़की को देख कर बड़ा तरस आया। था। सोचा- कौन आदमी जवान बेटी को ऐसे सफर में कमाई को भेजता है। इसकी उम्र तो अभी स्कूल जाने की है। कुछ बनने संवरने और हंसने-कूदने की है। इसके घर की परिस्थितियां इतनी नाजुक होंगी, मन हृदय पर भारी शिला रख कर इस बच्ची को कमाई करने को भेजा होगा ताकि दो जून की दाल-रोटी का जुगाड़ बना सके। मेरे घोड़े के पीछे-पीछे वह चल रही थी। घोड़े की काठी मुझे तंग करने लगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी। चढ़ाई-ढलान का सफर आता तो काठी पर दोनों हाथ आगे रखकर जोर लगा कर काया का सामजस्य बनाए रखना पड़ता था। ताकि आगे या पीछे मैं घोड़े से गिर न जाऊं। इस सवारी से तो मैं पैदल चलने में प्रसन्न था। परन्तु मरता क्या न करता वाली कहावत थी। दल के मुखिया का हुक्म बजाना मजबूरी थी। मैंने घोड़े वाली लड़की से पूछा-''तुम्हारा नाम क्या है बेटी?''

''नगीना रहमान, साब'' उसने मेरी ओर देख कर कहा।

''थोड़ी देर के लिए घोड़ा खड़ा करो। मैं थक गया हूं।'' उसने सुनकर घोड़े को कश्मीरी भाषा में कहा-बार-बार, बार-बार।'' घोड़ा सुनकर खड़ा हो गया था। मैं रकाब पर पैर रख कर घोड़े से उतर कर एक भारी पत्थर पर बैठ गया था। लगाम पकड़े नगीना भी मेरे समीप बैठ गई थी। पलभर दम लेने के पश्चात् मैंने नगीना की ओर देखकर पूछा-''नगीना तू घोड़े के साथ आती है, तुम्हारे अब्बा क्यों नहीं आते?''

सुनकर नगीना का चेहरा एक दम उतर सा गया था। उसकी मोटी-मोटी उदास आंखों में आंसू छलछला आए थे। आर्द्रस्वर में बोली- ''चार साल पहले वह मर गए थे।'' नगीना के अंतिम शब्द सुनकर मुझे धक्का सा लगा था। मैंने उससे अगला प्रश्न किया था- ''तुम्हारी अम्मीजान क्या काम करती है?''

''वह अकसर बीमार रहती है।'' आंसू पोंछते हुए वह आर्द्रस्वर में बोली।

''तुम कभी स्कूल नहीं गई?''

''गई थी। चार कलास तक पढ़ी हूँ। फिर अम्मी जान बीमार रहने लगी थी। मुझे स्कूल से हटा लिया गया था।''

''तुम कितने भाई बहन हो।'' मैंने उसकी ओर स्नेह से देखते हुए पूछा।

''मुझ से छोटे एक भाई और तीन बहनें हैं।''

''क्या वह स्कूल जाते है?''

''मेरा भाई अभी साढ़े तीन बरस का है। वह छोटा सा स्कूल कैसे जा सकता है। हां, दो बहनें स्कूल जाती हैं। एक बहन अभी छोटी है। वह घर पर भाई को संभालती है। कह कर वह मेरी तरफ टुकर-टुकर देखने लगी थी।''

''घर का गुजारा कैसे चलता है?''

''इसी घोड़े वाले काम से सीजन में कमा कर कुछ जोड़ लेते हैं। सीजन के बाद बागों में या कोई और काम मिल जाता है। इसी तरह गुजारा होता रहता है बाबू जी।'' कह कर उसने दृष्टि गिरा ली थी।

''इस घोड़े वाले काम को तूने कैसे शुरू किया?''

''मेरे अब्बा यही काम करते थे। उनकी मौत हो जाने के बाद अपने चचा जान से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस काम में इधर आने लगी हूं।''

''तुम्हारे अब्बा कैसे मरे थे? बुखार, निमोनिया था......।'' मैंने अपने प्रश्न को अधूरा छोड़ दिया था।

''शराब पीने से।''

''हं...अं..... शराब से। मुस्लिम मजहब में तो शराब पीनी वर्जित है। फिर उन्होंने ....।'' कहकर चुप्पी साध गया था।

''सब कुछ ज्यादा तो मैं नहीं जानती, कैसे, किसने अब्बा को शराब पिलाना सिखाया। परन्तु जिस दिन वह शराब पी लेते थे, घर आकर अम्मी को गंदी-गंदी गालियां बकते थे। उस की पिटाई करते थे। हम अम्मी जान को छुड़ाते-तो हमें भी मारते थे। एक दिन उन्होंने ज्यादा पी ली थी। पहाड़ी रास्ते से पांव फिसला था, बहुत गहरी खाई में गिरे थे। कई दिनों की खोज-खबर के बाद खाई से लाश बरामद हुई थी.................।'' उसकी गालों पर आंसूओं की लड़ियां पुनः लुढ़कने लगी थीं। नगीना की विपत्कथा सुनकर मैं उदास हो गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महागुनस की चढ़ाई व हरिनाम की महिमा

मैं घोड़े पर सवार हुआ, ''महागुनस पर्वत'' के समीप पहुंच गया था। प्राचीन कथा में उल्लेख है कि भगवान नीलकंठ व माता पार्वती ने हाथी के सिर व सूंड वाले अपने प्रिय-पुत्र श्री गणेश जी को ''महागुनस'' पर छोड़ देने का निश्चय किया था। इस स्थान का प्राचीन एवं शुद्ध उच्चारण 'महा-गणेश' था। जो धीरे-धीरे, सम्भवत: कश्मीरी भाषा के प्रभाव से 'महागुनस' हो गया। महागुनस की चढ़ाई आरम्भ हो गई थी। थोड़ी सी यात्रा करता हूं तो देखा-एक प्रौढ़ महिला अपने पति का हाथ पकड़ कर यात्रा कर रही है। ज्यों ही मैं उनके अतिसमीप पहुंचा तो मालूम हुआ कि पुरुष अंधा है। मेरे अनुमान में यह दम्पति 65-70 आयु की रही होगी। वस्त्रों व शक्ल-सूरत से निर्धन जान पड़ते थे। मैंने इतिहास में पतिव्रता स्त्रियों में-सवित्री, अनसूइआ, सीता, तारा, मंदोदरी, पांचाली और अहिल्या को पढ़ा था। इन देवियों की महिमा को जाना था, जिनके कारण संसार इन्हें युगों-युगान्तरों से पूजता व नमन करता आ रहा है। इतिहासिक कहानियों में से एक ऐसी कहानी पढ़ी थी, जिसमें एक राजा की सात कन्याएं थीं। राजा ने अपनी सातों राजकुमारी बेटियों से पूछा कि तुम किस का दिया अन्न-जल खाती व वस्त्र पहनती हो। उनमें से छ: ने अपने पिता का नाम लिया था। परन्तु सातवीं बेटी ने कहा था-''मैं उस परमपिता परमेश्वर का दिया हुआ अन्न-जल ग्रहण करती व उसी के दिए वस्त्र पहनती हूँ।'' अपनी पुत्री की बात सुन कर, उसे सबक सिखाने की खातिर एक कोढ़ी व्यक्ति से उसका विवाह कर दिया था। अंत में भगवान की कृपा से राजा की बेटी का कोढ़ी पति स्वस्थ-कंचन-काया का हुआ था। अपार सम्पदा की मालकिन उसकी बेटी बनी थी। राजा का घमंड भंग हुआ था। सर्वशक्तिमान, महिमावान वही एक दाता व संसार को देने वाला भण्डारी है-यह अंह में अंधा मानव नहीं। इस मानस की आखिर औकात ही क्या है? वह सब कछ पढ़ा हुआ भूतकाल का किस्सा था। मैं कभी-कभार एकांत में बैठा सोचा करता था-क्या राजा की कोमल तन बेटी एक कोढ़ी व्यक्ति से इतना कष्ट सहन करके पतिव्रता धर्म निभा सकती है? कभी सोचता-यह सब कपोल-कल्पित है। निरी किसी कहानी कार ने अपनी कल्पना में मनोरंजन की गाथा गढ़ी होगी, जो लोक प्रसिद्धि पा गई। परन्तु नारी शक्ति महान है। इसका लोहा मानना होगा। नारी सा तपस्वी, ममता की मूर्ति, परिश्रमी, कर्मठ, त्यागी, सेवा भाव में समर्पित, पुरुष जाति उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

आज मैंने अपने जीवन में पूरे होशोहवाश में ऐसी ही त्याग मूर्ति, पतिव्रता, सती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारी को देख कर भाव विहव्ल हो उठा था। मन ने चाहत पैदा की थी–'मैं इस प्रात: स्मरणीय, वन्दनीय सती को, जो अपने पति के संग इस दुर्गम यात्रा को उसका हाथ पकड़ कर त्रिलोकीनाथ की पवित्र गुफा के दर्शन करवाने को ले जा रही है, इस देवी की चरण-रज अपने माथे से लगा कर अपना भाग्य संवार लूं।' परन्तु अपने साथियों की जग-हंसाई पर ऐसा न कर सका था। परन्तु इस पूजनीय सती नारी को मन-ही-मन कोटि-कोटि बार प्रणाम किया था। घोड़े पर सवार हुआ, उनसे दूर चले जाने पर उस सती के मुख की ओर बार-बार देखता रहा था। मेरे अन्त: करण में बैठा कोई कह रहा था–'ऐसी देवियों के दर्शन से कई जन्मों के पाप-अपराध खंड़ित होते हैं। बड़ा पुण्य प्राप्त होता है।' नगीना ने घोड़े को टिटकारी मारी थी। ज्यों ही घोड़े ने सहसा अपनी चाल तेज की, मैं नीचे गिरते बड़ी कठिनाई से बचा था।

मैं फिर इस 'अमरनाथ यात्रा की दम्पति' के सम्बन्ध में मन-ही-मन विचार करने लगा–' यह अंधा व्यक्ति इस बात को बाखूब जानता है कि प्रज्ञाचक्षु होने के कारण मैं उस पवित्र ऐतिहासिक गुफा को इन चर्म-चक्षुओं से देख ना पाऊंगा। किन्तु वह इतना ज्ञान रखता है कि जिस धरती पर उसके (अमरनाथ की पवित्र गुफा) कदम पड़ेंगे, वह अत्यन्त परम पुनीत स्थल है। जहां कभी भगवान शिव ने अपनी प्रिय भार्या को अमर कथा सुनाई थी। उस स्थान पर पांव रखने से जन्म-जन्म के पाप-क्लेश, आधि-व्याधियां धुल जाएंगी। भगवान शिव शम्भू के प्रति उस अंधे व्यक्ति की आस्था, श्रद्धा, प्रेम और व्याकुलता देख कर मैं उसके सम्मुख नतमस्तक हो गया था। धन्य है इस सूरदास व्यक्ति की अर्धांगिनी। धन्य है इस दम्पति का प्रेम, स्नेह, समर्पण, पारिवारिक जीवन में विश्वास और परस्पर का सहयोग!! धन्य है भगवान शिव के प्रति तुम दोनों की अचल-अटल आस्था व यकीन! धन्य है कृपालु, दीनदयालु, करुणामय भोले नाथ।

मेरे पीछे-पीछे महागुनस पर्वत की चढ़ाई पर पवन कुमार व लव कुमार भगवान अमरनाथ के जयकारे बुलाने लगे थे। कुछ देर के बाद सारे साथी इकट्ठे होने शुरू हो गए थे। अगली यात्रा को हम सभी इकट्ठे चलना चाहते थे। हम घोड़ों से नीचे उतर आए थे। इस स्थान पर एक मैडीकल कैंप लगा था। मैडीकल कैंप में दो व्यक्ति परमार्थ सेवा को एक तम्बू में औषधियां रख कर बैठे थे। इन में एक डॉ. का नाम था–ज्ञान कौशल। डॉ. ज्ञान कौशल ने हमें बताया कि वह देहली का निवासी है। कुछ-कुछ हिन्दी में साहित्यिक काम भी करता है। वह समाज-सेवा का दायित्व भी निभाता है। ज्ञान-कौशल ने आगे बताया कि वह देहली में एक 'साहित्य-सभा' के अध्यक्ष भी हैं। अनेक गुण-सम्पन्न, परमार्थी व्यक्ति से मिलन होने पर मैंने भगवान का धन्यवाद किया था। मेरे सामने पश्चिम दिशा की ओर खड़े ऊंचे पहाड़ पर दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैनिक हथियारों के साथ यात्रियों की सुरक्षा हेतु तैनात थे। सुरक्षा कर्मी चौकस और फुर्तीले थे।

मैंने मुस्लिम लड़की नगीना से पूछा–''क्या तू मेरी बेटी बनना चाहोगी? तुझे खूब पढ़ाऊंगा–लिखाऊंगा। शान–शौकत से तुम्हारी शादी करूंगा। क्योंकि मेरी कोई अपनी पुत्री नहीं है। मजहबों की दीवारों को मैं नहीं मानता। मेरा एक ही मजहब है–इन्सानियत। जरूरतमंद के काम आना। निर्धन, लाचार, बीमार का हाल चाल पूछना और यथा सम्भव उसकी निस्वार्थ भाव से सेवा करना।''

नगीना ने सम्भवतः पहली बार ऐसी बातें सुनी थीं। एक ही बात उसे मेरी समझ आई थी 'मेरी बेटी बनना'। वह कुछ देर तो उदास सी रही थी। फिर उसने अपने घिसे–पुराने वस्त्रों की तरफ देखा और गरीबी का ख्याल करके बोली–''बाबू जी, हम जैसे गरीबों को कौन अपनी बेटी मानने के लिए तैयार होता है। कहने की बातें हैं, जितनी चाहे कर लो।''

''नहीं नगीना, ऐसी बात नहीं है। अगर तुम सचमुच मेरी बेटी बनना स्वीकार करती हो तो अपनी अम्मीजान, चचा जान से पूछ देखना। मैं तुम्हें अपने घर का पूरा अड्रैस, फोन नंबर दे जाऊंगा। तुम्हारी घर पर पक्की सलाह बन जाए तो रजिस्टर्ड लैटर पोस्ट कर देना। कचहरी में लिखा–पढ़ी करके तुम्हें अपनी प्यारी बेटी बना कर पंजाब में ले जाऊंगा।'' कह कर मैंने उसकी ओर देखा।

सुनकर उसकी आंखों से पुनः टप–टप आंसू गिरने लगे थे। शायद उसे अपनी बीमार–लाचार मां का ध्यान हो आया था कि उसका और उसके छोटे भाई–बहनों का क्या बनेगा? आंसू पोंछ कर उदासी में खो गई थी। उसने मुझे कोई उत्तर न दिया था। अपने परिवार की दयनीय स्थिति व दायित्व उसकी सबसे बड़ी मजबूरी थी। वह परिस्थितियों के सम्मुख लाचार थी। वह अच्छी जिन्दगी जीना चाहती थी। खूब शिक्षित भी होना चाहती थी। परन्तु बने कैसे? बस! यही संगीन हालातों के सम्मुख मानव चाहता हुआ भी उचित निर्णय नहीं ले सकता। नगीना भी परिस्थितियों के सामने लाचार थी। परन्तु नगीना की दृष्टि में मेरा सम्मान बढ़ गया था। वह मुझे खुदाई इन्सान के रूप में एकटक मेरे चेहरे की ओर देख रही थी।

हमारे समस्त साथी पुनः घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े थे। पहाड़ों की तलहटी में जहां–वहां तम्बुओं में रह रहे परिवारों को देखा था। आधे घंटे के सफर के पश्चात् एक नाले के उत्तर–पश्चिम दिशा की ओर नंगा पर्वत था। मन ने सवाल किया–'यह परिवार जो ऐसे दुर्गम स्थानों पर रह रहे हैं, अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताएं कैसे पूरी करते होंगे। सर्दियों में तो यहां बर्फ के सिवाए कुछ होता नहीं, फिर राशन, औषधि बगैरा कहां से और कैसे लाते होंगे? चन्दनबाड़ी के अतिरिक्त ऐसी कोई जगह नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, जहां से कुछ खरीद-फरोख्त कर सकें। सोचते-सोचते मेरा घोड़ा अशोक कुमार के समीप पहुंच गया था। इतने में 'पोष पत्री' नामक स्थान आ गया था। इस स्थान पर देहली वालों ने जी भर नाना प्रकार के व्यंजन बना कर 'अमरनाथ बर्फानी सेवा मंडल' लंगर लगाया था। हमारा यात्री-दल पहुंच गया था। भूख सब को सता रही थी। समस्त साथी अपनी चाहत व आवश्यकतानुसार खाने-पीने में व्यस्त हो गए थे।

लंगर में एक भगवान के नाम महिमा व प्रभाव की कैसेट बज रही थी-

नाम कामतरू काल कराला।
सुमिरत समन सकल जग जाला।।
राम नाम कलि अभिमत दाता।
हित परलोक लोक पितु माता।।

'अर्थात् यह कल्प वृक्ष समान भगवन्नाम स्मरण ही संसार के सब जंजालों को नष्ट कर देने वाला है। यह भगवन्नाम कलिकाल में मनोवांछित फलों को देने वाला, परलोक का परम हितैषी एवं इस संसार में व्यक्ति का माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन एवं रक्षण करने वाला है।'

अपतु अजामिल गजु गनिकाऊ।
भए मुकल हरिनाम प्रभाऊ।।
कहौं कहां लगि नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुन गाई।।

'अर्थात् नीच अजामिल, गज और गणिका भी श्री हरि के नाम के प्रभाव से मुक्त हो गए। मैं नाम की बढ़ाई कहां तक कहूं? राम भी नाम के गुणों को नहीं गा सकते।' तुलसीदास की इन चौपाइयों को सुन कर यात्रीगण आत्म विभोर हो रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंचतरणी व वीर सैनिकों की कर्त्तव्यनिष्ठा

पोष पत्री से हम पुनः नौ यात्री घोड़े पर सवार हो कर चल पड़े थे। दौलत राम अमरनाथ भगवान के जयकारे बुलाता जा रहा था। हम उसके पीछे-पीछे जयकारे बुला रहे थे। पन्द्रह-बीस मिंट के पश्चात् सेना का हैडक्वार्टर यात्रा-मार्ग में आया था। जो भी यात्री वहां से गुजरता, सैनिक सिन्दूर का टीका उसके माथे पर लगाते। एक थाली में धूप-दीप जला कर रखा था। श्रद्धाभाव से हरेक यात्री थाली में पांच-दस रूपये अवश्य चढ़ाता था। हमारे यात्री दल के प्रत्येक सदस्य ने दस-दस रूपये पूजा वाली थाली में चढ़ाए थे। आगे खड़ा सैनिक देसी घी का बना हलवा प्रसाद बांट रहा था। हलवा बड़ा स्वादिष्ट था। जी चाह रहा था कि हलवा प्रसाद और खाने को मिले। तीसरा खड़ा सैनिक गुनगुने पानी का गिलास पीने को दे रहा था। दौलत राम ने पुनः भगवान नीलकंठ के जयकारे बुलाने शुरू कर दिए थे।

पन्द्रह-बीस मिंट का और सफर तय किया तो ढलान का सफर आरंभ हो गया था। अशोक ने मुझे बताया-''चाचा जी, यही 'पंचतरणी दरिया' है। किंतु पंचतरणी में पानी नाममात्र को ही था। मान्यता है-नटराज रूप में भगवान शिव ने तांडव-नृत्य किया था। जिससे जटाएं खुल गई थीं। जटाओं से गंगा पंजतरणी के रूप में बह निकली थी।''

ऐसी भी मान्यता है कि-''पंचतरणी नामक स्थान पर पहुंच कर शिव ने पांच तत्त्वों-(पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) का परित्याग कर दिया था। भगवान शिव इन्हीं पंच तत्त्वों के स्वामी माने जाते हैं। जिनको उन्होंने श्री अमरनाथ गुफा में प्रवेश से पहले ही छोड़ दिया था। इसके पश्चात् ऐसी मान्यता है कि शिव-पार्वती ने इस पर्वत-श्रंखला में तांडव नृत्य किया था। ताण्डव-नृत्य. वास्तव में सृष्टि के त्याग का प्रतीक माना जाता है। इस स्थान से पवित्र गुफा छः किलोमीटर रह जाती है।

मैंने पंजतरणी नदी को मन-ही-मन प्रणाम किया था। पंजतरणी नदी के उत्तर-दक्षिण में पंजतरणी नदी के साथ-साथ लगता गगनचुम्बी पर्वत था। इस पर्वत-श्रृंखलाओं पर बर्फ जमी थी। इसके ऊपर बादलों के झुंड मंडरा रहे थे। घोड़े पर बैठे-बैठे ही मैंने इस अद्‌भुत दृष्य का सिंहावलोकन किया था। यहां पर्वतों का दृष्य बड़ा आकर्षित और मनभावन था। अब पंजतरनी के पड़ाव में आ गए थे। राकेश कुमार ने घोड़े वालों को बनते पैसे दे दिए थे। मैं घोड़े से उतरा तो नगीना उदास आंखों से मुझे देखने लगी थी। जेब से सौ का नोट उसके हाथ देकर मैंने उसे अपनत्व व स्नेह से पुकारा-''नगीना बेटी! भगवान तुम्हें अच्छा सा वर व घर दे। तुम्हें जीवन का हर सुख-आराम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिले।'' कह कर उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा था। उसकी मोटी-मोटी आंखों से आंसू टप-टप गिरने लगे थे। इतने में उसका चचा जान-गुलाम नवी नगीना के समीप आकर बोला-''शेषनाग को जाने के लिए सवारियां मिल गई हैं। जल्दी आओ जल्दी।'' नगीना ने मुझे स्नेह से देख कर हाथ बांध कर कहा-''आदाब बाबू जी! अल्लाह आप को हर तरह से मजफूज रखे। आपका परिवार सलामत रहे। आप का इकवाल बुलंद रहे......।'' उसने ढेरों शुभकामनाओं से मेरा रिक्त दामन भर दिया था। न चाहते हुए भी वह अलसाए कदमों से घोड़े की लगाम पकड़ कर दूसरे यात्रियों की ओर चल दी थी। जिन्दगी का यही तो रहस्य है-'अजनवी लोग अल्पकाल में कितने अपने-अपने व प्यारे दोस्त बन कर कितनी खुशियां देते हैं। जिनसे हमारा प्रतिदिन का वास्ता होता है-उनसे हमें कितनी घृणा, फरेब व धोखा मिलता है।'

पंजतरनी पड़ाव पर दानी सज्जनों ने लंगर लगा रखे थे। यहां रात्रि-विश्राम को किराए के लिए तम्बू भी लगाए गए थे। हमने खूब छक कर भोजन किया था। आधे घंटे तक विश्राम किया। पंजतकरनी बेस कैंप में ठीक पूर्व दिशा की ओर अति ऊंचा सूखा व पथरीला पहाड़ है। ज्यों ही मेरी दृष्टि पहाड़ की चोटी पर पड़ी तो दो सैनिकों को वहां मशीनगन पर सुरक्षा हेतु तैनात देखा। देख कर आश्चर्य में मेरा मुंह खुले का खुला रह गया। वाह रे भारतीय वीर सैनिक! वाह रे भारतीय वीर सैनिकों का अदम्य साहस व कर्त्तव्य-निष्ठा!! वाह रे तुम्हारा नेतृत्व-अधिकारी व जननी!!! ऐसी दुर्गम पर्वत पर यह वीर सैनिक अपने हथियार ले कर कैसे चढ़े होंगे। यह बात मुझे बार-बार विस्मित और रोमांचित करती रही थी।

यहां तीन-चार लंगर चल रहे थे। एक लंगर पर 'श्री शंकर-शतनामावली की कैसेट बज रही थी-

जय महादेव देवाधिदेव, भोले शंकर शिव सुखराशी।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर, जय घुडमेश्वर जय कैलाशी।।
जय गंगाधर त्रिशूलधर शशिधर, सर्वेश्वर जय अविनाशी।
जय विश्वात्मन विधु विश्वनाथ, जय उमानाथ काटो फांसी।।
सर्वव्यापी अन्तर्यामी शिव, रुद्र निरामय त्रयलोचन।
भव भयहारी जय त्रिपुरारी, जय मदन दहन जय दुःखमोचन।।
मृत्युंजय आशुतोष अघहर, जय बैजनाथ जय बृषभ ध्वज।
जय लोकनाथ जय मन्मथारि, जय-जय महेश जय मृत्यंजय अज।।
जय गौरी-पति जय चन्द्र मौलि, जय नीलकंठ जय अभयशंकर।
त्रयत्राप हरो सब पाप हरो, हर हाथ जोड़ ठाडो किंकर।।........।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगभग एक बजे दोपहर को हमारे यात्री दल ने भगवान शंकर की पवित्र गुफा के लिए प्रस्थान किया था। लव कुमार व दौलत राम जयकारे बुलाते हुए जा रहे थे। मैं, अशोक कुमार और नरेश कुमार आगे-आगे चल रहे थे। गुरदासपुरियों का छ: जनों का टोला पीछे रह गया था। हम पवित्र गुफा के समीप पहुंचने वाले थे कि छ: गुरदासपुर निवासी हमारे साथ घोड़े पर सवार हुए बराबर आ पहुंचे थे। हम तीनों ही उन्हें मजाक करने लगे थे। सभी साथी अमर गंगा नदी के किनारे पहुंच गए थे। अमर गंगा के तट पर हमने दस-पन्द्रह मिंट विश्राम किया। सभी साथी स्नान को अपने वस्त्र उतारने लगे थे। लव कुमार ने जल-धारा में हाथ डाल देखा-उसे पानी ठंडा लगा था। वह बोला-''भरा जी, गर्म पानी का पीपा चाहे 100 रूपये का मिले, नहाऊंगा गर्म पानी से ही है। मजाक में पवन कुमार लव कुमार से बोला-''अरे भैंसे की तरह तू मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा है। थोड़ा सा ठंडा देखकर तेरी जान निकली जा रही है। सारे साथी जल्दी से नहा-धो कर तैयार हो रहे हैं। एक तू ही है जो गर्म पानी-गर्म पानी कर हर चिल्ला रहा है। तुझे दो घंटे तक गर्म पानी नहीं मिलेगा, तो तू नहाएगा नहीं। तुम्हें मालूम है-अमरनाथ की पवित्र गुफा में दर्शन करने के बाद रात तक बालटाल रात्रि को अवश्य पहुंचना है। चल उतार कपड़े। गीदड़ कहीं का! पनीर खा-खा कर डेढ़ फुट मोटी चमड़ी हुई है इसकी, ठंड लग रही हे इसे!'' पवन कुमार ने उसकी खूब खोज खबर ली थी। लव कुमार ने चूं तक न की थी। कान खुर तक न हिलाया था। अब बीबे-आज्ञाकारी बच्चे की तरह 'अमर गंगा' नदी में नहाने लगा था।

सब यात्री-साथी स्नानादि से फारिग हो चुके थे। अब पवित्र गुफा में भगवान श्री अमरनाथ के लिए चढ़ाने को 'भेटा' खरीदने लगे थे। भगवान शिव की गुफा के नीचे, अमर गंगा के ऊपरी खाली स्थान पर दुकानें खूब सजी थीं। यात्रियों की खूब गहमागहमी थी। भगवान की महिमा की चारों ओर कैसेटें बज रही थीं। दुकानदारों से यात्री 'भेटा' के अतिरिक्त प्रसाद, त्रिशूल, मालाएं, खिलौने, शाल, जर्सियों और अनेकानेक वस्तुओं की खरीद-फरोख्त में मोल-तोल कर रहे थे।

जब मेरा इधर 'अमरनाथ यात्रा' पर आना लगभग-दिन-तारीख तय हो गई तो मैंने अपने यात्रा कार्यक्रम की जानकारी प्रिय मित्र डॉ. जितेन्द्र कुमार शर्मा को दी थी। यात्रा सम्बन्धी सुन कर वह बहुत प्रसन्न हुए थे। वह मुझे सुझाव के शब्दों में बोले-''यश जी आप इस परम पवित्र व महिमावान 'अमरनाथ गुफा' के दर्शन को जा रहे हो, एक छोटा त्रिशूल वहां से खरीदकर, दर्शन के समय वहां पुजारी को कह कर पावन शिवलिंग से स्पर्श करवा कर वापिस घर ले आना। इसे अपने पूजा-स्थान पर रख देना। यह त्रिशूल रखना घर में बड़ा शुभ होता है।'' ऐसी शुभ सलाह देने पर मैंने अपने दोस्त का धन्यवाद किया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब यहां आकर चार दुकानों पर मैंने फुट-डेढ फुट लंबे त्रिशूलका मोल पूछा, जो बामुश्किल से 50-60 के स्थान पर 250 रूपये से कम पर दुकानदार बेचने को कतई तैयार न थे। मैंने त्रिशूल खरीदने का विचार मन से हटा दिया था। सोचने लगा- "ऐसे दुर्गम-स्थान पर छोटा-बड़ा सामान पहुंचाना अत्यन्त कठिन है। दुकानदारी चीज ही ऐसी है, वर्ष में यही गिने-चुने दिन इनकी कमाई के होते हैं। इन्होंने भी अपने परिवार का पालन-पोषण, दवा-दारू, नाते-रिश्तेदारी को इसी चंद रोज की कमाई से निपटाना है। यहां पर तो छोटे-मोटे किसी कस्बे का बाजार सा लग रहा था। इन दुकानों में भगवान की मूर्तियां, चाबी-छल्ले, देवताओं के फोटो, अंगुठियां, देव लॉकेटों में-अमरनाथ गुफा का पावन-दुर्लभ शिवलिंग, भगवती देवी, गणेश, भगवान शिव शंकर का आकार आदि थे। भगवान शिव व अमरनाथ की कहानी गीत रूप की कैसेटें दुकानदारों ने अपने दूसरे सामान के साथ सजा-संवार कर रखे थे। 'भेटा प्रसाद' हमारे यात्री'-दल ने अपना-अपना संभाल लिया था। राकेश कुमार लव कुमार को छेड़ रहा था। वह अपने यात्री- दल को खूब हंसा रहा था। हंसी-मजाक से हमारा अपनी थकावट की तरफ से ध्यान हट गया था। हम अब अपने यात्रा-लक्ष्य पर ध्यान टिकाने लगे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुर्लभ शिवलिंग के दर्शन, पूजा अर्चना व प्रभु विनती

सब कुछ छोड़-छाड़ कर, अन्त में भगवान शिव ने श्री अमरनाथ की इस गुफा में, पार्वती सहित प्रवेश किया था। मृगछाला बिछा कर पार्वती को अमरत्व का रहस्य सुनाने के लिए ध्यान-मग्न होकर बैठ गए थे। लेकिन इससे पहले उन्होंने कालाग्नि नामक रुद्र को प्रकट करके आज्ञा दी-''चहुं ओर ऐसी प्रचंड-अग्नि करो जिसमें समस्त जीवधारी जल कर भस्म हो जाएं।'' कालाग्नि ने ऐसा ही किाय था। अब संतुष्ट हो कर शिव ने 'अमरकथा' कहनी शुरू की.....। परन्तु उनकी मृगछाला के नीचे तोते का एक अंडा फिर भी बच गया था। जिसने अंडे से बाहर आकर 'अमरकथा' को सुन लिया था।

कालाग्नि नामक रुद्र की अग्नि से अंडा भस्म नहीं हुआ था। इसके दो कारण थे- एक तो मृगछाला के नीचे होने से शिव की शरण में आ गया था। दूसरे-अंडा जीवधारियों की श्रेणी में नहीं आता। अतः कालाग्नि के कोप से बच गया था।

अब हम परम पावन अमरनाथ गुफा के समीप दर्शनों को आ गए थे। सेना के अतिरिक्त यहां जम्मू-कश्मीर पुलिस भी व्यवस्था हेतु तैनात की गई थी। श्रद्धालुओं की तलाशी होने लगी थी। यात्रियों की पावन-गुफा में दुर्लभ दर्शन के लिए पंक्तियों में खड़ी जनता की भारी भीड़ थी। नीचे से कैसेट की आवाज आ रही थी-श्री पार्वती जी ने अपने पति भगवान शिव से निवेदन किया-

आधुना श्री तुमिच्छामि यात्राअमरनाथायाम।
यां श्रुत्वा मुच्यते जन्तुर्जन्मान्तरकृतैरवैः।।
पुनश्य रसलिडगस्य महात्म्य वक्तुमर्हसि।
अंग भूतानि तीर्थानि यान्त्र जगदीश्वर।।
तत्पूजा तद्विधिश्चैव वनस्य दयया प्रभो।
यात्रामकृत्वा देवस्य यो लिंग पश्यति प्रभो।।
सः का गीत प्रयातीह वदं शीघ्र दयानिधे।

अर्थात्-'हे प्रभो! मैं अमरनाथ की यात्रा की महिमा सुनना चाहती हूं। जिसके सुनने से जन्म-जन्मान्तर के पाप-ताप मिट जाते हैं। जगत स्वामिन! आप श्री अमरनाथ जी के लिंग के दर्शन करने का महात्म्य तथा मार्ग के तीर्थों का वर्णन कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री अमरनाथ की यात्रा तथा पूजन की विधि भी कहें। और यह भी बताएं कि जो शास्त्रोक्त यात्रा को त्यागकर केवल श्रद्धा से केवल लिंग के दर्शन करता है, वह किस गति को प्राप्त होता है? भगवान श्री शिव ने उत्तर में कहा–

यात्राम अमरनाथस्य कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात।
बाह्याम्यन्तहरशुद्धस्तु रसलिंगस्य दर्शन।।
चतुवर्ग फलादानम् क्षमो भवति पुरुष:।

अर्थात् मनुष्य श्री अमरनाथ जी की यात्रा करके शुद्धि को प्राप्त करता है। और शिवलिंग के दर्शनों से भीतर-बाहर से शुद्ध हो कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।''

अब तलाशी देने की हमारी यात्री-दल की बारी आ गई थी। पवित्र गुफा से छोटी-बड़ी घंटियों, घडियालों की आवाजें कानों से टकराने लगी थीं।–टांऊ......टांऊ.......टुन............टन.........टांऊ......टन.........टन। सभी यात्री जिनमें नर-नारी, नौजवान युवक-युवतियां, बच्चे, अधेड व वृद्ध भी विश्व के अनेक देशों व भारतवर्ष के कोने-कोने से भारी थकावट के बावजूद इस पवित्र गुफा में दुर्लभ अमरनाथ शिवलिंग की चिरसंचित अभिलाषा, श्रद्धा, प्रेम, विहव्लता मन-हृदय में लिए दर्शनों हेतु खड़े थे। ज्यों-ज्यों हम पावन गुफा की ओर इंच-इंच, पांव-पांव बढ़ रहे थे, यात्रियों के मुखों पर अलौकिक आभा चमकने-दमकने लगी थी। उनमें अब नया उत्साह, शक्ति और स्फुर्ति भर आई थी।

मैंने पंक्ति में खड़े-खड़े पूर्व दिशा की ओर निहारा था। एक गगनचुम्बी पर्वत नंग-धडंग रूप से, विशालकाय रूप में सामने खड़ा था। मानो भीमकाय रूप में यह पहाड़ किसी योगी सा त्रिलोकी नाथ भगवान के नाम-ध्यान-सिमरन ध्यानस्त हो गया हो। इस पर्वत की आकृति ने मुझे पुनः शेषनाग झील के पूर्व में स्थित शेषनाग नुमा पर्वतों की याद को ताजा कर दिया था। इस पर्वत-माला की आकृति मुझे शेषनाग के उठाए फनों की सी हू-ब-हू मालूम हुई थी। तभी देखता हूं-एक काला कौआ गुफा के समीप उड़ रहा है। मन में ख्याल आया-'यह कम्बख्त कहां से आ टपका! इसका इधर क्या काम है? इन बर्फीले-पथरीले-पर्वतों-कन्दराओं में यह क्या खा कर जीता होगा?' पल भर मनोधारा शांत रही। पुनः मन ने प्रत्युत्तर में पहले प्रश्न का उत्तर यूं दिया था-'भगवान अमरनाथ जी की इस पावन गुफा में लोग जो कुछ श्रद्धापूर्वक चढ़ाते हैं, उसी से उदरपूर्ति करता होगा। यहां तो शिव भक्तों के लिए साहूकार लोगों ने अनेक लंगर भी लगा रखे हैं-उनसे बचा, बासी अन्न बाहर फैंका जाता होगा। जिस से इन जीवों का निर्वाह होता होगा। फिर और-तो-और रहा-भगवान शिव को भोले भण्डारी भी कहा जाता है। वह त्रिलोक स्वामी हैं और अन्न-जल-वस्त्र तीनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकों को प्रदान करते हैं। फिर भगवान के श्री चरणों में ऐसे जीव-जन्तुओं को वह खाने-पीने की कोई कमी थोड़े ही आने देगा। उत्तर पाकर मेरा मन-हृदय आनन्द से भर गया था।

तभी देखा-एक नन्ही श्याम वर्ण की छोटी सी चिड़िया इधर-उधर फुदक रही थी। श्रद्धालु रह-रह कर भगवान शिव के जयकारे बोल रहे थे। देखा-देखी लव कुमार और दौलत राम भी जयकारे बोल रहे थे। अब हम पवित्र गुफा की ओर धीरे-धीरे सरकने लगे थे। यात्री पवित्र-दुर्लभ अमरनाथ शिवलिंग के दर्शन हेतु व्याकुल हो उठे थे। भारी भीड़ के कारण पीछे और आगे से धक्के लगने शुरू हो गए थे। अब मैं 'श्री अमरनाथ गुफा' में प्रवेश कर गया था। मैं गुफा में यात्रियों की भीड़ से एकदम अलग हो कर गुफा को बड़ी गौर और विस्मित नेत्रों से देखा रहा था। मुझे ऐसा आभास हुआ कि यह पावन गुफा भगवान शंकर ने अपने अलौकिक त्रिशूल से काट कर बनाई थी। गुफा त्रिकोण के आकार की थी। मैंने मन-ही-मन नेत्रों से गुफा की बाहरी लम्बाई, ऊंचाई और गहराई का नाप किया था। मैंने अनुमान लगाया कि यह गुफा 150 फुट लंबी, 100 फुट के लगभग चौड़ी तथा 20 फुट के करीब ऊंची होगी। मेरे यात्री साथियों ने बताया कि मनोरम एवं खूबसूरत गुफा की सबसे पहली खोज-खबर देने वालों में बूटा मलिक नामक एक मुस्लिम गडरिया था। एक दिन उसकी कुछ भेड़-बकरियां गुफा के अन्दर चली गई थीं। उन्हें ढूंढते हुए गडरिये ने इस पवित्र गुफा में प्रवेश किया था। वहां पर बने दुर्लभ पावन अमरनाथ लिंग को देखकर वह आश्चर्यचकित हुआ था। उसने इसकी जानकारी हिन्दू समुदाय के लोगों को दी थी। बस फिर क्या था-लोगों में श्री अमरनाथ गुफा के प्रति आस्था का सैलाब उमड़ कर आ गया था। शिव-पार्वती की पौराणिक अमरनाथ कथा में भगवान शिव द्वारा प्रयोग की गई गुफा मिल गई थी। दर्शनाभिलाषी युगों-युगों से आ रहे हैं। पुण्य कमा कर स्वयं को धन्य करने में लगे हैं। मान्यता है-चातुर्मास की प्रतिपदा को शिवलिंग बनना आरम्भ हो जाता है। पूर्णिमा के दिन यह विशालतम रूप में होता है। अगले दिन से आकार में कमी आने लगती है।

मेरे पास चढ़ाने को दो 'भेटें' थीं। एक निजी और दूसरी धर्म बहन कृष्णा (नीलम सैनी) की थी। भीड़ के रेले ने पीछे से ऐसा धकेला कि 'भगवान श्री अमरनाथ जी' के पावन-दुर्लभ-लिंग के सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया था। शिवलिंग अलसी के फूल सा हल्का नीला था। ऊंचाई भी उसकी 6 से 7 फुट रही होगी। 'अमरनाथ लिंग' के दर्शन किए। 'अमरनाथ लिंग, पार्वती और गणेश जी के तीन लिंग चार-पांच फुट मोटी बर्फ के ऊपर पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा की ओर थोड़े-थोड़े अन्तर पर विराजमान थे। 'अमरनाथ लिंग' अलसी के फूल-वर्ण सा, पार्वती और गणेश के लिंग सफेद बर्फ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से निर्मित थे। पार्वती और गणेश लिंगों की ऊंचाई करीब ढाई से 5 फुट रही होगी। इन पावन दुर्लभ लिंगों के सम्मुख लोहे की मजबूत रेलिंग लगाई गई थी।

मेरी 'भेंटें' पुजारी ने मुझ से लीं, भगवान अमरनाथ जी के बर्फ निर्मित आसन से स्पर्श करवा कर तथा त्रिशूल भी भगवान अमरनाथ के बर्फीले आसन से स्पर्श करवा कर मुझे सब कुछ सौंप दिया था। भीड़ ज्यादा होने के कारण अब चलते-चलते ही पावन लिंगों के दर्शन यात्रियों को हो रहे थे। पुलिस वालों का व्यवहार श्रद्धालुओं से शुष्क, सख्त और अमानवीय था। मुझे पार्वती माता के लिंग के सम्मुख बैठ कर धूप-दीप-आत्म-निवेदन करने का शुभावसर मिल गया था। गुफा में घंटियों, घड़ियालों की आवाजें गूंज रही थीं। गुफा में कहीं-कहीं से पानी की बर्फीली बूंदे जहां-वहां से टपक रही थीं। कुछ शीतल बूंदे मेरे ऊपर भी गिरी थीं। बड़ी कठिनाई से धूप को जलाया था। फिर एकाग्रचित हो, भगवान श्री अमरनाथ जी के श्री चरणों का ध्यान करते हुए-'अपने परिवार हेतु सुख-समृद्धि, शांति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सदस्यों का परस्पर में प्रेम, सहयोग, विश्वास व प्रभु भक्ति मांगी थी। 'जम्मू-कश्मीर में चल रहे आतंकवाद की समाप्ति, रियासत की प्रजा हेतु सुख-समृद्धि, शांति, सम्प्रदायक सद्‌भाव, विकास और जनता में भक्ति भाव, परमार्थ और राष्ट्रीय भावना की हृदय की अतल गहराईयों से प्रार्थना की थी। मुंह बोली बहन ने पठानकोट से मुझे यहां भोलेनाथ के दरबार में बड़े दर्दीले, मार्मिक शब्दों में विनती करने को कहा था। जिनमें-उनके विदेश में-बैल्जियम में रहते पति देव की सुख शांति, स्वास्थ्य व घर पठानकोट में शीघ्र आना, बेटे जयभूषण के लिए विदेश में उच्च शिक्षा के लिए सीट मिलने की कामना करना, भाई-बहन (मेरे व नीलम सैनी) के इस पावन रिश्ते का आमरण निर्वाह, परिवार में सुख-समृद्धि, शांति, स्वास्थ्य व प्रभु भक्ति की अन्तर्मन से प्रार्थना की थी।' अपने, बहन कृष्णा (श्रीमती सैनी) व जम्मू-कश्मीर के लोगों के मंगल हेतु, भगवान श्री अमरनाथ के श्री चरणों में बैठ कर अन्तर्मन से दीन-स्वर में विनती करने से मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि कोई मेरे सम्मुख बैठा हुआ, साक्षात रूप में अन्तर्वाणी को सुनकर सब कुछ कबूल कर रहा है। मैं आत्म निवेदन से अब सन्तुष्ट था। भगवान श्री अमरनाथ के दरबार में मेरी हाजिरी लग गई थी। यात्रा की सफलता की साक्षी अन्तः करण से मौन रूप से मुझे, अब मिल गई थी। मैं आत्म विभोर हो उठा था। बहन कृष्णा ने मुजे गुफा में स्थित-'गणेश-कुंड' से पवित्र जल और श्री अमरनाथ की धूनी से कुछ राख लाने को सानुरोध कहा था। जल हेतु मैंने दो छोटी-छोटी प्लास्टिक की कैनियां खरीद रखी थीं। एक अपने व दूसरे बहन कृष्णा के लिए। गणेश जी के लिंग-आसन के साथ ही गुफा में पश्चिम की ओर 'गणेश-कुंड' था। पुलिस वाले उधर किसी को भी जाने न दे रहे थे। श्रद्धालुओं की आस्था थी कि हम पवित्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जल कैनियों में भर कर ले जाएं। पुलिस वाले यात्रियों को डंडा परेड करने से परहेज न कर रहे थे। बड़ा अजीबोगरीब नजारा था।

सैंकड़ों, हजारों मीलों से आए श्रद्धालु कभी 'गणेश-कुंड' व कभी पुलिस वालों के लम्बे-मोटे-भारी डंडों की ओर टुकुर-टुकुर देख रहे थे। पुलसियों के अमानुषिक व्यवहार को देख कर मुझे बहुत दुःख हुआ था। मैंने श्री अमरनाथ भगवान के श्री चरणों में मन-ही-मन विनती और पुलसियों की शिकायत की थी-"प्रभु! त्रिलोकीनाथ!! तेरे इस परम पवित्र धाम में हम सुख, शांति, समृद्धि व तेरी भक्ति और सदा-सदैव सुखद-मंगलमय गोद में बैठने को, सच्चे बाप की शरण में आए हैं। यहां आकर जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। तेरे दरबार में, श्री चरणों में परम-सुख, असीम श्रद्धा, आस्था व अलौकिक आशीर्वाद मिलता है। हम प्रेम, स्नेह, प्यार लेने को यहां पधारे हैं। तुम्हारी चरण-शरण जो भी प्राणी आता है-उसे कोई कष्ट, बाधा, यातना नहीं पहुंचा सकता। मुझे यहां (पवित्र अमरनाथ गुफा में) आकर अलौकिक, अकथनीय सुखानुभूति प्राप्त हुई है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यहां हमारा आगमन, आपके हर्ष का विषय है। स्वागतयोग्य विषय है। परन्तु भक्तवत्सल परम पिता! यह टुच्चे पुलसिए! तुम्हारे घर में-हमारे साथ नीच व्यवहार और अपमान कर रहे हैं। भगवान अमरनाथ! फिर आप यह सब कुछ अपनी आंखों से स्वयं देख-सुन कर कैसे सहन कर रहे हैं?"

भगवान भोलेनाथ ने मेरे अन्तर्मन की वाणी को सुन लिया था। मेरी विनती को उन्होंने स्वीकार कर लिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री अमरनाथ गुफा से प्रस्थान व बालटाल तक थकावट से चूर करने वाला सफर

तभी एक और पुलसिया वहां आया और वहां खड़े दोनों साथियों से बोला- ''इन श्रद्धालुओं को 'गणेश-कुंड' से पवित्र जल लेने दो। पता नहीं यह यात्री बेचारे कितनी तकलीफें उठा कर, धन खर्च करके यहां आए हैं। चलो, खाना खाएं।'' अपने पुलसिए साथी का कहना उन्होंने बड़ी शरीफी से मान लिया था। दोनों पुलिस वालों ने ऊपर उठाए डंडे नीचे कर दिए थे। हमें बोले-''चलो, जल भर लो यार! तुम भी क्या याद करोगे।'' इतना कहकर तीनों पुलसिए गुफा से निकल कर नीचे को सीढ़ियां उतरने लगे थे। मैंने अनुभव किया कि तीसरा पुलिस वाला और कोई न होकर, पुलिस के वेश में भगवान शिव ही थे। तभी श्रद्धालु भगवान अमरनाथ के जयकारे बोलने लगे थे। भगवान अमरनाथ की धूनी से राख लाने और कैनियों में जल भरने का काम मैंने दौलत राम को सौंपा था। दौलत राम ने तीन कैनियों में जल भर के, मुझे कैनियां पकड़ा दी थी। फिर वह धूनी से राख भी ले आया था। श्रद्धालु नर-नारी, बच्चे व अधेड-बूढ़े ग्रुपों में आए, ग्रुप फोटो ले रहे थे। कुछ गुफा के फोटो खींचने में व्यस्त थे। अब काफी संख्या में लोग इत्मीनान से 'गणेश-कुंड' से जल कैनियों में भरने में व्यस्त हो गए थे।

मैंने भतीजे अशोक कुमार को कहा-''अशोक कबूतर जोड़े के अभी तक दर्शन नहीं हुए हैं।'' हां, गुफा के बाहर दो कौए उड़ते हुए कां-कां बोल रहे थे। तभी राकेश कुमार खुशी से उछल पड़ा-''वो रहा कबूतर!'' उसने छत की ओर ऊंगली से संकेत करके समझाते हुए कहा। हम सब ने देखा कि उड़ता हुआ एक कबूतर गुफा के दक्षिण भाग की छत में बने घौंसले में जा बैठा था। हम सब इस प्रयास में थे कि छत में बैठे कबूतर का फोटो लिया जाए। कबूतर हमें अब दिखाई न दे रहा था और छत की ऊंचाई भी कुछ ज्यादा थी। हम सब उदास हो गए थे कि कबूतर का फोटो न ले सके थे। मन की मुराद पूरी न हुई थी। ऐसी लोक मान्यता है कि गुफा में कबूतर जोड़े के रूप में शिव-पार्वती रहते हैं। इस कबूतर जोड़े के दर्शन जो नर-नारी कर लेता है- वह भाग्यशाली माना जाता है। ऐसी मान्यता भी है-भगवान शंकर के गण जो कबूतरों में परिवर्तित हो गए थे, यह वह गण रूपी कबूतरों का जोड़ा है। इन के दर्शन शुभ माने जाते हैं।

दल का मुखिया- राकेश कुमार आदेश के स्वरों में सब को कह रहा था- ''चलो भई चलो अब। रात को बालायल हर हालत में पहुंचना है। इस वक्त तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौसम ठीक है। किस टाईम मौसम अपना मिजाज बिगाड़ ले कोई पता नहीं।'' मैंने पुनः इस पवित्र गुफा व अमरनाथ-लिंग और पार्वती, गणेश लिंगों को श्रद्धा से देख कर सिर नवाया था। मन-ही-मन अमरनाथ को कोटि-कोटि बार प्रणाम किया था। धन्यवाद भी भगवान को दिया था। दोबारा अगले वर्ष फिर यहां बुलाने को चिट्ठी डालने हेतु विनम्रता से प्रार्थना की थी।

बाजार में आकर दर्जन भर 'श्री अमरनाथ लिंगों' के लॉकेट खरीद लिए थे। थोड़ा सा सीढ़ियों के नीचे उतरे थे तो देखा-किसी सेठ श्रद्धालु ने लंगर लगाया था। दौलत राम का आज सोमवार का व्रत था। उसने थोड़ा सा फलाहार करके चाय पी ली थी। बाकी साथियों ने चाय के साथ ब्रैड-पकौडे खाए थे। सांयकाल के 5:30 बजे हम सभी यात्री साथी-अमरनाथ बर्फानी, त्रिलोकी नाथ, नीलकंठ भगवान की जै-जै-जै के जयकारे बोलते हुए वापिस संगम को चल पड़े थे।

संगम वह स्थान है-जहां बालटाल और पंजतरनी के दोनों मार्गों का संगम होता है। इसी लिए दोनों ओर से आने वाले तीर्थयात्रियों और जाने वाले यहीं मिलते व बिछड़ते हैं। इस स्थान को संगम नाम देने का यही औचित्य है। अब हम संगम पहुंचे तो वहां सेना के बेस कैंप ने श्रद्धावनत यात्रियों हेतु चाय और करारे पकौड़ों का लंगर लगाया हुआ था। बहुत से यात्री चाय-पकौड़े खा पी रहे थे। हमारे यात्री-दल ने भी चाय पी थी। पकौडे भी खाए थे। पन्द्रह-बीस मिंट आराम करने के उपरान्त हम बालटाल वाले रास्ते के लिए चल पड़े थे।

लंगर के साथ वाली चढ़ाई 70-75 डिग्री पर थी। इसने तो मुझे नानी याद करवा दी थी। मेरे आगे-आगे अशोक कुमार, नरेश कुमार और दौलत राम चल रहे थे। शेष छः व्यक्तियों का गुरदासपुरी जत्था पीछे चीं-चीं करता चला आ रहा था। विनोद कुमार था तो जवान छोकरा-परन्तु इस मारू चढ़ाई से वह थिड़क गया था। पवन कुमार उसका सगा भाई था। वह विनोद कुमार को साथ लेकर चढ़ाई में उसकी हौसलाफजाई कर रहा था। रोहित कुमार, लव कुमार और राकेश कुमार भोलेनाथ के जयकारों के साथ रुक-रुक, सांस लेकर, थोड़ा-थोड़ा आराम करते हुए इस यात्रा के सफर को सर कर रहे थे। रास्ते के दक्षिण भाग के किनारे-किनारे देवदारों के बड़े-बड़े झुंड थे, जो देखने में मनोहारी व जिनके दृष्य यात्रा की थकावट को दूर भी करते थे। हमारे सिर से कभी कभार कोई पागल सा हुआ बादल का टुकड़ा उड़ता हुआ निकल जाता था। ठीक ऐसे ही-जैसे किसी योगी के मन में कभी विकार पैदा होता है और ज्ञान के प्रकाश और तप से क्षणेक में मिट जाता है। तीर्थयात्री दोनों ओर से आ जा रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब इधर-बालटाल वाले राह पर सेना या पुलिस के जवानों का कोई पहरा नहीं था। सम्भवत: इधर इसकी जरूरत न समझी गई होगी। पथ पर मैं अकेला बढ़ा चला जा रहा था। थकावट के साथ एकाकीपन से मन में सुरक्षा की भावना को लेकर शंकाएं उठने लगी थीं। धीरे-धीरे अंधेरे ने अपनी काली चदरिया वातावरण पर फैलानी आरम्भ कर दी थी। मैं अकेला त्रस्त होने लगा था। तभी मुझे पीछे से कुछ यात्रियों के आने की आवाजें सुनाई देने लगी थीं। मन-हृदय को थोड़ा ठौर मिल गया कि मैं इधर अकेला नहीं हूं। परन्तु मैंने अपनी चाल को मंद न होने दिया था। पीठ पर लदे अपने बैग, ढीले हो गए थे। जल की दोनों कैनियों को नीचे रखा। पुन: दोनों बैगों को ठीक से बांध कर यात्रा को निकल पड़ा था।

कुछ समय के पश्चात् देखा-एक यात्री जत्था अपने हाथों में डंडे, टार्चें लिए सरपट भागता हुआ चला आ रहा है। वह लोग मेरे बराबर पहुंचे तो विनोद कुमार ने आवाज दी-'यश अंकल जी!' चलते-चलते मैंने उन्हें गौर से देखा था। यह गुरदासपुरी टोली थी। पवन कुमार, विनोद कुमार के साथ अब उनके बड़े भाई व भाभी साहिबा भी थीं। मैं आश्चर्यचकित था। कहां वह विनोद कुमार जो संगम पर पैर-पैर की चढ़ाई चढ़ने में जिसकी टैं बोल गई थी, वही अब हिरण सा हुआ, दोनों हाथों में डंडे लेकर भागा चला जा रहा था। सोचा-'जमात करामात होती है। संगठन में बड़ी ताकत होती है। पूरे टोले की दीदादिलारी देख कर, गीदड़ बना विनोद अब शेर बन गया है। ढ़ाढ़स बंधाना, हल्लाशेरी देने से आदमी का टूटा हुआ मनोबल शक्ति पा जाता है।' मैं भी इस टोले के साथ-साथ पूरी गति से चल रहा था। राह में विनोद या और किसी साथी को प्यास सताने लगी तो उसे 'गणेश-कुंड' वाला शीतल, चमत्कारित जल पीने को दे देता था। मेरे मन में पूरा भरोसा था कि जो भी यात्री इस जल की दो बूंदे अपने हल्क के नीचे उतारेगा-उसे भारी सकून, स्फुर्ति और शक्ति प्राप्त होती है। पवित्र गुफा से जल लाना-मेरा सार्थक प्रमाणित हुआ था। मेरे दोनों हाथों में जल वाली कैनियां थी। मेरे हाथ अब हल्की-हल्की पीड़ा करने लगे थे।

राह में दो-तीन बार दम भरने को हम रुके थे। लगभग रात्रि के नौ बजे का वक्त रहा होगा। अब मुझे महसूस होने लगा कि मेरी टांगें आगे सफर करने में असमर्थता दिखा रही हैं। सभी यात्री-साथी थकावट से चूर हो गए थे। परन्तु अंतिम लक्ष्य तो-बालटाल पहुंचना था। इस के बिना गुजारा न था। बालटाल को जाने वाले यात्रियों की संख्या अधिक थी। परन्तु अमरनाथ गुफा की तरफ प्रस्थान करने वाले श्रद्धालुओं की गिनती बहुत कम मात्रा में थी।

गुरदासपुरी टोला दूर आगे निकल गया था। इस बीहड मार्ग पर कौन किसी की अंधेरे में परवाह करता है। मैं अब निपट अकेला था। मैंने एक जगह पर बैठ कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम-से-कम दस मिंट आराम किया था। थोड़ा सा कैनी से जल पिया था। फिर भगवान श्री अमरनाथ के चरणों में चित हो एकाग्र करके शेष यात्रा हेतु विह्वलता से प्रार्थना की थी। अन्तर्मन से कोई कह रहा था-''हिम्मत व विश्वास रखो-मैं कदम-कदम पर तुम्हारे साथ हूँ।'' पुनः अपने बैगों को ठीक से पीठ पर बांध कर एक हाथ में कैनियां और दूसरे हाथ में बैग से टार्च निकाल कर पकड़ ली थीं। भगवान श्री अमरनाथ जी का नाम लेकर मैं अब चलने लगा था। मुझे मार्ग में युवक-युवतियां, अधेड़ व्यक्ति जो भी मिले, उनको पीछे पछाड़ता हुआ चला जा रहा था। मुझे कौन इतनी शक्ति, स्फुर्ति और साहस दे गया है, मैं हैरान था। यह तो मेरे साथ एक करिश्मा था। मार्ग कहीं चौड़ा, कहीं तंग आता था। अब राह में उत्तरोत्तर मिट्टी धूल ज्यादा आने लगी थी। अब कोई-कोई सेना का जवान सुरक्षा में खड़ा दिखाई देने लगा था। साफ-सपाट मार्ग आता तो मैं लम्बे-लम्बे कदमों से अपने नित्य प्रति सैर करने के अंदाज में चलने लगता। चढ़ाई आती तो डग भरने की लम्बाई कम कर देता था।

मैं लगभग दस बजे बालटाल के परम पूज्य स्वामी ज्ञानगिरी जी, जो नंगल डैम (पंजाब) के निवासी थे, के आश्रम में पहुंच गया था। दौलत राम और अशोक कुमार भोजन करके बिस्तर पर आराम फरमा रहे थे। कुछेक यात्री खाना खा रहे थे। लंगर में गर्म पानी का विशेष रूप से प्रबंध किया गया था। कुछेक यात्री जो अभी-अभी आए थे, गर्म पानी से हाथ-पैर धो रहे थे। मैंने भी गर्म पानी से हाथ-पैर-मुंह धोया। लंगरवाला काम भी निपटा लिया था।

आश्रम का फर्श ठंड़ा था। नीचे केवल एक ही साधारण सी कई जगह से फटी दरी बिछी थी। हरेक यात्री को केवल सोने हेतु एक-एक कम्बल मिला था। एक गर्म शाल मेरे पास था जो मैं घर से अपने साथ लाया था। शाल बड़ा था। मैंने उसको तहा कर नीचे दरी पर बिछा लिया था। आश्रम वाला कम्बल ऊपर ओढ़ लिया था। सोने की तैयारी करने लगा था। मेरी पूरी काया से आग सी निकलती मालूम होने लगी थी। कुछ ठंड़ भी लगने लगी थी। अपने मित्र डॉ. जितेन्द्र शर्मा जी ने यात्रा पर आने से पहले बुखार, सिरदर्द, थकावट, टट्टियों की औषधियां समझा कर एक प्लास्टिक की डिबिया में रख कर दी थीं। अमुक कष्ट में अमुक औषधि इतनी मात्रा में पानी या दूध के साथ लेनी है-अच्छी तरह से जानकारी मूहैया करवा दी थी। मैं भाग कर लंगर पहुंचा और एक कप दूध की डिमांड की थी। मुझे लग रहा था मुझे अभी भीषण ज्वर हो जाएगा। लंगर से दूध समाप्त हो गया था। फिर मैंने और कोई चारा न देख कर-बुखार, सिरदर्द व थकावट की औषधि पानी से ही लेकर, अमरनाथ भगवान के श्री चरणों का ध्यान करता हुआ, सिमरन करता हुआ-भोले भण्डारी की सुखद-गोद में सिर रख सो गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वामी जी के आश्रम से बालटाल बेस कैंप पर पहुंचना व नुनवाल बेस कैंप पर उग्रवादियों के हमले के समाचार की जानकारी मिलना

सात अगस्त, मंगलवार को मैं सूर्योदय से पूर्व ही उठ गया था। मेरे बाकी साथी बहुत ज्यादा थके होने के कारण अभी सोए हुए थे। आज मैंने किसी को भी जागने के लिए आवाज न दी थी। भतीजा अशोक कुमार खुद ही जाग गया था। अलग-अलग स्थानों से आए तीर्थ यात्री जाग गए थे। हम दोनों चाचा-भतीजा शौचादि से निवृत हो कर आश्रम में पहुंचे तो गुरदासपुरिया टोला उठ कर आंखें मलता-उबासियां ले रहा था। मैंने राकेश के समीप बैठते हुए कहा-"अरे जवानो-पहलवानों! उठो!! बाहर जाकर जंगल पानी से फारिग हो आओ। अरे टैक्सी ड्राइवर हमारी बालटाल बस स्टैंड पर प्रतीक्षा कर रहा होगा। अरे श्रीनगर पहुंच कर रहने का प्रबंध भी करना है। कुछ वहां देखना सुनना भी तो है।"

मेरी बातें उनके जेहन में घर कर गई थीं। उसने सब साथियों को साथ लिया और बाहर जंगल-पानी को चल दिया था।

लगभग प्रातःकाल के आठ बजे हमारा यात्री-दल अगले पड़ाव हेतु कमर कस कर प्रस्थान करने को उद्यत हो गया था। आश्रम से निकलने से पहले हम सब ने स्वामी ज्ञानगिरि महाराज जी को प्रणाम किया व आशीर्वाद लिया था। राकेश जी ने आश्रम में सेवा हेतु कुछ रुपये देकर पर्ची कटवा ली थी।

पिछले दिन की यात्रा ने हमारा बुरा हाल किया था। सामान से पीठ, कंधे और हाथ बुरी तरह से दुःख रहे थे। मार्ग में हमें एक ऐसा सैनिक साथी मिला, जिसने हमें ट्रक में बिठा कर ड्राइवर को बालटाल के बस-स्टैंड मोड़ पर छोड़ कर आने को कहा था। हमने अपने सामान को ट्रक में रखा और साथ ही बैठ गए थे। हम ने सुख की सांस ली थी। बालटाल के मार्ग पर अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं में स्त्री-पुरुष दोनों ही-'बम-बम भोले, अमरनाथ भगवान की जय-जयकार करते हुए चले जा रहे थे। बीस-पच्चीस मिंट के पश्चात् ट्रक ड्राइवर ने हमें बालटाल-बस स्टैंड के मोड़ पर पहुंचा दिया था। ट्रक से उतर कर हमने अपना सामान पीठ पर बांधा, हाथों में 'गणेश-कुंड' की कैनियों को पकड़ कर ड्राइवर का तहे-दिल से धन्यवाद किया था। बस-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्टैंड के अन्दर आए तो टैक्सी ड्राईवर अशोक दीवाना हमें देख कर बहुत खुश हुआ था। हमने ड्राइवर को शीघ्रातिशीघ्र नहा-धो कर तैयार होने को कहा था। ताकि हमारा यात्री-दल सेना के सुरक्षा कवच में चलने वाले तीर्थ यात्री-काफिले के साथ ही वापिस श्रीनगर चला जाए। ड्राइवर अस्वस्थ था, परन्तु शीघ्र ही तैयार होने को राजी हो गया था। तभी हमें ड्राइवर अशोक दीवाना ने बताया-''आज सुबह पता चला है कि 'नुनगांव बेस कैंप' पर उग्रवादी हमला हुआ है। सुना है- भारी तादाद में अमरनाथ यात्री मारे गए हैं। सैंकड़ों के हिसाब से फट्टड हुए हैं।'' सुनकर हम सब का कलेजा मुंह को आने लगा था। सब साथियों के हृदय की धड़कने बढ़ गई थीं। मुंह सूख गया था। चेहरे पीतवर्ण के हो गंए थे।

इधर पंजाब में हमारे यात्री-दल के प्रत्येक घर के सदस्य प्रात:-सांय व सोने से पूर्व रेडियो, टेलीविजन पर समाचार सुनते थे। इतना ज्ञान सब को था-'अमरनाथ यात्री हर वर्ष उग्रवादियों के निशाने पर होते हैं।' इसीलिए केन्द्रीय सरकार और जम्मू-कश्मीर की मौजूदा सरकार, तीर्थ-यात्रियों की सुरक्षा में कोई कमी या ढील न रहने देती थी। परन्तु चोर बदमाश, टुच्चे-लुच्चे और बदअमनी फैलाने वाले तत्त्व व पाकिस्तान जैसे उग्रवादियों की नर्सरी तैयार करने वाले, उनका पालन-पोषण करने तथा उकसाने वाले समय की ताक में रहते थे। उग्रवादियों का दांव चल गया था। उन्होंने अपनी हाजिरी दर्ज करवा दी थी। हम सब ने अपने-अपने घर में अपनी-अपनी कुशलमंगल की सूचना देना परमावश्यंक समझा था। इधर बालटाल में तीन-चार जगहों पर एसटीडी की व्यवस्था थी। हमारा यात्री-दल इन एसटीडी की तरफ चल पड़ा था। यहां जगह-जगह सेना का समुचित प्रबन्ध था। सेना बड़ी लग्न, निष्ठा, कर्त्तव्यभावना से अपना कर्त्तव्य निभा रही थी। सेना के जवान जगह जगह पैनी दृष्टि में सतर्क, मुस्तैद थे। सुरक्षा में कोई सेंधमारी की गुंजाइश नहीं थी।

बालटाल में लंगरों की बहुत बढ़िया व्यवस्था थी। लंगरों के चारों ओर कंटीली तार से बाड़बदी की गई थी। अन्दर प्रवेश करने को गेट लगाए गएं थे, जहां सेना के जवान मुस्तैदी से खड़े थे। हमारे यात्री दल ने जैसे ही अन्दर प्रवेश होना चाहा, सब की सघन तलाशी ली गई थी। पूरी तरह तलाशी में आश्वस्त होने पर किसी यांत्री को अन्दर प्रविष्ट होने की अनुमति मिलती थी। हमें अन्दर जाने की आज्ञा मिल गई थी।

इन लंगरों की जगह का चयन बड़ी कुशलता व सयानेपन से किया गया था। लंगर लम्बी-चौड़ी-सपाट-समतल स्थान पर बनाए गए थे। यह लंगर मानो महज लंगर न होकर किसी धनाढ्य व्यक्ति की लड़की की बारात सा भव्य प्रबन्ध किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया लगता था। वहां लंगरों में मेज-कुर्सियां बड़े सुसज्जित ढंग से लगाई व सजाई गई थीं। साफ-सफाई का सुन्दर-बढ़ियां इन्तजाम था। यहां पर लगे दो लंगर मालिकों के साथ पवन कुमार व राकेश कुमार का गाढ़ा परिचय था। हमने यहां पर नाश्ता करने से पहले अपने-अपने घरों में फोनसे अपनी कुशलक्षेम का समाचार देना ही उचित समझा था। एसटीडी पर मैंने अपने घर अड्डा सुन्दर चक्क के फोन पर बार-बार नम्बर मिलाया था। किन्तु कम्प्यूटर बार-बार लाईनें व्यस्त होने को बोल रहा था। हार कर मैंने भैया विश्वामित्र को जीरकपुर (पंजाब, चंडीगढ़) पर फोन से सम्पर्क किया था। भैया विश्वामित्र के फोन पर फोन नम्बर लग गया था। मैंने अपनी व अशोक कुमार की कुशलता की जानकारी उन्हें दे दी थी। साथ ही मैंने यह भी बता दिया था कि इस समय अपनी 'श्री अमरनाथ भगवान' की यात्रा सम्पन्न करके बालटाल बेस कैंप में सुरक्षित आ गए हैं। मैंने उन्हें आज के प्रोग्राम के सम्बन्ध में भी बता दिया था कि आज की रात्रि को हम श्री नगर ठहरेंगे और कुछ देर तक सेना की सुरक्षा में प्रस्थान करने वाले हैं। भैया ने सुन कर सुख की सांस ली थी।

रात्रिकाल को टेलीविजन पर पहलगांव में (नुनवाल) के बेस कैंप पर उग्रवादियों के हमले में अंधाधुंधकी फायरिंग से 32 नर-नारी मृत्यु के शिकार और 100 से अधिक लोग गंभीर रूप से जख्मी होने की खबर दी गई थी। टेलीविजन पर आतंकवादियों के हमले के समाचार में दिखाए गए लाशों के ढेर, घायलों की दयनीय स्थिति, खून से लथपथ ज़ख्मी लोग, उस स्थान पर बहते रक्त की धारा, इधर-उधर बिखरा सामान व लोगों की कारुणिक चीखो पुकार के दृष्यों ने देखते-सुनने वालों के रौंगटे खड़े कर दिए थे। जिन लोगों के घरों से 'अमरनाथ' यात्रा को कोई सदस्य गया था, उन के घरों में व्याकुलता भर जाना स्वाभाविक था। उन लोगों के माता-पिता, भाई-बन्धु, पति-पत्नी व बच्चे उस रात्रिकाल को सो न पाए थे। हमारे घर में भी यही स्थिति थी। टेलीविज़न से ज्यों ही खबर सुनी, श्रीमति पुष्पलता बेचैन हो उठी थी। उसने मेरी कुशल-मंगल की सूचना मिलने तक मुंह में बूंद पानी तक हल्क से नीचे न उतारा था। दोनों बेटों को जैसे ही टेलीविजन समाचार व यात्रा पर मेरे जाने की जानकारी मिली थी, वह व्याकुलता से भर उठे थे।

जिन सम्बन्धियों को, अध्यापक साथियों, यारों-दोस्तों, पड़ोसियों व स्नेही सज्जनों को मेरे 'श्री अमरनाथ यात्रा' पर जाने का समाचार मिला-वह तुरन्त मेरे घर में कुशलक्षेम की आई सुखद जानकारी पाने की आशा में दौड़ा चला आया था। घर पर बहन गोदावरी देवी, बड़ा बेटा कुणाल शर्मा-तीनों ही थे। लोगों का घर पर तांता बंधने लगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। स्नेहीजन भगवान 'श्री अमरनाथ' से मेरी सकुशल वापिसी हेतु अनुनय-विनय करने लगे थे। कहते हैं जितना गाढ़ा नाता रिश्ते, प्रेम व अपनेपन का होता है-उसे दुःख की घड़ी में-उतनी ही ज्यादा पीड़ा-दुःख व वेदना पहुंचती है।

मैंने दूसरा फोन अपने छोटे सांढू अशोक कुमार को जम्मू मिलाया था। फोन दो-तीन बार नम्बर डायल होने पर मिल गया था। मैंने अपने स्वास्थ्य, कुशल-मंगल व सुरक्षित होने की सूचना उसे दी थी। साथ ही उसे अभी फोन घर पर करके सूचना देने को ताकीद की थी। मेरे स्वस्थ व कुशल होने की सूचना चंडीगढ़ से भैया विश्वामित्र जी व सांढू अशोक कुमार ने घर पर दी तो सब को सुनकर चैन आया था। परन्तु मैंने पुनः घर पर धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा से फोन मिलाने की चेष्ठा की थी। लाईनें व्यस्त आ रही थीं। मैंने अपना प्रयास छोड़ दिया था। क्योंकि अपनी बारी में खड़े और लोग फोन करने को बड़े बेताब थे।

ड्राईवर अशोक दीवाना को मेडीकल कैंप से औषधि ले दी थी। पवन कुमार व अशोक कुमार ने साथ ही उसे (ड्राइवर) को बता दिया गया था कि लगभग ग्यारह बजे दोपहर को सिक्योरिटी में यात्रा-श्रद्धालुओं ने वापिस श्रीनगर को जाना है। हमारे प्रोग्राम के अनुसार गाड़ी को तैयार रखने की उसने सहमति जता दी थी।

हमारी यात्रा-टीम खूब तेल-साबुन से नहा धोकर तैयार हुई थी। सबने साफ-धुले कपड़े पहने थे। पेट भर कर साथियों ने लंगर छका था। गंदे पकड़े बैग में संभाल कर रखे थे। तैयार हो कर अपने बैग, अटैची, थैले, 'गणेश-कुंड' के जल की कैनियां गाड़ी में रख दी थी। परन्तु अशोक दीवाना के मन में क्या था? यह हम समय से पहले न जान सके थे। सिक्योरिटी में चलने का वक्त हो गया था। पंक्तियों में वापिस जाने वाले अमरनाथ श्रद्धालुओं की गाड़ियां लग गई थी। उन्हें तो बस रवाना होने का इन्तजार था। परन्तु अशोक दीवाना की राह देखते हमारी आंखें थक गई थी। हमारे साथी उसे गालियां बक रहे थे। ऊल-जलूल कहने लगे थे- ''यह साला कहां मर गया है? हमारा श्रीनगर का प्रोग्राम इस ने तहस-नहस कर दिया है। इसकी नीयत ही खराब है। आता है तो इस कंजर के सिर में जूते मारो। भैणदा.........।'' साथी गालियां बक रहे थे। जो मुंह में आ रहा था। कह रहे थे। क्रोध में मुट्ठियां भींच रहे थे। परन्तु लव कुमार चुप था। वह गुरदासपुरी टोले के बाकी साथियों के कभी एक के चेहरे को, कभी दूसरे के चेहरे को देख रहा था। जब क्रोध शांत करके बोलने वाले साथी चुप हो गए तो लव कुमार बोला-''नरेश अंकल जी!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नरेश अंकल ने उसकी ओर देख कर बोला–''हां लव कुमार–बोलो, क्या कहना है तुम्हें?''

''अंकल! बोलना नहीं, लिखना है!''

''अरे लिखना क्या है? पता तो चले।'' स्वाभाविकता से नरेश कुमार ने मुस्कराते हुए पूछा।

''लिखो और पर्चा दर्ज करो कि हमारा ड्राइवर अशोक दीवाना बल्द रेलू राम गांव पंडोरी महंतां गुम हो गया है। उसके अगवा होने की भारी आंशका है। पुलिस फौरन हरकत में आकर उसकी तफ्तीस करे। तलाश करे।'' उसने खड़े होकर हाथों, आंखों से अभिनय करके ऐसे अंदाज में कहा कि सारे साथी उठा कर हंसने लगे थे। हंसते सभी साथी लोट–पोट होने लगे थे। आंखों में आंसू तक भर आए थे। महौल खुशगवार हो गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिक्योरिटी में श्रीनगर के लिए रवानगी व अखंड भारत के विभाजन पर अशोक कुमार के विचार

ड्राईवर अशोक दीवाना का कोई अता-पता न था। बैठे-बैठे सुस्ताने व उबासियां लेने लगे थे। हारे हुए जुआरियों की तरह सिर पर हाथ धरे बैठे थे। सभी साथी सोच रहे थे- "दो चार किलोमीटर फासले की बात होती तो हम पैदल ही चले जाते। यहां तो सैंकड़े मील का सफर है। पैदल चल कर जाने की कौन सोचता है?" जो भगवान को मंजूर था, वही हुआ। दोपहर दो बजे के करीब ड्राइवर ने अपना मुंह आ दिखाया था। वह तो बस एक ही बात रटे जा रहा था-"मेरी हालत बहुत माड़ी ऐ जी। तुहानू मैं हुण किवें दस्सां।" राकेश कुमार के मन का क्रोध मन में धरा रह गया था। उसने उसे कुछ न कहा था। सोचा-बीमार काया के आगे किसी का क्या जोर है। किसी को, कभी भी कोई भी तकलीफ हो सकती है।

सायंकाल के तीन बजे के बीच हमारी गाड़ी सिक्योरिटी में जाने के लिए लाईन में लगी थी। लव कुमार और दौलस राम श्री अमरनाथ भगवान के जयकारे बोलने लगे थे। इस समय किसी भी साथी के मन में अशोक दीवाना के व्यवहार के प्रति रोष या मलाल कतई नहीं था। समस्त साथी बड़े प्रसन्न थे और इधर-उधर की गप्पें हांक रहे थे। पंक्ति में खड़ी गाड़ियों में बैठे अमरनाथ श्रद्धालुओं के मन-हृदय में असीम प्रेम, श्रद्धा व आस्था भाव था जिसके कारण वह रह-रह कर जयकारे ऊंची-ऊंची बोल रहे थे।

मैं और अशोक कुमार ड्राईवर अशोक दीवाना के पास अगली सीटों पर बैठे थे। अशोक कुमार मुझे बता रहा था-"5 जुलाई, 1947 को सरदार पटेल ने भारत में मौजूद 565 रियासतों के शासकों से खुलासा करते हुए एक ऐतिहासिक वक्तव्य दिया था-'हमारी खंडित अवस्था और एक हो कर मुकाबला न करने को हमारी अयोग्यता का ही परिमाम था कि भारत को आक्रमणकारियों का शिकार होना पड़ा......। भौगोलिक समीपता, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक अटूट सम्बन्धों के कारण देशी रियासतों का दायित्व है कि अवशिष्ट भारत के साथ परस्पर मैत्री व सहयोग का वातावरण बनाए रखें। यह देश अपनी परम्पराओं के साथ उन लोगों की गौरवमई विरासत है जो इस देश में रहते हैं। यह संयोग की बात है कि इनमें से कुछ ब्रिटिश भारत में रहते हैं और कुछ रियासतों में। परन्तु उच्च परम्पराओं और संस्कृति में सब बराबर के साझीदार हैं। हम सभी रक्त, भावनाओं और हितों की समानता से बंधे हैं। हमें कोई भी खंड़ों में विभाजित नहीं कर सकता। ऐसी रुकावटें, जो पार नहीं की जा सकें, हमारे बीच खड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं की जा सकती हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि यह अच्छा हो कि हम आपस में बैठ कर मित्रों की तरह नियम निर्धारित कर लें, अपेक्षाकृत इसके कि विदेशियों की भांति संधि करें। मैं अपने मित्र रियासतों के शासकों और उनकी जनता को अपनी मातृ-भूमि के प्रति समान निष्ठा से प्रेरित होकर सबके समान हित के लिए मैत्री पूर्ण और सहयोग की भावना से संविधान सभा में आने के लिए आमंत्रित करता हूं।''

चाचा जी! सरदार पटेल के इस वक्तव्य का रियासतों के शासकों पर बहुत अच्छा प्रभाव हुआ था। उन्हें लोहे और चट्टान से भी कठोर सरदार पटेल का दिल मोम और गुलाब के फूल सा कोमल लगा था। जो पटेल साहिब मन से चाहते थे, संजीदगी से उन पर विचार-वमर्श करने लगे थे। फिर 25 जूलाई, 1947 को चैम्बर्स ऑफ प्रिंसेस का एक अधिवेशन बुलाया गया था। उस अधिवेशन में लॉर्ड माऊंटबेटन ने देशी रियासतों से अपील की कि वे उस मुल्क में शामिल हो जाएं, जिनकी भौगोलिक सीमाएं उससे मिलती हैं। रियासतों के शासकों के सुन कर कान खड़े हो गए थे। कुछ देर के लिए अशोक कुमार मौन साध गया था। वह कुछ याद कर रहा था। वह पुनः कहने लगा-''11 अगस्त, 1947 को दिल्ली के राम लीला मैदान में भाषण करते हुए सरदार पटेल ने रियासत के शासकों से कहा था-''चार दिन के बाद विदेशी सरकार चली जाएगी। इसलिए 15 अगस्त तक भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाएं। अन्यथा उनके साथ कठोर व्यवहार किया जाएगा।''

सरदार पटेल की इस सिंह गर्जना का देशी रियासतों के शासकों पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ था। 14 अगस्त, 1947 तक मात्र चार दिनों में- हैदराबाद, जूनागढ़, काठियाबाड तथा कश्मीर को छोड़कर इंडिया की लगभग सभी रियासतों का भारत में विलय हो गया था। सरदार पटेल जी की सूझबूझ, कूटनीति और आत्मीय शैली से 6 सप्ताह के अन्दर 565 में से 561 रियासतों के शासकों को भारत में विलय करने को विवश कर दिया था। यह एक अद्भुत और ऐतिहासिक सरदार पटेल के व्यक्तित्व व राष्ट्रभक्त होने की देश को अनुपम देन व उपलब्धि थी। और इधर देखिए-इस-उत्तर-पूर्व के पहाड़ के पीछे के भू-भाग पर 22 अक्टूबर, 1947 में पाकिस्तान ने इस पर बलात् कब्जा किया था।'' सुन कर मैंने ध्यान से उन गगनचुम्बी पर्वतों को देखा था। सुनकर मैं चुप रहा था। अशोक कुमार भी गंभीर होकर बैठा रहा। मेरा तो जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में न तो इतना अध्ययन था और न ही ज्यादा ज्ञान था। परन्तु अशोक तो किताबी कीड़ा था। स्वभाव से गंभीर। बहुत ही कम बोलने वाला। संयमी. आजीवन-ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करने वाला नौजवान था। स्मरण-शक्ति उसकी कमाल की भगवान ने दी थी। कर्मठ, एकांतप्रिय व अनुशासन प्रिय जैसे गुणों का आगार था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारी गाड़ी सिक्योरिटी में अब चलने लगी थी। सड़क के दोनों ओर प्रकृति अपना अद्वितीय रूप दिखाकर सब को मोहित व सम्मोहित करने लगी थी। इस प्राकृतिक रूप-सम्पदा से सुसोभित प्रकृति-सुन्दरी देवदार के ऊंचे-ऊंचे पर्वतों,जंगलों राह के बाईं ओर बहता शीतल-जलनीर का हृदय-स्पर्शी कल-कल, छल-छल का संगीत, झरनों की शोभा, चांदी सी पर्वतों पर चमकती बर्फ व शीतल मंद-समीर ने अपने मोह-पाश में बांध लिया था। जी चाह रहा था- यह गाड़ियां घंटों यहां किसी कारणवश रुकी रहें व हम प्रकृति रूपी अनिंद्य सुन्दरी के रूप-यौवन का नयनों से पान करते रहें। गाड़ियों का रेला निरन्तर अपनी रौ में बहा जा रहा था। मनुष्य जो सोचता व अकांक्षा करता है- वैसा हो सकना संभव होता- तो जगत ढर्रा कब का वीरानी में तबदील हो चुका होता। केवल परम सत्ता का संदेश व आदेश ही इस विस्तृत धरा पर चलता है।

मेरा ध्यान प्रकृति से उत्तर कर पुनः पाकिस्तान के कब्जे वाले भू-भाग की ओर चला गया था। मैं अशोक कुमार से पुख्ता जानकारी हासिल करना चाहता था कि स्वतन्त्र, सशक्त भारत के होते, सरदार पटेल जैसे लौह पुरुष इंसान जो स्वतंत्र भारत के गृहमंत्री थे- उनकी मौजूदगी में जम्मू-कश्मीर का 2/3 भाग कैसे बलात् रूप से पाकिस्तान अपने कब्जे में ले गया था। मैंने उसे प्रश्न किया-''बेटे अशोक! सरदार पटेल के जिंदा रहते और भारत के गृहमंत्री होने के नाते कैसे पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर का एक विशाल भू-भाग पर कब्जा जमानेमें कामयाब हुआ?''

मेरे प्रश्न को सुनकर अशोक कुमार कुछ देर के लिए मौन रहा, फिर बोला- जिस समय भारत आजाद हुआ, भारत में 565 रियासतें थी। ब्रिटिश सरकार ने पाकिस्तान और भारत को अलग-अलग स्वाधीन राष्ट्र घोषित करनेकी योजना बना ली थी। परन्तु अंग्रेजों ने देशी रियासतों के मामले में कोई स्पष्ट पॉलिसी की घोषणा नहीं की थी। लॉर्ड माऊंटबेटन जो स्वतंत्र भारत 15 अगस्त, 1947 के बाद भी वायसराय बने रहे, उनके सामने देशी रियासतों की समस्या रखी तो उन्हें तीन विकल्प नजर आए-

1. वे इस समस्या का कोई समाधान न दें और स्वतंत्रता के बाद रियासतें अपने भविष्य का फैसला खुद करे।
2. नैपोलियन पद्धति द्वारा वर्तमान इकाइयों से नए राज्यों का निर्माण करें।
3. देशी रियासतों का विलय भारत तथा पाकिस्तान में कराने की दिशा में काम करें।

मैंने उसकी बात को बीच से ही काटते हुए पूछा-''मिस्टर अशोक कुमार! आखिर एक अंखड भारत के स्वतंत्र होने को लेकर हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सभी धर्मों, सम्प्रदाओं के लोगों ने मुल्क को अंग्रेजों के पंजे से मुक्त करवाने हेतु बढ़-चढ़ भाग लिया था। गोलियों का निशानाबने। जेलें कार्टी व फांसी के तख्तों पर लटक कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहीदियां दी। फिर इंडिया और पाकिस्तान दो देश क्यों बने? दो देश बनाने में किन लोगों का हाथ था? वे लोग इतिहास के प्रांगण में नंगे किए जाने चाहिए। क्योंकि इन मुल्कों के बनने के बाद लाखों निर्दोष नर-नारी, बूढ़े-नौजवान व बच्चे मारे गए थे। रक्त की नदियां बह गई थीं। आखिर उनके कत्लोगारत का उतरदायित्व भी तो किसी के सिर मड़ना होगा।'' मेरी व अशोक कुमार की बातें अब गाड़ी में बैठे मित्र भी बड़ी तन्मयता से सुनने लगे थे।

अशोक कुमार बोला-''2 सितम्बर, 1946 को जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार ने शपथ ले ली थी। जिसमें सरदार पटेल गृहमंत्री बने। इसके अलावा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बाबू जगजीवन राम, राज गोपालाचार्य, आसफ अली जॉन मताई, सरदार बलदेव सिंह, सर शफात अहमद खां, सैयद अली जहीर तथा सी. एच. भामा इस समय बनी सरकार में शामिल हुए थे। इसमें 25 अक्तूबर को मुस्लिम लीग भी सरकार में शामिल हो गई थी। परन्तु उनकी नीयत में खोट था। मुस्लिम लीग ने इस अन्तरिम सरकार में शामिल होकर पाकिस्तान नाम के मुल्क के लिए संघर्ष करना अपना मकसद बताया था। अपने पाकिस्तान मुल्क को बनाने की खातिर मुस्लिम लीग 15 अक्टूबर को खुलेआम नौआखली और त्रिपुरा में हिन्दू-मुस्लिम दंगे करवा चुकी थी। इन हिन्दू-मुस्लिम दंगों में बड़े पैमाने पर हिन्दू महिलाओं के साथ बलात्कार हुए थे। सम्पत्ति लूटी गई थी। हत्याएं की गई थीं। बलात् मुसलमान बनाया गया था। देश को आजादी देने में देर करने का बहाना तलाशने के लिए अंग्रेजी सरकार मुस्लिम-लीगियां को दंगे करने के लिए भड़की रही थी। पाकिस्तान देश को हिन्दोस्तान का ज्यादा-से-ज्यादा भू-भाग देने के नाम पर मुस्लिम लीगी हिन्दुओं पर जुल्म करने से नहीं चूक रहे थे। सरदार पटेल मुस्लिम लीग की इन हरकतों के लिए ब्रिटिश सरकार को जिम्मेदार मानते थे। आखिरकार सरदार पटेल ने मुस्लिम लीग पर धोखाधड़ी पर गरजते हुए कहा-'' जब तक मुस्लिम लीग आग उगलना बंद नहीं करेगी, तब तक शांति नहीं हो सकती। सरकारी अफसर सफाई से काम करना चाहते हैं तो ठीक है नहीं हो इसका परिणाम बुरा होगा। मैं आप से अपील करता हूं कि धोखे से पाकिस्तान लेने की बात मत करो, हां यदि तलवार से लेना है तो तलवारें निकाल लो, हम मुकाबले के लिए तैयार हैं।''

अंतरिम सरकार में वित्त मंत्री का ओहदा मुस्लिम लीग के लियाकत अली के पास था। वह सरदार पटेल से सहयोग नहीं करते थे। हिन्दुओं को नुकसान पहुंचानेऔर मुसलमानों को लाभ पहुंचाने की वह ताक में रहता था। मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ भड़काने व दंगे करवाने में उनका विशेष हाथ था। सरदार बल्लभ भाई पटेल व जवाहर लाल नेहरू लीगी मंत्रियों के व्यवहार से बहुत परेशान व दुःखी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंजाब का कांग्रेसी प्रधानमंत्री खिजर हयात खां गवर्नर व सरकारी अफसरों के असहयोग तथा मुस्लिम लीगियों के आंतक से इतना डर गया था कि उसने अपने ओहदे से त्याग-पत्र दे दिया था। मुस्लिम लीग तो यही चाहती थी। उसने जल्दबाजी में अपनी कैबिनेट बना डाली ताकि पंजाब पर कब्जा किया जा सके। परन्तु उनकी कोशिश कामयाब न हो सकी थी।

4 मार्च, 1947 को लाहौर में पंजाब के सिखों व हिन्दुओं ने पाकिस्तान देश बनने के विरोध में प्रदर्शन किया था। जिस पर मुसलमानों के इरादतन हमले के कारण पूरे प्रांत में भीषण हिंसा भड़क उठी थी।

4 मार्च तक पंजाब में 2049 व्यक्ति मारे जा चुके थे। 1103 गंभीर रूप से घायल हुए थे।

"यार बड़ा लम्बा-चौड़ा किस्सा बयान कर रहा है अशोक कुमार।" कहा लव कुमार ने।

कहते-कहते अशोक कुमार रुक गया था। कुछ देर का मौन गाड़ी में पसरा रहा। ज्यों ही गाड़ी कुछ देर के पश्चात् आगे निकली, तभी सड़क के दक्षिण की ओर एक कोठी नुमा बंगले की ओर इशारा करके बोला-"चाचा जी! इस सामने वाले बंगले में 'बॉबी' फिल्म का गीत-"हम तुम इक कमरे में बंद हों और चाबी खो जाए..........।" डिम्पल कपाडिया और ऋषि कपूर ने फिल्माया था। कह कर अशोक चुप हो बैठा रहा। मैं सोचने लगा था-इस 'बॉबी' फिल्म ने नौजवान लड़के-लड़कियों को इतना दीवान बना दिया था कि इस फिल्म के बीसों-पचासों बार भी देख कर उनका जी भरता न था। युवक-युवतियां शर्तें लगाने लगे- मैंने इस फिल्म को अस्सी बार तो कोई कहता छोड़ यार मैंने तो एक-सौ-एक बार देख कर इसमें पप्पियां और जफ्फियां भी गिन ली हैं जो हीरो-हीरोइन ने इनमें ली हैं। फिर कोई कहता-सत्तर पप्पीयां-जफ्फियां हैं इनमें। तो कोई कहता अरे दस ज्यादा क्यों कहता है, वह तू अपने खाते में डिम्पल कपाडिया के साथ डालना चाहता है। इस तरह की बहस-मुवाहिसों को करते हुए मैंने देखा व सुना था।

"हां अशोक कुमार अपनी बात को पूरा करो।" मैंने अशोक कुमार को ऐतिहासिक किस्सा याद दिलाया था।

अशोक कुमार बोला- 24 मार्च, 1947 को लॉर्ड माऊंटबेटन ने लंदन से दिल्ली पहुंच कर भारत के वायसराय के ओहदे की शपथ ली थी। फिर उसने कांग्रेस और मुस्लिम लीग-दोनों के नुमाइजदों के साथ अलग-अलग बातचीत करने का फैसला किया था। लार्ड माऊंटबेटन दोनों सियासी पार्टियों से मीटिंग के बाद इस नतीजे पर पहुंचा था कि दोनों राजनैतिक पार्टियां-कांग्रेस और मुसिल्म लीग, विभाजनको अनिवार्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानते हैं। फिर पंजाब व बंगाल के बंटवारे का फैसला किया गया था।

2 जून, 1947 को लार्ड माऊंटबेटन ने भारत विभाजन की योजना को प्रकाशित किया और अगले ही दिन कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने इसे स्वीकार कर लिया था। हिन्दोस्तान के लगभग सभी मजहबों, सम्प्रदायों ने भारत-पाकिस्तानदेश बनने को, हिन्दू व मुसलमानों के बीच टकराव की समस्या को हमेशा के लिए खत्म करने को सही माना था।

सरदार पटेल ने अखंड भारत की तकसीम को उचित बताते हुए कहा था- "हमने हिन्दुस्तान के टुकड़े किए जाना कबूल कर लिया। कई लोग कहते हैं कि हमने ऐसा क्यों किया और यह गलती थी। मैं अभी तक नहीं मानता कि हमने कोई गलती की। मैं यह भी मानता हूं कि यदि हमने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करना मंजूर न किया होता तो आज जो हालत हैं, उससे भी बुरी होने वाली थी। फिर दो नहीं बल्कि अनेक टुकड़े हो जाने वाले थे। क्योंकि अंग्रेजों को हटाना लाजिमी था। उनके रहते हालात काबू से बाहर होने लगे थे। क्योंकि वह मुस्लिम लीग को बराबर शह दे रहे थे। हालात काबू से बाहर होने लगे थे। इसलिए हमें विभाजन स्वीकार करना पड़ा। हम या तो विभाजन स्वीकार करते या फिर हिन्दुस्तान को हाथ से जाने देते, यही स्थिति बन गई थी।" कह कर अशोक कुमार गंभीर हो गया था। तभी लव कुमार बेसुरा होकर गुनगुनाने लगा था- "हम तुम एक कमरे में बंद हों और चाबी खो जाए.........।"

"रोहित कुमार ने अगली पंक्ति बोलनी शुरू कर दी थी-"तेरी बाहों की भूल-भुलैया में बॉबी खो जाए........।"

इसी तरह गाड़ी में बैठे सभी बॉबी फिल्म का गीत बेसुरे अंदाज में गाने लगे थे। मेरी व अशोक कुमार की हंसी न रुक रही थी।

पवन कुमार बोला- "इतनी दूर आकार लोग ताले की चाबी को मोटी-सख्त डोरी से बांध कर अपने नाले से बांध कर रखते हैं। ताकि चाबी गुम न हो जाए. और एक राजेश खन्ना की रन्न है-डिम्पल कपाडिया, जिसे कमरे की चाबी की जरा भी फिकर नहीं है।"

सभी साथी सुन कर हा-हा-ही-ही करके हंसने लगे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर के सम्बन्ध में ऐतिहासकार कल्हण और चायवाले अशरफ की आंतकवादियों की वारदातों का वर्णन करना

तभी हमने देखा- नदी के साथ सेना के तम्बू बड़े व्यवस्थित ढंग से लगाए गए थे। फौजी भाइयों ने तम्बुओं के सामने क्यारियां बना कर अनेक तरह के रंग-बिरंगे फूल उगाए थे। हवा में झूलते फूल मानों इन तीर्थयात्रियों का अपनी रहस्यमयी भाषा व अंदाज में अभिवादन कर रहे हो। सड़क के साथ अमंद गति से बहने वाली क्षुद्र सी चंचल नदी, अपनी अमंद सी धारा के मधुर संगीत से मनोरंजन कर रही थी। नदी का संदेश था- 'निरन्तर जीवन पथ पर चलते हुए अपने कर्त्तव्य पालन, समाज सेवा, देश-भक्ति, परमार्थ के कठिन दायित्व को सदैव मुस्कराते, गुनगुनाते हुए निभाते रहो। ताकि भविष्य की पीढ़ियां तुम्हारे बढ़िया कार्यों को स्मरण करके सदैव गर्व अनुभव करती रहें।'

नन्हीं-मुन्हीं सरिता के रहस्यमय संदेश में मुझे अमेरिका के महान लेखक, व्यंग्यकार, राजनीतिक विचारक, राजननीतिज्ञ, वैज्ञानिक, आविष्कारक , सैनिक बैजामिन फ्रैंकलिन जो अमेरिका के संस्थापकों में से जिन्हें एक माना जाता है, धरती के मानव को सुन्दर, संक्षिप्त शब्दों में सरगर्भित पैगाम था-''कुछ ऐसा लिखो, जो पढ़ने लायक हो या कुछ ऐसा काम करो, जो लिखे जाने योग्य हो।''

कई स्थानों पर सेना के जवान खेल-कूद रहे थे। मार्ग में सेना के जवान अपने कर्त्तव्य-कर्म में सतर्क हो कर हमारी सुरक्षा हेतु जगह-जगह खड़े थे। सांयकाल के छः बजे के करीब हम श्रीनगर पहुंच गए थे। ड्राईवर अशोक दीवाना को डल झील के उत्तर दिशा को ओर जाने वाली सड़क पर गाड़ी ले जाने को राकेश कुमार ने कहा था। कुछ ही देर में गाड़ी डल के किनारे आ गई थी।

डल-झील के किनारे हौले-हौले गाड़ी चल रही थी। हमारे यात्री-दल में कई नौजवानों ने डल-झील को पहली बार देखा था। डल झील के उत्तर-पूर्व दिशा में बहुत ज्यादा घास उग आई थी। मैंने ऐसा अनुभव किया-यदि डल झील के आसपास व पानी में बीच से घास-जड़ी की पूर्ण रूप से सफाई की जाए तो इस की शोभा व उम्र कई गुणा बढ़ सकती है। इस झील में नगर का निरन्तर गिरता गंद, मलमूत्र, मिट्टी बगैरा इसके अस्तित्व को भारी चुनौती देने लगा है। प्रशासन को वर्ष के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक-दो बार इस झील की सफाई व सुरक्षा यकीनी बनानी चाहिए।

कल्हण के अनुसार कश्मीर का पहला शासक गोनन्द प्रथम था, जो महाभारत के युधिष्ठिर का समकालीन था। कलियुग के 653 वें वर्ष को वह कश्मीर के इतिहास का पहला मील-पत्थर समझता है।

(काव्य प्रकाश उल्लास 'राजतरंगिनी')

यहां वह नीलमत पुराणा का आभार साफ शब्दों में स्वीकार करता है-

(काव्य प्रकाश उल्लास 'राजतरंगिनी')

परन्तु गोनन्द तृतीया के बाद ही वह प्रत्येक राजा का शासन काल देता है। इसके लिए एक तथ्यपूर्ण कारण वह यह देता है कि बावन राजाओं का वृतांत वह नहीं दे पाया, क्योंकि उनके संबंध में कहीं कोई लिखित प्रमाण मौजूद न थे। फिर भी परम्परा और जनश्रुति के आधार पर वह इनमें से सत्रह का नाम लेता है। परन्तु पैंतीस राजा मूल रूप से लुप्त ही माने गए हैं। इन सत्रह में से वह सम्राट अशोक का नाम भी लेता है, जिसने कश्मीर को हस्तगत किया था। कल्हण के वृत की पुष्टि शिलालेखों और चीनी पर्यटकों के यात्रा ग्रंथों से होती है। इसी महाराजा अशोक ने "श्री नगरी" (वर्तमान कश्मीर) की नींव रखी थी-

स पानवत्या गेहानां लक्षर्लक्ष्मीसमुज्वलैः।
गरीयसीं पुरीश्रीमंश्चक्रे श्रीनगरी नृपः।।

(राजतरंगिनी 1, 104)

अर्थात्-"उस तेजस्वी लोकधिप ने बहुत ही प्रतिष्ठित श्रीनगरी का निर्माण किया, जिसमें छियानवें लाख घर धन-धान्य से सम्पन्न थे।"

क्षेमेन्द्र ने श्री नगर की शोभा का यू वर्णन किया है- "इस नगरी में सुन्दर हंसों की कल-कल ध्वनि, ताजे कमल-डण्ठल खाने से अधिक मधुर हो उठती है। यही मीठी चहकार कमल वनों में ऐसे प्रतिध्वनित होती है, जैसे यह लक्ष्मी के नूपुरों की छन-छन हो।" (कला विलास)

डल झील के किनारे वृक्षों की कतारें ऐसे मालूम होरही थीं, मानो अतिथिगणों के स्वागत व दर्शन-दीदार हेतु किसी लम्बी चौड़ी बस्ती के सुसंस्कृत वसभ्य लोग खड़े हों। झील के किनारे नव विवाहित जोड़े तब प्यार-मोहब्बत की अपनी बातों में मशगूल थे। नवोढ़ा दुल्हनों के चन्द्रमुख पर हुस्न, मादकता व मस्ती देखते ही बनती थी। वैसे भी कश्मीर की नारियों की सुन्दरता विश्व-विख्यात है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि कल्हण ने सगर्व कहा था-''शारदा देश को छोड़ कर मैंने अन्यत्र कहीं भी कुंकम-केसर तथा कविता-विलास को साथ-साथ पनपते नहीं देखा है। निः संदेह ये एक ही माता की सहोदर-संतान है।''

कश्मीर के प्राकृतिक रूप-लावण्य ने जहां कश्यप की इस मानस-पुत्री का जी भरका श्रंगार किया है, वहां इसके हृदय की धड़कनों ने ससीम और असीम के बीच एक ऐसामधुर समन्वय स्थापित किया है, जो लौकिक होते हुए भी अलौकिक है। इस तरह तन और आत्मा एक स्वर हो उठे हैं। बौद्धों की करुणा और हिन्दुओं की सहिष्णुता ने यहां के जन-मानस में एक अद्‌भुत दृष्टिकोण का बीजारोपण किया है, जो उदार चरितानांस्तु वसुदैव कटुम्बकम् का पर्याय बन गया है।

छोटे बच्चे डल झील के किनारे खेल रहे थे। कभी-कभार विदेशी पर्यटक भी दिखाई देते थे। अब चलती हुई गाड़ी शालामार बाग के सम्मुख आ गई थी। पहले तो हम सब की इच्छा थी कि पहले विश्व-प्रसिद्ध उद्यानों की छटा का आनन्द उठाया जाए। परन्तु नरेश कुमार की राय थी कि पहले अपना सामान, रात्रिकाल को ठहरने के स्थान, पर रखकर, कुछ खा-पीकर पुनः वापिस आना सुखद रहेगा। सभी ने उसके बढ़िया सुझाव पर फूल अर्पित कर दिए थे। ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी स्टार्ट की और डल-गेट के समीप ही छोटे से बस स्टाप पर लाकर रोक दी थी।

हम सभी यात्री-साथी एक रेहडी पर चाय पीने की खातिर बैठ गए थे। मेरे साथी चाय पीकर वापिस चले गए थे। मैं अकेला रेहड़ी वाले के पास बैंच पर बैठा रहा था। रेहड़ी वाला युवक 24-25 वर्ष का मुस्लिम युवक था। उसका व्यवहार ग्राहकों से बहुत अच्छा था। रेहड़ी पर आने वाले ग्राहक का स्वागत वह पहले अपनी मधुर मुस्कान से करता था। ज्यों ही रेहड़ी से ग्राहकों का जमघट परे हुआ, मैंने रेहड़ी वाले लड़के से उसका नाम पूछा था-''भैया आप का नाम क्या है?''

''जी अशरफ।'' कह कर उसने गौर से मेरी ओर देखा।

''कितनी देर से यहां रेहड़ी पर काम करते हो?''

''पूरा तो हमें याद नहीं है। हां-यही कोई छः सात साल हो गए हैं।''

''कितना पढ़े-लिखे हो?''

''जी मैंने ग्रेजुएशन की हैं?''

''कोई सरकारी नौकरी ढूंढ लेते।'' मेरी बात सुनकर उसका छोटा भाई रेहड़ी पर काम कर रहा था, काम छोड़कर मेरे समीप आकर बैठ गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बाबू जी, सरकारी नौकरी मेरे जैसे गरीब आदमी के लिए यहां मुमकिन नहीं है।" उसने अपनी हाथ की अंगलियों में ऊंगलियां फंसाते हुए कहा था। सुन कर मैं चुप रहा था। अशरफ पुनः मेरी ओर देखकर बोला- "साहिब जी! कोई वक्त था- पैसे वाले बड़े लोग- बड़े ओहदों के लिए भाग-दौड़ करते थे। अपना खानदानी रुतवा देख कर नौकरी लेते थे। परन्तु अब! बड़ी अजीबोगरीब हालात हैं- बड़े लोग अब छोटी नौकरी को भी नहीं छोड़ते। फिर भला मेरे जैसे दो टके के इन्सां-भला इन बड़े राईसजादों की बराबरी कर सकते हैं क्या? मेरे जैसे इन्सां जिनके पास न पैसा न शिफारिश, अपनी सरकारी नौकरी करने का ख्याल जेहन में पालना-आसमां के तारे तोड़ने जैसा है।"

अशरफ की बात लाख टके की थी। मैं सुनकर मन-ही-मन सोचने लगा कि तुलसी दास ने कितना अपनी इन पंक्तियों में सार भर सा दिया है-

माया को माया मिले कर-कर लम्बे हाथ।
तुलसीदास गरीब की कोई न पूछे बात।

बात अशरफ की सोलह आने सच थी। हर जगह- पंजाब, केरल, त्रिपुरा, यू.पी हो या बाहर-अशरफ वाला फार्मूला लागू होता है। किसी सयानेने क्या बढ़िया शब्दों में कहा है-

बाप बड़ा न भैया।
सबसे बड़ा रुपया।

गरीब आदमी की सुध कौन लेता है? मैंने अपनी बात का रुख बदल कर पूछा था-"अशरफ भाई जान! सन् 1990 से यहां उग्रवाद आया था। क्या तुमनेअपनी आंखों से उग्रवादियों को देखा था?। क्या उनके पशुओं को भी मात करने वाले नीच काले कारनामे देखे तूने?" मैंने एक ही सांस में अशरफ से दो सवाल दाग दिए थे।

इतने में एक और आदमी चाय पीने की तलब में रेहड़ी पर आया था। चाय पीकर उसने अशरफ को पैसे दिए और चला गया था। अशरफ दुःखी भाव से बोला-"बाबू जी! उग्रवाद का नंगा नाच होते मैंने देखा है। उग्रवादी हमारे मुहल्ले और घरों में आकर नौजवान लड़कों को अपने साथ ले जाते थे। जो जाने से आनाकानी करता था, उसे गोली मार देते थे। हमारे लोगों को मारते-पीटते थे। गोली मार देते थे। घर का कीमती सामान लूट कर ले जाते थे। हसीन लड़कियों और औरतों से भद्दा मजाक-हरकतें करते थे। जिन पर दिल फ़िदा होता-उनसे जबर ज़िना करते.........। क्या-क्या कहूं बाबू जी! जब वह सीन सोते वक्त या दिन को जेहन में घूमते हैं तो खुद से नफरत होती है। लगता है- मैं इंसान नहीं, पशु हूं। खुदा का बंदा नहीं- काफिर हूं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो बेगुनाह बीबी, बच्चों, मर्दों, नौजवान लड़कियां-लड़कों को उनके मारने से जालिमों, क़ाफिरों को मना न कर सका। लड़कियों, खातूनों से जबर ज़िनाको रोक न सका था। कभी-कभी अकेले में इबादत के समय अल्लाहके सामने खूब रोता हूं। खुदा से कहता हूं- "हे मेरे अल्लाह! हे मेरे मौला-यह दुनिया का कौन सा जेहाद तुमने पैदा किया है। फिर कभी-कभी सोचता हूं- खुदा मुझे उन बेगुनाहों की मौत और खूबसूरत खातून व उनकी जवान बच्चियों की इज्जत उनके बालदैन के मर्द के सामने लूटने पर क्यों न मैं उनकी हिफाजत करते हुए उन दरिंदों को मार कर, खुद मर क्यों न गया? क्योंकि गुनाह करना, देखना औरसहना-गुनाह के दायरे में ही आते हैं।"

"तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं, गुनाह नहीं अशरफ। जान सब को प्यारी होती है। ऐसे लोगों से तो भगवान भी पनाह मांगता है। तुम उन्हें रोकना चाहते-तो वह तुम्हें गोली मार कर ठंडा कर देते। और तुम्हारी पड़ोसियों या रिश्ते नातेदारों से, कुछ ऐसा हुआ- जो नहीं होना चाहिए था।" मैंने उसे एक ओर सांत्वना दी थी और साथ में अगला प्रश्न भी कर दिया था।

उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे। वह बोला-"मेरे यार-दोस्त, रिश्तेदार, हमसाए मेरी आंखों के सामने उग्रवादियों ने गोलियों से मार कर छलती कर दिए थे। लोग गिड़गिड़ाते, रोते-चीखते, बिलखते हुए दोनों हाथ जोड़ कर खुदा का वास्ता देकर जान बख्श देने और रहम करने को कहते। परन्तु दरिंदे क़ाफिर एक न सुनते। जैसे कसाई का टोका देख कर बकरा जान बख्श देने को मिमियाता है। बेजुबान होने पर बकरा, आंखों की जुबान से जान बख्श देने की फरियाद करता है। किन्तु कसाई को रहम से मतलब नहीं होता। फरियाद से वास्ता नहीं। वही हाल उन इन्तहापसंदों का था। उनका कोई मजहब नहीं। सिर्फ मारना, गोलियां चलाना, मां-बहनों की इज्जत लूटना ही उन का मकसद था। बस्स! और कोई मकसद नहीं था।" कह कर वह अपने अंगोछे से आंसू पोंछने लगा था।

"तुम्हारी यह फारूख अब्दुल्ला की सरकार कहां चली गई थी? इस सरकार के अहलकार, पुलिस, सी.आई.डी. क्या कर रही थी? इस फारूख सरकार को मालूम न था- यह सब कुछ यहां हो रहा था या आगे होने वाला है?" मैंने अपने मन की पीड़ा व क्रोध को संयम में लाते हुए सहजता से अशरफ को पूछा थां।

अशरफ आंखें पोंछता हुआ बोला-"वह गवर्नमैंट क्या जिसे अपनी जनता की दुःख तकलीफों का इल्म मिंट-मिंट में पता न चले। इस फारूख सरकार को जो हो रहा है- सब इल्म था। इस मौजूदा सरकार की उग्रवादियों से मिली-भक्त थी। उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाकिस्तान से पैसा मिलता है। इन साले बड़े लोगों ने-गरीबमार की है। यह सरकार हरामखोर है। अमीरआदमी पैसे के दम पर यहां से अपना कारोबार समेट पर दिल्ली-कलकत्ता या और कहीं जा कर अड्डा जमा लेगा। परन्तु गरीब। गुरबत से मारा, दो जून रोटी जिसे मयस्सर नहीं- वह मजदूर, मजलूम कहां जाए? यहां मेहनत कश मारा गया है। मजलूम, मजदूर गरीब खाकसार हुआ है। गरीब पीसा गया है। हालातों से लताड़ा गया है। अन्दर से दरिद्र आदमी पूरी तरह से टूट गया है। उसकी हिम्मत, काम का जज्बा-जनून खाली हो गया है। इस गरीब तबके की हालत न पूछो बाबू जी। हालात-बद-से-बदतर हो गई है। गरीब-गुरबत के मारे लोगों के कुटुम्ब-भूखे पेट सोते हैं। अपनी फैमिली को चलाना-बड़ा मुश्किल हो गया है।'' कह कर अशरफ चुप हो गया था। सारी बातें सुनकर मेरा हृदय बड़ा दुःखी हुआ था। ऐसी हकूमत की क्या दरकार जो गरीब की रक्षा नहीं कर सकती और उसकी रोजी-रोटी का प्रबन्ध नहीं कर सकती। फिर यह लोग कुर्सियों से क्यों चिपक कर बैठे है। जो दीन-दुःखी का आश्रय बन सकने का सामर्थ्य रखता हो-कुर्सी उन्हें दी जानी चाहिए। भारत में लोकतंत्र है, राजतंत्र नहीं।

अशरफ दो पल के लिए सांस लेने को रुक गया था। वह बोला-''साहिब जी! मैंने 'कुरान शरीफ' अनेक बार पढ़ा व समझा है। उसमें बेगुनाह लोगों को मारना, सताना, डराना और धमकाना-गुनाह है, पाप है, कुफ्र है। कुरान-ए-पाक में उसके बंदों की खिदमत करना-अल्लाह-ताला की, परवरदिगार की असल मायनों में सेवा व वन्दगी है। इन्सानी प्यार-महोब्बत, गर्ज मंद के काम आना, मुसीबत में कमजोर, मजलूम, बेसहारा के काम आना-रहमत करना कुरान-ए-पाक में यही इबादत है। यही उस खुदा की वन्दगी है। यही वह बातें हैं- जिनसे अल्लाह-हू-वाले-हू वसल्लम खुश होता है। नेकी कमाना- नेक इन्सानों के उसूल है। जीने का पाक-साफ राह है। दरिन्दों, इन्तहापसंदों से बेगुनाहों के कुफ्र से बचाना-हर मुसलमान का इख़लाखी फर्ज है। जो रहम, इन्सानी खिदमत, सच्चाई का दामन नहीं पकड़ता-वह असल मायनों में मुसलमान नहीं, काफिर है। क्योंकि मुसलमान लफ्ज का मतलब ही-पाक-साफ नीयत वाला इन्सान होना है।''

सुन कर मैं आंखें फाड़-फाड़ कर अशरफ को देखने लगा था। उसके मजहबी फलसफे में-मानवता के सिद्धांतों, नियमों का सार था. जो व्यवहार, दृष्टिकोण, एक मानव-का-मानव के प्रति होना चाहिए था-अशरफ ने इस चौबीस-पच्चीस की उम्र में अपने मन-हृदय व ज़ेहन में बसा लिया था। सोचा-अशरफ को ज्यादा कुछ जानने-पहचानने व समझने की अब जरूरत नहीं है। मानवता व धर्म के सार को वहसमझ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुका है, जो सौ वर्ष की आयु भोग कर मरने वाले इंसानों के भाग्य में भी नहीं लिखा होता। मैंने बैंच से उठ कर उसे अपनी बाहों में भरते हुए कहा–''मेरे प्यारे छोटे भाई! प्यारे दोस्त अशरफ! वाह! भई वाह!! अरे तू रेहड़ी वाला होकर आध्यात्मिक रूप से इतना गहन है, हृदय से पाक-साफ है। मैं सैंकड़ों बार तुझे सलाम करता हूं। तू सचमुच में नवी का नेक रूह इंसान है। खुदा का प्यारा बंदा है।''

तभी क्या देखता हूं–अशोक कुमार और दौलत राम मेरी तरफ चले आ रहे थे। मैंने अशोक से हाथ मिलाया और उनकी तरफ चल दिया था। अंधेरा गहराने लगा था।

चलते-चलते अशरफ ने ऊंची आवाज में कहा–''हजूर फिर कभी जल्दी से मुलाकात करने को आना। भूलना नहीं।''

''हां-हां! जरूर-जरूर!'' कह कर मैंने चलते हुए अपना हाथ हिला दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाऊस बोट में रात्रि विश्राम व अतीत काल की स्मृतियों का ताजा होना

मैंने बस स्टाप के अन्दर पांव रखा तो सभी साथी मुझे घूर-घूर कर देख रहे थे। मैंने उनके मन-हृदय की बात को भांप लिया था, कि वह यह मुझ पर नाराज हैं। मैंने मुस्करा कर राकेश कुमार से पूछा-''मेरे लिए क्या हुक्म है जनाबे-आला?'' मैंने कुछ इस अंदाज से कहा कि सभी खिलखिला कर हंस पड़े थे।

मुंहफट लव कुमार बोला-''हम यश जी को यह कहेंगे। वो कहेंगे। वह सामने आए तो हिम्मत दिखा कर कहते क्यों नहीं?''

रोहित कुमार बोला-''अरे यह तो हमारे परम पूजनीय ब्राह्मण देवता हैं। हां इतना जरूर है- यह हमें बता कर नहीं गए कि मैं फलानी जगह पर जा रहा हूं। यूं ही सब के मन में जरा सा मलाल था।''

''मेरे प्यारे अजीज मेरे कारण परेशान हुए, मुझे अपनी गलती का अहसाह हो गया है। यकीन दिलाता हूं-आइंदा ऐसा नहीं होगा।'' मैंने कह कर सब के चेहरों की ओर बारी-बारी से देखा था।

दोनों भाई पवन कुमार और विनोद कुमार, मेरी बात सुन कर भावुकता में मुझ से आकर लिपट गए थे। स्नेहासिक्त शब्दों में विनोद कुमार बोला-''शर्मा जी ऐसी कोई बात ही नहीं। आप तो राह में रेहड़ी वाले के पास बैठे थे। कोई दूर नहीं थे। इन सबका गिला करना फिजूल है। अच्छा, अब आगे के लिए हमें गाइड करें-रैन वसेरा कहां किया जाए?''

मैंने राकेश के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा-''क्यों राकेश कुमारजी, आप तो हमारे सैक्शन-कमांडर हो-जो आप का हुक्म होगा-सभी साथी मानने को बाध्य होंगे।''

''नहीं शर्मा जी! राय तो सभी की लेनी है न।'' कहा राकेश जी ने।

रोहित कुमार और विनोद ने डल झील के किनारे पर रहते बड़े भाई के पास रात्रि गुजारने को अपनी राय जाहिर की थी। किसी ने इस बात पर आपत्ति न जताई थी। आपत्ति हो भी नहीं सकती थी। उन दोनों ने रात्रि का भोजन भी हमारे साथ न किया था। वह दोनों उधर रवाना हो गए थे। इस समय भूख ने सब को तंग किया था। राकेश कुमार ने ड्राईवर अशोक दीवाना को गाड़ी स्टार्ट करने चिरपरिचित ढाबे पर ले चलने को कहा था। गाड़ी को ड्राईवर ने एक पंजाबी 'सोढी' के ढाबे के सामने खड़ा कर दिया था। सब साथियों ने पेट भर कर भोजन किया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके आधे-पौने घंटे के पश्चात् राकेश कुमार के कथनानुसार गाड़ी दूर स्थित हनुमान मंदिर के सामने आकर रुक गई थी। राकेश कुमार का विचार था कि रात्रि काल को मन्दिर में विश्राम किया जाए व पैसे बचा लिए जाएं। परन्तु हनुमान मंदिर में अमरनाथ यात्रियों की भारी भीड़ थी। वहां पांव रखने को जगह न थी। सभी साथियों ने एक स्वर में कहा-''यहां तो बहुत भीड़ है। यहां टिकना ठीक नहीं है।'' गाड़ी पर हम पुनः डल-गेट के पास आ गए थे।

डल-झील के किनारे नव-विवाहित जोड़े बैठे थे। विदेशी जोड़े भी हौले-हौले चलते हुए अंग्रेजी में बातें करते हुए अपनी मदमस्त चाल से झील के किनारे घूम रहे थे। डल में हौली-हौली चाल में, दुल्हनों की तरह संवारे-श्रंगारे शिकारों में सैलानी नौका-विहार कर रहे थे। झील के साथ-साथ बनी सड़क पर यातायात निरन्तर जारी था। हम डल झील के किनारे बने सीमेंट के घाट पर आकर बैठ गए थे. झील में सामने दिखाई देते हाऊस बोट के माथों पर लिखा था- Heaven on earth, Paradise आदि नामों को बड़ी सुन्दर शब्दों में अलग-अलग रंगों में किसी मंजे हुए पेंटर ने हाऊस-बोट के माथे पर लिखा था। हाऊस-बोट में जलती रंग-बिरंगी रौशनी मनमोहक थी। चिताकर्षक थी। मैं जिधर भी देखता-अनेकानेक हाऊस-बोट में जलती रोशनियों की परछाई डल झील में पड़ रही थी। काली रात्रि में झील के मध्य और आसपास का भू-भाग इन्द्र महाराज की नगरी अमरावती को भी मात दे रहा था। जी चाह रहा था-डल झील का अलौकिक, रमणीय, नयनाभिराम दृष्य भोर होने तक एकटक निहारता रहूं। इस अद्‌भुत छटा को आंखों के माध्यम से पीता रहूं। ताकि मेरा वीरान, शुष्क मरुस्थल सा हुआ हृदय प्रान्तर इस अलौकिक सुन्दरता के जल से लबालब भर जाए। इस मन-हृदय में बुझे मेरे अरमानों की खेती पुनः लहलहा उठे। मैं एक नया-जीवन पालूं-जिसमें असंख्य दर्द, गम, पीड़ा, निराशा, असफलताएं और वेदनाएं प्रातः सांय जो टीस देती है-उनसे मुक्ति पा सकूं।

13 वर्ष के दीर्घकालीन अन्तराल के पश्चात् डल झील से पुनः संयोग हुआ था। इसके अनिंछ सौदर्न्य का पान करने को अवसर हाथ लगा था। कभी-कभार मुझे झील की अनुपम रमणीयता ऐसे भुलेखा देती नजर आती-मानो इन्द्र देवता के आदेश पर कोई मेनका या उर्वशी सी अप्सरा इन्द्रलोक से धरती पर सोलह-श्रृंगार करके विश्वामित्र या पुरुरवा से किसी योगी तपस्वी का तपभंग करने को उतर आई हो। तभी एक शिकारे वाला हमारे समीप आकर कश्मीरी-नुमा हिन्दी में पूछने लगा-''आप बाबू जी हाऊस बोट में ठहरना चाहते हैं तो बहुत कम पैसों पर बढ़िया हाऊस बोट में हम ठहरा सकते हैं।''

तपाक से लव कुमार बोला-''कितने पैसे लगेंगे?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कितने आदमी हैं आप?"

"छः आदमी।" कहा लव कुमार ने।

"पांच सौ रुपये बाबू जी।" शिकारे वाले ने कहा।

राकेश ने लव कुमार को चुप रहने का संकेत किया था। लव कुमार फिर न बोला था। दो-तीन मिनट की बातचीत के पश्चात् राकेश कुमार ने उसे दो सौ रुपये पर राजी कर लिया था। इतने कम पैसों में हाऊस बोट में रात ठहरने को जगह मिल गई थी। इस बात से सभी साथी बहुत प्रसन्न थे। हम शिकारे में बैठ गए थे। शिकारे वाला हमें चप्पू से पानी में छप-छप-छप-छप करता हुआ हाऊस बोट की ओर चल दिया था। कुछ ही लम्हों में उसने हाऊस बोट पर उतार दिया था। वह हाऊस बोट काफी मात्रा में लम्बा-चौड़ा था। यह हाऊस बोट न होकर, हिन्द महासागर में नेवी का कोई छोटा-मोटा लड़ाकू जहाज सा लग रहा था। इसका मालिक अभी छोकरा सा ही था। नाम था उसका-गुलाम मोहम्मद।

अपना-अपना बैग, कैनियां, थैले उठाए हम हाऊस बोट के अन्दर आ गए थे। हाऊस बोट में आकर कोई बैड पर, कोई नीचे बिछे कालीन पर आकर बैठ गया था। इस में बाथरूम, फलश बगैरा-बगैरा सभी आवश्यक घरेलु सुविधाएं मौजूद थीं। हाऊस बोट का मालिक हमें बिस्तर बिछा कर दे गया था। गुलाम मोहम्मद अपनी कोई राम कहानी बताना चाहता था। कुछ पल हमसे बतियाना चाहता था। परन्तु मेरे सभी साथी थके-हारे थे। सोना चाहते थे। हमारा मूड़ देखकर-गुलाम मोहम्मद गुड नाइट कह कर चला गया था। मैं हाऊस बोट के एक अलग कमरे में आकर पलंग पर बैठ गया था। मुझे अकेले सोने की पुरानी आदत है। मैंने पलंग पर से बैठे हुए खिड़की खोली थी। मेरे सम्मुख डल झील का प्राकृतिक नजारा था। मुझे पेशे से अध्यापक अब्दुल अहद आजाद की यह कश्मीरी पंक्तियां मेरे मानस पट कर अंकित हो आई थीं, जो उसने डल झील व प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम सुन्दरता के सम्बन्ध में कही थीं-

पम्पोश डल छु खामोश
ज़न रूठमत रटिथ बोश
पांचाद्रन पिवान जोश।
प्यठ संगरन मुबारक।

(बादे-वतन-कविता नं 3 पृष्ठ 134)

अर्थात्- "कमलों से भरपूर डल झील मौन है, जैसे रूठ गई हो और मान कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही हो। मेरा वतन मुबारक है। जहां पर्वतों से निकलते हुए प्रपात सिरफठोल गति से नीचे उतरते हों।''

'आजाद' ने कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने शब्दों में मुखरित किया है। 'आजाद' सूक्ष्म सौन्दर्य का उपासक है। वह डल झील के किनारे पर स्थित बागों का और अपने वतन पर इस तरह कुछ कहता है-

छिस बागरान मुहब्बत
बुलबुल कुमिर करान गथ।
छिस प्याल ह्यथ अथन क्यथ
पोशे चमन मुबारक।

(बादे-वतन-कविता नं 3 पृष्ठ 183)

''बुलबुलें यहां प्यार बांटती हैं, कोयलें इसकी परिक्रमा में मग्न हैं। मुबारक हो यह वतन जिसके बाग-बगीचे हाथों में प्याले उठाए सबका स्वागत करते हैं।''

'आजाद' की कविता-विलासिता में जो खुमार था। सौन्दर्य का जो अद्‌भुत वर्णन था उसके पाश में कितनी देर तक बंधा रहा, खोया रहा। ज्यों ही मैं 'आजाद' के बंधन से मुक्त होकर डल-झील के उत्तर-पूर्व दिशा की ओर देखा-'हारी पर्वत' की विशालकाय परछाई पानी में हिलारें ले रही थी। शंकराचार्य मंदिर और टी.वी सैन्टर की परछाई भी रंगीन भवनों की रंगीनी पानी में परिलक्षित हो रही थी। पहाड़ों पर निर्मित भव्य भवनों की रंगीन रोशनियां बड़ी लुभावनी थीं। और उनकी रंगीन परछाई डल झील के सीने पर उतर कर नाना प्रकार से श्रृंगार कर रही थी। झील का पानी सुनहरा, नीला-पीला-लाल, न जाने कितने जादूई रंगों का मिल कर बन रहा था। ठीक इस समय मेरे सम्मुख दो शिकारे वाले नवविविहितों जोड़ों को नौका-विहार करवाने हेतु ले जा रहे थे। तभी दूर से एक शिकारे वाला मधुर स्वर में गा रहा था-

अश्क छु फरान कमन कमन तप र्‌येशन त आलमन
अशक करान मोसमन पोश बदन कज़ालिये।
गार गयि च्ये खौरदसाली यार बनान छिद्यार बालि
मीर वुछुम बनान फचाली दात बनान सवालिये।।

-'कुल्याति-आजाद' पृष्ठ -65, 66

''यह प्रेम बड़े-बड़े तपी ऋषियों तथा बुद्धिमानों की पूंजी हर लेता है, वे अपने मन को वश में नहीं कर पाते। प्रेम निष्कलुष सुन्दरियों के पुष्पों के समान लुभावने तथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोमल शरीरों पर कालिख पोत देता है। और मेरी प्रेमिका, तू चढ़ने यौवन के द्वार पर खड़ी हो। अतः तुमने मुझ निर्धन को छोड़कर धनवानों के साथ याराना करने की तृष्णा की है। मगर तुम्हें मालूम होना चाहिए कि बड़े-बड़े धन-कुबेर मुहताज बन जाते हैं और दानवीर स्वयं दान लेने पर विवश हो जाते हैं।''

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे एक दुःखद व पीड़ामय स्वप्नके पश्चात्-नव्य आशाओं से परिपूर्ण, खुशियों से भरी सुखद सवेर आने वाली हो। मैंने वर्षों पूर्व ऐसा मधुर संगीत सुना था-जिसमें प्रेयसी के प्रेम की तपन-तड़पन और गुरबत से मारे प्रेमी का उलाहना भरा था जो उसे धन दौलत की चकाचौंध में उसे छोड़ गई थी।

एक भारी तूफान, भूचाल, कश्मीर के वाशिंदों के दुर्दिनों का चश्मदीद काला इतिहास-जिसे समाचार पत्रों व अपने कश्मीरी सम्बन्धियां की जुबानी सुन-सुन कर अनेक बार मैंने आंसू बहाए थे। मैं कल्पना के विहंग पर बैठ कर अपने मौसा-ससुर डॉ. मोहन लाल भट्ट, कानिया कदल के भव्य, सुरक्षित, सुव्यवस्थित मकान में पहुंच गया था-यहां मैंने अपनी स्व. पत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मासे मधुचन्द्रिका की अविस्मर्णीय रात्रि व्यतीत की थी। मैं अपने मौसा-ससुर व मौसी-सास श्रीमती रूपा भट्ट, अपनी अनिंद्य अप्सराओं सी खूबसूरत सालियों-महा लक्ष्मी, वीणा कुमारी और निम्मी के सत्कार, मधुर व्यवहार, हंसी मजाक व अपनत्व के भूतपूर्व व्यवहार से कल्पना में अभिभूत हो उठा था। मेरी आंखें उन समधुर यादों में खोकर बरसने लगी थीं। आंसू पोंछते हुए सोचने लगा-'काश! वे मीठी स्मृतियों से पूर्ण सुखद दिन पुनः लौट आएं तो कितना अच्छा हो।' परन्तु यह तो लेखक की कोरी कल्पना है। भला आज तक कभी ऐसा धरती पर हुआ है। नहीं, कभी नहीं। बीता समय व नदिया से बह गया पानी-कभी वापिस नहीं लौटते। क्या मृत्यु लोक में पहुंचे, प्राणी कभी जिंदा हो कर घर लौटे हैं? नहीं न! हां, इतिहास कभी-कभार किसी घटना की पुनरावृत्ति अवश्य कर देता है। उस परमसत्ता का कैसा है यह अचल-अटल नियम और सिद्धांत। उस विधाता का शाश्वत नियम है धरती पर परिवर्तन लाना। और वह किसी भी रूप में हो सकता है। किन्तु परिवर्तन होते अवश्य रहेंगे। सिन्धु घाटी, चीनी सभ्यता और मैसोपोटामिया जैसी सभ्यताएं इसी परिवर्तन की गवाह हैं।

तभी एक हवा के शीतल झोंके नेआकर ग्रीष्मऋतु में भी मुझे तरोताजा कर दिया था। मैं उन मधुर स्मृतियों की पीड़ा-वेदना में आंसू बहाता जा रहा था। ज्यों-ज्यों आंखों के खारे जल को रूमाल से पोंछता-उतना और सैलाब आंखों में भर आता था। मेरी विचारधारा तभी भंग हुई, जब पवन कुमार, लव कुमार को पंजाबी भाषा में कह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा था-"जुत्तियां मारांगा। मड़ खेड़ देवांगा। जदों देखो-बकबक-बकबक करी जांदा ए।"

इतने में राकेश कुमार बोला-"ओए ऐस दी वथेरी मोटी चमड़ी ए। असल पनीर खा-खा के झोटे बांगू फिट्टिया पिया ए। जुत्तियां मारन ते औनू किहड़ी दर्द-पीड़ होनी ऐ।"

सुन कर सभी ही-ही-हा-हा करके हंस पड़े थे। मैंने उठ कर बाथरूम में मुंह-हाथ धोया था। पानी पिया। फिर श्री अमरनाथ जी को स्मरण करे बिस्तर पर लेट गया था। निंदिया रानी ने कब मुझे अपने आलिंगन में ले कर, अपने मदभरे होठों को मेरे होठों पर रख कर-मस्ती से भर दिया था, तन-मन में अजीब सा खुमार भर दिया था-कुछ पता ही न चला था। गुरदासपुरी टोला-लड़झगड़ कर कब सोया होगा-मुझे नींद में इसकी कोई जानकारी नहीं थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लार्ड माउंटबेटन की खोटी नीयत, पाकिस्तान का कश्मीर पर हमला व कश्मीर का भारत में विलय

हाऊस बोट में भतीजा अशोक कुमार बैठा हुआ था। शेष मित्र मण्डली भी वहीं बैठी गप्पें हांक रही थी। मैंने अशोक कुमार की ओर उन्मुख होकर पूछा-''मिस्टर अशोक कुमार! यहां तक मैं जान पाया हूं, तुम्हारा पंजाब की बजाए जम्मू-कश्मीर के इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी अधिक है। क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं?'' सुनकर अशोक कुमार ने मेरी ओर देखा। वह बोला-''चाचा जी मैं जब भी बुआ सत्यादेवी के पास गांव मजुआ (पाकिस्तानी सीमा के समीप स्थित गांव) में दो-चार दिन में आया हूं, मेरी मुलाकात बड़े भाई कालिदास जी से होती रहती थी। आपको मालूम है- वह आईबी में कार्यरत रहे हैं। जम्मू-कश्मीर के इतिहास की बहुत सी पुस्तकें उनकी लाइब्रेरी में सजा कर रखी गई होती थीं। सो मैंने फुर्सत के लम्हों में उन पुस्तकों का गहन अध्ययन किया था। आप मेरी इस आदत को तो शुरू से ही जानते ही हैं मुझे खाना मिले-न-मिले-पढ़ने को कोई-न-कोई पुस्तक या मैगजीन मिलनी चाहिए। पढ़ना मेरी हौबी है।'' अशोक कुमार के मुख से ऐसा सुनकर मुझे खुशी हुई थी।

इतने में नरेश शर्मा बोला-''अशोक जी! आपने उस दिन जम्मू-कश्मीर की दफा 370 के बारे में बहुत अच्छी तरह समझाया था। परन्तु अब यह बताने का कष्ट भी करें कि 564 रियासतों को सरदार वल्लभ भाई पटेल की नीति, योग्यता से भारत में विलय कर लिया गया। परन्तु जम्मू-कश्मीर की रियासत का विलय भारत में समय रहते क्यों न हो पाया? अल्फ से बे तक का किस्सा बयान करें। ऐसा कहते लोगों को अकसर सुना है कि जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री जनाब शेख अब्दुल्ला के बजुर्ग बाप-दादा ब्राह्मण थे। यदि यह बात सच है तो थोड़ी सी जानकारी इनके बारे में भी बतानेका कष्ट करें।''

नरेश कुमार की बात सुनकर अशोक कुमार नेआंखें मूंद कर कुछ क्षणों के लिए गंभीर हो कर मौन बैठा रहा। गुरदासपुरी टोले ने भी अपने कान खड़े कर लिए थे। अशोक कुमार ने आंखें खोल कर सब की ओर देखा। फिर बोला-''जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री जनाबशेख मुहम्मद अब्दुल्ला-एक दत्तात्रेय अत्री गोत्रीय कश्मीरी ब्राह्मण राघव राम कौल का प्रपौत्र था। जिसने अफगानों के वक्त में इस्लाम धर्म अपनाया था.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1766 में एक सूफी संत मीर अब्दुल रशीद बैहकी से इस्लामी दीक्षा लेकर अपना नाम शेख मुहम्मद अब्दुल्ला रख लिया। इसके पुत्र का इस्लामी नाम शेख गुलाम रसूल था। और इसके पुत्र इब्राहीम और उसके पुत्र शेख मुहम्मद अब्दुल्ला हुए। शेख मुहम्मद का जन्म 5 दिसम्बर, 1905 को श्रीनगर शहर के साथ मिलता गांव ''सौरा'' में हुआ। यह सौरा नामक गांव अनचर झील के किनारे बसा हुआ है। इनकी माता का नाम खैरून निसा था। शेख के इस्लाम धर्म में आने के बाद ऊन की चादरें बुनने का काम करने लगे थे। इसका घर औसतन दरजे का कारोबारी घर था। बचपन में शेख अब्दुल्ला ने संत अरबुन मुबारक शाह से कुरान की तालीम ली। फिर लोकल प्राईमरी स्कूल में भर्ती हो गए। प्रताप कालेज श्रीनगर दाखिल हुए और पंजाब यूनिवर्सिटी से बी०एस०सी० 1928 में पास करके अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी से एम.एस.सी.की डिग्री 1930 में लेकर घर लौटे।

उन दिनों महाराज हरिसिंह ऊंची नौकरियां पर जम्मू और कांगड़ा के राजपूतों को नियुक्त करता था। कुछ पंजाबी लोगों को नौकरियों पर रखता था। परन्तु कश्मीर के मुसलमानों को नहीं लिया करता था। या कम गिनती में लेता था। शेख मुहम्मद अब्दुला अपनी पुस्तक ''अतिशेचिनार'' में लिखते है- 'मैं पहला कश्मीरी मुसलमान था जिसने एम.एस.सी की डिग्री ली और विलायत पढ़ने के लिए जाना चाहता था। मेरी उम्र 24 वर्ष के ऊपर होगई थी, इसी बहाने मुझे रोका गया।' शेख मुहम्मद अब्दुला को साईस मास्टर की नौकरी करनी पड़ी थी। इन्हें इस सरकारी नौकरी से सरकारी हाई स्कूल, बाग दिलावर खान में 60 रुपये माहवार मिलते थे। 20 रुपये अलाऊंस यानि 80 रुपये महीने की आमदनी थी।

शेख साहिब ने मुस्लिम, हिन्दू और सिखों से मिलकर नैशनल कांग्रेस पार्टी की जम्मू-कश्मीर में नींव रखी।

नरेश कुमार ने आश्चर्य चकित हो तुरन्त कहा-''जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री जनाबशेख अब्दुल्ला पहले सरकारी टीचर भी रह चुके हैं, यह जानकर खुशी और हैरानी दोनों होती हैं।''

अशोक कुमार कुछ देर रुक कर बोला-''जम्मू कश्मीर की आजादी से पहलेऔर बाद का बड़ा लम्बा इतिहास है। मैं मोटी-मोटी बातों से ही कश्मीर विलय के मसले को आप सब के सामने बयान करूंगा। जून, 1947 में लार्ड माऊंटबेटन श्रीनगर में आये तो इन्होंने महाराज हरिसिंह को यह राय दी- आप पाकिस्तान के साथ अपनी रियासत को मिला दें. यदि पाकिस्तान के साथ नहीं जाना चाहते तो भारत के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिल जाओ। मैं एक डिवीजन फौज यहां भेज दूंगा ताकि पाकिस्तान की तरफ से कोई शरारत न हो जाए। यह फैसला आप को शीघ्र ही लेना चाहिए।'' परन्तु महाराज की दुलमुल नीति ने फैसला नहीं होने दिया।

फिर 25 जुलाई, 1947 में चैम्बर्स आफ प्रिंसिज का एक विशेष अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में लार्ड माऊंटबेटन ने देशी राजाओं से अपील की थी कि वे उस अधिराज्य (भारत या पाकिस्तान) में शामिल हो जाएं जिनसे उनकी रियासत की भौगोलिक सीमाएं जुड़ी हुई हैं। जनाब शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को 20 मई को जिला मुजफ्राबाद में कैद कर लिया गया। उस रात को उन्हें गढ़ी के डाकबंगले में रखा गया और दूसरे दिन श्रीनगर लेजाकर बादामी बाग में मिलिट्री क्वार्टर गार्ड में बंद कर दिया। शेख साहिब पर दफा 121 एफ 120 बी. रणबीर पैनल कोड और दफा 32 सिक्योरिटी रूल्ज के अधीन मुकद्दमा चलाया गया। इन पर तीन मुकद्दमे दायर किए गए थे। जिसकी इन्हें नौ वर्ष कैद की सजा और 500 रुपये जुर्माना किया गया था। इस मुकद्दमे को कश्मीर का एक प्रसिद्ध मुकद्दमा माना जाता है। इसका विवरण (कश्मीर आन ट्रायल) में छप चुका है। इस मुकद्दमे की सुनवाई 10 सितम्बर, 1947 को हुई थी।

शेख साहब 1 वर्ष 4 महीने और 11 दिन की कैद काट कर 29 सितम्बर 1947 को रिहा हुए थे। कैद से बाहर आने पर इनका बड़ा स्वागत हुआ था। इनके जेल में रहते हुए तो हिन्दुस्तान का नक्शा ही बदल चुका था। दो कौमों के आधार पर भारत को तीन भागों में बांटा गया था। जम्मू-कश्मीर को अभी भारत या पाकिस्तान में मिलाना अथवा एक आजाद देश रहने का फैसला करना बाकी था।

परन्तु यह एक कठिन काम था। नैशनल कांफ्रेंस ने महाराजा हरिसिंह से 'आजाद रियासत' रखने के सिलसिले में लोगों से यथासम्भव योगदान लेना था। विचार-विमर्श करना जरूरी था। भारत वा पाकिस्तान दो मुल्क बन चुके थे। परन्तु महाराज हरिसिंह किसी फैसले पर न पहुंच पाया था।

जम्मू-कश्मीर के रसद के सारे रास्ते पाकिस्तानसे होकर जाते थे- जैसे स्यालकोट, मीरपुर के सामने वाले पाकिस्तान का इलाका और कोहला का पुल वाला रास्ता जो कि रावलपिंडी से माल और रसद का जम्मू-कश्मीर में आने के रास्ते बंद हो गए थे। परन्तु डाकतार का विभाग महाराजा ने पाकिस्तान से सम्पर्क साध कर इसे बनाए रखा था। यह सब कुछ कश्मीरी पंडित रामचन्द्र काक की सलाह से हुआ था। पाकिस्तान ने कश्मीर में डाक व तार घरों पर अपना तारे व चांद वाला झंडा फहरा दिया था। कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोग गलती से समझ बैठे कि कश्मीर में पाकिस्तान का अधिकार हो गया है. लोगों ने जिनमें सरकारी कर्मचारी भी थे, पाकिस्तान के हक में नारे लगाने शुरू कर दिए थे। इन कर्मचारियों को जेल में बंद करके नौकरी से बर्खास्त कर दिया था। पंडित काक की राजा ने छुट्टी कर दी थी. वह पाकिस्तान को भाग जाना चाहता था। परन्तु उसे जेल में बंद कर दिया था।

महाराजा हरिसिंह ने कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) से अपने मामा जनक राज को प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया था। पाकिस्तानी झंडे इमारतों से उतार दिए गए थे।

उधर 11 अगस्त, 1947 को दिल्ली के रामलीला मैदान में भाषण करते हुए सरदार पटेल कने कहा था-''चार दिन के पश्चात् विदेशी सरकार चली जाएगी। अतः रियासतें 15 अगस्त तक भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाएं अन्यथा उनके साथ कठोर व्यवहार होगा।''

सरदार वल्लभ भाई पटेल के भाषण का बहुत गहरा प्रभाव हुआ था। 14 अगस्त रात्रि तक 561 रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो गया था। शेष चार रियासतों-हैदराबाद, जूनागढ़, कठियाबाड और जम्मू-कश्मीर भारतीय संघ में विलय को रह गई थीं। हैदराबाद, जूनागढ़ और काठियाबाड को सरदार पटेल ने अपनी सूझबूझ व कठोर निर्णय से भारतीय संघ में शामिल कर लिया था। केवल जम्मू-कश्मीर का विलय शेष रह गया था।

पाकिस्तान सरकार की तरफ से एक दूत महाराजा के पास संदेश लेकर आया था कि जम्मू-कश्मीर रियासत को पाकिस्तान के साथ इलहाक कर दो। परन्तु यह बात भी सिरे न चढ़ी। उस समय के पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाबजादा लिआकत अली खान थे। उसने कश्मीर में नमक-पेट्रोल और खाने की चीजों को भेजना बंद कर दिया था। बहाना यह बनाया गया कि ड्राइवर लोग जम्मू के डोगरा के लोगों से डरते इधर नहीं आते। कश्मीर में इम्पीरियल बैंक की शाखा को करेंसी नोटों और रेजगारी की किल्लत बढ़नी शुरू हो गई थी. इससे कारोबार में अफरातफरी फैल गई थी। उस वक्त नैशनल कांफ्रैंस में यह भावना जोर पकड़ती जा रही थी कि हम भारत और पाकिस्तान किसी भी मुल्क से नहीं मिलना चाहते। हम आजाद रहना चाहते हैं। हम नहीं चाहते कि 40 लाख लोगों पर कोई अपनी मर्जी थोपे। परन्तु इससे पहले हमने महाराजा हरिसिंह से आजादी लेनी है। फिर हिन्दू-मुस्लिम सिख बैठ कर तय करेंगे कि हमें अब आगे क्या करना है।'' बोलते-बोलते अशोक कुमार का गला सूख गया था। उसने उठ कर पानी पिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जम्मू-कश्मीर की कथा बड़ी लम्बी-चौड़ी है।" अशोक कुमार के मौसी के लड़के राकेश कुमार ने कहा।

"हां राकेश कुमार जी, यह इतिहास की बातें हैं। लम्बी तो होंगी ही। चलो, आगे अपनी बात को चालू करो अशोक कुमार जी।" नरेश कुमार ने कहा।

अशोक कुमार ने आगे कहना आरंभ किया-"के.एम. मुंशी ने सरदार पटेल के हैदराबाद के प्रति रुख की सराहना करते हुए लिखा-यदि जवाहर लाल नेहरू की इच्छानुसार कार्य होता तो हैदराबाद एक अलग राज्य के रूप में भारत के पेट में एक दूसरा पाकिस्तान होता।"

शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के गलत प्रभाव में आकर नेहरू जी ने कश्मीर के मसले को सरदार पटेल के रियासत विभाग से अलग कर दिया था।

ब्रिटिश सत्ता के हस्तांतरण के समय कश्मीर के नरेश महाराजा हरिसिंह स्वतंत्र कश्मीर की कल्पना कर बैठे। वे इतने अदूरदर्शी शासक थे कि यह भी भूल गए कि उनके राज्य की हिन्दुओं की संख्या 20 प्रतिशत से भी कम थी। और पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि कश्मीर पर थी।

14 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान की एक आजाद देश के रूप में घोषणा और 15 अगस्त, 1947 को शेष देश को भारत नाम से स्वाधीन घोषित किया गया था। विभाजन परिषद ने 1 दिसम्बर, 1947 तक काम लिया। भारत की ओर से परिषद नेपूरा दायित्व सरदार पटेल के नेतृत्व में बड़ी सूझबूझ और भौतिक परिपक्कवता के साथ निभाया था।

विभाजन में चल व अचल सम्पत्ति का विभाजन अत्यन्त कठिन काम था। चल सम्पत्ति का 80 प्रतिशत भारत को तथा 20 प्रतिशत पाकिस्तान को दिया गया। युद्ध के कारण ब्रिटेन ने भारत पर पांच बिलियन डालर का ऋण छोड़ा था। पाकिस्तान ने बड़ी मुश्किल से उस ऋण का 17.5 प्रतिशत देना कबूल किया था। क्योंकि उसे 17.5 प्रतिशत नकदी दी गई थी।

सरदार वल्लभ भाई पटेल मुस्लिंम लीग के धूर्त इरादों से परिचित थे। अतः वह नकदी के भुगतान को स्थगित रखना चाहते थे, जिससे कश्मीर युद्ध में पाकिस्तान कमजोर बना रहे। परन्तु महात्मा गांधी जी के इस विरोध में उपवास पर चले गए और मन मार कर सरदार पटेल को अपना इरादा बदलना पड़ा था।

गांधी जी की जिद्द का परिणाम भारत को बाद में भुगतान पड़ा था। पाकिस्तान को नकदी का भुगतान होते ही उसने तुरन्त अपनी सेना को दुरुस्त किया। हथियार खरीदे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और सादे कपड़ों में 21-22 अक्तूबर 1947 को पाकिस्तान हुक्मरानों ने योजनाबद्ध तरीके से कबाइलियों को कश्मीर में धकेल दिया। उसके बाद पाकिस्तान रेगुलर आर्मी भी थोड़ी-थोड़ी करके जम्मू कश्मीर की सीमाओं को पार करके हमला कर रही थी। पाकिस्तान के मेजर जनरल अकबर खान आक्रामणकारियों के तार हिलाते रहे जो 50 हजार से भी अधिक संख्या में भारत में घुस आए थे। पाकिस्तानी घुसपैठियों की एक टुकड़ी तहसील बाग से होकर फत्ते के डेरे से चढ़ कर गुलमर्ग के रास्ते श्रीनगर की तरफ बढ़ने लगी थी। दूसरी टुकड़ी मुजफ्राबाद पर 21-22 अक्तूबर की रात को हमला किया। यहां हिन्दू व सिक्ख जो मूल रूप से ब्राह्मण थे, इस हमले के शिकार हुए थे। महिलाओं व कन्याओं ने किशन गंगा नदी में कूद कर अपनी जान गंवा कर अपनी आबरू बचाई थी। बचे खुचे लोग उड़ी के रास्ते बारामूला होते हुए श्रीनगर पहुंच गए थे। इन दोनों टुकड़ियों का मकसद 26-27 अक्तूबर को श्रीनगर पहुंचना था। इन कबाइलियां और पाकिस्तानी सैनिकों ने अपने अधिकार में आए इलाके में मनमानी, लूट-खसोट, कत्लोगारत, महिलाओं से बलात्कार जैसे जघन्य अपराध खूब किए। महारांजा हरिसिंह की सेना में मुस्लिम सैनिकों की संख्या अधिक थी। वह वक्त मिलते ही पाकिस्तानी सेना में मिल जाते थे।

सरदार पटेल कश्मीर में तुरन्त सेना भेजना चाहते थे। परन्तु लार्ड माऊंटबटेन ने प्रस्ताव किया कि पहले महाराजा हरिसिंह विलय का प्रस्ताव स्वीकार करें तो सैनिक सहायता दी जाए। विलय का काम बहुत शीघ्र निपटाया गया। कश्मीर रियासत का विलय 26 अक्तूबर, 1947 को हो गया। 26 अक्तूबर, 1947 को पंडित जवाहर लाल नेहरू के घर 3 बजे शाम को मीटिंग हुई, जिस में नेहरू जी, पटेल जी, बलदेव सिंह, शेख अब्दुल्ला, महाजन बतरा, वी.पी. मैनन उपस्थित थे। 26 अक्तूबर को भारत में विलय की बात पक्की हो गई थी। ऐसी दशा में जब भारत के नेताओं को इस बात की पूरी सूचनाएं मिल गई कि पाकिस्तान की फौज कबाइलियों आक्रमणकारियों के साथ मिली हुई है तो नेहरू जी ने महाराजा को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने यह कहा कि कश्मीर की अन्दरूनी स्थिति अत्यन्त खराब है, इसलिए शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को जम्मू कश्मीर की रियासत का नाजिमें आली (निगाहेवान) मुकर्रर किया गया है। 30 अक्तूबर, 1947 को शेख साहिब ने शपथ ग्रहण की। इन्होंने अपना छोटा सा मंत्रीमंडल बनाया जिस में बख्शी गुलाम मुहम्मद, बेग साहिब अनन्तनाग से, सूफी मौ, अकबर बारामूला से, मीर मकबूल गिलानी उड़ी से और मौ. आमीन डोडा से प्रमुख रूप से सदस्य थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

26 अक्तूबर, 1947 को तत्कालीन रक्षा मंत्री सरदार बलदेव सिंह व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने परामर्श करके श्री वी.पी मैनन एवं शेख अब्दुल्ला ने मेहरचन्द महाजन के साथ वापस जाकर अपनी रिपोर्ट दी। इसी आधार पर 27 अक्तूबर, 1947 को Dekota हवाई जहाज द्वारा सैनिकों को मदद कश्मीर में पहुंचने लगी थी। सैनिकों ने शत्रुओं को खदेड़ना शुरू कर दिया था।

नौशहरा और मीरपुर पर भी कबाइलियों ने हमला किया था। इस सैक्टर में पाकिस्तान की पांच बटालियन्स आगे बढ़ रही थीं। भारतीय सैनिकों का सामना होते ही वह जान बचाने के लिए पांव सिर पर रख कर भागने लगे थे।

भारतीय सेना में ब्रिगेडिर उस्मान ने इस मुहाज पर बड़ी बहादरी से प्रदर्शन किया। ब्रिगेडियर उस्मान एक सच्चे मुसलमान और देश भक्त थे। दु:ख है–वह अंत में युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए।

''यह तो बहुत बुरा हुआ। ऐसे बहादुर नौजवान और इतने बड़े अफसर का शहीद होना दु:खदायी होता है।'' तुरन्त नरेश शर्मा के मुख से निकल गया था।

अशोक कुमार ने अपनी बात के सूत्र को आगे बढ़ाते हुए कहना शुरू किया– ''इसी तरह जम्मू कश्मीर घाटी व लद्दाख–तीनों क्षेत्रों में पाकिस्तानी सेना व कबाइलियों के कब्जे से इलाके खाली करवाने में बिग्रेडियर घनसारा, कर्नल पृथ्वी चंद, कर्नल शेरजंग थापा, आठवीं कक्षा के छात्र छेवांग रिनचिन ने शत्रु से दो-दो करके खदेड़ा था। अक्तूबर व नवम्बर में भारतीय और पाकिस्तानी सेना में जम कर लड़ाइयाँ हुई थीं।

उस समय बदकिस्मती से भारत का गवर्नर जनरल लार्ड माऊंटबटेन और पाकिस्तानी देश का मुखिया मुहम्मद अली जिन्ना था। लार्ड माऊंटबटेन भारत का सर्वोच्च अधिकारी था और भारत से वेतन व भत्ते प्राप्त करता था। परन्तु नीयत का खोटा था। भारत के प्रति उसके मन में जरा सी भी हमदर्दी नहीं थी। लार्ड माऊंटबेटन पाकिस्तान जाकर जिन्नाह और प्रधानमंत्री से मिला था। पाकिस्तान ने लार्ड माऊंटबेटन से प्रस्ताव किया कि तीसरे पक्ष की मध्यस्ता में PLEBISCITE करवा कर फैसला किया जाए कि जम्मू-कश्मीर के लोग किस मुल्क के साथ जाना चाहते हैं। अथवा आजाद रियासत के तौर पर रहना चाहते हैं।

''इसे इस सम्बन्ध में पाकिस्तान जाने की जरूरत ही क्या थी? इस बेईमान अंग्रेज को इंडिया नेअपना गवर्नर जनरल का ओहदा दिया ही क्यों था?'' क्रोध में अब पवन कुमार बोल उठा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशोक कुमार ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहना शुरू किया– ''भारत आकर लार्ड माऊंटवेटन ने पाकिस्तान के प्रस्ताव से भारतीय लीडरों का परिचिय करवाया था। सरदार पटेल इस बेईमान गवर्नर जनरल के मन्सूबे को बाखूब समझते थे। सरदार पटेल ने लार्ड माऊंटबेटन के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया था।''

भारत के गृहमंत्री सरदार पटेल ने इंडियन आर्मी को धड़ाधड़ कश्मीर में भेजना शुरू किया था। इस समय सेना की कमान मेजर जनरल यदुनाथ सिंह के हाथ में थी। भारतीय आर्मी कश्मीर के इलाके खाली करवा रही थी। खोटी नीयत वाले माऊंट बेटन के पेट में यह सब देख कर मरोड़ होने लगी थी। उसने दूसरी चाल चली थी। पंडित जवाहर लाल नेहरू लार्ड माऊंटबेटन पर पूर्ण विश्वास करते थे। वह इस बेईमान, नमकहाराम अंग्रेज की चाल में फंस गए। लार्ड माऊंटबेटन ने नेहरू जी को राय दी– ''इस विवाद को यू.एन.ओ. में ले जाएं। इस से आप की अच्छी छवि बनेगी और विश्वास आप के साथ होगा। यह एक अच्छा चांस है। यू.एन.ओ. मध्यस्ता करवा देगी।

पंडित नेहरू जी ने अपने सहयोगी मंत्रियों से कोई राय न ली। न ही किसी मंत्री की सलाह मानी। न ही कश्मीर मसले के सभी पक्षों पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया था। अत: 1 जनवरी 1948 को पंडित जवनाहर लाल नेहरू ने यह केस यू.एन.ओ. में दर्ज़ करा दिया। यू.एन.ओ. ने सीज़फायर करवा दिया। जो जिस स्थान पर दोनों देशों का कश्मीर भू-भाग पर कब्जा था, वह वहीं काबिज हो गया। यह निर्णय भारत के लिए स्वीकार करनाबहुत हानिकारक रहा। पाकिस्तान कश्मीर का 1/3 भाग यानि 30,000 वर्ग किलोमीटर का इलाका मुफ्त में ले गया। वह भू-भाग जो इंडियन आर्मी ने अपनी कुर्बानियां देकर जीते थे, पाकिस्तान को फूलों वाली तश्तरी से सजा बाअदब वापिस लौटा दिए थे। उनमें कोटली, मीरपुर, देबा बटाला और झंगड़ के इलाके थे।

''ऐसे नालायक प्रधानमंत्री को उसी समय बर्खास्त कर देनाचाहिए था। सारा मंत्रीमंडल नेहरू के खिलाफ हो जाता। उसे यह मूर्खतापूर्ण काम न करने देना चाहिए था। अकेला चना भाड़ तो नहीं फोड़ सकता था।'' गुस्से में नरेश कुमार शर्मा ने कहा।

मैंने उसे शांत करते हुए कहा– ''नरेश कुमार जी! जिन लोगों ने अपना सब कुछ दांव पर लगा कर देश आजाद करवाया, संभव है उन्होंने नेहरू जी के इस निर्णय को टालने कर हर यत्न किया होगा। सुनते हैं-पंडित नेहरू जी बड़े जिद्दी स्वभाव के थे। वह उस समय इंडिया के प्रधानमंत्री थे। उन्होंने अपने ओहदे का पूरा घमंड था जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सारे नेताओं और मंत्रीमंडल की अनदेखी करके यू.एन.ओ. में यह केस लेकर चले गए थे।'' सुनकर नरेश कुमार मौन बैठा रहा। कुछ बोला नहीं। परन्तु वह उसके चेहरे से उदासी, क्रोध और निराशा की छाया अवश्य झलक रही थी।

इतने में पवन कुमार बोला- ''अशोक कुमार जी अब इस कथा की शीघ्रता से भोग डाल (समापन) दो।''

अशोक कुमार ने मेरी तरफ देखा। फिर अपनी बात कहनीशुरू कर दी-वह कहने लगे- ''अच्छा तो यह होता कि जम्मू-कश्मीर का मसला पंडित जी यू.एन.ओ. में न ले जाते तो भारत की सेनाएं शत्रु को खदेड़ कर Red Cliff द्वारा खींची गई रेखा से परे तक उसका पीछा करतीं। पाकिस्तान की ओछी हरकत का यही सार्थक जवाब होता।

सरदार पटेल को नेहरू जी की सोच बिल्कुल पसंद न आई थी। उन्होंनेउस वक्त कश्मीर मसले यू.एन.ओ. में ले जाने का खुला विरोध किया था। और कश्मीर में सैनिक कार्यवाही कर पाकिस्तानीआर्मी और कबाइलियों को पीछे भागने पर विवश करने को सही ठहराया था। परन्तु नेहरू जी न माने थे। वे भारत के प्रधानमंत्री थे और कश्मीर को विशेष राज्य के रूप में उन्होंने अपने हाथ में ले लिया था। वे संयुक्त राष्ट्र में चले गए और इस रियासत के मसले को अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्याय के लिए लटका आए। जिसका पूरा अधिकार महाराजा हरिसिंह ने साफ तौर पर 26 अक्तूबर, 1947 को हिन्दुस्तान को सौंप चुके थे। पटेल साहिब की शक्तिशाली सैनिक कार्यवाही कश्मीर की समस्या को हमेशा के लिए आसानी से सुलझा सकती थी। बदकिस्मती से ऐसा हुआ नहीं। किसी शायर नेकितने सारगर्भित शब्दों में शेर कहा है-

लम्हों ने खता की थी सदियां ने सजा पाई।

नेहरू जी की गलती का खामियाजा हम 71 वर्ष से भुगतते चले आ रह रहे हैं।

सरदार पटेल ने बड़े दुःख से कहा था- ''यदि जवाहर लाल नेहरू और गोपाल स्वामी अयंगर ने कश्मीर मसले को अपना व्यक्तिगत विषय बना कर मेरे गृह तथा रियासत से अलग न किया होता तो कश्मीर की समस्या उसी प्रकार हल होती जैसे हैदराबाद की।''

देश की समस्याओं से लगातार जूझने, विषम परिसथितियों से लोहा लेने तथा अपने साथियों से सहयोग न मिल पाने, नेहरू जी द्वारा उनसे दूरी बनाए रखने की स्थिति से संसार की विशाल ताकत को पैरों तले रौंदने वाला वह लौहपुरुष बड़ा दुःखी था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धीरे-धीरे हृदय रोग नेउन्हें दबोच लिया था। 76 वर्ष की आयु में 15 दिसम्बर, 1950 को बम्बई में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया था।

किसी शायर ने कितने सुन्दर शब्दों में यह शेर कहा है-

"हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।"

यह शेर सरदार वल्लब भाई पटेल पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होता है।

इसी तरह कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने कविता की यह सारगर्भित दो पंक्तियां कहीं थी-

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ, विचारें आज मिलकर यह समस्याएं सभी।

"बहुत खूब! क्या शब्द हैं कविवर के!! जवाब नहीं इन शब्दों व इस में छुपे रहस्यभाव का।" मैंने कविवर नमैथिलीशरण गुप्त के सम्बन्ध में कहा था।

अशोक कुमार आगे बोला- "आज कश्मीर समस्या का लाभ हुर्रियत वाले उठाते हैं। वह कश्मीरी जनता को उल्लू बनाते हैं। बात-बात पर हड़तालें, साड़फूंक, पत्थरबाजी और नारेबाजी करवा कर कश्मीर का माहौल बिगाड़ते हैं तथा कारोबार चौपट करते हैं। अपनी रोजी-रोटी, लीडरी और आराम परस्ती इस समस्या से पूरी करते हैं। वह पाकिस्तानके बड़े हितैषी और राजदार हैं। पाकिस्तान व दूसरे इस्लामी मुल्कों से खूब पैसा ऐंठते हैं। अलगाववाद के कट्टर समर्थक और देश व कौम के गद्दार लोग हैं।" कह कर अशोक मौन साध गया था। सुनकर सभी साथी उदास से लग रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डल झील में रात्रि विश्राम व डल की प्रात:कालीन शोभा

डल झील में व्यतीत की आज की रात्रि, बालटाल वाली रात से सुखद व आरामदायक थी। वहां तो सराय थी और हम अमरनाथ भगवान के यात्री थे। वहां पर स्वामी ज्ञानगिरी (नंगल डैम पंजाब) जी महाराज अनिगिनत तीर्थ यात्रियों के रात्रि-विश्राम व भोजन-व्यवस्था के लिए जो भी कर सकते थे, उन्होंने किया था। परिस्थितियों के लिहाज से स्वामी जी की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। परन्तु अब तो हम बेचारे तीर्थ यात्री न होकर डल झील में ठहरने वाले टूरिस्ट थे। कोई ऐरे-गैरे नत्थू खैरे न थे।

मैं यहां गुरदासपुरीटोले की प्रशंसा किए बिना रह नहीं सकता। कोई चीज खरीदनी तो उस पर खूब विचार-विमर्श, वाद-विवाद करते। मोल--तोल करते समय दुकानदार से मीन-मेख व बहस मुवाहसा करते। फिर कहीं जेब से पैसे निकाल कर दुकानदान को देते। दुकानदार माल बेच कर बस गल्ले में पैसे रखने वाली बात करता। वह सोचता 'चलो जितने की खरीदी थी, उतने में बेचनी पड़ी। चलो दे दो। फिर कभी काबू आए तो रगड़ा दे लेंगे।' इस टोले के दूर चले जाने तक- दुकानदार ऐसे ग्राहकों को देखता रहता। फिर सोचता- 'अगर ऐसे ही ग्राहक दस-बीस दिन दुकान पर तशरीफ लाते रहे- तो अपनी दुकानदारी खत्म समझो। दुकानबंद करके घर को जाना होगा।'

मैंने उस गुरदासपुरी टोले को पहले दिन ही भांप लिया था कि यह तो अब्बल दर्जे के कंजूस मक्खी चूस हैं। दूसरा तजुर्बा मुझे इनका यह हुआ- रात्रिकाल को पचास रुपये हाऊस बोट के मालिक को देकर डेढ़ सौ रुपये सुबह देने को कहाथा। सोचता हूं-'कहीं इन्होंने बोट मालिक को यह नहीं कहा- पंजाब पहुंच कर भेज देंगे। हम कोई बेईमान थोड़े हैं। जो तेरे पैसे मार लेंगे। यकीन भी तो कोई चीज़ होती है। फिर व्यापार में तो ऐसा चलता ही रहता है। दुकानदारी चलानी हो तो पैसों के मामले में, लेन-देन में आगे-पीछे होता ही रहता है।'

प्रात:काल जब मेरी आंख खुली तो कुछ देर के पश्चात् सूर्योदय होने वाला था। मैं अब पूर्णरूपेण तरोताजा था। एक गिलास शीतल जल पीने के बाद मैंने हाऊस बोट की खिड़की खोली थी। मेरी सब से पहले दृष्टि-शंकराचार्य मंदिर पर पड़ी थी। इस मन्दिर के नामकरण से अनुमान सुदृढ़ हो जाता है कि आदिशंकराचार्य की चरण धूलि से कश्मीर-मंडल पवित्र हुआ होगा, जिस से प्रतिपादित अद्वैत, अनुगूंज शैवों के अभेद में मिलती है। पुनः उनसे रचित ''सौन्दर्य लहरी'' पर कश्मीरी हमें शैव-सिद्धांतों तथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यंत्रों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इतना ही नहीं, इनकी संख्या का भी इस 'लहरी' में अनुमोदन किया गया है-

चतु:षष्टया तन्त्रै: सकलमभिसंधाय भुवनम।

अर्थात् (हे देवी!)आपनेही चौसठ तंत्रों से इस जगत को बना कर ....।

इस मंदिर के दर्शन करके मैं धन्य हो गया था। बहुत पहले मैंने इस मंदिर के दर्शन किए थे। यह मन्दिर हिन्दुओं की आस्था का प्रबल प्रतीक व आध्यात्मिकता के प्रकाश स्तम्भ के रूप में जाना जाता है। यह मन्दिर लगभग 305 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इस पहाड़ को 'पाश' पहाड़ एवं 'तख्ते सुलेमान' कहा जाता है। कहा जाता है कि यह मन्दिर 200 ईसा पूर्व में बना था। यहां पहुंचने के लिए 240 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इस मन्दिर के प्रांगण में खड़े होकर हम पूरे श्रीनगर शहर व आसपास के इलाकों के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद विहंगम दृष्य से ले सकते हैं।

शंकराचार्य मन्दिर के पुन: निर्माण कार्य की शिला पर अंकित था-"श्री शंकरो विजयते तराम्।

काशमीर के महाराज कर्णसिंह जी ने तत्त्वाधान में संधलित धर्मार्थ काउन्सिल द्वारा निर्मित इस शंकराचार्य मन्दिर में द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरू श्री शंकराचार्य श्री अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ स्वामी जी महाराज के शुभ हस्त से मिस्त्री लक्ष्मीचन्द अमथाराम अहमदाबाद द्वारा निर्मापित शंकराचार्य भगवान की मूर्ति वैशाख शु: पंचमी वि.स. 2017 (ता. 20-04-1961) में स्थापित हुई।"

यह मन्दिर भवन निर्माण कला, भव्यता, सुन्दरता और आन-शान में बेजोड़ है। मैंने हाथ जोड़ कर श्री शंकर भगवान के श्री चरणों में ध्यान करके प्रणाम किया। और अन्तर्वाणी से प्रार्थना की-"हे नीलकंठ भगवान! हे त्रिलोकी नाथ!! इस स्वर्ग कही जाने वाली ऋषि कश्यप की इस तपस्या-स्थली को उग्रावदियों ने रक्त रंजित कर दिया है। लोग त्राहि-त्राहि करके यहां से अपने घर, जमीन-जायदाद छोड़कर भागनेको मजबूर हुए हैं। जो शेष जन रह रहे हैं-आंतकवादियों के भय से त्रस्त हैं। उग्रवादी अपना खाक-खून का गंदा खेल-खेल रहे हैं। इस स्वर्ग सी धरती पर शांति स्थापित करो प्रभु! मेरी हार्दिक इच्छा व विनतीहै-विस्थापित, अनाश्रित लोग पुन: अपने घरों को लौट आवें। यहां दोबारा शादियों, मंगल कार्यों में तुबंक-नाद का वाद्य यंत्र बजे। लल्लेश्वरी व हब्बाखातून के भजनों व गीतों से सम्पूर्ण कश्मीर घाटी में रस, आनन्द, शांति की धारा बह निकले। लोक नाच हो। मुस्लिम-हिन्दू दोनों धर्मों के नर-नारी पुन: मिल बैठकर सुख-दु:ख सांझे करें। रूठा हुआ प्रेम, शांति, विश्वास और साम्प्रदायिक सदभाव लौट आए। यहां पर्यटक भारी तादाद में आवें और बेखौफ होकर घूमें। प्राकृतिक सौन्दर्य-सम्पदा को मन हृदय की तिजौरी में भर कर ले जाएं। फिर यहां चहल-पहल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो। यह कश्मीर घाटी आतंक के साए से मुक्त हो। आजाद हो।'' मैंने जैसे ही आंखें खोली शंकराचार्य मन्दिर की परछाई, डल झील के पानी में हौले-हौले झिलमिला रही थी। मानो मेरी प्रार्थना को भगवान द्वारा सुनकर स्वीकार किए जाने में अपनी मूक सहमति प्रकट कर रही हो।

बिस्तर से उठ कर मैं कुर्सी पर बैठ कर झील के प्रातःकालीन दृष्य का आनन्द लूटने लगा था। मुझे ऐसा प्रतीत होनेलगा था- मानो झील रूपी तन्वंगी, रात्रिकाल को अपने पति संग सुहागरात मनाने से उल्लसित, तरंगित, स्फूर्त और स्वस्थ तन-मन सद्यः स्नात हो घर के आंगन में लज्जाते-शरमाते हुए यौवन-भार से मस्त-मयूरी सी चाल में चलकर घूघंट को मुख से उठाकर खड़ी हो गई हो। पति संग प्रथम रात्रि व्यतीत करने पर जैसे नवोढ़ा दुल्हन सुबह को पारिवारिक सदस्यों सम्मुख शर्म से लाल-कपोल और झुके नयनों से आती है, वैसे ही पानी का रंग हल्का-हल्का रक्त-रंजित सूर्य की लालिमा से होने लगा था। झील में खिले हुए कमल के फूलों से निकलने वाली भीनी-भीनी खूश्बू हाऊस बोट में विश्राम करते पर्यटकों को मदमस्त करने लगी थी। छोटी-छोटी, प्यारी-प्यारी चिड़ियां फुदक-फुदक कर, कभी एक, कभी दूसरे कमल के चौड़े पत्तों पर उड़कर बैठ रही थीं। कमल के चौड़े पत्तों पर पानी की बूंदे, कुछ पल ठहर कर ऐसे पानी में स्वयं गिर कर विलीन हो जाती थीं। जैसे किसी ज्ञानी, ब्रह्म-संन्यासी के मन में विकार रूपी बूंद स्वतः ही नष्ट हो जाती है। हल्की-हल्की हवा से झील में तरंगें उठने लगी थीं, जैसे मानव मन से इच्छाएं जागृत होती रहती हैं। मस्त शीतल हवा कमल के फूलों से छेड़ छाड़ कर रही थी। मेरी जिस भी हाऊस बोट पर दृष्टि गई, उसमें जीवन की हलचल थी। टूरिस्ट हाऊस से निकंल कर बाहर बने छोटे से लॉन में कुर्सियों पर बैठ कर डल झील के प्राकृतिक सौन्दर्य व प्रातःकालीन दृष्य को निहारते तो इस मायालोक से सम्मोहित होकर अपनी सुधबुध खो बैठते थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलमार्ग के लिए रवाना होना व ऋषि सम्प्रदाय के संक्षिप्त इतिहास का ज्ञान होना

बाथरूम में जाकर मुंह हाथ धोया था। आदमकद दर्पण से धूल साफ की थी। बालों को पुनः कंघी करके स्वयं को शांत मन करके गुरदासपुरी टोले के कमरे में आया तो मेरी हंसी छूट गई थी। मेरे हंसने की आवाज में दौलतराम की आंख खुल गई थी। वह आंखें मलते हुए उठ कर बैठ गया था। मुझे राम-राम बुलाकर बाकी साथियों को जगाने लगा था। अशोक कुमार ने तैयार होने में बहुत कम समय लगाया था। अशोक कुमार ने अपने मौसी के लड़के को कहा-'' रात को तू बड़ी प्लैलिंग बना रहा था कि हमने गुलमर्ग,खिलनमर्ग बगैरा जाना है। अब तू खुद ही उठने का नाम नहीं ले रहा।'' उबासी लेते हुए राकेश कुमार बोला-'' तैयार होने में वक्त लगता ही कितना है! दस-पन्द्रह मिंट में तैयार हो जाता हूं। तुम चिंता न करो भा जी।''

मै दूसरे कमरे में गया तो लव कुमार टांगों-बाहों को पसार कर ऐसा कालीन पर पड़ा था जैसे भीमसेन का पुत्र घटोत्कच महाभारत की रणभूमि में कर्ण की शक्ति के बाण से वीरगति को प्राप्त हुआ हो। वैसे भी ऊंचे-लम्बे कद-काठ,मोटा-ताजा वलिष्ठ देह वाला जवान था। राके़श कुमार उसे हिला हिला कर जगा रहा था।

दस बजे के लगभग राकेश कुमार ने हाऊस-बोट मालिक को शेष रहते डेढ सौ रुपये देकर रात्रिकाल को पुनः यहां ठहरने को कह दिया था। रोहित और विनोद कुमार टैक्सी स्टैंड पर आ गए थे। शिकारे वाले ने हमें उस पार टैक्सी स्टैंड के सामने उतार दिया था,रोहित कुमार राकेश से बहस करने लगा था कि हमें आप आठ बजे का वक्त दिया था। हम आठ बजे से यहां आकर बैठे हैं। हम तो बैठ-बैठ कर यहां बोर होते रहे। तब मोबाइल फोन न थे। बड़ी कमाल की गुरदासपुरी टोल्ले की आपस में बहस हो रही थी। इतने में टोपियां,गर्म शाल,बटुए बगैरा बेचने वाले वहां आ पहुंचे थे। सयाने लोग कहते हैं-जिसमें रक्त हो,पसीना उसी को आता है। मतलब-जिसकी जेब नोटों से भरी हो,वह ऐसे अवसर को हाथ से क्यों जाने दे। रोहित कुमार,पवन कुमार, लव कुमार और राकेश कुमार चीजें खरीदनें लगे थे। एक घंटा उन्होंने मोल-तोल में मीन -मेख करके,बहस-मुवाहसा करके चीजें खरीद कर गाड़ी में रखी थीं। मारे भूख के कलेजा मुंह को आ रहा था। रात वाले पंजाबी ढाबे पर जा कर हम बैठ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गए थे। दो-दो तीन-तीन परांठे के साथ मक्खन-दही-आचार खाकर जान-में-जान आई थी। गाड़ी में बैठ कर हम गुलमर्ग को रवाना हो गए थे। जिन्होंने गुलमर्ग पहले न देखा था-वह अत्यन्त प्रसन्न थे। अशोक कुमार,राकेश कुमार से झगड़ रहा था। वह उससे कह रहा था-''आपने केवल मुझसे अमरनाथ यात्रा पर जाने के प्रोग्राम के बारे में बताया था। गुलमर्ग या और कहीं जाने संबधी बात न की थी। मैं तो दफ्तर में बिना कहे ही चला आया हूं। आप का प्रोग्राम शैतान की आंत की तरह आगे-ही आगे बढ़ा जा रहा है।''

राकेश कुमार थोड़े नर्म लहजे में बोला-'' लड़कों की मर्जी है। कहते हैं-या नसीब,दोबारा इधर आएं या न आवें, इतना पैसा खर्च करके, कष्ट झेल कर आए हैं-तो गुलमर्ग भी देखते जाएं। कहने लायक तो हो जाएंगे-हमने भी गुलमर्ग,खिलनमर्ग बगैरा-बगैरा देखा है।''

मैंने अशोक कुमार को शांत करते हुए कहा-'' अशोक बेटा राकेश कुमार तो नहीं मान रहा था। यह लव कुमार और दूसरे लड़के चाहते थे कि हमने गुलमर्ग जरूर देखना है। तुम ऑफिस में टैलीग्राम कर दो।''

लव कुमार ने अपना नाम सुना तो उसने अपने कान खड़े कर लिए थे। अशोक कुमार को वह मजाक करने लगा था। आखिर अशोक कुमार को मुझे व नरेश कुमार को छोड़ कर उससे सभी हंसी-ठठोली करने लगे थे। अंत में अशोक कुमार को हंसने पर मजबूर कर दिया था। मुझे स्मरण हो आया था-'सन् 1972 में मैं गुलमर्ग आया था। तब मैं कुंवारा था। गुलमर्ग आने से पहले मैं तंगमर्ग और फिर ऋषि की जियारत पर पहुंचा था। जब कुछ पर्यटक 'ऋषि बाबा' का नाम लेने लगे तो मन में विचार आया कि 'ऋषि बाबा' की तपस्थली के दर्शन करके वहां सिर निवाना चाहिए। सोचा-'कोई हिन्दू ऋषि का वहां भव्य मन्दिर होगा। 'ऋषि' शब्द का अर्थ मेरे लिए हिन्दू-सनातन धर्म से था। ऋषि बाबा के स्थान पर पहुंचा था तो नजारा वहां कुछ और था। वहां पर ऋषि बाबा की मस्जिद थी। मुस्लिम मजहब के लोग यहां पर नमाज अदा कर रहे थे। बाहर खुली जगह गोश्त बन रहा था। मेले जैसा महौल था। मुस्लिम लोगों को नमाज अदा करते मैनें पहली बार देखा था। उनकी काश्मीरी बोली,पहरावा,लड़कियों व महिलाओं ने काले रंग के बुर्के पहने हुए थे। मेरे जन्म स्थान के आस पास पर गुज्जर लोग रहते थे जो दूध बेचा करते थे। हमारा पढ़ने व खेतीबाड़ी के काम से मतलब था। और कौन से मजहब की पूजा-पाठ की कौन सी पद्वति व ढ़ंग-तरीका अपनााया जाता है-मुझे उससे न तो कोई जानकारी थी और न ही सरोकार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद में श्रीनगर से मैंने डॉ.मोहन लाल भट्ट से पूछने पर पता चला कि बाबा पयाम-उद-दीन एक प्रसिद्ध सूफी संत थे। वे मुगलों के शासनकाल में यहां रहते थे। उन्हीं की याद में बना यह मकबरा मुसलमानों के लिए पवित्र स्थान है। यहां सभी सम्प्रदाय के लोग आते रह़ते हैं।

मैंने डॉ.मोहन लाल भट्ट से अगला प्रश्न किया था कि 'ऋषि' शब्द मुसलमानों में कैसे प्रयोग किया गया। इसका पुराना इतिहास क्या है? श्रीनगर को बसाने वाले हिन्दू सम्प्रदाय से ताल्लुक रखने वाले केवल 'कश्यप' ऋषि का नाम आता है। वह मेरी जिज्ञासा को शांत करने हेतु मुझे उन्होंने 'मुहम्मद युसुफ' नामक मुस्लिम बजुर्ग से मिलवाया था। उन्होंने मुझे बड़े प्यार व स्नेह से अपने बच्चों की तरह ऋषि सम्प्रदाय के समबन्ध में बड़े विस्तार से समझाया था जो इस तरह था-'' इस ऋषि सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'नूरदीन वली' माने जाते हैं, जिन्हें कश्मीरी जनता सौहर्द से 'नुन्द ऋषि' के नाम से पुकारत्ती है। वैसे तो दूसरे नाम 'शेख-उन-आलन' तथा आलमगीर कश्मीर भी है। बिना किसी संकोच के उन्होंने ऋषि सम्प्रद्राय के आदि-गुरु हजरत मुहम्मद को स्वीकार किया है। 'अब्बल ऋषि अहमद ऋषि-'नूरनामा-श्री अमीन कालिदास' और ने स्वर-से-स्वर मिला कर आलमदारि कश्मीर ने यह जयनाद फूंका-

पांरि पांरि ल'गजे तस पैगम्बरस
तस हून्दिस दोरस रहमत जारी।
का'लि या'लि हख लीग रोज़ महशसरस,
तस कुन वो मेद वार आ'सन सा'री।।

(नूरनामा,पृष्ठ 42-16)

''हमें पैगम्बर मुहम्मद पर निछाबर होना चाहिए,जिनके अविर्भाव से करुणा का सूत्रपात हुआ। जब कयामत के दिन लोगों पर लामबन्दी होगी, तो सब ऋण के लिए उनकी ओर आसभरी नजरों से देखेंगे।''

वास्तव में इन ऋषियों ने इस्लामी दृष्टिकोण के अनुरूप कश्मीरी चिन्तन की व्याख्या की। इनका यह योगदान कम महत्व का नहीं है। कश्मीरी मूल्यों में इस समय तक केवल बौद्ध और हिन्दू मनीषा का बोलबाला था। ऋषियों ने इसमें मुस्लिम विश्वासों का भी सम्मिश्रण किया। इस तरह गंगा-यमुना के साथ सरस्वती का भी पावन संगम बना। यही सांझा जीवन-दर्शन कश्मीरियों की अमूल्य निधि है।

कुरान शरीफ का यह प्रवचन 'नुन्द ऋषि' ने कश्मीरी भाषा के माध्यम से इस तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उजागर किया है-''खुदा की सृष्टि एक ही परिवार है। जो खुदा की सृष्टि से प्रेम करता है,वही खुदा का प्यारा है।''

(कुरान शरीफ-23,54)

अ'किस मा'लिन माजि हन्द्यन
तिमन दि'य त्रा'विथ क'याह गद्वे।
मुसलमान क्याव्हन्द्यन
कर बनदन तोशि खुदाय।

(सूरनामा पृष्ठ 177)

''एक ही माता-पिता की सन्तान होने से मुसलमान और हिन्दू बैर को त्यागने से एक दूसरे के अधिक नजदीक आ सकते हैं। अन्यथा खुदा इन बन्दों पर खुश नहीं होगा।'

ऋषि सम्प्रदाय ने यह कहकर भी शैवों के 'अभेद' का प्रतिपादन किया-डेरा

सुम्य निशे,बुॅतस निशे
म्य'तस निशे करार आव।
महकै छोंडुम म्ये परदीशे
पन'ने दीशे म्य'यार आव।।

(नूरनामा,पृष्ठ-24)

''वह मेरे पास है और मैं उसके पास,इस प्रकार से मिलने से मुझे असीम शांति प्राप्त हुई है। व्यर्थ ही मैंने दूसरे देशों में ढूंढा। क्योंकि मेरा गीत मेरे ही देश में मिल गया।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'नुन्द-ऋषि' ने दोनों सम्प्रदायों-हिन्दू और मुसलमानों को धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराया, जिसमें बैर के स्थान पर प्रेम है। उग्रता के स्थान पर सौम्यता। आतंक के स्थान पर प्रेरणा है। यह दिल की भाषा है जिसे दिल वाला ही समझ सकता है।

ऋषियों की सबसे उत्तम विशेषता उनके आत्म प्रयोग के सिद्धान्त में अडिग निष्ठा है। जो कुछ भी उन्होंने कहा, उसे सर्वप्रथम अपने ऊपर आजमाया। उनकी कथनी और करनी समानार्थक बन गए। कश्मीर की सांस्कृतिक थाती को सुरक्षित रखने के लिए इन्होंने लोकनायकों का दायित्व बहुत सी जिम्मेदारी से पूरा किया। जब भी इस भाईचारे की शांत,धीर और गंभीर गंगा को किसी ओर से अन्दोलित करने का दुस्साहस किया गया,कश्मीरी इस भ्रातृभाव की अक्षय-निधि की सुरक्षा के लिए काले नाग से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुंफकार उंठे। जीवन की उज्जवलता में इन्होंने कभी भी दाग न लगने दिया। 'नुन्द-ऋषि' की साधना का अमरसफल इससे अधिक और क्या हो सकता था।

'नुन्द-ऋषि का शाश्वत सन्देश अटूट भक्ति का परिचायक है। इस साधना का अमोघ मन्त्र आत्मविस्मृति है। प्रेम इसकी धड़कन है। कविता इसकी अर्चना है और आत्मलाभ इसका लक्ष्य है। मानव को वे ऐसा ही पावन देखने के इच्छुक थे जैसे गुलाबी पंखुड़ियों पर प्रातःकालीन कुंवारी ओस के सफेद तथा पारदर्शी बिन्दु हों।''

सब साथी गाड़ी में बैठे गप्पें हांकते आ रहे थे। मैं ऋषि सम्प्रदाय के इतिहास व जीवन के फलसफे में खोया हुआ था। अशोक ने मुझे कंधे से हिलाकर कहा-''चाचा जी! देखो तो सामने प्रकृति का अद्‌भुत नजारा है। '' सचमुच प्राकृतिक दृष्य मनमोहक था। गाड़ी हमारी चढ़ाई पर थी। थोड़ी ही देर में हम गुलमर्ग पहुंच गए थे। गुलमर्ग श्रीनगर से 52 कि.मी की दूरी पर स्थित है। इसे फूलों की घाटी के नाम से भी पुकारा जाता है। इस सुन्दर पर्वतीय स्थान पर हरे-भरे मैदान,विभिन्न किस्मों के फूलों से भरे इस स्थान के साथ-साथ गोल्फ का सर्वश्रेष्ठ मैदान भी है। कहा जाता है-गुलमर्ग का पहला नाम भगवान शिव की पत्नी 'गौरी' के नाम पर था। सन् 1581 में यूसुफशाह ने इस स्थान का नाम गुलमर्ग रख दिया था।

गुलमर्ग के नजारे को देखकर ही आप समझ सकते हैं कि आखिर कश्मीर घाटी को ही 'धरती का स्वर्ग' क्यों कहते हैं। प्रकृति के अद्‌भुत दृष्य देखने हों या ट्रेकिंग करनी हो, गुलमर्ग बहुत बढ़िया स्थान है। स्कीइंग हेतु भी गुलमर्ग को संसार भर में जाना जाता है। यहां पर शीतकालीन खेलों का आनन्द भी लूटा जा सकता है।

हम दोपहर के बारह बजे के लगभग गुलमर्ग पहुंचे थे। हल्की-हल्की वर्षा होने लगी थी। ठंड से निपटने के लिए सब ने एक दुकान पर चाय पी थी। ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी में बैठना बेहतर समझा था। नौ व्यक्तियों की राय थी कि खिलनमर्ग और खंडाला का आनन्द भी लूटा जाए। इसलिए राकेश कुमार ने नौ घोड़ों का प्रबन्ध प्रति घोडा 250 रुपए से कर लिया था। मैंने कभी घोड़े की सवारी न की थी। धूप अब खिल आई थी। मार्ग में देखा-स्कूल के बच्चे अपने अध्यापकों संग पिकनिक मनाने आए हुए थे। रंग-बिरंगी पोशाकों में सुन्दर-सुन्दर, प्यारे-प्यारे बच्चे, फूलों की क्यारियों के मध्य और भी खूबसूरत लग रहे थे।

हमारे नौ घोड़ों के साथ केवल दो ही घोड़े वाले साथ थे। पन्द्रह-बीस मिंट का रास्ता हुआ तो एक बड़ी सी इमारत जल कर राख हुई पड़ी थी। मेरे पूछने पर घोड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले ने बताया-"साब जी यह बिलडिंग बहुत बड़ी और शानदार होटल था जिसे इंतहापसंदों ने जला कर राख कर डाला।"

उसके आगे राह के उत्तर में फलैटनुमा बहुत सी इमारतें सुन्दर ढ़ंग से बनाई गई थीं। पूछने पर घोड़े वाले ने बताया कि यह अमीर लोगों ने गर्मियों की छुट्टियां बिताने को फ्लैट बना रखे हैं। लव कुमार ने सब से तगड़ा घोड़ा संभाला था। दौलत राम का घोड़ा सूखा-मरियल सा, उस जैसा ही सूखा-सड़ा सा मुझे मिला था। लव कुमार दौलत-राम को बार-बार छेड़ रहा था। उसका घोड़ा फुर्तीला था। एक दूसरे को मजाक करते, सफर का आनन्द लेते चीड़ों, देवदार के जंगल से चले जा रहे थे। तभी तेज बारिश होने लगी थी। हमारे कपड़े भीग गए थे। हवा के शीतल झोंकों से सर्दी में ठिठुरने लगे थे। तभी एक घोड़ेवाला लव कुमार से कुछ ज्यादा ही खुल गया था। नाम था उसका-हुसैन। वह ठेठ पंजाबी में ऐसे गंदे शब्दों को बोलने लगा था जिसे सुनकर मुझे बेहद क्रोध आ गया थ। मैंने डांट-फटकार करके उसे चुप करा दिया था। एक डांट मैंने लव कुमार को देते हुए कहा-"अरे लव कुमार मैं तो तुम सब से उम्र में बड़ा हूं। ऐसे गन्दे शब्दों को कहने में तुझे कुछ तो शर्म होनी चाहिए। बड़ों की उपस्थिति में अपनी मर्यादा बनाए रखना ही शोभायुक्त और श्रेयस्कर है।"

मेरी बात का साथ-साथ चलते नरेश कुमार ने समर्थन किया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन् 1971 का भारत-पाकिस्तान का युद्ध, शिमला समझौते में बंदी सेना व फ़तेह किए इलाके वापिस करना भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की भारी भूल

आज सात अगस्त को दिन बृहस्पतिवार था। मैं हाऊस-बोट की खिड़की बंद करके दूसरे कमरे में पहुंचा तो नजारा देखने लायक था। सभी सोए हुए थे। गुरदासपुरी टोले के दलबल के प्रभाव तले प्रिय भतीजा अशोक कुमार भी आ गया था। राकेश कुमार जोर-जोर से खुर्राटे ले रहा था। मैं आज तक अपने जीवन में ऐसे बढ़िया खुर्राटे,दिलकश खुर्राटे किसी को लेते न देखा था। तरह-तरह के संगीत,तयबद्ध तरीके से खुर्राटे लेना किसी कम योग्यता की बात न थी। लगता था-किसी नामी-गिरामी,अनुभवी गुरु से शिक्षण प्राप्त किया होगा। काश! मेरे पास टेपरिकार्डर होता तो मैं इस हसरत के खुर्राटे टेप में बंद कर लेता। पुनः ऐसा अवसर कहां मिलता है? मैंने अपनी हंसी को दबाने को मुंह पर रुमाल रख लिया था। पवन कुमार ने मगरमच्छ सा मुंह खुला रखा था। दौलतराम औंधे मुंह पड़ा था। जी चाहा-इन महानुअनुभावों के दो-चार फोटो खींच लूं। परन्तु हमारे कैमरे कहां थे,यह मुझे मालूम न था। मन मसोस कर रह गया था। साथ लगते कमरे में लव कुमार फर्श पर नीचे सोया हुआ था। उसके सोने का अंदाज क्या कमाल का था। मानो हल्दी घाटी में महाराणा प्रताप सिंह की सेना की तरफ से बहादुरी से लड़ते-लड़ते मुगल फौज के हाथों रणबाकुंरा रणक्षेत्र में आन-शान से शहीद हो गया हो। मुंह पर रुमाल रखे। हंसी को दबाए हुए बाथरूम में आकर नहाने का उपक्रम करने लगा था।

नहा धो, उजले वस्त्र पहनकर स्नानागार से नियमानुसार मंत्रोच्चारण करने लगा था-

"ओम शान्ताकांर भुजंगशयन पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधांर गगनसदृंश मेघवर्णं शुभाङ्ग्म।
लक्ष्मी कातं कमलनयननं योगीभिर्ध्यानागम्यं
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

मेरे मंत्रोच्चारण की आवाज सुन कर भतीजा साहिब उठ कर बैठ गए थे। मैं भगवान की पूजा-वन्दना से फारिंग होकर अपने बैड पर सिरहाने का सहारा लेकर बैठ गया था। मैंने देखा-इस हाऊस बोट को कितनी मेहनत,पैसे से बनवाया व श्रृंगार किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया था। परन्तु कश्मीर के दुर्दिनों की मार इन पर भी भारी रूप से पड़ रही थी। लाखों रुपयों का बैंक का कर्ज लेकर कितनी आकांक्षाओं,सपनों व हसरतों से इन हाऊस बोटों का भव्य निर्माण करवाया गया था। टूरिस्ट आते थे तो इनकी देखभाल होती थी। अब तो इनका वही हाल है-किसी नवविवाहिता का पति विदेश चला जाए। चिट्‌ठी-पत्री न भेजे। घर कोई पैसा भेजने का नाम न ले। ऐसी स्थिति में बेचारी वह निरीह नारी क्या खाए और क्या पहने! न तो सुबह-संन्ध्या को उसे श्रृंगार-बनाव सूझेगा,न ही उसके मन-हृदय को सुख-चैन प्राप्त होगा। उसके मन में निरन्तर कुढ़न व उदासी की भयदायिनी छाया उसके मुख पर होगी। एक नीरव रोदन उसके सलोने मुखड़े पर निरन्तर दिखाई देगा। उस सुन्दर कामिनी सी दयनीय स्थिति आज इन हाऊस बोटों की डल झील में हो रही थी।

इस हाऊस बोट की प्लाई जगह-जगह से उखड़ गई थी। ड्रैसिंग रूम अपनी किस्मत पर आठ-आठ आंसू रो रहे थे। आदमकद आईने के मुख पर दुर्भाग्य ने आतंक के भय की धूल फैंक कर उसे श्रीहीन कर दिया था। बस, सफाई की एक खानापूर्ति थी जो हो रही थी। वह भी इस ख्याल से कि पर्यटकों के आगमन का सीजन आ गया है। काश! कोई टूरिस्ट आ जाए। तभी ही थोड़ी सफाई कर दी जाती थी।

पिचके हुए गद्दे, टूटे हुए, फटेहाल सोफे, कालीन इन हाऊस बोट मालिकों की तकदीर का स्पष्ट प्रमाण था। हाथ कंगन को आरसी क्या? सब कुछ आंखों के सामने था। मैं कुछेक पलों के लिए सोचता-सोचता हाउस बोट वालों की आर्थिक स्थिति पर गंभीर हो उठा था। डल झील में विद्यमान हाऊस-बोट वालों का हाल लगभग एक समान था। इन लोगों का भाग्य, इनके प्यारे-दुलारे बच्चों का पालन-पोषण, पढ़ना-लिखना, उनका सुनहरी भविष्य, इन बूढ़े-आश्रित बजुर्गों का उनके कंधों पर कुल पारिवारिक जिम्मेदारियों का उत्तरदायित्व-यह लोग आर्थिक-चक्की में पिस कर कैसे निभाते होंगे? अमावस्या की काली,नागिन-सी फुफकारती रात्रि की तरह-इन सब के परिवार का भविष्य थी। यही इनकी किस्मत थी। यह लोग कैसे इतना गम, पीड़ा, वेदना व अंधेरे में खोए नसीब को देखते-झेलते हुए भी बाहर से कितने शांत हैं। मौन हैं। जिनके अन्तःकरण में हर क्षण तूफान चलता रहता है। यह लोग कहां जाएं? कौन आश्रय देगा इन्हें? दो जून पापी पेट का भोजन! काया पर मौसमानुसार कपड़ा-लत्ता भी तो चाहिए। वाह रे वक्त! तेरी नजाकत-करामात को तू ही समझने में समर्थ है। तेरी महिमा-शक्ति को स्वयं तू ही जानता है। तूने आलीशान महलों मे रहने वाले राजे-रानियों को ख़ाक में मिलाया है। दर-दर की ठोकरें खाने को बाध्य किंया है। इतिहास में राजा हरिश्चन्द्र, उसकी पत्नी रानी तारा व इकलौता पुत्र रोहिताश को श्मशान में, पुत्र के ऊपर लिपटे कफन को कर रूप में आधा कफन मांगने को मजबूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया था। अयोध्या नरेश राजा दशरथ के युवराज सपुत्र श्री राम चन्द्र, उनकी भार्या राजा जनक की सपुत्री सीता व छोटे भाई लक्ष्मण को जंगलों में खाक छानने को बाध्य किया था। इसी तरह की कथा-कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है। सोचते-सोचते मेरा ध्यान सन् 1971 के बांग्ला देश के युद्ध व जिसके कारण जटिल परिस्थितियां बनीं, उनके ऊपर चला गया था। सन् 1971 के युद्ध के समय मैं गांधी मैमोरियल हाई स्कूल गुरदासपुर में बतौर हिन्दी अध्यापक कार्यरत था। उस भारत-पाक युद्ध में हवा में लड़ाकू विमानों को बम गिराते देखा था। भारत-पाक सीम से कई मील दूर लगाई गई ऐटलरी को, सेना के कमांडरों को, तोपों से गोले उस पार पाकिस्तानी ठिकानों पर रेंज बनाकर फैंकने को आदेश देते-जोर-जोर से बोलते सुना था। तोपों द्वारा गोला फैंकने के पश्चात् गर्म वायु को अपने जिस्म पर जोर से लगते अनुभव किया था। बांग्ला देश एक अलग, सार्वैमिक, सम्प्रभुता-सम्पन्न मुल्क बन कर विश्व के मानचित्र पर अंकित हो गया था। भारतीय सेना के सैंकड़ों-हजारों जवानों की शहीदी, घायल सैनिकों, नकारा हुए वीरों की काया का आर्थिक व्यवस्था की मंदी की चक्की में पिसना, पाकिस्तान वायुसेना व पैदल सेना का भारतीय क्षेत्रों में तबाही मचाने का हिसाब तथा लोगों की हर तरह से परेशानियों का सामना करने का हिसाब क्या भारत-पाकिस्तान का शिमला समझौता करते समय मौजूदा भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने स्मरण रखा था? कुछ समय पहले सेना के एक आफिसर रूम में मैंने एक चित्र लगा देखा था। उस चित्र में पाकिस्तानी लेफ्टीनेण्ट जनरल ए.ए.के. नियाजी और भारत की ओर से लेफ्टीनेण्ट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा व कुछ आला अफसरों का 93 हजार पाकिस्तान सेना के समर्पण को कागज पर हस्ताक्षर करते हुए देखा तो सेना के वर्तमान आफिसर से मैंने पूछा-"सर यह फोटो आपने किस ख्याल और मकसद को मद्देनजर रख कर यहां लगाया है।?"

उस आफिसर ने तुरन्त उत्तर दिया था-"यह हमने जवानों-अफसरों का मनोबल बनाए रखने के लिए लगाया है। ताकि वह इस फोटो को देख कर अपने मनोबल को कायम रख सकें और उस समय के इंडियन आर्मी के कमांडरों व सैनिकों का ऐसा करना इनकी युद्ध करने की कला-कौशल, योग्यता व बहादुरी का प्रमाण देखकर गर्व कर सकें। ताकि आने वाले कल को यह दोबारा ऐसा इतिहास दुहरा सकने का संकल्प ले कर युद्ध के मैदान में उतर कर वीरता दिखाएं।"

"आखिर किस लक्ष्य व उपलब्धि को जेहन में रखकर ऐसी वीरना पुनः दिखाएं?" मैंने आफिसर के उत्तर के साथ ही तुरन्त प्रश्न की गेंद उसके पाले में धकेल दी थी।

आफिसर साहिबान कितनी देर तक चाय का प्याला मेज पर छोड़कर मेरे मुंह की तरफ देखता व सोचता रहा। वह इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए तत्पर न था। चाय का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्याला उस का ज्यों-का त्यों पड़ा पानी हो गया था। मैंने बड़े आराम से अपनी गर्मागर्म चाय का भारी सर्दी के मौसम में लुत्फ उठाया था।

बड़ी देर के पश्चात् आफिसर बोला-"इसलिए कि आफिसर व जवान ऐसा करिश्मा इंडिया व दुनिया को कर दिखाएं-ताकि लोग देख कर दंग रह जाएं। इंडियन आर्मी इतनी बरेव व डिस्पिलिंड है।"

"जीत कर कब्जे में लिए इलाके,बंदी बनाई गई दुश्मन की सेना को बाइज्जत, खूब मेहमान नवाजी करके, कम्बल देकर, शुभकामनाएं देकर, युद्ध में भारतीय सैनिकों-अफसरों की शहीदियां देकर प्राप्त किया सब कुछ-महज एक कागज के टुकड़े पर हंस-हंस कर बातें करके, चाय के, काफी के प्याले पीकर प्रधानमंत्री जी वापिस कर दें। प्रधानमंत्री के घर का लड़ाई के मैदान में कौन शख्स मृत्यु को प्राप्त हुआ था? उसके घर के चिराग तो पहले भी जलते थे, सब कुछ पाकिस्तान को तश्चरी में रख कर देने के बाद भी जल रहे थे। उन विधवा स्त्रियों को, उनके बच्चों को, उनके बूढ़े मां-बाप को और स्नेही मित्रों को पूछो-जिन के पति,पिता,बेटे व यार-दोस्त उन्हें दोबारा न मिल सके। उनके घरों में सदा-सदैव को अंधेरा छा गया है। उन वीर सैनिकों के शेष रहते घरेलु कार्य,पारिवारिक जिम्मेदारियां कौन निभाएंगा? दुःख में कौन उनका साथ देगा। इन लीडरों का सब कुछ देने में क्या गया? यह नेता लोग अपनी वाह-वाह लूटने की खातिर उन शहीदों के रक्त का मोल क्यों नहीं पहचानते? यह ऐसे डिसीजन लेने से पहले विपक्षी नेताओं, पार्टियों की राय और विशेष कर सेना के तीनों कमांडरों को समझौते की बातचीत में, टेबल-टाक में क्यों नहीं साथ बिठाते? लता मंगेशकर का गाया, गीतकार प्रदीप शर्मा का लिखा गीत-

ऐ मेरे वतन के लोगो जरा आंख में भर लो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी,जरा याद करो कुर्बानी।...

सन् 1962 की भारत-चीन लड़ाई के बाद, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की मौजूदगी में जब यह गीत गाया गया था-नेहरू जी भावुक हो उठे थे। वह रो उठे थे। उन्हें अपनी भारी भूल का अहसास हुआ था कि पंचशील के सिन्द्धातों पर सबसे पहले हस्ताक्षर करने वाला देश चीन-मित्र नहीं, शत्रु बन कर उसने दोस्त-देश की पीठ पर विश्वासघाती का छुरा घोपा था। उसके हिन्दी-चीनी नारे खोखले साबित हुए। यही पीड़ा कसक-वेदना ने प्रधानमंत्री नेहरू जी के मन-हृदय की नस-नस को अन्दर से तोड़ा था। इसी विश्वासघात का पश्चाताप 27 मई,1964 में उनकी मृत्यु का मुख्य कारण बना था। विश्व शांति का मसीहा कहलाने वाले नेहरू से पड़ोसी ने धोखा किया था। फिर उनकी सपुत्री-दुश्मन के दोस्त दुश्मन की गहरी चालों, बातों, नौटंकी के बारीक जाल में कैसे फंस गईं?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेजर साहिब मेरी ओर ताकते हुए बोले-"आप काम क्या करते है शर्मा जी?"

"मैं तो पेशे से अध्यापक और हॉबी से लेखक हूं। क्या जो कुछ बाप-बेटी ने एक मंजे हुए राजनेता की हैसियत से अक्तूबर, 1947 में पाकिस्तानियों के सैनिकों के वेश में जम्मू-कश्मीर पर कब्जा करने को कबाईलियों का हमला करना और जम्मू-कश्मीर के शेष भाग जो मौजूदा गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के हुक्म से फौजों द्वारा खाली करवाना रह गया था। जिसे लार्ड माऊंट बेटन ने नेहरू जी को यू.एन.ओ. में 1 जनवरी 1948 में यह मसला ले जाकर सुलझाने को राय देना। नेहरू जी का जम्मू कश्मीर के शेष रहते इलाके का निर्णय यू.ए.ओ पर छोड़ देना-क्या सही रूप में प्रमाणित हुए।"

"नहीं तो-ऐसा करना एक ब्लंडर मिस्टेक थी भारत की।" बोले मेजर साहिब।

"तो श्रीमति इन्दिरा गांधी का महज कोरे कागज पर हस्ताक्षर करके शिमला में पाकिस्तान के मौजूदा प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो से 'शिमला समझौता' करके सब कुछ-इलाका दे देना, मुफ्त में बिना कुछ लिए कैदी छोड़ना, राजनैतिक रूप से लिया गया फैसला आप की आर्मी कितना सही मानती है?"

"नहीं तो! यह तो कतई नहीं होना चाहिए था।" तुरन्त मेजर साहिब कह गए थे। फिर कहने लगे-"कुछ चीजें ऐसी होती है-हमें इंटरनैशनल लॉ के मुताबिक माननी पड़ती हैं। उसी के कारण पाकिस्तानी बंदी बनाई गई आर्मी और इलाका वापिस देना पड़ा।

"सन् 1962 में चीन द्वारा कब्जा किए भारती भू-भाग पर इंटरनैशनल लॉ लागू क्यों न हुआ? आज तक वह 36,500 वर्ग कि.मी. लद्दाख, लेह और पाकिस्तान द्वार दिए कश्मीर के हिस्से 5500 वर्ग कि.मी. पर कब्जा किए बैठा है। क्या वह यू.ए.ओ में -पांच स्थायी सदस्यों में एक नहीं है? उसे दूसरे देशों ने इंडिया को कब्जा किए इलाके पर से अपनी फौजें वापिस बुलाने और भारत का हथियाना इलाका वापिस करने को बाध्य क्यों नहीं किया?"

"यह टॉपिक तो बड़ा मजेदार है। दूसरे देशों को यह सारा चीन द्वारा हथियाया इलाका वापिस दिलाना चाहिए था। परन्तु ऐसा हुआ क्यों नहीं शर्मा जी? यह तो बतलाने का कष्ट करें न? "कहा मेजर ने।

"यह सब कुछ इस लिए नहीं हो पाया कि भारत के प्रधानमंत्री राजनेता के रूप में, राजनीति में निर्णय लेने में फिसड्डी हैं। इनके डिसीजनों को हम बचकाना कहते हैं-जिन्हें भविष्य में भारत पर होने वाले लाभ-हानि को आंकने की बुद्धि नहीं है। यह अदूरदर्शी, कुन्द जहन, मनमानी, हठी और चापलूस किस्म के हैं। इन दोनों बाप-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेटी-पंडित जवाहर लाल नेहरू और श्रीमति इन्दिरा गांधी ने देश के साथ गद्दारी की है। बाप से तो एक बार चीन के मसले में गलती हो गई। उस की पुत्री ने बाप से हजारों गुणा बड़ी गलती क्यों कर दी?'' मैंने मेजर से जवाब तलब करना चाहा।

मेजर साहिब मुस्कुराते हुए बोले-''तब क्या होना चाहिए था?''

दम लेने को मैं कुछ देर चुप रहा। फिर मैंने कहा-''मैंने भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री रह चुके अटल बिहारी वाजपेयी की अखबार में छपी इंटरव्यू व पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टों का साक्षात्कार भी पढ़ा था।''

''उनमें क्या लिखा था?'' वाजपेयी जी ने इंटरव्यू में क्या कहा था-''आल पोलिटिकल पार्टिज मे इन्दिरा गांधी जी को राय दी थी,93 हजार सैनिकों को छोड़ने के बदले पाकिस्तान से कब्जा किए शेष कश्मीर का पूरा इलाका मांगे। क्योंकि उस समय पाकिस्तान के एक-एक घर से दो-दो,तीन-तीन जवान भारत की जेलों में बंद थे। पाकिस्तानी लोगों को अपने बेटों की जरूरत थी-कश्मीर की नहीं। यदि भुट्टो ऐसा नहीं मानते तो वहां के वाशिंदे बागी हो जाते। पाकिस्तान सरकार के विरुद्ध विद्रोह हो जाता। पाकिस्तान के हालात संगीन हो जाते। लोगों को अपने घर के चिरागों की कश्मीर से ज्यादा जरूरत थी। भुट्टो को मुंह की खाकर, सीने पर पत्थर रख कर कश्मीर खाली करके देना पड़ता। दूसरा जीता हुआ इलाका भी देने की जरूरत नहीं थी। क्योंकि हमें इंटरनैशनल लॉ की दुहाई देने वालों की चीन की तरफ कब्जा किए इलाके पहले दिलाने को कहा जाता। याद दिलाया जाता। यदि भारत के प्रधानमंत्री राजनीति में सयाने होते-तो कश्मीर आज भारत के पास होता। आज रोजाना कश्मीर में आंतक को रोकने में सेना के अफसर-जवान मर रहे हैं। रोज-रोज का टंटा खत्म हो गया होता।''

''वाह शर्मा जी! बात आपकी दुरुस्त है। और पाक प्रधानमंत्री भुट्टो की इंटरव्यू में आपने क्या पढ़ा था, वह भी बता दें तो नॉलिज सेक बढ़िया रहेगा।'' कहा मेजर साहिब ने।

वहां आफिस में दो-तीन आफिसर आकर सोफे पर बैठ गए थे।

''मौजूदा पाक प्रधानमंत्री भुट्टो ने कहा कि मैंने शिमला समझौते के लिए इंडिया आने से पहले कई राजनीति की पुस्तकें पढ़ी थीं। फिर यह जाना कि भारतीय प्राइम मिनिस्टर श्रीमति इन्दिरा गांधी का स्वभाव कैसा है? उसने लिखा-'मुझे बताया गया कि फूक छकने वाली,मक्खनबाजी पसंद करने वाली लेडी है। जब श्रीमति इन्दिरा जी ने कैदियों के बदले कश्मीर की मांग की-और इन्दिरा जी अपनी बात पर अड़ी रहीं। प्रधानमंत्री भुट्टो ने रोना शुरू कर दिया। नाक बहा लिया। सिर के बाल नोचने शुरू कर दिए। जमीन पर लोटना शुरू कर दिया। भुट्टो का एक ही कहना था-पाकिस्तानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाशिंदे मुझे कश्मीर देने में जान से मार देंगे। मेरा कुनबा खत्म कर देंगे। बहन कह कर पुकारा, गिड़गिड़ाया तो मुझे इस नौटंकी में कश्मीर, बाकी खोया इलाका सब कुछ मिल गया। उसने भारत के लीडरशिप को नालायक, बुद्धू कहा था। उसके बदले में भुट्टो प्रधानमंत्री ने भारत को दिया-आतंकवाद। पहले पंजाब में जो हुआ वह सब कुछ आप जानते हैं। आप्रेशन टोपाक जो आज कश्मीर में हो रहा है। 'लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई।' कश्मीर के हिन्दू-मुस्लिम वाशिंदों को आतंक ने अन्दर से तोड़ दिया है। वाशिंदों को बेघर कर दिया है। पाकिस्तान ने 1972 में शिमला समझौते में दिया सब कुछ-बदले में जो मिला आप्रेशन टोपाक, आतंकवाद का प्रशिक्षण,विस्थापन, घुसपैठ, इस्लामिक कट्टरता, खून-खाक का खेल, आंतक, ग़म, पीड़ा, शहीदों का मजाक,सेना की बहादुरी का मजाक था।'' कह कर मैं चुप हो गया।

सभी आफिसर चुप बैठे थे। मेरी बातें उन्हें उचित लगी थीं। इतने में अशोक ने कमरे में झांक कर पूछा-''चाचा जी आप क्या कर रहे हैं?''

मेरी विचारधार भंग हो गई थी। आंखों में भर आए आंसू पोंछने लगा था। मन दुःखी हो गया था। उठ कर थोड़ा पानी पिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिलनमर्ग का प्राकृतिक सौन्दर्य,नन्हें प्यारे बच्चे का मेरी गोद में बैठना व भारतीय नेताओं की कश्मीर सम्बन्धी अदूरदर्शिता

गुलमर्ग से खिलनमर्ग लगभग चार कि.मी की दूरी पर स्थित है। गुलमर्ग से खिलनमर्ग के स्थान तक की यात्रा में हिमालय पर्वत की दिव्य, सौन्दर्यमय और सम्मोहित चोटियां भरपूर आनन्द,शांति और ताजगी से सैलानी को भर देती हैं। खिलनमर्ग में ग्रीष्म में हरे-भरे लम्बे-चौड़े मैदान फूलों से खिल कर महक उठते हैं।

हम सभी सैलानी साथियों का लघु-दल लगभग दोपहर दो बजे खिलनमर्ग पहुंचा था। हरियाली, खिले हुए नाना जाति के रंग-बिरंगे फूलों, शांति और प्राकृतिक छटा से घिरा हुआ स्थान मुझे किसी देवलोक सा प्रतीत हो रहा था। जिधर भी मेरी दृष्टि जाती-प्रकृति रूपी तन्वंगी की अलौकिक रमणीयता को निहार कर जी न भरता था। मन की बस यही चाहत होती-'बस इस प्रकृति रूपी अनिंद्य सुन्दरी के रूप-माधुर्य का आंखों के माध्यम से पान करता रहूं। इस प्राकृतिक-रमणीयता में अपना तन-मन खोकर,इस का एक लघु भाग बन जाऊं। और सदैव को यहां रह जाऊं।'

सैलानियों की चारों तरफ फूलों, हरियाली से परिपूर्ण मैदानों में भारी भीड़ जमने लगी थी। हमं सब साथी घोड़ों से उतर गए थे। पापी पेट अब कुछ खाने को बार-बार तंग करने लगा था। समीप ही चार-पांच दुकानें थीं, जिनमें एक चाय वाले की भी थी। राकेश कुमार ने चाय के नौ प्यालों का आर्डर दे दिया था। चाय के साथ हमने बिस्कुट खाकर भूख से कुछ राहत पाई थी। मेरी कुर्सी के समीप एक मुस्लिम महिला नन्हें-प्यारे से बच्चे को लेकर बैठी थी। बच्चा बड़े आराम से बेफिकर होकर मेरी गोद में आकर बैठ गया था। इस आबोध-शिशु की मुझ से किस जन्म की किस रूप में पहचान थी, यह तो सिवाए भगवान के कोई नही जानता था। मुस्लिम महिला मुझे बताने लगी-''भाईजान यह तो किसी के पास जाता ही नहीं। अपने हमसाए लोगों के पास भी नहीं। क्या आप इल्म, करामात या कोई जादू जानते हैं क्या? '' महिला की बात सुनकर मैं हंस पड़ा। मैंने उसकी ओर उन्मुख होते हुए उत्तर दिया-''हां! मैं जादू जानता हूं। भगवान कृष्ण का बाल रूप मुझे बड़ा पसन्द है। मुझे बच्चे बड़े प्यारे लगते हैं। अबोध शिशु मन के सच्चे-निर्मल हृदय होते हैं। बेलाग, निष्कपट और सरल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वभाव के होते हैं। क्यों कि जब बच्चा किसी भी मजहब, जाति, सम्प्रदाय में मां के गर्भ से जन्म लेता है-तो वह इस आलम के तमाम धर्मों के रीति-रिवाजों,रिवायतों, ऊंच-नीच,अमीर-गरीब,छोटे-बड़े और सामाजिक विचारों से मुक्त होता है। उस समय वह नन्हा फरिश्ता सा होता है। ज्यों-ज्यों वह होश संभालता है। बड़ा होता है। छोटा सा पारिवारिक समाज उसे सरल भाषा में सम्बन्धित धर्म, मजहब का पाठ सिखाने लगता है। तू हिन्दू है। तू मुस्लिम है। तू पारसी-इसाई-जैनी-बौद्धी आदि-आदि है। वह पहनावे, भाषा,धार्मिक-पद्वतियों में मां-बाप,भाई-बहन, पड़ोसियों को बच्चा जानने पहचानने लगता है। वह बन्दर सी नकलें करने लगता है। जैसे-तैसे संस्कार,विचार, उसके बच्चे को दिए जाएंगे-दिन प्रतिदिन उन्हीं रिवाजों-रिवायतों,मजहबों के दायरों में वह घिरता चला जाएगा। वही कुछ वह भविष्य में बनता जाता है।

परन्तु मेरी प्यारी बहन! प्रेम, करुणा, सरलता और निष्कपट हृदयता को- दुनिया की हर धर्ममिशनरी,सम्प्रदाय भगवान को पाने का एक मात्र उपाय बताते हैं। सरलता, पवित्रता और प्रेम के सूत से कच्चे धागों की डोरी से ही भगवान को, अल्लाह को पाया जा सकता है। धन, रुतवे या लम्बे-चौड़े इल्म के फसलफों के अहं से उस खुदायी हस्ती को नहीं पाया जा सकता। इसलिए बच्चा किसी भी धर्म-मजहब का हो-वह मेरे लिए भगवान का रूप होता है। मैंने अन्दर से बच्चे को मिलने की इच्छा,अरमान पैदा किया-आप सब देख रहे हैं, बिना आवाज दिए बच्चा मेरी गोद में आकर चुपके से बैठ गया है। क्यों कि प्रेम की, मोहब्बत की कोई भाषा-जुबान नहीं होती है। और आज कश्मीर में मजहबी लोगों ने, पड़ोसियों को और अपनी औलाद को तंग दिल, घृणा-द्वेष,लोभ-लालच मजहबी दीवारों में, दायरों में बांध कर उनके हाथों में हथियार पकड़ा कर दूसरे धर्मों के लोगों की हत्या, दहशत से मार भगाने का सबक सिखा कर-इस सुन्दर, शांत अपनी धरती से भागने को मजबूर किया है। ऐसे लोग पापी, काफिर,जाहिल और धर्मांध हैं। इन्हें इस लोक या परलोक में इस कर्म का खामियाजा भुगतना होगा। इन दरिन्दों ने जम्मू-कश्मीर के अवाम को,शांति को, मानवता, साम्प्रदायिक-सौहार्द, विकास और भारत देश की धर्मनिरपेक्षता को अत्यन्त गहरी चोट पहुंचाई है। जिसकी पूर्ति होना कठिन ही नहीं असम्भव भी है।" कह कर मैं चुप हो बच्चे से खेलने लगा था। उसे गुदगुदाने लगा था। बच्चा खिल-खिला कर हंस रहा था। मेरे कान, सिर के बाल खींचने लगा था।

मुस्लिम महिला विचारों के अतल सागर में डूब सी गई थी। उसकी आंखों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छम-छम नीर बह आया था। मेरे सारे साथी भी अपनी सोच में गंभीर हो गए थे। मुस्लिम महिला ने मुझे अपने आंसू रूमाल से पोंछते हुए पूछा-" भाईजान आप क्या काम करते है?"

"मैं पेशे से अध्यापक हूं।"

"आप कहां के रहने वाले हैं? किस धर्म से ताल्लुक रखते है?" उस महिला ने पूछा।

"मैडम जी मैं जाति का ब्राहमण हूं। मैं तहसील पठानकोट से और स्टेट पंजाब का वाशिंदा हूं।"

"काश! आप मेरे हमसाए (पड़ोसी) होते और मैं आप से कुछ सीख सकती। अल्लाह को पाने-जानने का मुकद्दस राह मालूम कर सकती। लगता है आप ने खुदायी हस्ती को पा लिया है। जान-पहचान लिया है। यह मेरा बच्चा आपकी शोहबत में पलता, एजुकेट होता और जवान होता-तो यह भी एक नेक इन्सान बनने के तौर तरीके सीख सकता।"

उसकी बात को सुन कर मैं इस नतीजे पर पहुंचा था कि यह महिला एक नेक दिल, रहम दिल व पाक-साफ हृदय की मालिक है। सरल,निष्कपट हृदय में ही मानव प्रेम, करुणा, सेवा व भावुकता रहती है। मैंने अपनी बात का लहजा बदल कर मजाक में लेते हुए पूछा-"दीदी! आप का हमसाया (पड़ोसी) होता तो मुझे आपके हाथों से मीठे-नमकीन व्यंजन खाने को मिलते। मैं फिर इस तरह (लव कुमार की तरफ संकेत करके) व्यंजन खा-खा कर मोटा तोजा हो गया होता। कमजोर,सूखा-सड़ा सा न होता।" सुन कर सभी साथी हा-हा करके हंसने लगे थे। वह महिला भी ठठा कर हंसने लगी थी। महिला व सारे साथी लव कुमार की ओर देखने लगे थे। लव कुमार झेंप गया था।

मैंने मुस्लिम महिला से स्वाभाविकता से पूछा-"बहना! आप बुरा न मानो तो मुझे अपना नाम व यह भी बताओ कि आप मेरी बातें सुन कर क्यों रोई हैं?"

धैर्य से उसने कहा-" मेरा नाम शबनम भट्ट है। मेरे हस्बैंड का गर्म शाल, कार्पेट का बहुत बड़ा कारोबार है। रैनाबारी में हमारा बहुत बड़ा मकान है। रोई मैं इसलिए हूं-हमारे घर में डिस्ट्रिक कठुआ की महाजन परिवार की लड़की व उसका शौहर किराएदार के रूप में रहते थे। दोनों मियां-बीबी एक ही बैंक में मुलाजिम थे। हमारे घर में रहते उनके एक बेटी ने जन्म लिया था। एक दिन वह लड़का,जिसका नाम प्रदीप महाजन था, लाल चौक की तरफ अपने स्कूटर पर किसी काम को जा रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। उग्रवादियों ने बीएसएफ वालों पर अंधाधुंध गोली चलानी शुरू कर दी थी। प्रदीप महाजन इन इंतहापसंदों की गोली का शिकार बन कर मर गया था। उस नीना नाम की महाजन लड़की ने दोबारा शादी न की थी। उसने अपनी टांसफर कठुआ में करवा ली थी। पिछले दिसम्बर में नीना महाजन की इकलौती लड़की की शादी थी। हमें बुलाया था। मैं और मेरा खाबिंद शादी में शरीक हुए थे। इसी तरह से लगभग सारे कश्मीरी परिवार एक तरह से जलावतन हो गए थे। कुछ कश्मीरी फैमिलीज के साथ हमारी बड़ी गहरी मोहब्बत व रासूख था। सुख-दुःख में साझीदार बनते थे। उनके जाने का हमें बहुत गहरा ग़म है। दुःख है। तकलीफ है। उन की बड़ी याद आती है। परन्तु जान सब को प्यारी है। यहां से न भागते तो मार दिए जाते। इंतहापसंदों का न तो कोई मजहब होता है और न ही इखलाक होता है। जुवान को न चाहते हुए भी बंद रखने को मजबूर होना पड़ता है।'' कहते-कहते वह चुप हो गई थी।

मैंने बच्चे के साथ एक फोटो खिंचवाई थी। बच्चे को अपनी बाहों में उठा कर खड़ा हो गया था। रोहित कुमार को मैंने संकेत किया था। उसने झट से क्लिक कर दिया था।

एक चाय के प्याले और दो बिस्कुट खाने से मेरी तृप्ति न हुई थी। मुझे भूख दोबारा लग आई थी। जेब नोटों से भरी थी, पर भूख से परेशान थे। सैलानी-दल के मुखिया-राकेश कुमार के पास हमारे पैसे जमा थे। परन्तु वह अपने साथियों को खिलाने-पिलाने में फिसड्डी था। इस समय मुझे अध्यापक-साथी-विकास गांधी का ख्याल जेहन में उभर आया था। मैंने दो बार उससे तीर्थ यात्रा - मनी महेश(हिमाचल प्रदेश) व बद्रीनाथ, केदारनाथ और हेमकुंड साहिब (उत्तराखंड) में की थी। विकास गांधी ने खाने-पिलाने में कोई कोर-कसर न रहने दी थी। यात्रा-समय अपने बैग में फल, नमकीन, बढ़िया बिस्कुट व ब्रैड-मक्खन रखता था। तलब होने पर जहां जी होता-बैठकर खा पी लेते थे। पानी की बोतलें साथ होती थीं। यहां तक-यात्रा समाप्ति के पश्चात् भी खाने-पीने वाली चीजों का ढेर सा सामान बचा रहता था। किंतु अब! दो बिस्कुटों से तो नन्हें बच्चे का भरण-पोषण नहीं होता। भला अधेड़ आयु के हृस्ट-पुष्ट व्यक्ति का दो बिस्कुटों से बनता क्या है? यह तो ऊंट के मुंह में जीरा देने वाली बात थी।

खिलनमर्ग में आया हुआ हर नर-नारी, अधेड़-नौजवान सैलानी खुशमिजाज था। पश्चिम की ओर गगनचुम्बी पर्वत की ओर इशारा करके, जिसपर भारतीय सेना के टैंट लगे हुए थे अशोक कुमार बोला-''चाचा जी! इस दिखाई दे रहे पहाड़ के थोड़ा सा परे आकुपाइड कश्मीर है। सुन कर मेरा पीड़ित मन कराह कर कह उठा था-'वाह रे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत के नेतागणो! वाह रे हिन्दुस्तान की विदेश नीति!! वाह रे इंडिया का देश भक्त नेतृत्व।।।''

स्वभाव की शांत,गंभीर और मितभाषी अशोक कुमार क्रोध में उबल पड़ा था। वह स्वयं पर संयम न रख पाया था। वह देश प्रेम की भावना की चंचल धारा में बह निकला था। बोला-''यदि लौह-पुरूष सरदार पटेल भी पंड़ित जवाहर लाल नेहरू सा शांति का दूत बन जाता-तो आज हम इस समय खिलनमर्ग में न आए होते। यह भू-भाग पाकिस्तान के राज्य का हिस्सा होता। 564 भारतीय रियासतों को अगर सरदार पटेल भारतीय संघ में विलय करवा सकते थे तो इस रियासत को भारत में शामिल करने को उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी। अगर दिक्कत थी तो लार्ड माऊंट बेटन, राजा हरिसिंह व लेडी माऊंटबेटन को थी। पाकिस्तान ने राजा हरिसिंह,पंड़ित नेहरू और देश के गद्दारों के कारण 2/5 भाग पर कब्जा कर लिया था। चीन ने 1962 में लेह-लद्दाख का बहुत बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था। चीन को उसके साथ लगता हथियाए कश्मीर का बड़ा भू-भाग जो लगभग 5500 वर्ग कि.मी तोहफे में रूप में दिया था। क्योंकि चोर-चोर मसौरे भाई। क्या नीति है भारत के रहनुमां की? मैं कहता हूं-इनकी लीडरी, नीति, दूरदर्शिता से मेरे जैसा आम आदमी बेहतर सोच-विचार रखता है, नीति-निर्माण कर सकता है। आजाद भारत में अगर कोई कमी रही-तो सरदार वल्लभभाई पटेल, श्यामप्रसाद मुखर्जी, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ.राधा कृष्णन सर्वपल्ली, गुलजारी लाल नंदा, जयप्रकाश नारायण, वाई.पी. चवहान, लाल कृष्ण आडवानी, अटल विहारी वाजपेयी जैसे त्यागी,देश को समर्पित नेताओं की रही है। चापलूसी, कुर्सी लालच, भाई-भतीजवाद,अरबों-खरबों के नित्य नये घोटाले, मंत्रियों को मंत्रालय का अल्पमत में ज्ञान, जाति-आधारित आरक्षण, असभ्य भाषा, देश-प्रेम का अभाव, भ्रष्टाचारी नेता व अफसर और देशहित में नीति-निर्माण में अदूरदर्शिता तथा भारतीय जनता के सम्मुख जवाबदेही जैसी बातों का न होना-हिन्दुस्तान को पतन की ओर निरन्तर धकेल रही हैं।

आज भी कश्मीर में जो नीतियां लागू की जा रही हैं- वह जम्मू-कश्मीर के इस भू-भाग के भारत से अलग-थलग करने वाली है। तभी तो डॉ.फारूख अब्दुला सन् 1947 में जम्मू-कश्मीर छोड़ कर गए पाकिस्तानी मुसलमानों को पुनः इस स्टेट में बसाने को सुप्रीम कोर्ट में मुकद्दमा लड़ रहे हैं। आटोनामी लागू करने पर बाजिद हैं। हुर्रियत के चंद लीडरों को अलगाववादी सुर अलापने के लिए पाकिस्तान, अरब देशों से पैसा धडल्ले से आ रहा है। उनकी दुकानदारी बढ़िया चल निकली है। कांग्रेस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पार्टी व उसकी हिमायती पार्टियां शेख अब्दुल्ला, फारूख अब्दुल्ला और अमर अब्दुल्ला की अलगावादी, देश द्रोही और साम्प्रदायिक नीतियों का समर्थन करती आ रही हैं। धारा 370 ने चंद लीडरों को कायम रखने, वंशवाद पोषित करने, घर भरने, मजलूम, गुरबत से मारे अवाम को गुमराह करके भारत देश के खिलाफ जहर उगलने और नारेबाजी करवाने में इस्तेमाल किया है। गरीब जनता गुरबत से लड़ रही है। गरीब जनता का भविष्य अंधकार में डूबा पड़ा है। इन खुदगर्ज सियासी लीडरों को धारा 370 के हटने का खतरा हर समय रहता है........।'' कह कर अशोक कुमार चुप हो गया था। मैंने अशोक कुमार के समर्थन में सिर हिला दिया था। मेरे समीप और भी भारत के कोने-कोने से आए पर्यटक बैठे थे। उन्होंने भी अशोक कुमार की बात को उचित माना था। इतने में पवन कुमार ने नजदीक आ कर कहा-'' यशपाल शर्मा जी! अभी इन्जॉय करना है। उठिए और चलिए।'' हम दोनों मैं अशोक कुमार,पवन कुमार के साथ चल दिए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैलानी मित्रों की दिल्लगी,मस्ती और गंडाला से केवलकार पर सवारी करना तथा धरती पुत्र का धरा से गूढ़ नाता होने का रहस्य

जहां पर बैठकर हम सबने चाय पी थी,ठीक उसके समीप ही उतराई में एक चश्मा था। चश्मे का पानी बर्फ को भी मात करने वाला था। वहां पर (चश्में) बैठे दो नौजवानों की शर्त लगी थी कि जो इस बर्फीले पानी में पन्द्रह मिंट तक हाथ रखेगा, उसे दो सौ रुपये मिलेंगे। चश्मा कोई 7×8 फुट का रहा होगा। एक युवक ने अपना दांया हाथ पानी में डूबो रखा था। दूसरे हाथ से वह बीड़ी फूंक रहा था। हम तीनों भी भीड़ में शामिल हो गए थे। वहां अजीबोगरीब सा मजमा लग गया था। दूसरा लड़का घड़ी पर वक्त देख रहा था। आखिर शफी नाम का लड़का अपनी शर्त जीत गया था। दूसरे लड़के ने उसे दौ सौ रुपये दिए थे। तमाशाई हो-हो करके हंस रहे थे। सोचा- 'जवानी में ही ऐसे उल्टे-सीधे कारनामे व्यक्ति कर सकता है। पानी में हाथ रखने वाले के हाथ में अत्यन्त शीतलता की मार से कोई विकार हो सकता है। बस एक सामर्थ्य की, अंधे-बहरे अहं की जीत में-मनुष्य जीवन में अधिकांश बार हानि ही उठाता है।'

हम थोडा सा आगे निकले जो 60-65 वर्षीय व्यक्ति, एक युवक को स्केटिंग की फोटो के लिए तैयार कर रहा था। वह दोनों हाथों में स्केटिंग छड़ियां, टोपी और पैरों में बूट पहनकर- पांच रूपये में फोटो खींच रहा था। वहां पर हमारा सारा दल खड़ा था। स्केटिंग के ड्रैस में सभी ने फोटो खिंचवाए थे। अब घोड़े वाला हमें जल्दी करने को कह रहा था। इस समय मेरे सम्मुख देवदार व चीड़ के जंगलों के वृक्षों के झुंड से बादलों का एक टुकड़ा हवा में तैरता हुआ जा रहा था। मानों किसी खूबसूरत लड़की का आंचल, शरारत के लहजे में पवन रूपी आशिक चुरा कर भागा जा रहा हो।

पांच सात मिंट के तदन्तर हम एक समतल, चौड़े व रंग-बिरंगे फूलों से ढके पड़े मैदान में आकर घोड़ों पर पुनः बैठ गए थे। तभी राकेश कुमार के दिमाग में शरारत का कीड़ा रेंगा था। एक सैलानी को अपना कैमरा फोटो खींचने हेतु देकर,सभी साथियों को संग लेकर मेरे घोड़े के आगे-पीछे हो कर नाचने-गाने लगे थे। वह साथ-साथ कह रहे थे- अरे यशपाल शर्मा की बारात जा रही है। मैंने सब को बहुतेरा कहा कि ऐसा न करो भाई। परन्तु वह हुल्लड़बाजी, मस्ती और आनन्द लूटने में सब कुछ किए जा रहे थे। उन्होंने वहां नाचने-गाने का ऐसा मजेदार रंग जमाया कि पलभर के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैलानी भी भूल गए थे कि सचमुख ही यह स्वांग न होकर बारात जा रही है। देखने वाले सैलानी लड़के-लड़कियां, अधेड़ व छोटे बच्चों का हजूम मेरे साथियों के साथ नाचने गाने में मशगूल हो गया था। अशोक कुमार हंसता हुआ लोट-पोट हुआ जा रहा था। चारों तरफ खड़े पर्यटकों के पेट में हंसते-हंसते बल पड़ गए थे। उनकी आंखों में आंसू भर आए थे। मेरे साथी हाथ मटका कर, कमर हिला कर, कई तरह से मुंह बना कर नाच रहे थे। वह खुद भी हंस रहे थे और दूसरे देखने वालों को भी हंसा रहे थे। मुंह से ही बाजे और ढोल का स्वांग भर रहे थे। वह ऊंची-ऊंची आवाज में कह रहे थे-'अरे हमारे अंकल यशपाल शर्मा की बारात जा रही है। लड़की वालों ने खुली-डुली बारात लाने की डिमांड की है। लड़की वाले बड़े अमीरजादे हैं। खूब खान-पान और ठहराव का इन्तजाम किया है।

एक अधेड़ उम्र के सैलानी ने ऊंची आवाज में पूछा-"अरे दुल्हन कहां की रहने वाली है और उस के नाम का पता भी चले?"

शरारती अंदाज में पवन कुमार ने लव कुमार की ओर इशारा करके कहा-"अरे लड़की लव कुमार की सगी मौसी है। नाम है उसका -पुनीता। बारात का ठहराव डलझील के नामी-गिरामी हाऊस बोटों- नरगिस, पैरिस, क्वीनज लैप, मोनालीसा और फ्रीडम में किया गया है। बारात हमारी शानो शौकत से श्रीनगर की डललेक पर जा रही है। वहां पर मिलट्री बैंड का पूरा इन्तजाम किया गया है।" ऐसा सुन कर सैलानी-समूह एक जोर का ठहाका लगा कर हंस पडा था। मुझे घोड़े पर बैठे-बैठे शर्म आ रही थी। तभी गुरदासपुरी टोले ने 100-500 के नीले हल्के पीले कड़कते नोट जेब से निकाल कर मेरे सिर पर बांरडे करके दोबारा अपनी जेबों में डाल लिए थे। ऐसा मजाकिया दृष्य देखकर, देखने वालों की हंसी रोके न रुक रही थी। तभी रोहित कुमार ने मुंह से पीपनी की लम्बी धुन निकालते हुए सब को चुप करवा दिया था। वह बोला-"चलो, अब देर न करो साथियो! लग्नों का टाईम हो रहा है। लड़की वाले राह में हमारी देरी से परेशान हो रहे होंगे। आखिर खूब पैसा खर्च करके उन्होंने बढ़िया प्रबन्ध बारात के लिए किया है। उनके इन्तजाम पर पानी न फिर जाए।" "सैलानी अपने कैमरे से इस जश्न की फोटो खींच रहे थे।

उसके बाद पवन कुमार पर्यटकों की ओर देख कर पंजाबी भाषा में बोला-"दोस्तो! बन्धुओ!! अभी जाना नहीं है। अब हंडरंड परसैंट छड़े मुंडे अशोक कुमार दा घोड़ी चढ़ा कीता जावेगा। लगदी लागे यश अंकल दे भतीजे दा भी कम फतेह कर देईए।" सभी साथी भाग कर अशोक कुमार को घोड़ी पर चढ़ाने को उसकी ओर भागे थे। अशोक कुमार ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया था। वह वहां से दूर भाग गया था। लव कुमार बोला-"ओए शोके दी किस्मत विच्च घोड़ी चढ़ना रब्ब ने लिखिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नईं ए। औनू छड़े ई रैनद दियो।'' सुनकर एक बार सभी साथी खिलखिला कर हंसने लगे थे।

घोड़े पर बैठकर हमारे सैलानी दल ने फोटो खिंचवाए थे। अब हल्की-हल्की बूंदाबांदी होने लगी थी। हमारे सांमने गोंडाला का बोर्ड लगा था। अशोक कुमार, नरेश कुमार, राकेश कुमार को छोड़कर छः साथी खंडाला का आनन्द उठाना चाहते थे। फिर ऐसा वक्त कहां हाथ लगता है। इस हवाई सैर की प्रशंसा में जो कुछ भी कहा जाए- कम है। घोड़े वाले ने हमें घोड़ों से खंडाला उतारा और घोड़े लेकर उस तरफ चल दिया था, जिधर खंडाला की ओर से केवल कार से उतारा जाता था। काफी ऊंचाई पर लोगों की भरी हुई केवल कारें आ जा रही थीं। हम छः जने, एक विशाल, भव्य इमारत की दूसरी मंजिल पर चले गए थे। प्रत्येक व्यक्ति की केवल कार की सवारी करने के 50 रूपये किराया निश्चित किया गया था। दोहरी सवारी करने में सौ रुपये प्रति व्यक्ति की टिकट थी।

लव कुमार गोंडाला केवल कार में बैठने को बड़ा बेताब था। मैंने उसे केवल कार में बिठाते हुए कहा-''अरे लव बाबू! देखना-कहीं इस केवल कार में बेहोश न हो जाना।''

अपने डौलों पर हाथ मारता लव कुमार बोला-''नहीं अंकल! चिंता न करिए। इस पटठे ने असल पनीर खाया है।'' वहां पर तैनात कर्मचारी ने हमें केवल कार में बिठा दिया था। ज्यों ही केवल कार इमारत से निकल कर थोड़ी हवा में आई, क्षणेक को मेरा दिल जरा सा डरा था। उसके पश्चात् कोई घबराहट न हुई थी। मोटी-मोटी तारों से हमारी केवल कार हवा में सरकती हुई चली जा रही थी। दायें तरफ से केवल कारें वापिस आ रही थीं। उनमें बैठे नन्हे प्यारे बच्चे हंसते, खुश होते जा रहे थे। वह बैखोफ थे। नवविवाहित जोड़े भी केवल कारों में एक दूसरे के कंधों पर बाहें रखे, खुशमिजाजी में हवा में उड़ते, उल्लसित प्रसन्न होते जा रहे थे। अनुमान है-धरती से केवल कार की ऊंचाई 40 से 50 फुट की रही होगी। देवदार व चीड़ के जंगल के ऊपर से, दोनों ओर की केवल कारें उड़ी जा रही थीं। बड़ा अद्भुत, रोमांचकारी, प्रसन्नतायुक्त विहंगम दृष्य था। मैंने ऊपर से देखा-अशोक कुमार, नरेश कुमार और राकेश कुमार घोड़ों पर उस ओर जा रहे थे, जिधर केवल कारों से उतारा जाना था।

मेरी विचारधारा बह निकली थी-'धरती का हरेक प्राणी हवा में उड़ना चाहता है। वह लोगों को दिखाना चाहता है- मुझे गौर से देखो। मैं हवा में उड़ रहा हूं। मेरी प्रशंसा के पुल बांध दो। अगर तुम में हिम्मत, योग्यता और कुछ कर दिखाने की सूझ का जज्वा है तो मेरी बराबरी करके दिखाओ तो जानू!' वाह रे बावरे मानव मन! प्राणी का मन और उसमें अंह भी भगवान ने क्या चीज बनाई है? कोई हवा की ऊंचाइयों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो कोई धन-दौलत, रुतवे की ऊंचाईयों में उड़ान भर रहा है। घमंड का कैसा सूक्ष्म स्वरूप है यह! इसे हम कोई भी नाम दे सकते हैं- खुमार, नशा, मस्ती। परन्तु विचार करने वाली बात तो यह है-आदमी कितनी देर हवा में अपनी हस्ती तो टिकाए रख सकता है। इस धरती पुत्र का, धरती के बिना गुजारा नहीं हो सकता। अतः धरा पर चलना ही श्रेयस्कर है। यही कटु सच्चाई है-इन हवाई ऊंचाइयों में उड़ान भरने वाला व्यक्ति ज्यादा दिन, जीवन में स्थिर नहीं रह सकता। जैसे हवाई जहाज पर सवार लोगों को, हवाई सवार लोगों को, हवाई अड्डें पर अंत में उतरना ही होगा। वैसे ही जीवन की सत्यता यही है धरती ही ज्ञान की, वास्तविकता की आधार शिला है। निराहंकार रहना ही प्रत्येक मानव के लिए उचित दिशा है। धरती पर चलने में खतरा कम है। ज्यों ही कोई नर-नारी, छोटा -बड़ा आसामान की तरफ मुंह खड़ा किए देखता हुआ चलता है- वह ठोकर खाकर गिर पड़ता है। नीचे देख कर चलने वाला, अपनी विसात देखकर जीवन यापन करने वाले प्राणी कम ही गिरा करते हैं। हानि नहीं उठाया करते। अतएव धन्य हैं वह नर श्रेष्ठ-जिन्होंने मानवीय सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया। दुनिया ने तो उनके सम्बन्ध में भी बहुत कुछ कहने में गुरेज न किया। परन्तु वह अपने दृढ़ संकल्प और जुनून को लेकर प्राणी सेवा में त्याग, समर्पण की अद्‌भुत, कठिन और जोखिम भरी डगर पर चलते रहे। इस संसार के मानव-समूह ने उन परमार्थी, समाज सेवकों को जीवन के अंतिम क्षणों में समझा था। फिर उन्हें आदर सम्मान दिया था। कंधों पर ही नहीं, सिर-आंखों पर भी बिठाया था। वह क्षेत्र-ईश्वरीय भक्ति, योग-साधना, समाज सेवा व साहित्य-सेवा, देश सेवा या और कोई भी हो सकती है। उन महान पुरुषों ने लोगों के कंधों पर बैठ कर भी, गगन के चांद की तरफ बिठाने पर इस धरती से नाता नहीं तोड़ा था। इसी कारण इतिहास में उनका स्थान बन सका। किसी शायर ने कितने सार गर्भित शब्दों में कहा है-

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर तू मर्तवा चाहे।
दाना ख़ाक में मिल कर गुलोगुलजार बनता है।।

क्यों कि धरती ही हमारे लिए कर्मभूमि, देवभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि, वेदभूमि, पुण्यभूमि और अंत में जीवन-मरण का आधार यही धरती तो है। जिस ने भी इस धरती पर अन्न-जल-वस्त्र तथा जीवन की हर जरूरत को पूरा किया व जीवन पाया- इसका अपमान करने वाले अहंकारी नर-नारी ख़ाक में मिल गए। उनका आस्तित्व ही समाप्त हो गया।

मेरे कंधे को हिलाकर लव कुमार बोला-" यश अंकल जी! यदि इस ट्राली की तार टूट जाए तो क्या होगा?

मैं लव कुमार की बात सुनकर चुप रहा। दौलत राम तुरन्त बोल उठा-"ओए गधे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे मुंह-सिर विच्च चूल्ले दी गर्म ते सडदी-बलदी सुआह! जे तेरी शकल चंगी नईं तां बोली तां ठीक-ठीक बोल।''

रोहित बोला-''लव कुमार कभी तो शुभ बोल दिया कर।''

सुनकर लव कुमार चुप्पी साध गया था। फिर वह मिनका तक न था।

केवल कार पहाड़ों के देवदार व चीड़ के मध्य से सरकती जा रही थी। जिसमें नीलिमा सी मन को बड़ी अच्छी लग रही थी। अब हम धीरे-धीरे अपने पड़ाव के समीप पहुंचने वाले थे। ऐसी केवल कार की सवारी मैंने जीवन में पहली बार की थी। दो-चार मिंट के बाद केवल कार से नीचे उतर गए थे। यहां तो बैसाखी के मेले जैसी भीड़ व गहमागहमी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घोड़े वाले गुलाम नवी की मौजूदा सरकार के सम्बन्ध में राय

हम छः साथी सड़क पर आ पहुंचे, तो अशोक कुमार, नरेश कुमार और राकेश कुमार हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस समय सब को भूख लग आई थी। लव कुमार, राकेश कुमार व अशोक कुमार को केवल कार की सवारी का वृतांत सुना रहा था। उन दोनों के साथ हंस-हंस कर बातें कर रहा था। चाय की दुकान पर बैठकर गरमागरम ब्रैड पकौड़े खाकर चाय पी थी। तभी नरेश कुमार बोला-''अरे सब कुछ खा-पी लिया है, अब जल्दी से चलो। शिव मन्दिर भी देखना है। चलो, जल्दी करो यार! अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो जाओ।'' नरेश कुमार की बात सुनकर सभी साथी उठ खड़े हुए थे। घोड़ों पर सवार हो कर गुलमर्ग को चल पड़े थे। मेरा घोड़ा सब के पीछे था। एक घोड़ेवाला मेरे साथ चल रहा था। मैंने उसे पूछ लिया-''भैया आजकल आप का कारोबार कैसे चल रहा है? घोड़ेवाले को जैसे अपने दिल का जमा हुआ गुब्बार,जिसमें पीड़ा, निराशा और क्रोध था निकालने का अवसर हाथ लग गया था। उसने मुझे बताया-''साब जी इस वक्त मेरी उम्र 75-80 साल के करीब है। गुलाम नवी मेरा नाम है। तंगमर्ग गांव का वसनीक हूं। जद्दीपुश्ती हम सैलानियों को घोड़ों पर सवारी करवाने का काम करते आ रहे हैं। अब काफी बूढ़ा हो गया हूं। मेरे साथ बेटा इस काम में आता है। उम्रदराज होने पर भी घोड़ों के काम पर आना मजबूरी है। यह धंधा मेरी मजबूरी है-चाहे अब मुझ से बहुत कम चला जाता है।''

मैमे पूछा-''आपका बेटा इस काम पर आ रहा है। फिर आप को घर पर आराम फरमाना चाहिए। फिर ऐसी कौन सी मजबूरी में यहां घोड़ों के इस धंधे में मरना-खपना पड़ता है।''

गुलाम नवी बोला-''साब जी, मेरी दो बीबियां है- फातिमा और जैना। फातिमा मेरी बड़ी बीबी है। उससे दो लड़के और तीन लड़कियां हैं। जैना से- एक लड़का और 2 लड़कियां हैं। अभी एक लड़के और तीन लड़कियों की शादी करनी अभी बाकी है। जो लड़के शादीशुदा हैं-उनके अपने चुल्हे अलग अलग हैं। वह दमड़ी नहीं देते। बस-हम गिरस्ती की चक्की फेरे जा रहे हैं।''

''गुलाम नवी मुझे एक बात की बड़ी हैरत है।'' मैंने पूछा।

''बाबू जी वह क्या?'' उसने मेरी तरफ चलते हुए देख कर पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आप का मजहब एक मर्द को चार निकाह करने की इजाजत देता है। फिर और दो निकाह क्यों न किए?" मैने कह कर उसके चेहरे की ओर देखा। परन्तु गुलाम नवी मौन धारण किए चला जा रहा था। उसे अपनी दूसरी शादी पर बड़ा मलाल था।

वह बड़ी देर के बाद बोला-"साब जी दूसरी शादी मेरे बाप ने जबरदस्ती करवा दी थी। मैं नहीं मानता था। रिश्ते से जैना मेरे मामूजान की बेबा बेटी थी। सब ने मिल कर मुझे निकाह को बहुत मजबूर किया था।"

"गुलाम नवी! बुरा न मानना। क्योंकि किसी को भी अपने मजहब में दखलअंदाजी अच्छी नहीं लगती है। यहां तक कि मुझे भी नहीं। क्या चार शादियां-इस साईंस युग में, एक पढ़े-लिखे युग में, कमरतोड़ मंहगाई के युग में आप को बाजिव लगती हैं?"

कानों को हाथ लगाता गुलाम नवी बोला-"नहीं साब जी, चार नहीं-सिर्फ एक ही शादी की कानूनीतौर पर इजाजत होनी चाहिए। जिस वक्त चार शादियां बनाई गई होंगी-मुमकिन है औरतों की तादाद ज्यादा और मर्दों की बहुत कम होगी। उनका घर-घराट बसाने की गर्ज से शरियत में लिख दिया होगा।

फिर हम दोनों कुछ देर तक मौन रहे। मैंने मौन को तोड़ते हुए पूछा-"आप का घोड़ों वाला धंधा क्या सारा साल चलता रहता है बजुर्ग जी?"

निराशा में ठंड़ी आह भरते हुए गुलाम नवी बोला-"साब भूखे मर रहे हैं। यह चार दिन अमरनाथ यात्रियों के कारण चहल-पहल है। इस के बाद हम बेकार हो जाएंगे। अपने खोटे नसीब पर आठ-आठ आंसू बहाएंगे।

"क्यों? बाकी रहते साल के महीनों में यहां सैलानी तो आते होंगे।" मैंने गुलाम नवी से पूछा।

मेरे बाकी साथी काफी आगे निकल गए थे। उनको देख कर गुलाम नवी ने घोड़े को हल्की सी छमिक मारने के साथ टिटकारी मारी थी। घोड़ा चाल में तेज हो गया था।

"कौन जीते जी इंतहापसंदों से मरना पसंन्द करेगा? उग्रवादी कहां, कब और क्या कहर बरपा दें-अल्लाह ताला से बेहतर किसी को कोई इल्म नहीं है। फिर यहां ऐसे संगीन हालात को जानकर कौन यहां आएगा?" कहा गुलाम नवी ने। सुन कर मैं पलभर के लिए चुप हो गया था।

मैंने नवी गुलाम के हृदय की बात जानने की गर्ज से पूछा-"यह मौजूदा सरकार ऐसे सख्त कदम क्यों नहीं उठाती कि उग्रवाद खत्म हो जाए। देखो-हमारे पंजाब में चीफ मिनिस्टर सरदार बेअंत सिंह ने पुलिस आईजी के.पी.एस.गिल से मिलकर ऐसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कदम उठाए थे कि उग्रवाद को जड़ से उखाड़ फैंका था। सरकार करना चाहे-तो सब कुछ कर सकती है।''

''साब आप किन की बात कर रहे हैं। यह सरकार-इंतहापसंदों की पीठ थपथपाती है। शह देती है। यह लोग शकल-सूरत से गोरे व शरीफ लगते हैं। इनका दिल काला है। नीयत खोटी है। इस कश्मीर की किस्मत खोटी है। कश्मीर का नसीब बनाने वाली यहां की सरकार, हुर्रियत जैसे जहरीले सांप जैसे लीडर-जम्मू कश्मीर रियासत के अवाम का बुरा चाहने वाले हैं। जो इस अवाम के रहनुमा हैं-वही दगाबाज, पाखंडी, चालबाज, ड्रामेबाज और झूठे मक्कार हैं। हम इस मौजूदा फारूख की सरकार से कतई उम्मीद नहीं कर सकते कि यहां अमन आएगा। अवाम की गुरबत से, इंतहापसंदों से खलासी हो जाएगी। मुमकिन नहीं है बाबू जी! यहां के इन बड़े हुर्रियत के लीडरों और सरकार के अन्दर बैठे लोगों के अन्दरखाते उग्रवादियों और अपने आका-पाकिस्तानी सरकार से पूरा मेलजोल है। पाकिस्तान नहीं चाहता है कि जम्मू-कश्मीर का अवाम अमन-चैन से जिन्दगी बसर करे। इन काफिर लीडरों को हिन्दोस्तान के खिलाफ भड़काऊ बयानबाजी करने, इस रियासत के वाशिंदों को रायशुमाकरी के हक देने, लोगों के जान माल की हिफाजत करने वाली फौज को यहां से फौरन हटाने के बयान देने और हिन्दोस्तान का अन्न-जल खाकर, जरूरतों के लिए दिल्ली सरकार से ढेरों पैसा लेकर उनकी नाकामी जाहिर करने और आंखें दिखाने के एवज में पाकिस्तान से पैसा मिलता है। खाते इंडिया मुल्क का है, सिफत सलाही पाकिस्तान की करते हैं। उग्रवाद को खत्म करने के बहाने सैंटर सरकार से ढेरों पैसा यह सरकार लेती है। चाहे फारूख सरकार हो या हुर्रियत वाले हों-किसी की अपने वतन, रियासत और इंडिया मुल्क से मोहब्बत नहीं है। हमदर्दी नहीं है। इनके दिलो दिमाग में अपने वतन के वास्ते प्रेम नहीं है। इनके दिल व नीयत पाक-साफ नहीं हैं।''

मैंने गुलाम नवी से अगला प्रश्न करते हुए कहा-''दोखिए भैया! अगर यह मौजूदा सरकार ठीक काम नहीं करती और अवाम की शांति, विकास और भलाई की काम नहीं करती तो इसे तख्त पर जनता हर इलैक्शन में इन्हें कामयाब करके क्यों बिठाती है? इसे अवाम बदल क्यों नहीं देता?''

गुलाम नवी फीकी हंसी हंसता हुआ बोला-''साब हर बार के इलैक्शन में जब भी वोट डालने गए हैं-हमारे नाम के वोट पहले ही कोई डाल चुका होता है। हमने विरोधी पार्टी को भी वोट डाल कर देखे हैं। परन्तु डब्बे से निकलते तख्त पर काबिज पार्टी वोट नैशनल काफ्रेंस के हैं। फिर बाबू जी हकूमत बदले तो कैसे बदले। जब तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इलैक्शन करवाने वाली पार्टियां व सुरक्षा दस्ते दूसरे सूबों से आकर निष्पक्ष इलैक्शन नही करवाते-तख्त पर काबिज फारूख की नैशनल कांफ्रेस की हकूमत कभी नहीं बदल सकती।'' सुन कर मुझे गुलाम नवी की बात पर विश्वास न हुआ था। उसने अब बीड़ी सुलगा ली थी। इतनें में हम बतियाते हुए शिव मन्दिर के नीचे आकर भगवान शिव के श्री चरणों में खड़े हो गए थे। मन्दिर काफी ऊंचाई पर था। राकेश कुमार ने नौ घोड़ों के बनते पैसे इकटठे ही गुलाम नवी को दे दिए थे। गुलाम नवी का दूसरा घोड़ेवाला-घोड़ों को लेकर वापिस इस आशा के साथ चले गए थे-सम्भवतः घोड़े की सवारी करने वाले सैलानी मिल जाएं। क्योंकि यह जगत ही आशा से उल्लसित और तरंगित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलमर्ग में स्थित शिव मंदिर में साथियों का नाच गाना, सकीना की अद्‌भुत इबादत-वन्दगी और फोटो खींचना

यह शिव मंदिर बहुत ऊंचाई पर स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण रियासत के महाराज हरिसिंह की धर्मपत्नी श्रीमति महारानी मोहिनी बाई सीसोदिया ने सन् 1915 में करवाया था।

सब सैलानी साथी धीरे-धीरे इस मन्दिर के प्रांगण में फूले हुए सांस में पहुंचे थे। शिव मन्दिर के अन्दर पहुंच कर हमें अद्‌भुत सा सुकून मिला था। सारे साथियों ने बड़ी श्रद्धा व भक्तिभाव से भगवान शिव को दंडवत रूप में प्रणाम किया था। इसी मन्दिर में 'फिल्म'-"आप की कसम" में अभिनेता राजेश खन्ना व अभिनेत्री मुमताज पर सुपरहित गीत फिल्माया गया था। उस गीत के शब्द थे- 'जै जै शिव शंकर,कांटा लगे न कंकर,प्याला तेरे नाम का पिया...ओ सौं रब्ब दी। .....मैं गिर जाऊंगी। मैं मर जाऊंगी,जो तूने मुझे थाम लिया। ओ सौं रब्ब दी। ओ बंसी भैया.........।" मुझे, नरेश कुमार और अशोक को छोड़कर-बाकी छः जने इसी गीत को गा-गा कर, हाथ हिलाकर, कमर मटका कर, ताल-दे कर हमें एक घेरे में लेकर नाचने लगे थे। थोड़ी देर में राकेश ने अपने सांढू-नरेश कुमार शर्मा को और दौलत राम व पवन कुमार ने चाचे-भतीजे को इस नाच गाने की महफिल में हमें शरीक कर लिया था। इसी तरह 10-15 मिंट तक नाचने, हंसने-हंसाने व आनन्द लूटने का दौर चलता रहा था। हम सब पसीने में तर-व-तर हो गए थे। फिर थक हार कर मन्दिर के प्रांगण में विश्राम लेने को बैठ गए थे। थोड़ी देर तक आराम करने के पशचात् मेरे साथी कैमरे से फोटो खींचने लगे थे। अभी फोटो खींचने का उपक्रम चल रहा था कि एक नौजवान खूबसूरत मुस्लिम लड़की अकेली ही आकर शिव मन्दिर की प्रतिमा के सम्मुख खड़ी हो गई थी। पलभर के लिए नेत्र मूंदे, दोनों हाथ जोड़कर, श्रद्धा, प्रेम व भक्तिभाव से नतमस्तक हो अभिभूत हुए धीरे-धीरे विनती करने लगी थी-"हे भगवान शिव शंकर! हे त्रिलोकी नाथ!! हे अल्लाह!! हे मौला!!!! तुम्हें मैं किस नाम से पुकारूं। जो भी नाम तुझे प्रिय हो, सुन्दर लगे-तू मेरे उसी नाम से सम्बोधित हो। हे भगवान भोले नाथ भण्डारी। हे अल्लाह!! तुझे सजदा करूं या दंडवत प्रणाम करूं। तू जैसे प्रसन्न हो सकता है-वह कबूल करले। मैं हिन्दू हूं या मुसलमान, इस राज़ को तेरे सिवाए कोई नहीं जानता। हां, मैं इतना इल्म, ज्ञान जरूर रखती हूं-मैं तेरे द्वारा पैदा की गई, एक नाचीज इन्सान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हूं। हे अल्लाह! हे मेरे परवरदिगार!! परम पिता!!! हे गरीब नवाज!!!! मेरे सिर पर अपना मेहरभरा हाथ रखना। मुझे अपने चरणों में जगह देना। प्रेम मोहब्बत देना। इन्सानों के प्रति प्रेम, सेवा और इन्सानियत का जज्वा देना। मैं आपके श्रीचरणों में कुल आलम और जम्मू कश्मीर के अवाम की शांति, तरक्की, खुशहाली के लिए दुआ करती हूं। हे भगवान! इस रियासत और अपने वतन से उग्रवाद पूरी तरह खत्म हो जाए। यहां वहां सुख-शांति हो। सब का मंगल करना प्रभु। हे अल्लाह! सब का कल्याण हो.......।'' इतना कह कर उसने फर्श पर घुटनों के बल होकर शिव मन्दिर की स्थापित मूर्ति सम्मुख प्रणाम किया था। उस युवती ने घड़ियाल ने आवाज प्रतिध्वनित की-टाऊं! टाऊं!! टा......ऊं। ज्यों ही इबादत, प्रार्थना से निपट कर युवती मन्दिर के प्रांगण में आई, पवन कुमार ने उसे अपना कैमरा देते हुए कहा-''मैडम जी! आप को कष्ट दे रहा हूं। हम सब साथियों का एक ग्रुप फ़ोटो खींच दीजिए, प्लीज।''

उस युवती ने मधुर हास अधेरों पर बिखरे हुए कहा-''कोई कष्ट वाली बात नहीं है। फोटो खींच देती हूं।'' उसने कैमरे से ग्रुप फोटो खींच दिया था।

राकेश कुमार ने युवती से अनुरोध के स्वर में कहा-''आप बुरा न मानें तो हमारे ग्रुप में बैठ कर एक स्नैप खिंचवाएं तो कितना अच्छा रहेगा। आप की हमारे साथ अमिट यादगार बन जाएगी।''

'श्योर! श्योर!! लो मैं आप के ग्रुप के बीच में बैठ जाती हूं।'' कथन के साथ ही वह हमारे लघुदल के मध्य भाग में आ कर खड़ी हो गई थी। तीसरे व्यक्ति को हमने फोटो खींचने हेतु कैमरा दे दिया था। उसने फोटो खींच दी थी। फिर वह मन्दिर की ढलान से नीचे उतर गई थी। हम अभी मन्दिर के मुख्यद्वार पर एक-एक, दो-दो करके साथियों संग फोटो खींचने में व्यस्त थे।

सड़क पर नीचे आकर वह मुस्लिम लड़की घोड़े पर बैठ गई थी। उसने हमें अपना नाम बताया था-सकीना। सकीना ने घोड़े पर सवारी किए ही हम सब को नीचे आने को संकेत किया था। मेरे साथी धीरे-धीरे ढलान से नीचे उतरने लगे थे। मैंने इस शिव-मन्दिर के नींव पत्थर को ध्यान से पढ़ा था। इस पर हिन्दी में लिखा था-''श्री.मोहिनीश्वर-शिवालय''निर्मापिका।

''श्रीमति महारानी मोहिनी बाई सीसोदिया (राजपुत्री मोहनदेव राज्य धर्मपुर) धर्मपत्नी श्री महाराजाधिराज श्री हरसिंह जी, जम्मू कश्मीर राज्य स्थापन सवंत् 1971 ईस्वीय सन्1915।''

मैं अपने सभी साथियों के बाद नीचे सड़क पर पहुंचा था। सकीना ने समस्त साथियों के नाम, घर के अड्रैस व फोन नंबर एक कागज पर लिख कर देने को आग्रह किया था। उस वक्त किसी भी साथी के पास कागज न था। कौशल राज के पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोंडाला से खरीदी गई टिकट उसके पास थी। मैंने उस टिकट पर समस्त साथियों के सम्पर्क सूत्रों का विवरण उस पर इंग्लिश में लिख दिया था।

नरेश कुमार ने सकीना से सानुरोध कहा–''अगर आप हमारे साथ चाय का प्याला सांझा करें तो कितना अच्छा होता।'' सकीना ने अपनी मजबूरी बयान करते हुए कहा– ''मैं इन दिनों बीमार हूं। मुझे स्टोन की प्रोब्लम है। इसलिए मैं कुछ खाना–पीना नहीं चाहती हूं। मेरे पास टाईम भी कम है। मैं जॉब करती हूं। मेरी ट्रांसफर लद्दाख में हो गई है। मैंने कल लद्दाख के लिए रवाना होना है। घर जाकर अभी तैयारी भी करनी है। लद्दाख ज़ाकर मैं आप सब को फोन करूंगी।'' सकीना कहां की रहने वाली है। उसका डिपार्टमेंट कौन सा है, किसी ने कुछ न पूछा था।

स्वयंमेव ही मेरे मुंह से निकल गया था–'' अच्छा सकीना मैडम! मैं कल सुबह ,बन्दगी के वक्त आप की सेहत के लिए भगवान से विनती करूंगा।''

सकीना घोड़े पर सवार थी। हम उसके घोड़े के समीप खड़े थे। मेरे हाथ अपने नर्म–गर्म हाथों में लेकर सहलाते हुए इत्मीनान से बोली–''यकीनन आप मेरी सेहत व उम्रदराजी के लिए नेक दुआ खुदा से करेंगे।''

मैंने उसे विश्वस्त करते हुए कहा–''यकीनन ही मैं आप के बहुत जल्दी स्वस्थ होने के लिए कल और परसों भगवान से प्रार्थना करूंगा। इस में सन्देह का कोई सवाल ही नहीं उठता।'' मैंने उसकी ओर मंद–मंद मुस्कुराते हुए दृढ़ संकल्प और विश्वास से कहा था।

''शुक्रिया! बहुत–बहुत शुक्रिया!! खुदा हाफिज़'' कह कर उसने मेरा हाथ चूमा था। फिर भी साथियों से हाथ मिलाया था। जो मार्ग गोंडाला को जाता था, हाथ हिला कर बॉय–बॉय कह कर, वह घोड़े पर सवार हुई घोड़े वाले को साथ लिए चली गई थी। सकीना को दूर तक जाते हुए हम सब देखते रहे। घोड़े वाला, घोड़े के पीछे–पीछे चल रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ–मानो हम सब स्वपन से जागे हों। उसके अच्छे, नेक, खुले विचारों पर लघु–सैलानी–दल टीका–टिप्पणी करने लगा था। हम भी आहिस्ता–आहिस्ता गुलमर्ग के बस स्टैंड की ओर जहां ड्राइवर दीवाना हमारी प्रतीक्षा कर रहा था, चल पड़े थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अबोध बच्चों से बतियाना, हब्बा ख़ातून कश्मीरी रोमान-गीतों की जननी का नारियों के ग़म, पीड़ा, प्रताड़ना का गीतों में जिक्र व शालमार बाग की अद्भुत शोभा

मेरे सभी साथी गाड़ी में बैठने लगे थे। हमारी टैक्सी के साथ ही प्राइमरी स्कूल के बच्चों की बस खड़ी थी। मुझे नन्हें-भोले बच्चों से हल्की-फुल्की शरारतें, गुदगुदी, मजाक करने में बड़ा मजा आता है। धरती पर, धरती को स्वर्ग बनाने वाले, निधड़क, सच्ची-कोरी बात कहने वाले, नन्हें फरिश्ते, हमदर्द और विश्वस्त सभी-अबोध बच्चे ही होते हैं। युवावस्था को ज्यों-ज्यों प्राणी आगे बढ़ता और बनता है- वह है चालाक, धोखेबाज, पाखंडी, कृतध्न, अभिमानी, अवसरवादी और अज्ञानी, न जाने क्या से क्या बनता जाता है। सयाने लोग कहते हैं-इन मन के खरे-सच्चे बालकों में भगवान का वास होता है। भगवान भोले और सरल स्वभाव में बसते हैं। वह इन प्यारे-दुलारे अबोध बच्चों के अंग-संग रहता है। मैं समझता हूं-मानव की भक्ति, योग-साधना से परमात्मा की प्राप्ति का दूसरा नाम-'मानव की निश्चल, पाक-साफ प्रवृति, सच्चाई पर डटे रहना और मानवीय निस्वार्थ सेवा तथा पीड़ा, वेदना की टीस का अनुभव करना ही तो है। विधाता को जो लुभा सकता है और कायल कर सकने में समर्थ है-वह सब कुछ अबोध बालकों के सरल-सीधे स्वभाव में निहित है।'

मैं बस की खिड़की से नन्हें बालक-बालिकाओं को उनके नाम, स्कूल का नाम, क्लास का नाम पूछ रहा था। मैं बच्चों से उनकी प्रशंसा कर रहा था। बच्चे बिना झिझके-ठिठके निधड़क होकर मुझ से बतिया रहे थे। तभी पवन कुमार ने मेरे कंधों पर पीछे से हाथ रख दिए थे। मैंने पीछे मुड़ कर देखा और आंखों की भाषा से पूछा- "क्या बात है? क्या चाहते हो?"

मजाक में पवन कुमार बोला-"आप बहरे हो क्या? कम सुनतो हो। सभी साथियों ने आप को इतनी आवाजें दी हैं। इधर आप इन बच्चों से बतियाने और छेड़खानी में मस्त हो। क्या वापिस श्रीनगर जाना नहीं है?"

मैंने कलाई घड़ी देखी। समय काफी हो चुका था।

मैंने एक सात-आठ वर्षीय बालिका की गाल पर हल्की सी थपकी देकर, बच्चों को हाथ हिला कर बॉय-बॉय करता हुआ पीछे की और मुड़ आया था। मैं गाड़ी में बैठा-तो ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी चला दी थी। दो पल के लिए, बस अड्डे की ऊंचाई से पुनः एक नजर भर कर, चौगिंद इस अद्वितीय सुखद-स्थल की रमणीयता को निहारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। गुलमर्ग में 1972 के पश्चात् सन् 2002 में-30 वर्ष के दीर्घकालीन अन्तराल में यहां आकर इस स्वर्ग सी धरा पांव रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं इस स्थान की खूबसूरती को आंखों के माध्यम से पी जाना चाहता था। क्योंकि मुझे इस हरितमा से मन-हृदय की आकुल-व्याकुल करने वाली प्यास को बुझाने का सुअवसर हाथ लगा था। या नसीब! पुन: यहां भविष्य में आ पाऊंगा या नहीं, परमात्मा के सिवाए कौन जानता है? मन-ही-मन इस प्राकृतिक सम्पदा-सम्पन्न स्थल को भरे मन से अलविदा कही थी। गुलमर्ग, खिलनमर्ग के हरित-मैदान जो चीड़, देवदार के वृक्षों की कतारों में हरियाली के सौन्दर्य से घिरे हुए थे। ऊंचे-ऊंचे दूध से सफेद-धवल बर्फ से आच्छादित पर्वतों की मनोरमता का वर्णन सम्मुख खड़ी सुन्दर नवयौवना के समान था। जैसे कोई शायर एकांत में बैठ कर खूबसूरत, कल्पित, मोहिनी-कोमलांगी पर गज़ल लिखता है। या प्रण्य गीत लिखता है। परन्तु तन्वंगी के सम्मुख खड़े आ होने पर वही शायर उसके अनिंद्यहुस्न में खो जाता है। लेखन क्रिया में असमर्थ हो जाता है बस, वही हाल मेरा था।

हमारी गाड़ी ज्यों की झलान से नीचे रेंगती हुई उतरी, गुलमर्ग आंखों से धीरे-धीरे ओझल होने लगा था। दो मिंट बाद फिर गुलमर्ग पीछे छूट गया था। मेरा मन उदासी के आलम में आ गया था। मैंने हल्के से ठंडी आह भरी थी। ऐसा प्रतीत होने लगा था-जैसे वर्षों पश्चात् अपनी महबूबा के सारे दिन के मधुर मिलन पर, उसके आगोश से जबरदस्ती जुदा किया जा रहा हूं। मन गमगीन था। बाकी साथी आज के प्रोग्राम-गुलमर्ग, खिलनमर्ग, गोंडाला, शिव मन्दिर और सकीना के मिलन पर अपना-अपना मत प्रकट कर रहे थे। मेरे मानस झरोखे से सकीना का सुन्दर-सलोना मुखड़ा झांक गया था। मैं कल्पना की मानस-भूमि पर देख रहा खा-सकीना मन्दिर के सम्मुख हाथ जोड़े लोक

कल्याण हेतु मंगल कामना कर रही है। उसकी वन्दगी में कहे शब्द, हंसोड प्रकृति, खुले विचार व अपनत्त्व-भावना रह-रह कर याद आने लगी थी। मैं सोच रहा था- 'मैंने आज तक किसी हिन्दू-मुस्लिम स्त्री-पुरूष को ऐसी विनती,वन्दगी करते देखा सुना न था। प्रत्येक धर्म, मजहब, मिशन व सम्प्रदाय के ठेकेदारों ने अपने-अपने धर्म की रक्षार्थ अहमियत, घृणा-द्वेष की ऊंची-गगनचुम्बी दीवारें खींच दी हैं। परन्तु अवतारों, ऋषियों-मुनियों, पीर पैगम्बरों ने एक धर्म से दूसरे धर्म के प्रति घृणा की बात नहीं कही है। उन महान आत्माओं ने एक परमपिता होने की बात कही है। उन्होंने मानव-प्रेम, प्यार-मोहब्बत, मानव-सेवा, परमार्थ, कल्याण की जगह-जगह वकालत की है। प्राणी से लूट-घसूट, अत्याचार, बलात्कार, मासूम निर्दोष की हत्या वर्जित की है। इन बातों को पाप कहा है। अपराध की श्रेणी में रखा है। इन्सान को पाशविक प्रवृतियों से परे रहने, सदैव परहेज करने को कहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक मजहब की दूसरे धर्म से नफरत, नीचा दिखाना, घटिया, क्रूर, जाहिल, नीच प्रकृति के इन्सानों ने यह सब कुछ पैदा किया है। पाक-साफ इबादत-वन्दगी में धर्म के ठेकेदारों के मौज-मेले बंद हो जाते हैं। फिर गुलछर्रे नहीं उड़ाए जा सकते। लोगों को-सिर्फ मजहबी जुनून से ही लूटा जा सकता है। अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है। वही वह करते आ रहे हैं।

सन् 1990 से इस कश्यप ऋषि की साधना-स्थली पर मानवता को घायल किया जा रहा है। निर्दोष, नर-नारियों, अबोध बच्चों को गोली से मारा जा रहा है। यह कौन सा धर्म है? क्या बन्दूक की गोली हिन्दू-मुस्लिम को पहचान कर वार करती है? आततायी की सोच-गंदी और अंधी होती है। गोली तो अंधी होने के साथ बहरी भी होती है। वह किसी की चीखो पुकार नहीं सुनती। गोली का हृदय लोहे का बना होता है। उसके दिल में रहम नहीं होता। न सहानूभूति ही होती है। जम्मू कश्मीर के निर्दोष हजारों नर-नारियों, मासूम बच्चों का रक्त बहाया गया है। क्या यही है धर्म का, मजहब का सच्चा स्वरूप? क्या इसी खाक-खून के गंदे खेल से उग्रवादी खुदाबंद को खुश कर लेंगे? इन उग्रवादियों को कोई पूछे-क्या धार्मिक स्थानों की बेअदबी, उनको जला कर राख करना, निर्दोषों की हत्या करना, बहु-बेटियों की आबरू से खेलना क्या यही जेहाद है? काश! दरिंदे, काफिर, धर्म युद्ध लड़ने वाले, जिन्हें पाकिस्तान और उसका दम भरने वाले देश-कभी कुरान शरीफ का मानव-जाति के कल्याण और इन्सानी प्रेम का सन्देश पढ़ सकते-तो ऐसा जुल्मोसितम न करते। वह कान पकड़ कर रसूल-ए-पाक से अपने लिए गुनाहों को माफ करने को गिड़गिड़ाते। कुरान की आयत-सुरह अश-शूरा "बुराई का बदला उसी बुराई जैसा है। फिर जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है। निस्सन्देह वह जालिमों को पसन्द नहीं करता।"

वह पुनः ऐसा करने को दूसरे आततायियों को खबरदार करते। हिन्दू मुसलमानों में गहरी खाई खोदने में इन उग्रवादियों और हुर्रियत जैसी तंजीमों ने भरसक प्रयास किया है। परन्तु वह असफल रहे हैं। हिन्दू-मुसलमान आज भी जम्मू-कश्मीर में परस्पर में सुख-दुःख बांट रहे हैं। ख़ाक-खून का खेल निरन्तर जारी है। आज जम्मू कश्मीर में सकीना जैसी सोच, विचारधारा और इबादत-प्रार्थना करने वाले नर-नारियों की नितांत आवश्यकता है। भगवान करे-सकीना की इबादत उसकी दरगाह में कबूल हो जाए। सकीना जैसी पाक-साफ शख्सियतों की जरूरत है। उन खुंखार दरिंदों का स्वभाव-बस में बैठे बच्चों सा निष्कपट सरल-हृदय हो जाए। आततायियों के मन-हृदय में मानवीय वेदनाएं ओतप्रोत हो जाएं। वह खुद शांति से जिएं, औरों को भी जीने दें के संदेश का ढिंढ़ोरा गांव-गांव, गली-गली, नगर-नगर पीटतें फिरें। इतने में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लव कुमार ने पिछली सीट से बांह लम्बी करके मेरे कंधे को थपथपाते हुए मजाक में कहा-"यश अंकल तो सकीना को याद करते-करते उदास होकर बैठ गए हैं।" लव कुमार की बात सुनकर सभी साथी हा-हा करके हंसने लगे थे।

टैक्सी ढलान से सड़क पर दौड़ी जा रही थी। जगह-जगह सेना के जवान तैनात थे। ऊपर से नीचे ढलानों पर देवदार व चीड़ के घने जंगलों की हरित चदरिया बड़ा दिलकश और चिताकर्षक थी। उत्तर-पूर्व दिशा के पर्वत बड़े रमणीय लग रहे थे। दो-तीन स्थानों पर गाड़ी खड़ी करके प्राकृतिक दृष्यों के फोटो लिए थे। फौजी भाइयों से फोटो खींचे थे। हाथ मिलाए और हाल-चाल पूछा था। खुशी और आनन्द की बात यह थी-हमें सैनिकों से पूर्ण सुरक्षा, प्रेम और अपनापन मिला था। ऐसा अनुभव हुआ कि हम वर्षों से परस्पर में परिचित हैं। सैनिकों का हमारे साथ पलभर में ही घुलमिल जाना, यात्रा सम्बंधी दु:ख-तकलीफ के लिए पूछना इस बात का प्रमाण था कि वह हमारी सुरक्षा, श्री अमरनाथ यात्रा की सफलता हेतु कितने चिंतित थे। मुझे पहली बार अनुभव हुआ-भारत वर्ष में नाना प्रांतों, जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों,रीति-रिवाजों, भाषा-बोलियों के होते हुए भी-अनेकता में एकता विद्यमान है। सैनिकों से मिले प्रेम व अपनेपन से वह पराए नहीं-अपने से मालूम हुए थे। वह प्राणों को हथेली पर रख कर-निशि प्रात: श्री अमरनाथ यात्रियों की यात्रा को सफल बनाने हेतु बीहड़ जंगलों, सुनसान पहाड़ों की चोटियों पर, मार्गो पर मोर्चे संभाले बैठे थे। तभी तो सैनिकों के सम्मान और कर्त्तव्य निष्ठा पर कविता लिखी थी-

ओ भारत के सजग प्रहरी
शत-शत बार नमन करूं।.........।

सुनसान ,सायं-सायं करते घने जंगलों के हृदय को चीरती हुई हमारी गाड़ी चली जा रही थी। ड्राइवर ने टेप लगा दी थी। मोहम्मद रफी का चिरपरिचत गीत बजने लगा था-

'चलो इक बार फिर से,अजनबी बन जाएं हम दोनों......।

श्री नगर पहुंचे तो मेरे साथी थक गए थे। भूख भी लग आई थी। सैलानी साथियों का विचार था कि मुगल गार्डन्स देखे जाएं। सूर्य अस्त होने को था। ऐसा माना जाता है कि मुगल गार्डन्स कश्मीर की रूह हैं। कश्मीर मुगलबादशाहों की सबसे पसंदीदा जगह रही थी। इन बागों में गगनचुम्बी चिनार व चीड़ के वृक्ष असंख्य रूप में लगे हुए हैं। बागों में सुगन्धित फूल, फूलों से लदे हुए पौधे तथा बहुरंगी फव्वारे बरबस पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

राकेश कुमार ने ड्राइवर को शालीमार बाग देखने के लिए गाड़ी उस तरफ ले जाने को कहा था। कुछ देर के पश्चात् अशोक दीवाना ने गाड़ी शालीमार बाग के सामने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगा दी थी। लव कुमार नींद के कारण गाड़ी में ही लुढ़क गया था। राकेश कुमार और पवन कुमार उसे प्यार से 'ताखो' जिसके वर्णों को उलटाने पर 'खोता' यानि गधा बनता था। लव कुमार का नींद में मुंह खुल गया था। दौलतराम उसके खुले मुंह में टाफी डालने लगा था। परन्तु नरेश कुमार ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया था।

चाय की दुकान पर बैठ कर सभी ने बिस्कुट और गरमागरम पकौड़ों के साथ चाय पी थी। घर पर सभी साथियों ने फोन करके अपनी कुशल-मंगल का समाचार दिया था। परन्तु मेरा फोन घर पर न मिला था। मेरा मन थोड़ा उदासी से भर गया था।

घर पर हम दोनों मियां-बीबी कभी बैठते या मैं ससुराल घर श्रीनगर में आया होता तो अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा या सालियों से हब्बा खातून का नाम सुना करता था। कश्मीर रेड़ियो पर हब्बा के गीत सुना करता था। एक बार पूछने पर श्रीमती पुष्पलता ने हब्बा खातून के बारे में बड़ी लम्बी चौड़ी जानकारी दी थी। जो इस तरह थी-''प्रकृति की इस मानस पुत्री ने जहां समस्त संसार को अपनी नैसर्गिक तथा अप्रतिम शोभा-सुषमा से चकित किया। वहां अपने मानसिक उबाल के माध्यम से साहित्य के हर अंग में नये अध्याय जोड़ दिए हैं। इतना ही नहीं, विश्व के तीन बड़े धर्मों ने इसे अपनी प्रयोगशाला बनाया है। जन जीवन में बौद्धों की करुणा, हिन्दुओं की सहिष्णुता तथा मुसलमानों की एकनिष्ठता का समो जाना स्वाभाविक है। आजकल कश्मीर में चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, संस्कारवंश उसमें तीनों गुण घुल मिल गए हैं।

जब हब्बा खातून के स्वभाव-कोमल काया ने आंखें खोलीं, तो उस समय तक अध्यात्म की यह संगीत-लहरी बासी हो चुकी थी। जीवन के प्रति मूल्यों और अवस्थाओं नें युगान्तर आ चुका था। अतः इस भाव प्रवण कवयित्री ने प्रचलित लीक पर न चलते हुए, कश्मीरी काव्य को एक स्वस्थ और प्राणवान दिशा दी। इसने 'जगबीती' के स्थान पर 'आपबीती' को मुखरित किया। भाव विह्वल हब्बा खातून ने ऐसे करुणा-मधुर काव्य का सृजन किया जो स्वयं में ही अपना उदाहरण है- इसलिए हब्बा खातून को कश्मीरी रोमान-गीतों की जननी कहा जाता है। कश्मीर का अन्तिम देशीय शासक 'युसूफशाह चक' भोग और विलास की प्रतिमूर्ति था। उसके शीशमहलों में कामुकता का नग्न नृत्य हो रहा था। परन्तु प्रजा दो जून भोजन को तरस रही थी। मुगलों ने इस नालायक शासक की विलासप्रियता और उसकी बिलखती जनता के आर्थिक शोषण से लाभ उठाकर छल और बल से युसूफ के शीश महलों को धराशाही कर दिया था। राजनैतिक वातावरण विषाक्त होने लगा था। मुसलमानों की एक जाति 'शियों' ने 'सुन्नियों' पर जुल्म ढाने शुरू कर दिए थे। स्वयं मुसलमान जातिवाद हिंसक रूप ले रहा था। सन् 1576 ई में में हिमवर्षा के कारण कश्मीर में तीन वर्ष तक अकाल रहा था। इस समय गम, पीड़ा को भुलाने के लिए हब्बा ने प्रेम और अनुराग के गीत गाए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वप्रथम पंडित बीरबल काचरू ने हब्बा के बारे में उल्लेख किया कि युसूफशाह हब्बा खातून नाम की प्रेयसी से बहुत लगाव रखता था। हब्बा खातून के पूर्वज पांपुर के पास 'चन्द्रहार' गांव के रहने वाले थे। जब वह व्यस्क हुई तो उसका विवाह अपने ही वंश में किया गया था। कुछ समय बाद वह कश्मीरी में गीत गाने लगी थी। उसके ससुराल वालों ने उससे दु:खी होकर घर से निकाल दिया था। राह में जाते युसूफशाह के कर्मचारियों ने उसे पकड़ कर राजा के पास ले गए। उसके रूप-लावण्य और संगीत कला पर मुग्ध होकर उसे 'सहवास' से नवाजा। हब्बा खातून का मायका खाता-पीता घराना था। हब्बा खातून लिखती हैं:-

मालिनी म्येनिय अर्बाब आसिय।
तवय द्राम हब्बखोतून नाव।
कम कस गोंदर आयेयि चसिथ,
दोह हरियासुत लूसित गोम।

"मेरे मायके वाले इस समय के सामन्त थे। इसलिए मेरा नाम हब्बा खातून पड़ा। क्या कहूं-मुझ पर नौजवान जान छिड़कते थे। परन्तु वह दिन अब ढल चुके हैं।"

कुलीन गृहस्थी की तरह उसकी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध भी किया गया था:-

सिपाह त्रिह मरि परिम यख आनो,
फेरि न कुनि गोम ज़ेरि ज़बेर।
अश्कुन खत परून कासि अख आनो,
चे क्यहो वातियो म्यानि मरनय।

"मैंने कुरान शरीफ के तीस सिपारे एक साथ ही पढ़ डाले और उन्हें दुहराने में-ज़ेर' या-ज़बर' का अन्तर न आया। प्रेम-पत्र किसी से एक बार पढ़ा न गया। मुझे हे प्रीतम, मेरे मरने से तुझे क्या मिलेगा?"

हब्बा खातून अपने पति के नाम का उल्लेख इस प्रकार व्यंग्य में करती हैं-

म्यहो कडच्य कित्य फम्ब मोयान्द,
हा "अज़िज़ि" "जूनि" मा रोश।
खोतूनि पूरिय पूरी सामान्य,
छाव म्याऽन्य दानै पोश।

"मैंने तुम्हारे लिए कठिनतर खोज की। एक अजीज, अपने चांद से मत रूठो। मैंने सोलह श्रृंगार किए हैं। आओ मेरे अनार फूलों के समान यौवन को लूट लो।"

हब्बा की तरह लाखों महिलाओं ने प्रताड़न को गाय की तरह सहन किया होगा। परन्तु वह हब्बा की तरह घर से भागी नहीं। हब्बा ने अपने दर्द को मधुर-करुण भाषा का बाना पहनाया और उस निरीह नारियों का भी प्रतिनिधित्व हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लौकिक प्रेम प्रधान गीतों का श्रीगणेश कश्मीरी साहित्य में हब्बा के द्वारा हुआ था। उसका 'लोल' असल में लौकिक प्रेम का प्रतीक है। इन्द्रिय सुख के प्रति हब्बा में कभी अरुचि पैदा नहीं हुई। वह भोग प्राप्ति के लिए तैयार रहती है। वह हर समय अपने प्रियतम को अपने शारीरिक आकर्षण से पाना चाहती है-

दोद हरि रूप तन मलय
म्य च्यान्य कल गनेयम।
चन्दन वानि बो तन छलय,
लालो कलु आलवय।

''मैं अपने रूपहले तन पर उबटन मलूंगी। मुझे तुम बिन चैन नहीं आता। मैं चन्दन के पानी से अपना शरीर धोऊंगी। हे प्यारे! तुम पर मैं अपना सिर न्योछावर करूंगी।''

हब्बा का यह करुण-मधुर विलाप वास्तव में कश्मीरी नारी की युग-युग की प्यास का पद्यात्मक अनुवाद है। और जब तक कश्मीरी ललना अपने अतीत से जीवन-श्वास ग्रहण करती रहेगी, तब तक हब्बा खातून के गीत उसकी धड़कनों के साथ एक स्वर होते रहेंगे।

सम्भवतः इसी भाव से प्रेरित होकर स्व. महजूर ने अपने पद्य में स्व. रसूलमीर को उलाहना देते हुए हब्बा की गरिमा का आभार किया-

''शाहबादि रसूलमीर याद करान चन्द्रहारिच जून।''
तमिस क्याजि छ्युन च्येतस प्यावन चन्द्रहारिच जून।''

''रसूल मीर शाहबादी अपने काव्य में बार-बार चन्द्रहार के चांद को याद करता है। (उसकी उमपायें बांधता है) उसे क्यों चन्द्रहार की जून (चांद) उपमायें नहीं आतीं।''

अकबर बादशाह ने सन् 1585 ई में कश्मीर पर अधिकार किया था। और युसूफशाह को बंदी बना कर बंगाल भेज दिया था।

शालीमार के इस बाग को बादशाह जहांगीर ने अपनी बेगम नूरजहां के लिए सन् 1605 से 1627 में बनवाया था। यह बाग श्रीनगर से 15 कि.मी. दूरी पर स्थित है। बाग के मध्य भाग में चिकने पत्थरों से नहर बहती हुई ऊपर से नीचे छोटे-छोटे जल प्रपात बनाती है जो सैलानियों को मंत्र मुग्ध कर लेती है। इस बाग में कई तरह के फूल एवं फूलों की क्यारियों एवं फलों के पौधे लगाए गए हैं। यहां चिनार के पेड़ों की लम्बी कतारें पर्यटकों को अपनी ओर आर्कषित करती हैं। प्रतिदिन यहां लाईट और साऊंड प्रोग्राम का आयोजन होता है। शालीमार बाग में एक चिनार के पेड़ की उम्र 400 वर्ष और दूसरे चिनार के पेड़ की आयु 380 साल बताई गई है। भीमकाय इन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनार के पेड़ों पर उम्रदराजी की लोहे की प्लेट पर बड़े अक्षरों में लिख कर इन पर लगाई गई हैं। इन दोनों वृद्ध चिनार वृक्षों ने कश्मीर के नानाविध परिस्थितियों को अपनी आंखों से घटते हुए देखा है। अतः यह चिनार वृक्ष कश्मीर के इतिहास के चश्मदीद गवाह के रूप में खड़े हैं।

मेरे सभी सैलानी साथी इस बाग की पुरातनता, भव्यता और रमणीयता को देख कर हश-हश कर उठे थे। रात्रि के नौ बज गए थे। किसी भी मेरे साथी का मन शालिमार बाग से उठ कर जाने को तैयार न हो रहा था। सैलानियों की अपार भीड़ थी। देश-विदेश से आए यहां नव विवाहित जोड़े, नन्हें-मुन्हें बच्चे, नर-नारी इस बाग के सौन्दर्य से आनन्द में अभिभूत हो रहे थे। अंत में हमारे यात्री दल के मुखिया के सख्त आदेश पर सब को उठ कर गाड़ी में बैठना पड़ा था। ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी स्टार्ट कर दी थी। डल झील के किनारे चलती हुई गाड़ी निशात-हार्बन रोड़ से डल गेट के समीप उस घाट पर आकर रुक गई थी, यहां हमने नये हाऊस बोट में रात्रि व्यतीत करनी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोनालीसा हाऊस बोट में ठहरना, खन्ने वाले सैलानियों से परिचित होना और फिल्म 'आरज़ू' का कमाल करना

नौ साथियों का समूह-डल झील के किनारे सीमेंट के बने घाट पर बैठ गया था। हमारे दाईं ओर बैठे कुछ शिकारे वाले गप्पें हांक रहे थे। बीड़ियां फूंक रहे थे। दो तीन शिकारे वाले आकर हमारे समीप खड़े हो गए थे। राकेश कुमार ने एक शिकारे वाले से 400 रुपये में आठ यात्रियों के ठहरने का इन्तजाम कर लिया था। शिकारे वाले को एक ही बात कहा गई थी-'हाऊस बोट निहायत बढ़िया होना चाहिए। उसमें हमें रात्रि काल को हर-सुख सुविधा मिलनी चाहिए।''

''आप को हाऊस बोट को पसन्द न आए तो बाबू जी इसी घाट कर उतार दूंगा। आप मुझ पर इतबार करके देखिए।'' विश्वास दिलाते हुए शिकारे वाले ने राकेश कुमार से कहा था। तीन शिकारों पर हम नौ जने बैठ गए थे। छप-छप-छप-छप करके चप्पू डल झील के पानी में चले जा रहे थे। राकेश कुमार और दौलत राम फोटोग्राफी करने लगे थे। कुछ लम्हों में शिकारे वालों ने हमें नये हाऊस बोट पर उतार दिया था। हाऊस बोट के सामने वाले भाग को आंगन नुमा बनाया गया था। हाऊस बोट का नाम था ''मोनालीसा''। हाऊस बोट के आंगन में रंग-बिरंगे फूलों के गमले लगे हुए थे। बैठने को वहां कुर्सियां सजाई गई थीं। हम नौ जने कुर्सियों पर आकर बैठ गए थे। यह डल झील का कोई हाऊस बोट न होकर हिन्द महासागर का कोई लंगर डाले समुद्री जहाज जैसा लग रहा था। भारी, लम्बा व विशालकाय। कुछ साथी कुर्सियों से उठ कर हाऊस बोट के अन्दर आ गए थे। मैं भी कुर्सी से उठ कर उनके पीछे हो लिया था। देखा-हाऊस बोट के अन्दर सुन्दर, कीमती, रंग-बिरंगे, निहायत बढ़िया कालीन बिछे हुए थे। हर कमरे को सुन्दर ढ़ंग से सजाया-संवारा गया था। हर कमरे में डबल बैड लगे थे। कमरों में टी.बी. फ्रिज, वीसीआर बगैरा -बगैरा सभी कुछ था। हाऊस बोट में रसोई घर अलग बनाया गया था। पिछले कल वाले हाऊस बोट और इस बाऊस बोट में जमीन-आसमान का अन्तर था। कल वाला हाऊस बोट किसी सादमुरादी स्त्री जैसा था। बिना श्रृंगार-बनावट के। परन्तु यह 'मोनालीसा' नाम का हाऊस बोट-किसी शाही घराने की नवोढ़ा दुल्हन जैसा था। जिसके बनाव-श्रृंगार में कोई कोर-कसर न रखी गई थी। इस हाऊस बोट को देख कर मैं हश-हश कर उठा था। हमारे सम्मुख दूसरे बोटों की रंग-बिरंगी रोशनियां जल रही थीं, जिनकी परछाई डल में प्रतिविम्बित होकर नृत्य कर रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे हाऊस बोट के पश्चिम की बगल में एक बहुत बढ़िया हाऊस बोट पर तीन लड़के लॉन में बैठे हमारी ओर देख रहे थे। उन्होंने हमें हाथ के संकेत से अपने पास बुलाया था। अशोक कुमार को हाऊस बोट पर छोड़कर-शेष आठों मित्र उनके पास चले गए थे। उनके हाऊस बोट का नाम था-'गुलफाम'। वह खन्ना(पंजाब) से आए थे। उनसे बातचीत करने पर पता चला कि वह अमरनाथ यात्रा के तीर्थ यात्रा न होकर केवल सैलानियों के रूप में-घूमने फिरने और मौज-मस्ती करने को घर से निकले थे। वहां उनकी तरफ से मेहमान नवाजी में कोका कोला और बिस्कुट-नमकीन परोसा गया था। उन तीन युवकों में से जिसका नाम-अरुण कुमार था, उसका आज जन्मदिन था। अरुण कुमार ने हमें बताया कि उसने बी.कॉम करने के पश्चात् एक सी.ए से एकाऊंटस का काम दो वर्ष से सीख रहा है और उसे चौदह-पन्द्रह हजार रुपये प्रति माह मिल रहे हैं। अरुण कुमार सूरत से काला, मरियल सा था। परन्तु चुस्त स्मार्ट बहुत था। उन्होंने आज की रात्रि में अरुण के जन्म दिन पर रंगारंग प्रोग्राम करने की अनुननय विनय की थी। अंधे को और क्या चाहिए था-दो आंखें। सुनकर लव कुमार उछल पड़ा था। बोला-"भा जी अज तां मजा आ जाऊगा। नच्चांगे बुक्का मार के। भा जी गाऊन पानी खूब होएगा। डिंग-लक-डिंग-लक।" ताली बजाते हुए लव कुमार ने कहा था। हम उसके मजाकिया अंदाज पर खिलाखिला कर हंस पड़े थे।

मैं सोचने लगा था-'जहां पर चार पंजाबी इकट्ठे होंगे-वहां तो गाना-बजाना, फड़ें फुकरियां, शिव कुमार बटालवी, हीर रांझा, मिर्जा साहिबा और बारिश शाह की हीर पर कुछ-न-कुछ तो चर्चा होगी। सोचते-सोचते मेरे होठों पर मंद-मंद हास्य रेखा खिंट गई थी। राकेश कुमार मेरी ओर देख कर बोला-"क्यों शर्मा जी, आप किस बात पर हंस रहे हो?"

मैंने उसे टालते हुए कहा-"कुछ नहीं। बस यूं ही, तुम सब को खुश देख कर मुस्करा रहा हूं।"

"नईं जी गल्ल कोई होर बै। तुसीं न दस्सो।" कहा पंजाबी भाषा में दौलत राम ने।

"ओए अपना यश पाल शर्मा अंकल बड़ा मीसना है। इहतां टिड्ड दी गल्ल मूहों बाहर नहीं कडदे, अन्दरो-अन्दर घोट के पी जांदे ने।" कहा लव कुमार ने।

"ओए बजुर्गां नूं नईं इवें गल्ल कहीदी, ताखो(खोता-गधा) वे अकलिया।" कहा राकेश कुमार ने।

"नां भा जी न, अपने शर्मा जी नूं बजुर्ग न आखो। ओए असा इहनां दा अज्ज घोड़ी चढ़ा कीता ए। बारात झील विच्च ठहरी होई ए। ओए कुड़ी वाले मिलनी दा कंबल चुक्की आऊंदे होणगे।" पवन कुमार ने कह कर एक बाजू मेरे कंधे पर रख दी थी। सुन कर सभी हा-हा करके हंसने लगे थे। परन्तु खन्ने वाले हंसी में लोट-पोट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो रहे थे। वह अपनी हंसी पर संयम न रख पा रहे थे। क्योंकि एक तो सभी कुंवारे छोकरे थे, हंसोड़ स्वभाव के और दूसरी उन्होंने थोड़ी-थोड़ी दारू पी रखी थी। लोर में हा-हा-ही-ही करके हंस रहे थे।

अरुण कुमार के जन्मदिन का जश्न मनाने को रात्रि नौ बजे का प्रोग्राम तय हुआ था। दोनों टोलियां खा-पी डकार लेने लगी थीं। सबको मौज मस्ती की हुडक लगी हुई थी। पंजाबी में कहावत है-''रहा चलते बाप बेटा यार होते हैं।''

कोई हाऊस-बोट के इस कोने में तो कोई उस कोने में शे'र, गीत, भजन मन ही मन दोहरा कर उसकी तर्जें गुनगुना रहा था। गुरदासपुरिए बार-बार अपनी कलाई घड़ी देख रहे थे। नौ बजने को न आ रहे थे। परन्तु उन्हें अपनी कला प्रदर्शन करने का बड़ा शौक और प्रतीक्षा थी। वह अपने फन के दो-दो हाथ करके दिखाना चाहते थे। पवन कुमार और रोहित कुमार सरकारी कर्मचारी थे। बाकी चार जने दुकानदार थे। यह तीनों ही बड़े कंजूस, एक दूसरे का सिर मूंडने वाले थे। हसरत और काईयां किस्म के थे। ग्राहकों को मीठी-मीठी बातों के तिलस्मी जाल में फंसा कर ,उल्लू बना कर लूटना, कोई खाला का घर नहीं-बहुत बड़ी कला है। इस कला में तीनों मंजे हुए, शातिर खिलाड़ी थे। परस्पर में बहस करते हुए, दलील पेश करके ऐसे प्रतीत होते-मानों किसी नामी-गिरामी अदालत के रोज मर्रा में मुकद्दमे जीतने वाले वकील हों। पवन कुमार, रोहित कुमार-इन तीनों खुर्राट जनों के पड़ोसी और मित्र थे। वह दोनों सरकारी कर्मचारी भी इन तीनों से रत्तीभर कम न थे। बल्कि चार रत्ती होशियारी और कंजूसी में ऊपर थे। कोई चीज खरीदने को जेब में हाथ डालकर पैसे निकालने का नाटक करते, परन्तु हाथ खाली ही बाहर आता। क्या मजाल जो रुपया-टका जेब से बाहर निकालें। जान न निकल जाए। चमड़ी जाए, पर दमड़ी न जाए। हां, बातों की चटनी खूब चटाते। जैसा गोल गप्पा मुंह में रखने पर दांतो तले ठुस्स हो जाता है,पेट नहीं भरता। बस,इन्हें वैसे ही निरे खाली, भुरभुरे गोल-गप्पे ही समझो। वह अब जमने वाली महफिल अखाड़े में उतरने वाले कलाकार थे। मैं उनकी मुखमुद्राओं को जांचता तो जी भर कर खिलखिला कर हंसने को मन करता। मैंने अपनी गंभीरता व संयम की चादर से हंसी को ढांप रखा था।

अशोक कुमार ने पूछा-''चाचा जी! लगता है-गुरदासपुरियों के पेट में चार शे'रों, गीतों ने मरोड़ पैदा कर रखी है। भगवान भला करें खन्ने वाले छोकरों का जिन्होंने अपनी भड़ास निकालने का मौका दे दिया। नहीं तो सारे बीमार हो जाते। इनकी कला की गैस अन्दर ही अन्दर बड़ा नुकसान करती। रोटी हज्म न होने देती। ऐसे लगता है-गुरदासपुरिए किसी अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में अपनी कला के जौहर दिखाने जा रहे हों। इनमें से किसी के भी पैर जमीन पर नहीं टिक रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह इनके कलाम की तस्वीरें लगभग सभी अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी अखबारों में छपेंगी।'' मैं अपनी हंसी दबाकर रखना चाहता था। परन्तु भतीजा साहिब मुझे हंसाने पर अमादा थे।

अशोक कुमार लव कुमार की तरफ इशारा करके बोला-''यह साला तो गधे की तरह हुंआ-हुंआ कर सकता है। कुश्ती-कबड्डी तो खेल सकता है। भला यह क्या जाने सुर-संगीत का सुर-ताल और आरोह-अवरोह का ज्ञान।''

फिर 'पवन कुमार की ओर संकेत करके बोला-''यह मुंह-मुन्ना सा भी तलत महबूब बनने चला है।'' मैंने अपनी हंसी को उसके गले की शाह-रग पर अंगूठा रख कर दबाए रखा था। मेरा हाथ हंसी से उठ गया था। मैं ठहाका मार कर हंस पड़ा था। अशोक कुमार भी मेरे साथ हंसने लगा था। हमारी हंसी को सुनकर पूरा गुरदासपुरी टोला घेर कर खड़ा हो गया था। जैसे लंका में रावण के दरबार में अंगद को सुरक्षा कर्मियों और दरबारियों ने घेरा था, वैसे ही इन्होंने चांचे-भतीजे को घेर रखा था।

राकेख कुमार बोला-''चाचा भतीजा हंसे जा रहे हो,माजरा क्या है?''

''माजरा तेरी गोगड़ का है। पहले अपनी गोगड़ (तोंद) तो संभाल।''

अशोक कुमार का इतना ही कहना था कि सबकी हंसी का फुव्वारा फूट गया था। कुछ देर के बाद वह सारे हाऊस बोट के अन्दर कमरे में सिर हिला-हिला कर गानों की रिहर्सल करने लगे थे। बार-बार हाऊस बोट की खिड़की खोल कर देखते कि खन्ने वाले अभी यहां आने को हाऊस बोट से निकलते है या नहीं। परन्तु खन्ने वाले छोकरे-शराब में टुन्न हुए अभी पैग पिए जा रहे थे। आखिरकार पवन कुमार और रोहित से रहा न गया था। दोनों शिकारे पर बैठ कर खन्ने वालों को उनके शिकारे से लेने को चले गए थे। मैं हाऊस बोट के कमरे से निकल कर बाहर लॉन में आकर खड़ा हो कर अपने सम्मुख और दूर दूर तक ख़डे हाऊस बोटों को निहारने लगा था। आर्कषक, अकथनीय और मायावी सा दृष्य था। प्रत्येक हाऊस बोट एक सजी-संवरी नव विवाहित दुल्हन सा मालूम हो रहा था। ठीक इसी समय दूर से रेडियो पर बज रहे गाने की आवाज आ रही थी। फिल्म 'आरजू' का गीत मोहम्मद रफी के स्वरों में गाया जा रहा था-

'ए नरगिसे मस्ताना,
बस इतनी शिकायत है,बस इतनी शिकायत है।
समझा हमें बेगाना,
बस इतनी शिकायत है, बस इतनी शिकायत है।.....

मैं याद कर रहा था कि अपने वक्त की फिल्म 'आरजू' निर्माता व निर्देशक-रामानंद सागर की सुपर हिट फिल्म थी। युवक-युवतियां ने इसे सैकड़ों बार देखा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौजवान इस फिल्म को देख कर दीवाने-मस्ताने हो गए थे। जिस भी शहर में फिल्म 'आरज़ू' किसी सिनेमाघर में लगी-टिकटों की अडवांस बुकिंग हो जाती थी। धडल्ले से टिकटें ब्लैक में बिकती थीं। घर-घर, गली-गली, शहर-कस्बों के मोहल्लों में इस फिल्म के सुपरहिट हीरो-जुबली कुमार (राजेन्द्र कुमार) और अभिनेत्री -साधना की हिट जोड़ी ने नौजवान लड़के-लड़कियां की तो बात और थी, अधेड़-बूढ़ों के इश्क-मोहब्बत के चिर बुझे शोलों को इश्क की रंगीन हवा दे कर भड़का दिया था। फिल्म 'आरज़ू' में राजेन्द्र कुमार, साधना ने प्यार की रंगीन-जज्बाती कहानी, हुस्न, नजाकत, हास्य अभिनेता महमूद के रोल ने-ऐसी रंगीन दिलकश अदाकारी की थी-जिस ने इस फिल्म को कामयाबी की हदों से ऊपर उठा दिया था। फिल्म में हरेक की अदाकारी ने अपनी अदाकारी के जौहर दिखाए थे। मानो इस फिल्म ने वक्त के रथ को थाम लिया था।

धरती के स्वर्ग-गुलमर्ग में इस फिल्म की शूटिंग की गई थी। जिसने फिल्म की मनोरंजकता और सुन्दरता को चार चांद लगा दिए थे। हास्य अभिनेता-महमूद के हास्य रोल ने फिल्म को मजेदार बनाने में कोई कोर कसर न छोड़ी थी। फिल्म समाप्त हो जाती। स्क्रीन पर '.दी एंड' आ जाता। थियेटर में रोशनियां जगमगा उठतीं, परन्तु दर्शकों के मन की बत्तियां बुझ सी जातीं। फिल्म देखने से जी भरा न होता। उनका जी करता-फिल्म दोबारा शुरू दो जाए-और देखते रहें, बस देखते ही रहें। वक्त थम जाए। सूर्य का रथ यथास्थान पर बना रहे।

इतने में शिकारे हमारे हाऊस बोट के साथ आकर लग गए थे। तीन जने खन्ने वाले और दो हमारे सैलानी टोले के -कुल पांच प्राणी हाऊस बोट की सीढ़ियां चढ़ कर लॉन में आकर खड़े हो गए थे। तभी रोहित कुमार ने मुझे आवाज दी थी-''यश अंकल जी! लो खन्ने वाले भा जी आ गए हैं।'' सुनकर मेरी विचार श्रृंखला भंग हो गई थी।

मेरे मुंह से सहसा निकल गया था-''बहुत अच्छा हुआ। खुशआमदीद।''

जिस कुंवारे लड़के का आज जन्म दिन था, नाम तो उसका अरुण कुमार खन्ना था। परन्तु लाड प्यार से उसे घर में राजू पुकारा जाता था। रोहित कुमार और पवन कुमार राजू के आगे-आगे, दो खन्ने वाले छोकरे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे किसी बड़े भारी रौबताब वाले नेता को सुरक्षा के बीच ले जाया जाता है। हम ऐसा भी सोच सकते हैं-मानो सद्यः नव विवाहित दुल्हन को उसकी ननदें, देवरानी, जेठानियां अपने साथ लेकर सुहागरात मनाने वाले कमरे में उसके सुगंन्धित फूलों की लड़ियों से सुसज्जिज पलंग पर छोड़ने जा रही हों।'

अशोक कुमार दबी हंसी में हंस रहा था। राजू की अगुवाई जिस अंदाज से की जा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थी, उसे देख कर मुस्कुराने-गुदगुदाने से मैं भी न रह सका था। खन्ने वाले लड़के खाने-पीने का सामान अपने साथ ले कर आए थे। हाऊस बोट में बने बरामदे में हम सभी बारह पंजाबी जनों का समूह कुर्सियों और सोफे पर बैठ गया था। राजू के जन्म दिवस की खुशी में केक काट कर, सब का मुंह मीठा करवाया गया था। हम सब साथियों ने उसे गले लगा कर आगामी जीवन के लिए ढेरों शुभकामनाएं व बधाई दी थी।

इसके पश्चात् खन्ने वालों ने शराब के दो-दो जाम पीने का अनुरोध किया था। परन्तु राकेश कुमार ने 'श्री अमरनाथ यात्री' होने के कारण, राजू का अनुरोध स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। बाकी किसी को भी इस विषय पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाऊस बोट में खन्ने वाले नवयुवक मि. राजू के जन्मदिन पर महफिल सजा कर शे'र, और गीतों से आनन्द लूटना

हाऊस बोट का मालिक हसन अली हमारे मध्य में आकर बैठ गया था। वह भी इस जमने वाली महफिल का आनन्द लूटना चाहता था। हसन अली का स्वभाव प्रेमी, मेलजोल और खुले विचारों वाला था। खन्ने वालों के शराब के जाम मांज-तांज कर वह ले आया था। जाम वाले गिलासों में कोका-कोला भर कर सब को दिए गए थे। फिर इन गिलासों को टकरा कर 'चीअर्स' का नाटक बड़े रईसआना अंदाज में करके पीने लगे थे। गुरदासपुरी टोला बड़े चस्के लेकर जाम (कोक) पी रहे थे। खन्ने वालों ने पवन कुमार से कहा-"भा जी कोई नच्चन गाऊन दा जुगाड़ कर दिओ। ऐवें ई सुस्ती पाई होई ए।" नरेश कुमार ने सुनकर पंजाबी गानों की टेप लगा दी थी। गीत के शब्द थे-"खाओ पिओ ऐश करो मित्रो, दिल पर किसे दा दुखाईयो न.....।

मुझे और भतीजे अशोक कुमार को छोड़ कर बाकी सभी कमर मटका कर, हाथ हिला कर नाचने लगे थे। बब्बलियां, चांगरा मारने लगे थे। पंजाबियों ने ठाठ बांध दिया था। लव कुमार को नाचने न आ रहा था। वह बूढ़े रीछ की तरह थुल-थुल कर रहा था। हम दोनों चाचा-भतीजा की लव कुमार को देख कर हंसी न थम रही थी। पेट में दर्द होने लगा था। हंसते-हंसते आंखों में आंसू भर आए थे। मैंने उठ कर सौ रुपये का नोट सब के सिर पर बांरडा करके, अपने गांव बहादुरपुर की मरहूम नाइन-चाची लाजो की तरह अपनी जेब में रख लिया था। लव कुमार ने नोट हथियाने की गर्ज से झपट्‌य मारा था। परन्तु नोट हाथ न लगा था। भला हमने भी कोई कच्ची गोलियां जिन्दगी में न खेली थीं। वह शर्मिंदा सा होकर ही-ही-ही-ही कर हंस पड़ा था। थक कर सभी बैठ गए थे। रूमाल, तौलिए से पसीना पोंछने लगे थे। सभी दस-पन्द्रह मिंट के लिए खामोश हो कर बैठे रहे।

दौलत राम ने उठ कर पंजाबी की दूसरी टेप लगा दी थी। टेप बजने लगी थी-

नीं नाग सांभ लै जुल्फां दे,
कोई कील,पिटारी लै जाऊगा।
नीं नाग सांभ लै जुल्फां दे,
तेरी जान नूं खतरा पै जाऊगा
नीं नाग सांभ लै जुल्फां दे,........।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बार गुरदासपुरी टोले ने हसन अली समेत सब को नाचने वाली महफिल में शामिल कर लिया था। हसल अली बहुत बढ़िया नाचने लगा था। नाचते-कूदने का प्रोग्राम पन्द्रह-बीस मिन्ट तक चलता रहा था। फिर सभी बैठ गए थे। खन्ने वाले बड़े खुश नजर आ रहे थे।

अब गीत-संगीत, शायरो-शायरी का दूसरा दौर आरम्भ होने वाला था। मैं हाऊस बोट के कमरे में बिछे हुए कालीन की कढ़ाई-बुनाई की ओर बड़ी पैनी दृष्टि से निहार रहा था। कश्मीरी गर्म शालों और गलीचों पर मंजे हुए कारीगरों की कढ़ाई-बुनाई विश्व-विख्यात है, जिनका कोई सानी नहीं है। यद्यपि मशीनी युग ने हस्तकरघा को गहरी चोट पहुंचाई है। परन्तु इन कारीगरों की हस्त शिल्प कला का जादुई कमाल का लोहा सबने माना है। कालीन पर बेल-बूटे और रंगीन धागों का संगम अनूठा है। गलीचे को देख कर मेरा मन मयूर माच उठा था। इतने में हमारे यात्री दल के सर्वेसर्वा राकेश कुमार ने घोषणा की-"आज के इस रंगारंग प्रोग्राम का शुभारम्भ हमारे पूज्य बजुर्ग श्री यशपाल शर्मा के मुखारविन्द से होगा।" अध्यापक का बेटा होने का गर्व राकेश कुमार को था। यद्यपि सरकारी सेवा में उसका पिता श्री उसे अध्यापक या और किसी सरकारी पद पर आसीन न करवा सका था। परन्तु समय व परिस्थितियों के मुताविक उसे शब्दों का चयन व उसका प्रयोग करने का हुनर बाखूब आता था।

मैंने सब उपस्थित साथियों को सम्बोधित करते हुए कहना आरम्भ किया-"प्रिय बन्धुओ! आज का दिन हम सब के लिए हर्ष का विषय है कि पंजाब प्रांत के अलग-अलग छोर पर रहने वालों को मिल-बैठ कर खाने-पीने, विचार सांझे करने और खुशी बांटने को वक्त मिला है। मैं अपनी व अपने साथियों की तरफ से मिस्टर राजू को उसके जन्मदिन पर लाखों बार हृदय की गहराइयों से बधाई देता हूं। साथ-ही-साथ उसके आगामी जीवन हेतु स्वास्थ्य, धन, हरिनाम, शोहरत, देश सेवा, परमार्थ सेवा व बजुर्गों का शुभाशीर्वाद मिलते रहने की मंगल कामना करता हूं।" इस पर सभी ने खूब तलियां बजाई थी। फिर मैंने अपनी सद्य काव्य रचना को लयबद्ध गाना शुरू किया था। कविता के शब्द थे-

ऐसा मन मीत हो,
अमर मेरी प्रीत हो।
जीवन की राह में,
प्रेम की जीत हो।।
चांद सा प्यारा हो, बाल सूर्य न्यारा हो।
कमल बिकसे नयन हों,शबनम दुलारा हो।
सिन्धु सा हृदय-अतल, देखूं स्नेह हर पल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिली हो मुस्कान अधर,आंखों का तारा हो।
बाणी हो गुंजायमान, मुखड़ा हो शोभायमान।
देख-देख खोई रहूं, चकोर चांद प्रीत हो।
ऐसा मन प्रीत हो,
अमर मेरी प्रीत हो।
जीवन की राह में,
प्रेम की जीत हो।।
ग्रीष्म में बयार सा, रति के खुमार सा।
नव-पल्लव मृदु सा, सपना साकार सा।
सुन्दर मधुमास सा, मीठी-महकी आस सा।
सावन की फुहार सा, शरद्-पूनम रात सा।
फूलों की सुवास सा, प्रथम-मिलन रात सा।
यौवन की मस्ती में, प्रणय विकल गीत हो।
ऐसा मन गीत हो,
अमर मेरी प्रीत हो।
जीवन की राह में,
प्रेम की जीत हो।।

मेरी कविता को सब ने पसन्द किया था। इस पर सब उपस्थित साथियों ने तालियां बजाई थीं।

राकेश कुमार ने मि. राजू की तरफ हाथ से संकेत करके पूछा -"अब मिस्टर राजू, इस मंडली में बैठे साथियों को अपनी पसन्द की कोई चीज सुना कर निहाल करेंगे।"

मि. राजू ने बिना सम्बोधित किए कहा-"एक शे'र अर्ज है।

"इरशाद! इरशाद!!"श्रोता-मंडली से कई जनों ने कहा।

राजू ने शे'र पढ़ा-

अपनी हालत का खुद अहसास नहीं तुमको
मैंने गैरों से सुना है, परेशां हो तुम भी।

"वाह! वाह!! वाह मि.राजू!!!" हम सब ने उस के शे'र की प्रशंसा की थी।

मि. राजू पुनः बोला-"एक शे'र और अर्ज कर रहा हूं।"

"वाह! इरशाद-इरशाद।"

न हम कुछ हंस के सीखे हैं
न हम कुछ रोके सीखे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"वाह! इरशाद-इरशाद।" शेर की दाद नरेश कुमार, पवन कुमार और मैंने देते हुए कहा।

मि. राजू पुनः अपने शे'र तर्ज के साथ पढ़ने लगा था। उसका गला बड़ा सुरीला था-

न हम कुछ हंस के सीखे हैं
न हम कुछ रोके सीखें हैं।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं
किसी के होके सीखे हैं।

"कमाल है भई! कमाल है!! वाह ओए राजू जिऊंदा बसदा रैह।" राकेश कुमार ने उसकी तारीफ की थी।

मि. राजू ने दारू पिया था। लोर में था। घुटनों के बल (बज्रासन) में बैठ कर बोला-"एक शे'र और कहूंगा।"

"इरशाद! इरशाद!!" कई जनों ने दाद में कहा था।

राजू शे'र कहने लगा-

यह हुस्न नशीं बड़ी विकट होती हैं

"वाह! वाह!!" कहा नरेश कुमार ने।

यह हुस्न नशीं बड़ी विकट होती हैं
यह बड़ी डाक टिकट होती हैं।
मगर जब आशिक से चिपकती हैं,
तो आदमी बिल्कुल लिफाफा बन जाता है।

शे'र सुनकर सभी ठहाका मार कर हंसने लगे थे। तभी नरेश कुमार बोला -"लव कुमार की तरह!" सुन कर सभी एक बार पुनः हा-हा करकके हंसने लगे थे। लव कुमार झेंप गया था।

अध्यक्ष महोदय ने कहा-"अब आप के सम्मुख सुधीर खन्ना जी अपनी कोई दिलकश आइटिम पेश करेंगे"

सुधीर खन्ना इन दिनों कालेज में बी.ए फाइनल में पढ़ रहा था। उसने बिना सम्बोधित किए पंजाबी में शिव कुमार बटालवी का यह गीत गाना शुरू कर किया था-

माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया,
ओहदे सिर ते कलगी
ओहदे पैरीं झांजर
ओह चोग युगेंदियां आया
माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया,........।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक ओहदे रूप दी घुप्प तिखेरी
दूजा महकां दा तिरहाया
तीजा ओहदा रंग गुलाबी
ओ किसे गोरी मां दा जाया।
माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया।
इश्के दा इक पलंग नवारी
वे असां चाननियां विच डाया
तन दी चादर हो गई मैली
ओस पैर जो पलंगी पाइया
माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया।
दूख्खन मेरे नैनां दे कोए
ते विच हड़ हंजुआं दा आया
सारी रात गई विच सोचां
ओस इह की जुल्म कमाया
माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया।
सुबह-सबेरे लानी बटना
बे असां मल ओस नवाइया
देही दे विच निकलन चिनगां
नी साडा हथ्थ गिया कुम्लाया
माए नीं माए मैं इक शिकरा यार बनाया।
चूरी कुट्टां तां ओह खांदा नाहीं
वे असां दिल दा मास खवाइया
इक उडारी ऐसी मारी
ओह मुड़ वतनी नीं आयाा
माए नीं माए मैं 'इक शिकार यार बनाया.......।

सुधीर खन्ना कालेज के रंगारंग प्रोग्राम में यही गीत अकसर गाया करता था। उसका गला बड़ी सुरीला था। उसके गाने की सबसे बड़ी तारीफ की थी।

अब बारी पवन कुमार की थी। वह शे'र सुनाने लगा था।

सुबह हुई तो देखी लाशें
लाखों बेकफन परवानों की।

''वाह! इरशाद!! इरशाद!!!'' हम तीन जनों ने दाद दी थी।

वह पुनः शे'र कहने लगा-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह हुई तो देखी लाशें
लाखों बेकफन परवानों की।
आशिक ने पूछा शमां से
यह खातिर की तूने! रात के मेहमानों की?

वाह भई वाह! कमाल है!!'' कई जने महफिल से शे'र पर दाद देते हुए कह उठे थे।

पवन कुमार शे'र को पूरा करने लगा था-

शमां का जवाब था-

मैं क्या करती सिवाए मौत की सजा देने को
कम्बख्त परवानों ने बिना किसी शर्म के
भरी महफिल में मुझे चूम लिया।

वाह भई वाह! वाह!! वाह!!! लगभग सारी महफिल ने इस शे'र को सुनकर प्रशंसा की थी।

मंच संचालक राकेश कुमार ने कहा-''अब मेरे सांढू साहिब मिस्टर नरेश कुमार जी एक शे'र कहेंगे।''

नरेश कुमार शे'र कहने लगे थे-शेर अर्ज है।

''इरशाद! इरशाद!!''

अशोक कुमार और मैंने एक साथ शे'र की दाद को कहा था।

क्या खूब रंग बदला है जमाने का
अपने अपनों पर वार करते हैं।

''वाह भई वाह! वाह!!'' कईयों ने दाद में कहा था।

नरेश कुमार शे'र पूरा करने लगा-

क्या खूब रंग बदला है जमाने का
अपने अपनों पर वार करते हैं।
पहले मरते थे यार यारों पर
आज यारों से यार मरते हैं।

''बल्ले ओए सोहनियां! नईं रीसां ओए तेरीयां!!'' खन्ने वालों में से एक ने अपना बाजू लहरा कर नरेश कुमार की दाद में कहा था।

राकेश कुमार मे हसन अली की ओर देख कर कहा-''अब इस हाऊस बोट मालिक जनाब हसन अली से गुजारिश है कि वह हमें कोई कश्मीरी गीत सुनाएं''

हसन अली ने हब्बा खातून का यह गीत गाना शुरू किया-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यारि दा दे तारि गयसो
बर बुक छुम आमतुय
हब्ब खोतूनि वुन इशारा
दिल हुशियारा मालिन्यो हो।।

(अपने प्रियतम के लिए मैं व्याकुल हो रही हूं। मेरा जीवन मुझ पर भारी हो रहा है। मेरे मायके वालो मेरे इस इशारे को समझो)

हसन अली ने गीत के अर्थ को ज्यों ही बताया,सब को अपनी महबूब, पत्नी याद हो आई थी। कुछ देर तक यूं इधर-उधर का मजाक होता रहा। सब बड़े प्रसन्न थे।

राकेश कुमार ने मुझे संकेतिक भाषा में कुछ कहा था। मैं उसका आशय समझ गया था। मैंने राकेश कुमार की ओर देख कर कहा-''अब हमारे तीर्थयात्रा दल के प्रधान राकेश कुमार जी इस भरी महफिल को चार चांद लगाने की खातिर अपना कलाम पेश करेंगे। राकेश कुमार जी।''

राकेश कुमार ने शिव कुमार बटालवी का यह गीत गाना शुरू किया था-

मैंनू तेरा शबाब लै बैठा।
रंग गोरा गुलाब लै बैठा।।
मैनू डर सी इहा दिलाना लाई बैठा
लै ही बैठा जनाब लै बैठा।
मैंनू तेरा शबाब लै बैठा।
बेल जद वी मिली ए फर्ज़ाँ तों
तेरे मुख की किताब लै बैठा
मैंनू तेरा शबाब लै बैठा।
मैंनू जद वी तुसीं हो याद आए
दिन दिहाड़े शराब लै बैठा
मैंनू तेरा शबाब ले बैठा।
किन्नी बीती ते किन्नी बाकी ऐ।
मैंनू एहो हिसाब लै बैठा।
मैंनू तेरा शबाब लै बैठा।
शिव नूं इक गम तें ही भरोसा सीं
ग़म तों कोरा जवाब लै बैठा।
मैंनू तेरा शबाब लै बैठा।
रंग गोरा गुलाब लै बैठा।

गला तो राकेश कुमार का इतना अच्छा न था। फिर भी उसके प्रयास ने गाने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बढ़िया बना कर श्रोताओं का मन मोह लिया था। गाने के बाद खूब तालियां बजीं थी। भला पंजाब की कौन सी ऐसी महफिल है जिसमें शिव कुमार बटालवी के पंजाबी गीत न गाए जाएं। शिव कुमार को स्मरण न किया जाए। इस विरहा के सुल्तान को इश्क–मशूकी करने वाले, प्यार–मोहब्बत के राह पर चलने वाले, टूटे हुए दिल लिए–अकसर शिव कुमार बटालवी के गीत गुनगुनाते रहते हैं।

इतने में मि.राजू ने मिठाई का डिब्बा लाकर सब के मध्य रख दिया था। सभी साथी मिठाई खाने लगे थे। पुनः कोक के जाम छलकाए–टकराए गए थे। चियर्स! चियर्स!! कह कर उन्हें गट–गट करके हल्क के नीचे उतारा गया था।

अब महफिल के सैक्रेटरी महोदय बोले–"अब रोहित कुमार शे'र पेश करेगा।" राकेश कुमार ने इतना कहा था कि लव कुमार ने खड़ा मुंह करके उबासी ली थी। उसके समीप ही दौलत राम बैठा था। वह बोला–" अरे निखट्टू इतना मुंह न खोला कर। कहीं जबड़े पर जबड़ा चढ़ गया तो मुसीबत खड़ी हो जाएगी।" दौलत राम ने ऐसे अंदाज में कहा कि सभी हंसे बिना रह न सके थे।

रोहित कुमार ने कहा–शे'र अर्ज है–

"इरशाद! इरशाद!!"दाद में सभी बोल उठे थे।

बू–ए–गुल कलियों में रहती थी
मगर रह न सकी।

"वाह! वाह!!" नशे के लोर में राजू शे'र पर दाद देता हुआ कह उठा।

रोहित कुमार दायां बाजू लहराता हुआ बोला–

बू–ए–गुल कलियों में रहती थी
मगर रह न सकी।
मैं तो कांटों में रहा।
और परेशां न हुआ।

समस्त मंडली वाह–वाह करके उसके शे'र की तारीफ कर रही थी। रोहित कुमार ने कहा–"मैं एक और शे'र अर्ज करता हूं।

"इरशाद! इरशाद!!" दाद में कहा राकेश कुमार और पवन कुमार ने।

अब रोहित कुमार शे'र कहने लगा था–

गम की स्याह रातों के पाले हुए हम
लाखों गमों का बोझ संभाले हुए हम।

"वाह ओए पट्टिया! खुश कीता ओए!!" दाद में कहा सुधीर खन्ना ने।

रोहित कुमार पुनःलय में शे'र कहने लगा था–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़म की स्याह रातों के पाले हुए हम
लाखों ग़मों का बोझ संभाले हुए हम।
लिपटी हुई है जिन्दगी कुछ इस तरह
जैसे गले में सांप डाले हुए हैं हम।।

राकेश कुमार ने खन्ने वाले तीसरे नौजवान को कुछ कहने को कहा तो वह मुकर गया था। तब राकेश कुमार ने लव कुमार की ओर देख कर कहा-"लव तू ही कुछ सुना दे।

लव कुमार ने कहा-"मैंने कभी गाया ही नहीं। न ही कभी शे'र कहा है।"

"अरे गा नहीं सकता। शे'र सुना नहीं हो सकता तो रोकर ही दिखा दे।" कहा पवन कुमार ने।

लव कुमार झूठमूठ ही रोने का स्वांग भरने लगा था-"अं-इं.......अं-इं.........पापा........कुल्फी नैंनी.ऐं.......अं-इं........। लव कुमार ने रोने के स्वांग पर सभी खिलखिलाकर हंसने लगे थे।

इतने में पवन कुमार मेरी तरफ संकेत करके बोला-"अरे लाड़े के सिर पर सेहरा बांधो, लगनों का मुहूर्त शुरू होने वाला है। अभी लड़की वाले दुल्हे राजा को लगनों के लिए आने वाले हैं।" सुन कर सभी हंसने लगे थे।

इतने में राकेश कुमार बोला-"अर मि. यशपाल शर्मा की लव कुमार की मौसी से शादी हो रही है। कहते हैं लड़की नाज़नीन, नूरोहुस्न, बहारों की मलिका, मिश्री की डली, चौदहवीं का चांद जैसी खूबसूसत है। भला उस का नाम क्या है?"

"पुनीता! पुनीता!! पुनीता!!!" दौलत राम और रोहित कुमार एक साथ जोर से बोल उठे थे।

समस्त साथी प्रसन्नचित थे। आधी रात्रि व्यतीत होने पर भी वातावरण हंसी खुशी में लेशमात्र भी बासी न हुआ था। सभी के चेहरों पर टपकती ताजगी व लाली यह बता रही थी कि सभी प्रसन्नता, जिन्दादिली से लवालव भरे हुए तरोताजा हैं। इतने में राकेश कुमार अपने मौसी के लड़के व मेरे भतीजे की तरफ देख कर बोला-"अरे तुम्हारा चाचा यशपाल शर्मा दूसरी शादी करने जा रहा है, निखट्टू तूने अभी एक बार भी घोड़ी चढ़ कर नहीं देखा।" सुनकर अशोक झेंप गया था। ज्यों ही मैंने अशोक कुमार की तरफ देखा, वह शरमा कर दूसरे कमरे में चला गया था।

"शादी से ऐसे अशोक कुमार डरता है-जैसे कौआ गुलेल से।" कहा पवन कुमार ने।

इसके पल्ले कुछ नहीं है भा जी। यह खुसरा है। खस्सी है यह। नहीं तो.......इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैसा। इतनी बढ़िया तनख्वाह। क्या करना है सब कुछ?'' कहा राकेश कुमार ने।

''विवाह-शादियों का नाम सुन कर लड़के-लडकियों के चेहरे खिल जाते हैं। एक यह है-शादी का नाम सुनते ही इसका रंग पीला हो जाता है।''कहा दौलत राम ने।

मैंने कहा-''इस टापिक को छोड़ दो। सब अपनी-अपनी किस्मत का खेल है। अशोक कुमार संत है। वह हमेशा शांत व गंभीर रहता है। कभी किसी औरत की तरफ आंख उठा कर नहीं देखता। ऐसा व्यक्ति किसी संन्यासी से कम नहीं है। क्या ब्रह्मचारी रहना कोई खाला जी का घर है। ब्रह्मचारी रह कर इस तड़क-भड़क वाले जमाने में विचरण करना तलवार की तेज धार पर चलने के समान है।'' सुन कर सभी साथी मौन साध गए थे। फिर किसी ने भी इस प्रसंग पर कोई बात न की थी।

राजू ने मौन को भंग करते हुए कहा-''यशपाल शर्मा जी! इस महफिल में रंगारंग प्रोग्राम का श्रीगणेश आप से हुआ था, अब इति श्री भी आप से होनी चाहिए।'' राजू के कथन की सब साथियों ने हामी भर दी थी। आखिर न चाहते हुए भी मुझे शे'र कहना पड़ा। मैंने सब की ओर देख कर शे'र कहा-

मुल्क बेशक लाख आजाद हो गया।

''वाह! वाह!!'' राजू ने दाद में कहा।

मैंने थोड़ा ऊंचे स्वर में शे'र कहना शुरू किया-

मुल्क बेशक आजाद हो गया।
हुस्न वालों का जमाना,सदियों तक गुलाम रहेगा।

''वाह शर्मा जी वाह! क्या शे'र मारा है।'' राकेश कुमार, पवन कुमार, नरेश कुमार और तीनों खन्ने वालों ने शे'र पर दाद देते हुए कहा था।

''एक शें'र और अर्ज है- मैंने कहा

''इरशाद! इरशाद!!'' सभी ने चहकते हुए कहा।

उनके हाथों से जो पत्थर मेरी जानिब आए
याद आया-उन्हीं हाथों को हमने चूमा था कभी।

''वाह! वाह!! वाह शर्मा दी ग्रेट।'' सबने शें'र की दाद में कहा था।

अब सुबह के तीन बजने को हैं। महफिल को वरखास्त करना चाहिए।''

मैंने सब की ओर देखते हुए कहा था।

''नहीं शर्मा जी, एक दो शें'र और कहें।'' अनुरोध में तीनों खन्ना वालों ने कहा था।

आखिर मुझे उनका अनुरोध स्वीकार करना पड़ा था। मैंने कहा-शें'र अर्ज है-

''इरशाद! इरशाद!'' खन्ना वालों ने दाद में कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इश्क में तेरे दीवाना बन फिरूं
बस यह तमन्ना है मिरी
जिन्दगी चाहे हो जाए खत्म
पर यह जुनूं खत्म न हो कभी

"वाह! वाह!!

जाम छलकते रहें, महफिलें सजती रहें
साकी मयकदे ये तेरे कभी ये रंगे-ओ-बू खत्म न हो।
रफ्ता-रफ्ता हजरत-ए-रकीब आ जाएंगे राह पर
अफरोज मिलते रहो उनसे, गुफ्तगू खत्म न हो।

शें'र कह कर मैंने हाथ जोड़ दिए थे।

"वाह! वाह!! कमाल है शर्मा द ग्रेट!!!" लगभग सभी ने मेरे शें'र की दाद में चहकते हुए कहा था।

राकेश कुमार ने इस रंगारंग महफिल को कामयाब बनाने में सब साथियों को और विशेष कर अपनी जन्म दिन की खुशी में शरीक करने के लिए खन्ने वालों का धन्यवाद किया था। खन्ने वाले बारी-बारी सब के गले मिले थे। गर्मजोशी से हाथ मिलाए थे। गुड नाइट। मधुर यामिनी। शब खैर कह कर विदा हुए थे। वह किश्ती पर बैठ कर अपने हाऊस बोट को चल दिए थे। हम सब सोने की तैयारी करने लगे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महायोगिनी लल्लेश्वरी का जीवन दर्शन

ज्यों ही मेरी आंख खुली, पूर्व दिशा में लालिमा फैल चुकी थी। रात्रिकाल को देर से सोने के कारण नींद पूरी नहीं हुई थी। आंखें अभी हल्का सा दर्द महसूस कर रही थीं। काया चाह रही थी कि चादर ओढ़कर थोड़ा विश्राम और किया जाए। परन्तु यह तो अब जागरण का समय था। मैं नींद के हलके उन्माद को धत्ता बता कर उठ बैठा था। मेरे समीप भतीजा अशोक कुमार सिर से पांव तक चादर लपेट कर सोया था। बाकी साथी भी अभी निद्रामग्न थे। मैंने किसी को भी जगाना उचित न समझा था। शौचादि से निवृत होकर मैं हाऊस बोट के प्रांगण में आकर पूर्व की ओर मुंह करके सोफे पर बैठ गया था।

हमारे हाऊस बोट के सम्मुख दूसरे हाऊस बोट के रेड़ियो से लल्लेश्वरी का भजन कश्मीरी बोली में गाया जा रहा था–

परुन पोलुम अमोरुय पौरुम
केसर वन्र वोलम रेटिथ शाल।
परस पैंरुम त पानस पोलम
अद्र मोम मोल्रम तु जीन्यिम हाल।।

अर्थात "जो शिक्षा मैंने ग्रहण की थी, जिस ज्ञान का अर्जन मैंने किया, उसे मैंने क्रियान्वित किया। और जो शिक्षा मुझे अनुग्रह द्वारा प्राप्त हुई थी उसे मैंने अच्छी तरह बांच लिया। इसी सतत क्रिया साधना द्वारा मैंने जंगल के सिंह के समान मन के गीदड़ को अपने वश में कर लिया। और जो कोई भी उपदेश मैंने दूसरों को दिया, उसका पूरी तरह पालन मैंने स्वयं पहले किया। तब मैं सब कुछ जान गई और इस तरह मैंने जीवन की बाजी जीत ली थी।"

एक बार मैंने अपने स्वर्गीय ससुर लक्ष्मी नारायण शास्त्री जी से लल्लेश्वरी सम्बन्धी पूछा तो उन्होंने बड़े विस्तार से मुझे लल्ला के सम्बन्ध में जो बताया था, मैं उसी वर्षों की भावधारा में इस समय बह कर सोचने लगा था–'किसी भी देश की संस्कृति उस देश द्वारा पोषित जीवन–दर्शन से सदैव अनुप्राणित होती रहती है। यह जीवन–दर्शन तब से बराबर जागृत होता जाता है, जब से मनुष्य में आत्मा और आत्म–चेतना आन्दोलित होने के लिए छटपटाती रहती है। इसे हम आत्मा और परमात्मा के मध्य की दूरी मिटाने हेतु मानव की अध्यात्मिक थाती की परिणति भी कह सकते हैं।

श्री मद्भगवत् गीता के अध्याय चतुर्थ के श्लोक 7–8 में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से बड़े सुन्दर व स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हुए कहा है–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदा यदा हिधर्मस्य ग्लानिनिर्भवति भारत।
अम्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवानि युगे-युगे।।

अर्थात् हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप में लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।''

कश्मीर की सुरम्यघाटी में जहां प्रकृति का यौवन सदाबहार है, वहां अध्यात्म शतरंगी मौलिकता ने इसे अधिक हृदय ग्राही बनाया है। काया की सुन्दरता मन की पावनता का आश्रय लेकर बहुत आकर्षण बना हुआ है। अत: यहां के निवासियों में करुणा व उदारता के भाव आदिकाल से प्रस्फुटित होते आ रहे हैं। इन लोगों में विरोध के स्थान पर समन्वय का दृष्टिकोण जीवन-दर्शन का प्रतिनिधित्व करता आ रहा है। इतिहास ने इस स्वस्थ मनोभावना की परीक्षा बहुत बार ली है और यहां के नर-नारी इस कसौटी पर सदैव खरे उतरे हैं।

नीलमत पुराण के अनुसार नागों का अधिपत्य हो जाने के बाद यहां की प्राचीन पैशाची संस्कृति का समूल नाश नहीं किया गया है। अत: इसमें निहित गुणों को अपनाया गया है। इसी तरह बौद्धों के प्रति श्रद्धा का प्रदर्शन किया गया। जिस का प्रमाण महात्मा बुद्ध को अवतार रूप में स्वीकार करना था। कश्मीर में समन्वयात्मक नीति का पालन किया गया है। बौद्धमत ब्राह्मण धर्म के प्रति एक तरह से विद्रोह था। परन्तु यहां के उदार मन: ब्राह्मणों ने वह भाषा और दृष्टिकोण नहीं अपनाया जो ब्राह्मणों के प्रति बौद्धों द्वारा प्रयुक्त किया गया था। यहां सकारात्मकता को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसी स्वस्थ परम्परा को लल्लेश्वरी ने चौदहवीं शताब्दी में सशक्त वाणी प्रदान की।

उस समय कश्मीर पर मुसलमानी राज्य स्थापित हो चुका था। कश्मीर में विदेशी मूल्यों को छल-बल से स्थापित किया जा रहा था। कश्मीर की शांति व प्रेम भावना हिंसा व प्रतिशोध का स्थान निरन्तर लिए जा रही थी। धर्म स्थापन के नाम पर रक्त की धारा बहाई जा रही थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में लल्लेश्वरी ने अपने अदम्य साहस का यह जयघोष फूंक कर प्रमाण दिया-

मो जान ह्यों, द तु मुसलमान।

अर्थात ''हिन्दू और मुसलमान में भेद मत करो।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस तरह वह साम्प्रदायिक बन्धनों से ऊपर उठकर मानव के जन्म सिद्ध अधिकार की सरंक्षिका बन गई। वस्तुतः कश्मीर तीन विश्व धर्मों की प्रयोगशाला रह चुका है। हिन्दू धर्म, बौद्धमत तथा इस्लाम ने इनके जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ रखी है। अतः कश्मीरी जन जीवन में हिन्दुओं की उदारता, बौद्धों की करुणा और इस्लाम की एकनिष्ठता के दर्शन होते हैं।

इतिहास विश्व के कोने कोने में घटित घटंनाओं का सदैव साक्षी रहा है कि समय का स्वभाव कभी भी एक समान कभी नहीं रहता है। दुनिया में कभी सौम्यता और कभी उग्रता का बोलबाला होता रहता है। अतः लल्ला के समय में जनमानस में पुनः जीवन के प्रति उत्साह पैदा करने का दायित्व लल्लेश्वरी के हाथ लगा। इस महायोगिनी ने अपने इस कर्त्तव्य को जी जान से निभाया। मानव और मानव के बीच की दरारों को पाटने का भरसक प्रयास किया। अतः कश्मीर के मुस्लिम ऋषि-सम्प्रदाय के प्रवर्तक "नुन्दऋषि" ने उसे अपने आदर्श रूप में अपनाया-

तस पदमान पोरिचे लल्ले
तऽम्य गले अमर्यथ च्चवो।
सो सानी अवतार लोले।
तिथिये वर म्ये दितम दिवो।

(नूरनामा-श्री अमीन कामिल द्वारा सम्पादित श्रुंक नं-33)

"पदमपुर (पांपुर) की लल्ला ने अमृत के घूंट जी भर कर पी डाले। अतः वह हमारी पूज्यनीया बन गई। हे परमात्मा! मुझे भी उन जैसे वर प्रदान करो।"

लल्ला ने वर्तमान को अतीत से जोड़कर कश्मीरी संस्कृति को विकृत होने से बचाया। रोष के स्थान पर तोष की, त्याग और आत्मोत्सर्ग के दिव्यास्त्रों से जनमानस में माधुर्य उडेलना चाहा। लोगों को सहनशीलता का दिव्य पाठ सिखाया। जीव के स्थान पर परब्रह्म के प्रति आस्था पैदा की। इस तरह सुल्तानों की अत्याचार की तलवार कुंठित हो गई थी। इस महादेवी ने कश्मीरियों के तन की अपेक्षा मन को परास्त नहीं होने दिया। लल्लेश्वरी की यह देन स्वयं में अलौकिक थी। लल्ला पर अनेक अरोप-प्रत्यारोप लगाए गए, जिस का निराकरण उसने इस तरह अपनी रचना में किया-

गाल कुडिनम बोल पुरिनम,
दपनम ति यस युथ रूचे।
सहज कोसमव पूज करनिम,
बु अमिलानि कम क्याह मौंचे।।

(डॉ. वेद कुमारी द्वारा सम्पादित, श्लोक-365-366)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थात् ''कोई मुझे अपशब्द दे, कोई मुझे बुरा समझे, जिसके मन में जो आए, वह कहे। यद्यपि कोई मुझे सहज साधना के फूलों से पूजें भी, मैं इन सब आडम्बरों से मुक्त हूं और लोग जो मेरे विषय में कहें, उसकी मुझे तनिक भी परवाह नहीं है।''

लल्लेश्वरी से पूर्व संस्कृति तथा धर्म का वाहन संस्कृत भाषा थी। जिसे प्रचार के विषय में बिल्हण ने बड़े गर्व से कहा था-''यहां कश्मीर की नारियां भी अपने घरों में संस्कृत और प्राकृत का प्रयोग अपनी जन्मभाषा के समान बड़ी सुगमता से करती हैं।'' परन्तु अब वह अवस्था बदल चुकी थी। सुल्तानों ने संस्कृत के स्थान पर फारसी को संरक्षण दिया। संस्कृत जैसे सबल साधन को निराश्रय बनाना सुल्तानों की राजनीति का एक शक्तिशाली अंग बन गई थी। लल्लेश्वरी तक आते-आते यह संस्कृत-सरिता लगभग सूखने के कगार पर थी। यही भाषा एक मात्र सम्पर्क का माध्यम थी। इसे मिटते देखकर लल्ला ने अपने संदेश को कश्मीरी भाषा में गूंथा और पिरोया। उसने संस्कृत के बुझते चिराग़ में अपने उत्साह और सन्देशों का तेल डाल कर पुनः प्रदीप्त कर डाला। क्योंकि कश्मीरी भाषा में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों की भरमार है। इस प्रकार कश्मीरी साहित्य में सूत्र धारिणी लल्लेश्वरी ही कहलाई। यही प्रमुख कारण है कि इसे ही कश्मीरी-साहित्य का प्रथम मील पत्थर कहा जाता है।

लल्ला ने अपना सन्देश कश्मीरी भाषा में दिया और उसमें चतुष्पदों का प्रयोग किया गया है, जिन्हें कश्मीरी में ''वाख'' कहा जाता है। ''वाख'' आत्मशिक्षा और आत्म-परिशोधन के प्रतीक हैं। इसी मानसिक अवस्था से आत्म चैतन्य प्राप्त होता है। मन के घोड़े को लगाम देनी पड़ती है। अपने तन में ही परब्रह्म का साक्षात्कार सुलभ हो जाता है-

च्यथ तोरग गगन ब्रम बुड़ि,
न्यमशि अकि छांडि यूज़न लछ।
चीतन वगि वम रटिथ ज़ोन,
प्रान अपानक फुटरिश परव्छ।।

(वाक्य लल्लेश्वरी, उर्दू, वाख नं-31)

अर्थात् चित रूपी घोड़ा बेलाम होकर आकाश की सैर करता है और एक ही निमिष में लाखों योजन पार कर लेता है। इसे जिस साधक ने सिधा कर आत्म चैतन्य के राह पर डाल दिया तथा प्राण-अपान वायु को वश में रखा, वही उस परब्रह्म को जान सकता है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लल्लेश्वरी भेष की साधिका न होकर रेख की संन्यासिन थी। उसे तुरीया अवस्था प्राप्त थी। ऐसे साधक मन के पाक-साफ व जितेन्द्रीय होते हैं। ऐसी आत्म ज्ञान की ऊंची अवस्था को कोटिन में कोई एक विरला नर-नारी ही पा सकता है। ऐसी आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त करने हेतु उपासना हेतु, श्रद्धा रूपी दृढ़ संकल्पित पुष्पों की नितांत आवस्यकता रहती है-

मन पुश तै पाछ पूशानी
बावक कोसम लागजस पूज़े।
शिवस गों ड दिज़्यस अशि वान्ये
छोपि मन्तर शंकर बुजे।।

(वाक्य लल्लेश्वरी, उर्दू, वाख नं-21)

अर्थात् "मन फूल बेचने वाला है और श्रद्धा फूल है। पूजा के लिए भावों के फूलों की अपेक्षा रहती है। उस "शिव" को आंसुयों के जल से स्नान देना चाहिए और मौन रूप में मंत्रों का उच्चारण करने से ही शाम्भवावस्था जाग्रत हो सकती है।"

शैवमत जात-पात में विश्वास नहीं रखता। इसके साथ ही खान पान की कट्टरता के प्रति विमुख भी है। इस प्रकार शैव-दर्शन कश्मीरी-जीवन दर्शन का पर्याय है। इसी मानव धर्म की प्रतिनिधि लल्लेश्वरी बन गई थी।

अद्वैत शैव-दर्शन का कश्मीरी संस्करण लल्लेश्वरी की साहित्य रचना-'वाखों' में समाहित हुआ है-

मुकरस ज़न मल चो़लुस मनस
अद म्ये लबम जुनस जान।
सु यलि ड़यठुम निशि पानस।
सो रूप सु त बु नो केंह।।

(लल्लपद प्रो. जे.एल. कौल द्वारा सम्पादित वाख नं-100)

अर्थात् "जब मन घुलकर ऐसे साफ हो गया, जैसे दर्पण की मैल उड़ जाती है, तब ही मैंने असीम से ससीम की पहचान कराई। जब मैंने उसे अपने पास पाया तो वही सब कुछ था, मेरा बजूद किसी काम का न रह सका।"

लल्लेश्वरी ने इस चिर सत्य को अपनी रचना में इस तरह से मुखरित किया-

शिव का कीशव वा जिन वा
कमलज़ नाथ दारान युस।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

म्ये अबले कास्त्यन बवरूज़
सु वा सु वा सु वा सू।

(वाक्य लल्लेश्वरी-वाख नं-90)

अर्थात् ''वह असीम शिव, केशव अथवा बुद्ध या ब्रह्मा नाम धारण करें, इनमें कोई एक ही मुझ अबला की भवरूजा का हनन करे। मेरे लिए सब एक समान है।''

जब तक वितस्ता की लहरों का हृदय स्पर्शी संगीत नित्य निरन्तर ध्वनित होता रहेगा, यहां के गगनचुम्बी पर्वत मालाओं की रमणीयता चिरस्थायी रहेगी और उन पर्वत श्रेणियों के उन्नत भाल पर चांदी सी शोभित बर्फ रहेगी—इस महायोगिनी लल्लेश्वरी की आध्यात्मिक रचना वाखों में कश्मीरी जनमानस के लिए निधि के रूप में सुरक्षित रहेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐतिहासिक पवित्र, 'हजरत बल मस्जिद' व उसका इतिहास

दस बजे के करीब सभी साथी नहा-धो कर तैयार हो गए थे। आज के दिन में कौन-कौन से स्थान देखे जाने चाहिएं, इस पर विचार विमर्श होने लगा था। मेरा सुझाव था कि इतिहासिक मस्जिद 'हजरत बल दरगाह' के दर्शन किए जाएं। सुन कर गुरदासपुरियों को जैसे बिच्छू ने काट खाया था। मेरा सुझाव उन्होंने नकार दिया था। दौलतराम बोला-"हम मुसलमानों की मसीतों में क्यों जाएं। क्या मुस्लिम बिरादरी हमारे मन्दिर-गुरुद्वारों में माथा टेकने आती है?"

पवन कुमार बोला-"अयोध्या में मुसलमान राम मन्दिर के निर्माण का विरोध कर रहे हैं। महमूद गजनी, मोहम्मद गौरी, बाबर जैसे अनेकानेक विदेशी मुस्लिम हमलावरों ने इंडिया में हजारों हिन्दू मन्दिरों को धराशाही किया है। सोमनाथ मन्दिर पर तो महमूद गजनवी ने सतरह बार हमला करके तोड़ा फोड़ा और उसकी अपार धन राशि को लूटा था। शिव लिंग के टुकड़े कर दिए थे। क्या इनकी दरगाहों पर इसलिए सजदा करने जाएं कि इन्होंने हमारी बहु-बेटियां की आबरू लूटी, गांवों-नगरों को जलाया और साम-दाम-दंड-भेद की नीति से मुसलमान बनाया। क्या कश्मीर में सवा मन कश्मीरी ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत उतार कर, असंख्य लोगों को हिन्दू धर्म से मुस्लिम धर्म कबूल करवाने के लिए आप औरंगजेब को भूल गए हैं?"

सुन कर सभी मौन साध गए थे। मैंने नम्रता से पवन कुमार की बात का उत्तर देते हुए कहा-"जो भी इतिहास में वर्णन किया गया है, वह सब दुरुस्त है। परन्तु वह राजे-महाराजे व जुल्मोगारत करने वाले जमींदोज हो चुके हैं। उन धर्मांध दरिन्दों के काले कारनामों को इतिहास मौन रूप में साक्षी बन कर सच्चाई कह रहा है। उनको लानत दे रहा है। मजहब का पैरोकार कोई भी बुरा नहीं होता। वह सदैव मनुष्यों के बीच प्रेम, सहानुभूति, समानता और मानव सेवा की बात करता है। परन्तु आगे चल कर उस धर्म, मिशन के मंद-बुद्धि अनुयायी समाज और उसके मनुष्यों के बीच घृणा, द्वेष, संकीर्णता, मजहबी दीवारें खड़ी करते हैं। कुरान शरीफ में लिखा है- "विस्मिल्लाहिर्रहमानि रहमान" अर्थात् अल्लाह के नाम पर जो दयालु और कृपालु है। हजरत मोहम्मद साहिब ने फरमाया है। पैगम्बर तो अपने अनुयायियों को प्रेम, मोहब्बत, परस्पर सहयोग और मिलकर रहने का संदेश और आदेश दे रहा है। परन्तु मजहब के कट्टर लोग उसके एकदम उल्ट संदेश दे रहे हैं। इसमें हजरत मोहम्मद साहिब का क्या कसूर है। धर्म का तो सीधा सा अर्थ है- वह बुनियादी उसूल-जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रत्येक नर-नारी को मानव को प्रेम, पवित्रता, करुणा, समानता, सेवा, सच्चाई, सहनशीलता धारण करने को बार-बार कह रहे हैं। कश्मीर के कौल ब्राह्मण से इस्लाम मज़हब अपनाने वाले इकबाल ने कितना प्यारा लिखा है-

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना.......।

अतः इस मिन्नी मक्का कहलाने वाली हजरत बल दरगाह को हमें अवश्य देखना चाहिए। आप सब अपने मन से धार्मिक कट्टरपन को निकाल दें।''

मेरी बात का सब पर असर हुआ था। सबने देखते हेतु हामी भर दी थी। पंजाबी ढाबे सोढी वाले पर आकर हमने पेट भर के परांठे, मक्खन, दही का नाश्ता किया था। फिर हम सूमों में बैठ कर ख्वाजा बाजार में 'हजरतबल दरगाह' के दर्शनों को आ पहुंचे थे।

सफेद संगरमर से अरबी वास्तुकला के नमूने पर बनी यह भव्य मस्जिद, डल झील के किनारे पर स्थित है। कश्मीर में यह मुसलमानों का पवित्र जियारत का स्थान है। इसे ''आस-ए-शरीफ़'', ''मदीनत-उस-सनी'', दरगाह शरीफ एवं दरगाह सादिक खान आदि नामों से भी जाना जाता है। इस मस्जिद का अध्याधिक महत्त्व इसलिए है कि यहां हजरत साहिब का एक ''पवित्र बाल'' शीशे की मंजूषा में सहेजकर रखा गया है। ऐसी मान्यता है कि हजरत मुहम्मद साहिब के एक वंशज सैय्यज अब्दुल्ला जो 1635 में इस बाल को लेकर हिन्दुस्तान में आए और हैदराबाद के निकट बिजापुर में बस गए। सय्यद अब्दुल्ला की अचानक मृत्यु के बाद उनके बेटे सय्यद हमीद ने इंसे अपने पास रख लिया। आगे चल कर इस इलाके पर मुगलों का आक्रमण हुआ तथा सय्यद हमीद ने इसे अपने पास रखना सुरक्षित नहीं समझ कर इसे कश्मीर के ही एक धनी व्यक्ति ख्वाजा नूरूद्दीन को बेच दिया। जब मुगल बादशाह औरंगजेब को इसे बेचने की जानकारी मिली तो उसने ख्वाजा नूरूद्दीन को कारावास में डाल दिया तथा पवित्र बाल को अपने कब्जे में ले लिया। औरंगजेब ने इसे कुछ देर तक अजमेर में मोइनूद्दीन चिश्ती की दरगाह में रखा। इसके बाद औरंगजेब को हजरत मुहम्मद साहिब ने स्वप्न में निर्देश दिया कि वह पूर्ण सम्मान सहित पवित्र स्मारक चिन्ह को ख्वाजा नूरउद-द्दीन की ख्वाहिश को पूरा करे। औरंगजेब को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने इस पवित्र बाल को ख्वाजा नुरूद्दीन को वापिस लौटाने को तय किया। परन्तु ख्वाजा नूरूद्दीन की तो मृत्यु हो चुकी थी। 1699 ई. में इसे ख्वाजा नूरूद्दीन के पार्थिव शरीर के साथ कश्मीर ले जाया गया जहां ख्वाजा नूरद्दीन की बेटी इनायत बेग़म को सौंप दिया। सब से पहले उन्होंने नकशाबाद साहिब की दरगाह में सुरक्षित रखा। परन्तु यह स्थान बहुत छोटा था। साथ ही प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शनार्थ आते रहते थे और इसे वहां से वर्तमान में रखे स्थान पर स्थानातरित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर दिया गया। यहां पहले एक उद्यान था, जिसमें एक विशाल भवन था, जिसे 'इशरत महल' कहते थे। जिसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां के सूबेदार सादिक खां ने करवाया था। वर्तमान में जो सफेद संगमरमर की भव्य दरगाह बनी हुई है, इसका निर्माण अक्काफ ट्रस्ट के प्रमुख शेख अब्दुल्ला ने करवाया। इस दरगाह का निर्माण कार्य 1978 में पूरा हुआ था। इसकी वास्तुकला अद्वितीय है व कश्मीर की एकमात्र गुम्बद वाली मस्जिद है। यहां हजरत मुहम्मद साहिब के 'पवित्र बाल' को शीशे की मंजूषा में रखा गया है तथा हजरत साहिब के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख तिथियों व अवसरों पर इसे आम जनता के दर्शन के लिए बाहर लाया जाता है।

सप्ताह के हर शक्रवार को यहां बड़ी संख्या में लोग जुम्मे की नमाज़ अदा करने के लिए एकत्रित होते हैं। ''मेराजुल-आलम'' के दिन तो यहां उत्सव जैसा माहौल बन जाता है।

यहां से निशात बाग, डल-झील एवं ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों का सुन्दर नजारा भी देखने को मिलता है।

हम सभी मस्जिद के अन्दर जाकर हरी टोपी पहने बैठ गए थे। अपनी श्रद्धा व अंदाज में हम सबने प्रणाम व सजदा किया। पश्चिम की ओर बने एक गैलरी नुमा हिस्से पर मैंने दृष्टि टिकाई जो पन्द्रह अठारह फुट की ऊंचाई पर होगा। वहां मध्य भाग में एक छोटा-गोल सा सूर्ख लाल रंग का बल्ब सा जल रहा था जो एक अल्लाह, नूर, ब्रह्म, सत् चित आनंद, निराकार, निरंकार, शिव व आदि शक्ति का प्रतीक था। मुस्लिम भाई वहां नमाज अदा कर रहे थे। मैं आंखें मूंदे 'ओम; के जाप के साथ ध्यान में उतरने लगा था। अन्दर से मस्जिद बहुत बढ़िया ढ़ंग से सजाई-संवारी गई थी। समस्त साथी पहली बार मस्जिद में आए थे। पन्द्रह-बीस मिंट तक हम इस पावन व ऐतिहासिक मस्जिद में बैठे रहे थे। दरगाह के बाहर लोग कबूतरों को दाना खिला रहे थे। मेरा अनुमान है- छः सात हजार इन भोले परिन्दों का समूह यहां रहा होगा। बेखौफ होकर दाना चुग रहा था। यह दृष्य मुझे बड़ा मर्मस्पर्शी लगा था। अपना-अपना दाना शांति व संतोष से चुग रहे थे। मैंने सोचा-'क्या कभी इतने नर-नारी इकट्ठे अहं व घमंड रहित इन परिन्दों से शांति-संतोष, समानता, सहयोग व परस्पर में मिल बैठ कर रह सकते हैं? कदापि नहीं। नर-नारियों में निर्धन-धनी, सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षित, रुतवे व ऊंच-नीच जैसे नाना भाव उन्हें आंतरिक रूप से आन्दोलित कर देते हैं। उसे आकुल-व्याकुल कर देते हैं। पतंजलि ऋषि ने अपनी संसार प्रसिद्ध योग की पुस्तक ''पातंजल योगसूत्र'' के साधनापाद के सूत्र-3 में कितना सारगर्भित लिखा है-'अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशा क्लेशः। अर्थात् ये क्लेश पांच हैं जिनको क्षीण किए जाने से ही मन में स्थिरता आती है। ये पांच क्लेश हैं-अविद्या,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। ये क्लेश जीव मात्र के संसार चक्र में बार-बार आने का कारण बनते हैं तथा महा दुखदायक होते हैं। ये क्लेश अंहकार की उपज हैं। यह अविद्या जो मानव को संसार की ओर प्रवृत करती है और उसके मूल में अहंकार ही है। 'अस्मिता' (मैं हूं) का मान भी अहंकार के कारण है। 'राग द्वेष' भी अहंकार की ही उपज है। 'अभिनिवेश' (मरणमय) भी अहंकार ही है। क्योंकि शरीर की मृत्यु तो मृत्यु नहीं है। वह तो चोला है जिसे फटने पर बदला जाता है। किंतु मरता अहंकार है। जीने की इच्छा भी अहंकार के कारण है। इसलिए मृत्यु का भय इस अहंकार पर चोट करता है कि सब कुछ छीना जा रहा है। इसलिए ये सभी क्लेश अहंकार के कारण ही हैं। अत: अहंकार ने अविद्या को जन्म दिया तथा अविद्या के रहते ये अन्य चारों क्लेश जीवित रहेंगे ही।'

दरगाह की बाहरी दीवार के साथ नींव पत्थरों पर उर्दू व अंग्रेजी में इस पावन हजरतबल दरगाह के निर्माण के साथ संक्षिप्त सा इतिहास भी लिखा था जो इस प्रकार था–

History of "MOI-E-MUQQadas" of
PROPHET MOHAMMAD (Saw) in Kashimir.
Hazrat syed Abdullah (RA.)
a descendent of Prophet Mohammad (Saw)
and Trustee of holy shrine of Madin prossessed 3 holy relics.

(1) Sacrad hair of Prophet (saw) (2) Sacred Turbanof Hazrat Ali (RA) (3) Zul Jalal-Saddle of Hazrat Ali's (RA) horse.

Syed Abdullah undertook journey to India and reached Bejapur in 1636 (1046 H), during the reign of Shahjahan. After his death, his son Syed Hamid became the custodian of the holy relics. Khawaja Noor-ud-Din Azhawari, a noted kashmiri trador met syed Hamid and developed deep respect of him. While leaving for home, he requested syed Hamid for one of the relics. Initiatlly he refused but the Prophet (saw) in a dream, directed Syed Hamid to give one to Kh. Ashawari for taking it to kashmir. The latter chose the sacred hair which was given to him along with Khadim Maidanish. One reaching Lahore, Kh. Ashwari was arrested by Aurangzeb and the sacred relic was enshrined in the Dargah of at Ajmar sherif. Kh. Ashawari died in Lahore. Aurangzeb was directed by the prophet (saw) in a dream, to fulfill the aspirations

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

of Khawaja Noor-ud-Din. He then arranged the passage of the caravan carrying the holy relic with full honour and it reached srinagar in 1700. Mirza Qalander Baig recorded the verse.

Kashmir Madina Bishud Az MOI Nabi (saw) Kashmir has become mading because of the sacred hair of prophet (saw).

The holy relic was first enshrine in khanquahi naqashbandia, khawaja Bazas, Srinagar. from there it was shifted to Baghi saif Khan and housed in the bungalow of sadiq khan, a disendent of mughals. Since then it became to be known as Aasari sherief HAZRATBAL/

The Jammu and Kashmir Muslim WAKF Board.

अल्लाह के दूत मोहम्मद के ''मोए-ए-मुकद्दस का इतिहास

हजरत सईद अब्दुल्ला जो अल्लाह के दूत मोहम्मद के एक वंशज थे और पाक (पवित्र) तीर्थस्थान मदीना के धरोहर रखने वाले थे। उनके पास तीन पवित्र स्मारक चिन्ह थे-

1. अल्लाह के दूत के पवित्र बाल।
2. हजरत अली की पावन पगड़ी।
3. जुल जलाल-हजरत अली के घोड़े की काठी।

सईद अब्दुल्ला ने भारत के लिए यात्रा आरम्भ की और 1636 (1046 ह) में शाहजहां के शासनकाल में बेजापुर पहुंचे। उनकी मृत्यु के उपरान्त उनका पुत्र सईद हामिद पवित्र स्मारक चिन्हों का रखवाला बना। एक प्रसिद्ध कश्मीरी व्यापारी ख्वाजा नूर-उद्-दीन अशवारी की मुलाकात सईद हामिद से हुई और उनके प्रति इसके मन में बेहद सम्मान के भाव पैदा हुए। अपने घर की ओर चलने से पहले उसने सईद हामिद को उसे एक स्मारक चिन्ह देने के लिए प्रार्थना की।

प्रारम्भ में तो उसने मना कर दिया लेकिन अल्लाह के दूत ने उसे स्वप्न में आकर उसे आदेश दिया कि उसमें से एक स्मृति-चिन्ह ख्वाजा अशवारी को कश्मीर ले जाने के लिए दे दे। ख्वाजा ने पवित्र बाल का चुनाव किया जो उसे खादिम मैदानिंश के साथ दिए गए थे। लाहौर पहुंचने पर ख्वाजा अशवारी को औरंगजेब द्वारा बंदी बना लिया गया और पवित्र स्मारक चिन्ह अजमेर शरीफ की दरगाह में स्थापित कर दिया गया। ख्वाजा शरीफ की मत्यु लाहौर में हुई। अल्लाह के दूत मोहम्मद ने औरंगजेब को स्वप्न में आकर निर्देश दिया कि वह ख्वाजा नूर-उद्-दीन की ख्वाहिश को पूरा करे। औरंगजेब ने अल्लाह के दूत के निर्देश के बाद पूर्ण सम्मान के साथ पवित्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मारक चिन्ह को कश्मीर ले जाने वाले काफिले के रास्ते का प्रबन्ध किया और यह काफिला श्रीनगर 1700 ई. में पहुंचा।

मिर्ज़ा कलन्दर बेग ने कविता की पंक्तियां लिखीं:-

कश्मीर मदीना विशुद्ध अज़ मोए नबी
(अल्लाह के दूत के पवित्र बाल की वजह से (Saw)
कश्मीर मदीना बन गया है)

पवित्र स्मारक चिन्ह पहले खानक्वाही-नक्शबन्दीया ख्वाजा बाजार, श्री नगर में स्थापित किया गया। वहां से इसे बाग़ी सैफ खान ले जाकर, मुगलों के वंशज सादिक खान के बंगले में रखा गया। तब से इसे ''आसरी शरीफ हजरत बल'' के रूप में जाना जाने लगा।

जम्मू एवं कश्मीर मुस्लिम वक्फ बोर्ड।''

मेरे समस्त साथी इस पावन व ऐतिहासिक दरगाह को निहार कर बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्हें चाय की तलब होने लगी थी। वह ख्वाजा बाजार की एक चाय की दुकान पर बैठ कर अगले कार्यक्रम की रूप-रेखा बनाने में जुट गए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐतिहासिक देवी मन्दिर खीर भवानी व उसका इतिहास

समस्त साथी इस बात पर सहमत हुए थे कि आज ऐतिहासिक देवी मन्दिर जो श्रीनगर से 27 कि.मी. की दूरी पर स्थित था, खीर भवानी देखा जाए। आज के दिन में बचे समय में हरि पर्वत या कोई अन्य स्थांन देखा जाए।

गाड़ी पर सब साथी बैठ कर खीर भवानी मन्दिर की तरफ रवाना होगए थे।

तुला-मुला गांव में स्थित यह मन्दिर रागिनीया देवी जो दुर्गा के एक रूप को समर्पित है। पवित्र अमरनाथ गुफा के बाद कश्मीर में यह मन्दिर हिन्दुओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। संगमरमर से निर्मित मन्दिर का गुम्बद सोने का बना हुआ है तथा मन्दिर एक स्त्रोत से बने पानी के कुंड के बीच में स्थित है। यहां एक पवित्र वसंत इष्टदेव का प्रतीक माना जाता है और यह खीर भवानी के रूप में भी प्रसिद्ध है। वसंत में यहां भक्तों को दूध के रूप में खीर प्रदान की जाती है। यदि देवता को चढ़ाया गया दूध काला हो जाता है तो किसी आपदा के आने की एक चेतावनी मानी जाती है।

हमारी गाड़ी वहां लगभग दो बजे पहुंची थी। गाड़ी से निकल कर हम मन्दिर के मुख्य द्वार पर पहुंचे तो मेरे साथी चिनारों के लम्बे-चौड़े मोटे वृक्षों को देख कर प्रसन्न और आश्चर्यचकित थे। देवी खीर भवानी का मन्दिर छायादार वृक्षों से आवृत था। मन्दिर के साथ ही उत्तर पूर्व में छोटा सा शीतल जल धारा का नाला देवी महिमा का गुणगान करता हुआ बहता है। सब साथियों ने बड़ी श्रद्धा व भक्तिभाव से माथा टेका व पूजा अर्चना की थी।

मैं यहां अपने परिवार के साथ अनेक बार आया करता था। यहां हलवाइयों द्वारा बनने वाली ''लूच'' पूड़ी बड़े शौक से खाया करता था। वह भी क्या दिन थे। चिनार के भीमकाय दरख्तों के नीचे मुसलमान गायकों को कश्मीरी भाषा में भजन गाते देखा करता था। कश्मीरी भाषा मुझे तो समझ न आती थी। धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा मुझे अर्थ समझाया करती थी। मुस्लिम गायकों की गायन विद्या की प्रवीणता, श्रद्धा को देखकर दंग रह जाया करता था। मैंने विवेकानन्द की पुस्तक में एक बार पढ़ा था कि उन्होंने 'देवी खीर भवानी' मन्दिर में आकर सवा मन खीर चढ़ाई थी और श्रद्धाभाव से पूजा अर्चना की थी।

माता खीर भवानी का इतिहास इस प्रकार वहां पढ़ने को मिला था-''रावण ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घोर तपस्या करके महामाया पार्वती से प्रार्थना करके वर मांगा कि देवी आप लंका के राज्य को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाने के लिए यहां लंका में निवास करें। देवी ने यह प्रार्थना स्वीकार कर लंका द्वीप की उत्तरी दिशा के मध्य भाग में कुंड में जो नागों से आवर्त था, वहां जगदंबा श्यामा नामसी रूप में प्रतिष्ठित हुईं। इसके पश्चात रावण राक्षसों सहित इनकी पूजा राक्षसी परम्परा के अनुसार करने लगा। परन्तु देवी राक्षसों के दुर्व्यवहार से क्रोधित तथा असन्तुष्ट हुई। फिर जब त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र जी ने लंका पर आक्रमण किया तो रावण का भावी नाश जानकर भगवती श्यामा ने महाबली हनुमान को आदेश दिया कि वह माता को अपने कंधे पर बैठाकर सती देश कश्मीर ले चले। क्योंकि उनके वहां रहने पर लंका तथा रावण का नाश असम्भव हो जाता। अतः हनुमान जी ने माता की आज्ञा का पालन करके तुरन्त 360 नागों सहित देवी श्यामा को कंधे पर बिठा कर कश्मीर की ओर प्रस्थान किया। यहां पर उनका सर्वप्रथम पदार्पण विष्णुपाद तीर्थ पर हुआ। यहां रम्यवन स्थली की तलहटी के मध्य भाग में देवी ने उतर कर कुछ समय विश्राम किया। वहां से फिर देवसर गांव (खन्न मस्नी) तदन्तर लुटकीवर, अनंतनाग, राइथन,वादीपुर, कोटी तीर्थ, चंडीपुर तथा शारदा तीर्थ प्रायः कश्मीर के मुख्य स्थानों का परिभ्रमण करके अंत में पवित्र शादीपुर के पास (कश्मीर) के ग्राम राज (प्रयागराज) तीर्थ के निकट हिमालय पर्वत की श्रृंखला की तलहटी में अति रमणीय वृक्षों से आच्छादित नर्म तथा दलदल वाली भूमि तुलामुला रूई जैसी नर्म स्थान को अपना चिरस्थायी वास बनाया।

तूलवत्तुल्यतां यत्र स्थानान्पन्यानि च।
लघुभूतानि मूल्यंनं तस्मास्तु तुलमूलकम्।।

इस प्रकार संतों-भक्तों के हितार्थ तामसी प्रकृति को त्याग कर भगवती श्यामा सात्विक रूप में प्रतिष्ठित हुई। इस पवित्र कुंड में 15 मात्रिकाओं वीजाक्षरों सहित सुशोभित हुई। यहां पर उनकी पूजा-नैवेद्य (प्रसाद) दूध, मिष्ठान, खीर तथा पुष्प वेनपोष द्वारा आरम्भ हुई। इसकारण इसको ''खीर भवानी'' देवी के नाम से पुकारा जाने लगा।''

समस्त साथी माता खीर भवानी के इस अति सुशोभित, घने-छायादार वृक्षों से आवर्त स्थान पर आकर, दर्शन करके प्रसन्नचित थे। उनके मन-हृदय श्रद्धा भक्ति से परिपूर्ण हो गए थे। जी चाह रहा था कि आज की रात्रि यहां देवी खीर भवानी के श्रीचरणों में व्यतीत की जाए। परन्तु अभी बहुत से स्थान देखने शेष थे। भारीमन से समस्त साथियों ने गाड़ी में बैठने से पूर्व देवी खीर भवानी को मन-ही-मन अनेक बार प्रणाम किया था। अपने परिवार, जम्मू कश्मीर व भारत देश की जनता हेतु मंगल कामना की थी। ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी स्टार्ट कर दी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चश्माशाही, मिनी झील, परी महल व मशहूर मुगल कालीन उद्यान निशात को देख कर आनन्दित होना

खीर भवानी से आते समय हमने तयकिया कि डल झील के आसपास उन स्थानों को देखा जाए, जिन्हें देखना परमावश्यक है। रास्ते में एक स्थान पर रुक कर चाय के साथ बिस्कुट व नमकीन भुजिया से पेट की अग्नि को शांत किया था। राकेश कुमार का सुझाव था कि अब सबसे पहले चश्माशाही को देखा जाए। उसके बढ़िया सुझाव पर सब साथियों ने अपनी सहमति की मोहर लगा दी थी। हमारी गाड़ी चश्माशाही के पार्किंग स्थान पर आकर रुक गई थी। सैलानियों की गाड़ियों की लम्बी-लम्बी कतारें लगी थीं। अशोक दीवाना ने एक सुरक्षित स्थान पर गाड़ी लगा कर पार्किंग फीस देकर पर्ची कटवा ली थी।

चश्माशाही तो उत्तर की तरफ ऊंचई पर था। वहां तक पहुंचने में सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर जाना था। चश्माशाही के चारों तरफ रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियों में खिले हुए नाना किस्मों के पुष्प वृन्द शीतल हवा के झोंके में अपनी मस्ती में झूम रहे थे। ऊपर से चश्माशाही की बहती जल धारा मनमोहक जलप्रपात बना रही थी। सभी साथी सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर चले गए थे। सामने एक छोटी सी संगमरमर की देहरी सा ढांचा बना दिया गया था, जिससे शीतल जल बह रहा था। मध्य भाग में बहते पानी को छोटी-सी नहर का रूप दिया गया था। बीच में फव्वारे चल रहे थे। नहर के दोनों ओर पक्का रास्ता बनाया गया था। दोनों ओर बड़े सुन्दर ढंग से मालियों ने क्यारियों में फूल लगा रखे थे। चिनार के पेड़ गर्व से सीना ताने खड़े थे। धीरे-धीरे समस्त साथी चश्माशाही पर पहुंच गए थे। कुछ लोग कैनियों, प्लास्टिक की बोतलों व थर्मस बोतलों में पानी भर रहे थे। मेरे साथियों ने बिना प्यास के खूब पानी पिया था। कुछेक ने बोतलों में पानी भर लिया था।

इसका दूसरा नाम शाही बाग भी है। इसका निर्माण 1632 ई. में बादशाह शाहजहां ने करवाया था। इस चश्मे के पानी में औषधीय गुण विद्यमान हैं। इश चश्मे का शीतल जल पीने से पेट की कई बीमारियां दुरुस्त होती हैं और खाया पिया माल जल्दी हजम हो जाता है। ऐसा कहते हैं कि इस चश्माशाही का जल मुगल सम्राटों के पीने के वास्ते घोड़ा-गाड़ियों पर दिल्ली भेजा जाता था।

सन् 1972 में जब मैं चश्माशाही के स्थान पर पहली बार आया था, उस दिन ढाबे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से खाए परांठे हजम न होकर छाती पर ही बैठे मालूम होते थे। मैंने इस चश्मे से दो बार जी भर कर पानी पिया था। आधे घंटे के पश्चात सब हजम हो गया था और पुनः भूख सताने लगी थी। इस चमत्कार ने मेरे इस विश्वास को पूर्ण रूप से दृढ़ कर दिया था कि वास्तव में मुगल बादशाह अपने परिवार के पीने हेतु जल को चश्मा-शाही से अवश्य मंगवाते होंगे।

शाही चश्मे के पीछे बहुत ऊंचा व भीमकाय पहाड़ है जो भारी वृक्षोंसे आच्छादित है। हमारे देखते ही देखते बादलों के झुंड पहाड़ से निकलने लगे थे। मानो यह मेघ यह देखने के लिए आए हों कि किस राज्य के कौन-कौन से सैलानी यहां आनन्द लूटने आया है और वह इन अतिथि सैलानियों का अपनी शीतलता से स्वागत करने को दौड़े चले आए हैं। रिमझिम फुहार रूप में वर्षा होने लगी थी। शीतलमंद हवा से आहत तन-मन को बड़ी राहत मिली थी। तभी राकेश कुमार ने सभी साथियों को नीचे चल कर गाड़ी में बैठने का आदेश दिया था। कुछ ही समय में समस्त साथी गाड़ी में बैठ गए थे। ड्राइवर अशोक दीवाना ने गाड़ी चला दी थी।

गाड़ी परी महल के सामने आकर रुक गई थी। चश्मा शाही गार्डन के समीप ही एक पहाड़ी पर परी महल स्थित है। यह भव्य इमारत पहले एक बौद्ध मठ था। शाहजहां के बेटे दारा शिकोह ने अपने शासनकाल में इसे एक ज्योतिष केन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया था और इसे शाही ओबजरवेटरी एवं एस्ट्रोलोजी का स्कूल भी स्थापित किया था। महल के चारों तरफ फैला हुआ एक सुन्दर पार्क भी है। जहां से आस-पास के पूरे इलाके का रमणीय दृश्य देखा जा सकता है। इस प्राचीन इमारत की अच्छी देखभाल की जाती है। रात्रिकाल को यहांरोशनी की जाती है जिससे परी महल की सुन्दरता को चार चांद लग जाते हैं।

सभी साथियों ने परी महल को देखकर खूब आनन्द लूटा था। परन्तु चश्माशाही के जल ने अपना जलवा दिखाया था। सब को भूख तंग करने लगी थी। अब कुछ साथी बैठ कर आराम करना चाहते थे और पेट पूजा भी करना चाहते थे। परन्तु राकेश कुमार ने मिन्नी लेक पर ज़ाकर नमकीन-मिष्ठान के साथ चाय पिलाने को आश्वास्त किया था। समस्त साथी कहना मानकर गाड़ी में बैठ गए थे।

एक बड़ी सी मार्किट में आकर अशोक दीवाना ने गाड़ी रोक दी थी। एक चाय की दुकान पर बैठ कर बिस्कुट, ब्रैड पकौड़े व बर्फी के साथ सभी साथिदों ने चाय पी थी। सभी साथी अब तरोताजा व चुस्त-फुर्त थे। जिस बाग को अब देखने का कार्यक्रम था, उसके प्रवेश द्वारा पर इंग्लिश में बड़ा सा काला नींव पत्थर लगा था। जिस पर लिखा था-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

NEHRU MEMORIAL BOTANIC GARDEN
CHESHMASHAHI
MINI LAKE & JET FOUNTAIN
INAUGRATED BY
JANAB PEERZADA GHULAM AHMAD SHAH
HON'BLE MINISTER FOR
HAJ,AUQAF & GARDENS,
PARKS & FLORICULTURE
JAMMU & KASHMIR
ON 27TH OF OCTOBER 1999.

नेहरू पार्क यादगार व वनस्पति बगीचा
चश्माशाही
मिनी झील और जैट फव्वारा
जनाब पीरज़ादा गुलाम अहमद शाह
द्वारा प्रतिष्ठापित
आदरणीय मन्त्री हज़ औक्क़ाफ और बगीचा
पार्क और पुष्पखेती
जम्मू और कश्मीर
तिथि:- 27 अक्तूबर 1999

समस्त साथियों ने इस नींव पत्थर को ध्यान से पढ़ा था। फिर पार्क में आकर वहां बनाई गई छोटी सी झील को देखने लगे थे। इस झील में बच्चे अपने पैरों से छोटी मोटर बोट चलाते हुए बड़े प्यारे लग रहे थे। इसके पूर्व व पश्चिम की ओर ऊंची-ऊंची पर्वत श्रेणियां थीं, जो अपनी प्राकृतिक सुन्दरता से पर्यटकों का मन मोह रही थीं। इस पर्वत मालाओं के मुख सफेद मेघ घटाओं के आंचल ढकने लगे थे। पार्क में बनी फूलों की क्यारियों के समीप कुछ लोग सपरिवार बैठे थे। कुछ नवविवाहित जोड़े बांहों में बांहें डाले अपनी मस्ती में घूम रहे थे। एक चिनार के पेड़ के नीचे एक प्रेमी जोड़ा बैठा था। एक युवक ने अपनी प्रेमिका के दोनों गर्म-नरम हाथ अपने हाथों में ले रखे थे।वह उस सलोनी लड़की का मुखड़ा चूमना चाहता था। परन्तु लड़की हर बार शरमा कर उसके प्रयास को नाकाम बना देती थी। भतीजा अशोक कुमार मेरे साथ-साथ चल रहा था। मैंने उस जोड़े को ऐसा करते देखा-तो मुझे हंसी आने लगी थी। परन्तु अशोक कुमार के साथ होने से कंजूसी सेकाम लेना पड़ा था। केवल हल्की मुस्कराहट से ही काम चलाना पड़ा था। पार्क में बिछी हरित नरम घास की मखमली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh/Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चादर पर सभी साथी दो-दो तीन-तीन की संख्या में बतियाने लगे थे। सूरज अस्ताचल की ओर प्रस्थान करने को आकुल-व्याकुल होने लगा था।

राकेश कुमार ने हम दोनों चाचा-भतीजे के समीप आ कर कहा-''यशपाल अंकल! चलो उठो। अभी निशात बाग देखना है।'' उसके कथन के साथ ही हम दोनों उठ खड़े हुए थे। मैंने पीछे मुड़ कर देखा था। प्रेमी अपने मंसूबे में कामयाब हो गया था। वह अनिंद्य सुन्दरी को आलिंगन में लेकर चूमा चाटी कर रहा था। अब प्रेमिका उसके प्रेमालाप में सहयोग कर रही थी। वह बल्लरी सी उससे लिपट गई थी। मादक चुम्बन व आलिंगन होने लगे थे। मेरे होंठों पर मुस्कान रेखा फैल गई थी। मैं अशोक कुमार से दो-तीनक दम आगे तेजी से बढ़ कर चलने लगा था ताकि भतीजे से अपनी मुस्कुराहट के रहस्य को छुपा सकूं।

हमारी गाड़ी रेंगती हुई निशात बाग के सम्मुख आकर मार्किट में खड़ी हो गई थी। ड्राइवर अशोक दीवाना ने डल झील के किनारे गाड़ी को एक ओर खड़ी कर दिया था। अब डल झील के किनारे खाने-पीने, चाय-ठंडा मिलने की दुकानें लगी थीं। सन् 1972 में पंहली बार जब मैं यहां निशात बाग देखने आया था, उस समय यहां यह सब नाममात्र था। बढ़ती आबादी, घरेलू खर्चे, बेरोजगारी ने इन आलौकिक उद्यानों के साथ सैलानियों की खाने-पीने, फोटोग्राफी, कश्मीरी शाल, हस्तकरघा में बनी हस्तनिर्मित लकड़ी के सामान के व्यवसाय को प्रोत्साहित किया है। कश्मीर के अवर्णनीय प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर ही मुगल बादशाह जहांगीर ने कहा था-''अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है''।

लोगों में एक मिथिहास है-'निशात बाग को बादशांह शाहजहांने अपने सपने में देखा था। अपने कारीगरों से अपनी रहनुमाई में यह बाग बनवाया था।'

यह कश्मीर का सबसे सुन्दर बगीचा है। निशात बाग का निर्माण 1634 ई. में आसफ खान ने डल झील के किनारे करवाया था। इस बाग का आकार सीढ़ीनुमा है। इस बाग की लम्बाई 1755 फुट व चौड़ाई 1107 फुट है। इसकी सड़क के साथ लगने वाली दीवार की ऊंचाई 13 फुट है। प्रवेशद्वार पर प्यारी-प्यारी बेलों ने उसे आच्छादित कर दिया है। जिसकी शोभा देखते ही बनती है। नीचे से उसे ऊपर को जाती पत्थर की दीवारों की ऊंचाई 16 से 18 फुट के लगभग है। बाग के चारों ओर पत्थरों से निर्मित मजबूत दीवार है।

सब साथियों ने वहां मार्किट में पीसीओ से पहले अपने घर में कुशल मंगल के फोन किए थे। परन्तु मेरा फोन न मिला था। सुजानपुर (गुरदासपुर) में अपने परम स्नेही मित्र डॉ. लेखराज के फोन पर नम्बर मिलाया तो फोन झट से लग गया था। डॉ. लेखराज घर पर न थे। भाभी श्रीमती सुषमा जी से बातचीत हुई थी। बच्चों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुशलक्षेम के सम्बन्ध में जानकारी लेकर मैंने फोन बंद कर दिया था।

समस्त साथी बाग के मुख्यद्वार से अन्दर प्रवेश करने लगे थे। लोगों की यहां खासी भीड़ थी। बाग के मध्यभाग में नहर बनाई गई है, जिसमें फव्वारे चल रहे थे। नहर के दोनों ओर नाना किस्म के फूलों की क्यारियां बनाई गई थीं। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे–वर्षों बाद किसी स्नेही मित्र के घर पधारा हूं। हू-ब-हू उसी चिरसंचित रमणीयता को लेकर निशात बाग खड़ा था। बाग के मालियों व निरीक्षकों ने इस बाग को दुल्हन सा सजाने में कोई कोर-कसर उठा न रखी थी। प्रेमी जोड़े, नवविवाहित जोड़े फूलों की क्यारियों के समीप हाथों में हाथ, बाहों में बाहें डाले अपने प्रेम, उलाहनों को कहने-सुनने में मशगूल थे। लोग बगीचे में चिनार के पेड़ों, फूलों की क्यरियों, शीतल जल छिड़कते फव्वारों और नहर के किनारे खड़े होकर समूह रूप में, युगल व एकांकी रूप में कई अंदाज में इन यादगार लम्बों को अपने कैमरे में कैद कर रहे थे। फिर भला हमारा लव कुमार और रोहित कुमार पीछे कैसे रह सकते थे। सूर्यास्त हो चुका था। दोनों शोर मचाने लगे थे–"अरे अंधेरा हो जाएगा, पहले फोटोग्राफी कर लो।" पहले ग्रुप फोटो, फिर दो-दो, तीन-तीन साथियों और फिर एकाकी रूप में फोटो खिंचवाए थे। हमारे समस्त साथी परस्पर में हंसी-मजाक कर रहे थे। घूमते हुए बाग की भव्यता, फूलों के सौन्दर्य का आनन्द उठा रहे थे। भतीजा अशोक कुमार, नरेश कुमार के साथ टहल रहा था। मैं व दौलत राम निशात बाग की पूर्व दिशा की ओर घूमते हुए चलने लगे थे। मैं कुछ देर के लिए चिनार के पेड़ के नीचे बैठ गया था। दौलत राम आगे चला गया था। चिनार के गगनचुम्बी, भीमकाय, ऊंचे लम्बे पेड़ों के पीत वर्ण हुए पत्तों को देख कर मेरा कवि मन चीत्कार कर उठा था–

जुल्म निरन्तर जारी है।
आशा मेरी टूट गई, तूफान कत्ल का नहीं रुका।
सोच-सोच मैं हार गया, इन्सान यहां कई बार लुटा।
निर्दोष रक्त बहाने वालो, जेहाद तुम्हारा झूठा है।
खुदा रोता चुपके-चुपके, नारा तुम्हारा झूठा है।
ईमान तुम्हारा झूठा है, लक्ष्य तुम्हारा झूठा है।
पाक-मोमिन बनते हो, अमन तुम्हीं ने लूटा है।
रोता है हर डाल पे पक्षी, रोता हरेक बूटा है।
पत्ता-पत्ता रोता है, चैन जिगर का लूटा है।
हर आंख में पानी है बहता, रोता हर नर-नारी है।
जुल्म निरन्तर जारी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रक्तिम नदिया तीर हुए, कोना-कोना लाल हुआ।
गाँव-गाँव और नगर-नगर, कत्ल किसी का बाल हुआ।
बर्फीले पहाड़ों के भी, रक्त-रंजित भाल हुए।
जल गए यारो रैन बसेरे, सपने जल हैं खाक हुए।
चिनाव-जेहलम रोते हैं, औ, ऋषि कश्यप रोता है।
रोते नभ के तारे हैं, सिसकी भर चंदा रोता है।
जल तरंग हर मातम करती, रोती शीतल पवन जहां।
बम बंदूकों साए तले, सुखचैन की चीज़ कहां।
रोता है हर फूल माली, भागो मारामारी है।
जुल्म निरन्तर जारी है।
बम गोलियों की आवाजें, कोमल ह्दय डराती हैं।
मधुर-मंधुर संजोए सपने, उनको आग लगाती हैं।
मैं चिनार का बूढ़ा बूटा, जुल्म देख कर हार गया।
अस्मत लुटती बहू-बेटियों, जिनका दुःख है मार गया।
उदास हुआ हरेक चेहरा, मातृभूमि हुई पराई।
सुख दुःख बांटने वालों से, कैसे सहूं मैं उनकी जुदाई।
ग़म में सबका खाना-पीना, गुल हैं गेह-चिराग़ हुए।
सुन्दर भविष्य नौजवानों, धू-धू जल बर्बाद हुए।
मार दहाड़ें रोया हूं, अफरा-तफरी जारी है।
जुल्म निरन्तर जारी है।

कश्मीर की विषम परिस्थितियों पर सोचते-सोचते मेरा मन दुःखित हो उठा था। मैं उदासी के आलम में चला गया था। कुछ देर के पश्चात दौलत राम मेरे समीप आकर बैठता हुआ बोला-'यश अंकल! कितने वाहियात लोग हैं। अच्छा बुरा कर्म करने का भी कोई टाईम और जगह होती है।

मैंने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए पूछा-'ऐसा क्या हुआ है दौलत राम?'

उंगली से चिनार के वृक्षों की ओर संकेत करके बोला-''उन चिनार के दरख्तों के नीचे इस समय लड़का-लड़की संभोग क्रीड़ा में लगे हुए हैं। चलो पुलिस को इसकी सूचना दें। सालों ने यहीं मरना था इस काम के लिए।''

मैंने दौलत राम को शांत करते हुए कहा-''छोड़ो इस बात को दौलत राम, छोड़ो। इस दुनिया में सब चलता है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मैं एक बात से हैरान परेशान हूं–लड़के–लड़की ने पैंट–सलवार उतार कर पास रखी हुई है। जैसे बेखौफ होकर सुहागरात मना रहे हों। इस से बगीचे का माहौल गंदा होता है। मेरी जगह कोई और होता तो वह भी इस गंदगी में मुंह मारने में पीछे न रहता। इन कुन्द जहन लोगों को इतना अहसास तो जरूर होना चाहिए कि यह एक मशहूर पब्लिक प्लेस है।'' दौलत राम का क्रोध में चेहरा लाल हो गया था। मैंने मुस्कराते हुए उसे शांत करते कहा– ''दौलत राम कबीर साहिब ने बड़े सुन्दर अल्फाज में मनुष्य को समझाते हुए कहा है–

जो करनगे, सो भरनगे, तू क्यों हुआ उदास।

वे वीरा तू क्यों हुआ उदास।

अब चलो लव (ताखो) के पास।'' मेरी बात सुनकर दौलतराम खिलखिला कर हंस पड़ा था। मैं भी हंसी में उसका साथ देने लगा था। दौलतराम का मूड़ बदल गया था। अंधेरे ने अपनी काली–चादर वातावरण पर फैलानी आरम्भ कर दी थी। हम दोनों उठ कर अपने साथियों के समीप आकर नहर के किनारे बैठ गए थे। अंधेरा घना होता जा रहा था। आसमान पर तारों की बारात प्रांगण में उतर आई थी। ऐसा प्रतीत होने लगा था– जैसे कोई सुरबाला दिव्य वस्त्रों भूषणों से सुसज्जित होकर, नीलाम्बर की सितारों जड़ी साड़ी में अपने प्रियतम से मिलने को अभिसारिक स्थल की ओर चल पड़ी हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जम्मू-कश्मीर में धारा 370 का अनुचित होना व उसके भयानक परिणाम

रात्रिकाल का भोजन हम पंजाबी ढाबे से करके अपने हाऊस बोट में आ गए थे। आज समस्त साथी बहुत प्रसन्न थे। पवन कुमार को मजाक सूझा। वह बोला- 'यश अंकल! आप सचमुच बड़े लक्की हो।' उसकी बात सुनकर सभी का ध्यान मेरी ओर खिंच गया था।

मैंने तनिक मुस्कराकर पवन कुमार से पूछा- "ऐसी क्या बात हो गई पवन जी, मैं अपने सब साथियों से लक्की हो गया हूँ।"

वह बोला- 'कश्मीरी औरतों के सम्बन्ध में किसी उर्दू शायर ने कितना बढ़िया लिखा है-

हर चेहरा जहां-चांद, हर ज़र्रा सितारा।

ये वादी-ए-कश्मीर, जन्नत का नजारा।

मेरे कहने का अभिप्राय इतना है कि आप ने कश्मीर से चौदहवीं के चांद को अपनी बीबी बनाया है। चाहे हमने भाभी जी को चंद लम्हों के लिए देखा है, परन्तु वह सूरत से पूर्णिमा के चांद और सीरत से शहद सा स्वभाव रखती हैं।".

इससे पहले कि मैं कोई उत्तर देता नरेश शर्मा बोला-'अभी जवान हो, सरकारी नौकरी पर काबिज हो। कोई-न-कोई नाज़नीन तुम्हें भी मिल ही जाएगी।'

"जो पहले घर पर मौजूद है, उसका क्या होगा भा जी?" पवन कुमार ने अपने हाथों के अभिनय और काकू बक्रोति से ऐसे ढंग से कहा कि सभी साथी खिलखिला कर हंसने लगे थे।

"सच पूछो तो पहली बार कश्मीर देखा है। मन चाहत पैदा करता है कि गुलमर्ग या श्रीनगर में कहीं थोड़ी सी जमीन का कोई टुकड़ा खरीद कर अपना आशियाना बना डालूं। यार सचमुच कश्मीर तो जन्नत है।" इस बार हृदय की अतल गहराई से नरेश शर्मा ने कहा।

"ले लो भई जमीन का टुकड़ा। कर डालो सौदा। बना डालो सुन्दर सा आशियाना। हम बीवी-बच्चों समेत आपके पास गर्मियों के दिन बिताने आ जाया करेंगे।" उसके सांढू राकेश कुमार ने कहा।

"यह ख्वाब कहने या सुनने को बहुत अच्छा हैं। परन्तु हकीकत में यहां दूसरी स्टेट का आदमी जम्मू कश्मीर में कोई जमीन-जायदाद की खरीद फरोख्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं कर सकता। क्योंकि इस रियासत में संविधान की धारा 370 लागू है।'' कहा अशोक कुमार ने।

''वह धारा 370 क्या होती है अशोक जी?'' पूछा दौलत राम ने।

अशोक कुमार बोला– ''जब सन् 1952 में भारत में पहला आम चुनाव हुआ तो सारे हिन्दोस्तान में संसद सदस्य चुने जाकर संसद में पहुंचे। उनमें एक प्रसिद्ध नाम डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी बंगाल से चुने गए थे। वह कांग्रेस पार्टी की टिकट पर चुनाव जीते थे। श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी विचारशील और बुद्धिमान व्यक्ति थे। वह पंडित जवाहर लाल नेहरू की कैबिनेट के सदस्य थे।'' श्री मुखर्जी ने संसद में प्रश्न उठाया– ''जब जम्मू कश्मीर का भारत में विलय हो गया है और महाराजा हरिसिंह ने और उसके मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों ने, प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला ने लिखित रूप में जम्मू-कश्मीर राज्य का भारत में विलय स्वीकार किया है, तब Defence Externalaffairs तथा comunication को ही क्यों माना जा रहा है? इसके साथ दूसरे Subjects को भी लागू करना चाहिए। जैसे-सुप्रीम कोर्ट की Juridiction, Account and Audit एक विधान एक निशान, चुनाव आयोग का अधिकार आदि को विलय में स्वीकार क्यों नहीं किया गया? धारा 370 जो उस समय के प्रावधान के अनुसार जम्मू कश्मीर को स्पैशल स्टेटस क्यों दिए गए? जम्मू कश्मीर में जाने के लिए भारतीयों को परमिट की जरूरत क्यों है? जबकि समस्त जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इसकी रक्षा व्यवस्था का सारा दायित्व भारत सरकार का है। इस तरह यह विलय की व्यवस्था अधूरी और अपंग है।'' श्री मुखर्जी की इस दलील पर जब कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उन्होंने कांग्रेस पार्टी का साथ छोड़ दिया और अपना अलग दल-भारतीय जनसंघ के नाम से गठित कर लिया। श्री मुखर्जी ने अपूर्ण विलय का विरोध करते हुए जम्मू कश्मीर में प्रवेश किया। इस पर शेख अब्दुल्ला की सरकार ने इनको गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। नजरबंदी के 43वें दिन अर्थात् 23 जून, 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत आज भी एक रहस्य है। अतः डॉ. मुखर्जी के बलिदान के बाद 'दो प्रधान, दो निशान' विभिन्न प्रावधानों के अंतर्गत समाप्त हो गए, किन्तु अनुच्छेद 370 के माध्यम से दो विधान अब भी कायम है।

यह धारा 370 में जो कि Temporary Tranisitional & special provisonal था जो, constitution para xxi में है। इस आर्टिकल के अधीन आगे चलकर कुछ ऐसी परिस्थितियां आड़े आईं जैसे कि भारत का कोई व्यक्ति जम्मू कश्मीर में सरकारी सर्विस नहीं कर सकता। भूमि नहीं खरीद सकता। दुकान-मकान आदि प्रापर्टी नहीं बना सकता। विपरीत इसके जम्मू कश्मीर के सभी नागरिकों का शेष भारत में वे सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिकार प्राप्त हैं जो अधिकार सभी भारतीयों को प्राप्त हैं। कश्मीरी लोग कहीं भी भारत में प्रापर्टी खरीद सकते हैं। यह सब एक अनुचित व्यवस्था बनाई गई थी। कश्मीर क्षेत्र की सुरक्षा के लिए शेष भारत के जवान सीमा पर बलिदान दें और जो हिस्से पाकिस्तान के कब्जे में है, उन से भारत का लहुलुहान करने के लिए जिहादी प्रशिक्षण शिविर चला रहे हैं। रोज-रोज सेना के जवान व आम नागरिकों को आतंकवादी मार रहे हैं।

धारा 370 जम्मू कश्मीर के अस्थाई प्रबंध से एक विशेष राज्य का दर्जा देती है। इस 370 की धारा के अनुसार जम्मू कश्मीर भारत का ऐसा राज्य है जिसमें आम नागरिकों की बजाए लोगों द्वारा चुने लीडरों को ज्यादा लाभ हो रहा है। धारा 370 के कारण ही जम्मू कश्मीर के सारे नागरिक वहां के निवासी नहीं हैं, चाहे वह पचास वर्षों से वहां रह रहे हों। भारत विभाजन के दौरान पश्चिमी पाकिस्तान से निर्वासित होकर आए हिन्दू व सिक्ख इसी कैटेगिरी में आते हैं। वह भारत के नागरिक तो हैं परन्तु जम्मू कश्मीर के नहीं।'' कह कर अशोक कुमार चुप हो गया। उसने उठकर थोड़ा सा पानी पिया और अपनी जगह पर बैठ गया।

''क्या 370 की बात पूरी हो गई अशोक कुमार?'' पूछा नरेश कुमार ने।

''नहीं नरेश जी, यह बात लम्बी-चौड़ी है।'' कहा अशोक कुमार ने।

''यार सुनने में 370 धारा बड़ी आई थी। अखबारों में भी कई बार पढ़ा था, लोगों की ज़ुबानी सुना था। परन्तु जिस तफसील से तुम हमें सुना रहे हो-पूरी की पूरी बात हमारे जेहन में बैठ जाती है।'' नरेश शर्मा ने कह कर अशोक कुमार की ओर देखा।

अशोक कुमार आगे बताने लगा-''भले ही आगे चलकर जे एंड के कोर्ट एक्ट 1939 में कुछ सुधार करने के बाद भारतीय संविधान के कुछ अंश लागू करा लिए गए हैं, फिर भी वह बात नहीं जो पूर्णरूपेण विलय की होती है। इसी कारण कश्मीर क्षेत्र के अलगाववादी संगठन रोज़-ब-रोज़ अपनी भाषा बदल लेते हैं। यदि इस विलय को सर्वमान्य बना लिया जाए तो अलगाववादी व उग्रवादी संगठन जैसे हुर्रियत कांफ्रैंस आदि को मनमानी करने से रोका जा सकता है।

पाकिस्तानी लीडरों का मनसूबा है कि- 'भारत के अधिकृत जम्मू कश्मीर क्षेत्र और पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र में वहां के अपने संविधान की धारा 256 को इसलिए सुरक्षित रखा जाए ताकि जब समस्त जम्मू कश्मीर पर पाकिस्तान का अधिकार हो जाए तो जम्मू कश्मीर का शासन इस धारा के अधीन चलाया जाए।'' इसका अर्थ यह है कि पाकिस्तानी नेताओं को यह यकीन है कि जम्मू कश्मीर पर किसी भी समय पाकिस्तान का राज्य निष्कंटक राज्य स्थापित हो जाएगा। पाकिस्तान की इस कूटनीतिक मानसिकता के पीछे भारतीय नेताओं की दुरंगी और अविवेकपूर्ण नीतियां ही अधिक जिम्मेदार हैं-

1. 1 जनवरी 1948 को व्यर्थ ही सहायता के लिए यू.एन.ओ. में जाना तो सबसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ी गलती थी।

2. 1 जनवरी 1948 को अपनी ओर से युद्ध विराम करना नितान्त अनुचित और दुर्भाग्यपूर्ण कदम था।

3. 1 सितम्बर से 25 सितम्बर 1965 तक चले युद्ध में भारतीय जवानों ने अपना बलिदान देकर पाकिस्तान का जो भू-भाग अपने कब्जे में किया था, वह हमारे राजनेताओं ने 10 जनवरी 1966 को ताशकन्द समझौते के अन्तर्गत प्लेट में सजा कर वापिस कर दिया था।

4. 3 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 1971 तक भारत का पाकिस्तान से युद्ध चला था। भारतीय जवानों ने बंग्लादेश और पाकिस्तान के दोनों मोर्चों पर अत्याधिक शौर्य प्रदर्शन किया और पश्चिम क्षेत्र का बड़ा अच्छा भू-भाग शत्रु से मुक्त करा लिया था और बांग्लादेश को पाकिस्तान के चंगुल से आजाद करा दिया था। यही नहीं, शत्रु देश के 93 हजार सैनिकों को बंदी बना लिया था। किंतु उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी वही पुरानी नीति अपनाई। 2 जुलाई, 1972 को शिमला में बैठ कर समझौता किया गया तो पाकिस्तान के लिए मेहरबानियों की सप्लाई थोक के हिसाब से कर दी गई। युद्धबंदियों को सम्मान के साथ रखा। उनको खिला-पिला कर, पाल-बोस कर उनके घर भेज दिया गया। पाकिस्तान से कोई हर्जाना वसूल नहीं किया गया। पाकिस्तान की जेलों में जो भारतीय सैनिक बंद थे, उनकी याद हमारे लीडरों को बिल्कुल नहीं आई। इस समझौते से कम-से-कम जम्मू कश्मीर के वह इलाके पाकिस्तान से खाली करवा लेने चाहिए थे जिन पर उसने नाजायज कब्जा कर रखा है। इसका एक दुःखद पहलू यह है कि शिमला समझौते का पालन भारतीय नेता करते चले आ रहे हैं, और पाकिस्तान हुक्मरान किसी भी समझौते की कद्र-कीमत नहीं करते। उल्टा पाकिस्तान ने कश्मीर में अपने आतंकी भेज कर आतंकवाद का गंदा खेल जारी कर रखा है। लोगों में जाति मजहब का भेद-भाव पैदा करके आतंकी हमले करवा कर जम्मू कश्मीर के इलाके से हिन्दुओं को भगा दिया है।''

''यह क्या सियासत थी श्रीमती इन्दिरा गांधी की? उसे तो देवी दुर्गा भारत में कहा जाता था। दुश्मन से फतेह किए इलाके, बंदी एक लाख के करीब फौज, जम्मू कश्मीर के इलाके पाकिस्तान से खाली न करवाना, सब कुछ देने के एवज में हर्जाना वसूली भी न करना- यह सब से अनपढ़, गंवार और मूर्खों वाला फैसला था। कौन कहता है कि वह बड़ी सियासतदान थीं? प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा की जगह मैं होता तो फतेह इलाके उसे वापिस कतई न करता। 93 हजार सैनिक बंदियों की रिहाई के बदले पाकिस्तान के कब्जे वाला पूरा जम्मू कश्मीर का इलाका मुक्त करवाता। हर्जाना भी करोड़ों का वसूल करता। पाकिस्तान बच्चू को खूब रगड़ा देता। कुछ कड़ी शर्तें लिखवाता।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गुस्से से कहा दौलतराम ने।

अशोक कुमार ने फिर कहना शुरू किया- सन् 1990 से अब तक आतंकवाद इस हद तक पहुंच गया कि अब इसमें हिंदू ही क्या, सिख और मुसलमान भी सुरक्षित नहीं हैं। सन् 1971 की लड़ाई में सब कुछ पाकिस्तान को देने के बदले में यदि कुछ मिला तो वह था जम्मू कश्मीर में आपरेशन टोपाक, पंजाब में आतंकवाद और खून-खाक का खेल। इस पर भी तुर्रा-ए-इम्तियाज़ यह है कि हमारे नेता इस पापी-धूर्त-बेईमान मुल्क से हाथ मिलाने के लिए सद्भावना की बसें सजा-संवार कर पाकिस्तान में दोस्ती गांठने जाते हैं। गले मिलने जाते हैं जैसे वह इनके मामूजान के सपूत हों जो इनके लिए बड़े उदासी के आलम में हों जिन्हें इंडिया के लीडरों से मिले बिना रात को नींद न आती हो।''

''दूसरी ओर वह दगाबाज लोग शत्रुता का एक और नया एकाउन्ट कारगिल में चुपचाप घुसपैठियों को भेजकर खोल देते हैं। इससे दुश्मन को अपनी स्थिति मजबूत करने का अच्छा मौका हाथ लग गया और हम अपने वीर जवानों से हाथ धो बैठे। तब कहीं जाकर हम दुबारा कारगिल क्षेत्र को शत्रु से वापिस ले पाए थे। लोग कहते थे- पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ, बड़े शरीफ किस्म के आदमी हैं। यदि शरीफ ऐसे हों तो भारत देश का भगवान ही रखवाला है। अल्लाह खैर करे।'' अशोक कुमार ने यह बात कुछ ऐसे अंदाज में कहा कि सब साथी खिलखिलाकर हंस पड़े।

अशोक ने अपनी बात को पुनः जारी रखा। वह कहने लगा-''सन् 2000 में ईद का समय नजदीक आया तो इंडिया ने अपनी ओर से उदारवादी घोषणा की-'इंडियन आर्मी अपनी ओर से इन खून-खाक का खेल खेलने वाले आतंकवादियों के विरुद्ध कारईवाई नहीं करेगी।' यह एक तरफा युद्ध विराम (यद्यपि आतंकवाद युद्ध नहीं होता) घोषित किया गया था। इसके विपरीत पाकिस्तानी आतंकवादी लगातार जम्मू कश्मीर व भारत में अपनी नापाक आतंकवादी गतिविधियों को चलाते रहे। दरअसल, हमारे इंडियन लीडरों के दिल बड़े नाजुक हैं। जल्दी पसीज जाते हैं। रहमोकरम करना इनका स्वभाव है। इनकी इसी सदभावना, त्याग, खुलदिली व राजनीति के मूलभूत सिद्धान्तों और राष्ट्र की अखंडता के शून्य ज्ञान ने हिन्दुस्तान का बेड़ा गरक किया है। जवाहर लाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक के कांग्रेस प्रधानमंत्रियों ने भारत के लिए ऐसी भौगोलिक, राजनैतिक पचीदगियां पैदा कर दी हैं, जिन्हें भविष्य में उन्हें सुलझाना और उनसे छुटकारा पाना असम्भव सा हो गया है। चीन की विस्तारवादी नीति है। पाकिस्तान महामूर्ख, धोखेबाज और शातिर किस्म का मुल्क है। जब तक इस देश का वजूद खत्म नहीं होता-यह भारत से टकराता ही रहेगा। न चैन से जिएगा, न जीने ही देगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरअसल, पाकिस्तान का विभाजन ही भारत के हिन्दुओं के साथ मुसलमानों के शत्रुतापूर्ण आचरण से हुआ है। यदि इस देश के, इस के अन्य निवासियों के मित्र होते तो अलग देश की जरूरत ही नहीं थी। इस वक्त यह स्थिति इतनी विकराल रूप धारण कर चुकी है कि पाकिस्तान में दहशतगर्दों की युनिवर्सिटी खुल गई है। वहां की एजुकेशन का सिद्धान्त यही है कि–''न जिओ, न जीने दो।'' इसीलिए आत्मघाती आतंकवादी दस्ते भारत की सीमा में भेजे जा रहे हैं। हां, यह बात हम बार-बार निःसंकोच होकर कहेंगे कि यह सब ग़लतियां हमारे राजनेताओं की हैं, और अब भी कर रहे हैं। भारत देश में आगे आने वाली नस्लें, इन नेताओं का कुछ बिगाड़ तो न सकेंगी, हां, स्थान-स्थान पर बाजारों और चौराहों पर खड़े हुए इनके पुतलों का क्या करेंगी, भविष्य-बतलाएगा।''

गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने एक बार एक पत्र औरंगजेब को लिखा था। इस पत्र का भाव था कि–''आप लोगों से हम लड़ना नहीं चाहते थे। हम शांति प्रिय नागरिक हैं। परन्तु आप लोग शांति की भाषा को नहीं समझते बल्कि तलवार की भाषा को समझते हैं।'' यह पत्र जफ़रनामा फ़ारसी भाषा में इस प्रकार लिखा गया था–

चूंकार, एज़ हमा हिलते दर गुज़श्त
हलाल अस्त बुरदन ब-शमशीर दस्त।

इस पत्र की भाषा का यही तात्पर्य समझते हैं कि जो व्यक्ति जिस भाषा को समझता है, उसको उसी भाषा में उसकी बात का जवाब समझाया जा सकता है। जब दूसरा आपकी भाषा का अर्थ ही नहीं समझता तो उसका आचरण उसकी इच्छानुसार होता रहेगा। यहां इकबाल का एक शे'र याद आया है–

इज़्ज़त है मोहब्बत की कायम ऐ कैश हजाब महमल से
महमल जो गया इज़्ज़त भी गई, ग़ैरत भी गई, लैला भी गई।

बस भारत देश का यही हाल है।'' कह कर अशोक कुमार मौन साध गया था। समस्त साथी उठ कर सोने का प्रबन्ध करने लगे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

धारा ३७०· भारतीय संविधान का एक विशेष अनुच्छेद (धारा) है जिसके द्वारा जम्मू एवं कश्मीर राज्य को सम्पूर्ण भारत में अन्य राज्यों के मुकाबले विशेष अधिकार अथवा (विशेष दर्ज़ा) प्राप्त है। देश को आज़ादी मिलने के बाद से लेकर अब तक यह धारा भारतीय राजनीति में बहुत विवादित रही है। भारतीय जनता पार्टी एवं कई राष्ट्रवादी दल इसे जम्मू एवं कश्मीर में व्याप्त अलगाववाद के लिये जिम्मेदार मानते हैं तथा इसे समाप्त करने की माँग करते रहे हैं। भारतीय संविधान में अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष उपबन्ध सम्बन्धी भाग २१ का अनुच्छेद ३७० जवाहरलाल नेहरू के विशेष हस्तक्षेप से तैयार किया गया था। स्वतन्त्र भारत के लिये कश्मीर का मुद्दा आज तक समस्या बना हुआ है।[1]

अनुक्रम

- 1 विशेष अधिकार
  - 1.1 विशेष अधिकारों की सूची
- 2 धारा ३७० के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें
- 3 सन्दर्भ
- 4 इन्हें भी देखें
- 5 बाहरी कड़ियाँ

विशेष अधिकार

- धारा 370 के प्रावधानों के अनुसार, संसद को जम्मू-कश्मीर के बारे में रक्षा, विदेश मामले और संचार के विषय में कानून बनाने का अधिकार है लेकिन किसी अन्य विषय से सम्बन्धित क़ानून को लागू करवाने के लिए केन्द्र को राज्य सरकार का अनुमोदन चाहिये।
- इसी विशेष दर्ज़े के कारण जम्मू-कश्मीर राज्य पर संविधान की धारा 356 लागू नहीं होती।
- इस कारण राष्ट्रपति के पास राज्य के संविधान को बर्ख़ास्त करने का अधिकार नहीं है।
- 1976 का शहरी भूमि क़ानून जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं होता।
- इसके तहत भारतीय नागरिक को विशेष अधिकार प्राप्त राज्यों के अलावा भारत में कहीं भी भूमि ख़रीदने का अधिकार है। यानी भारत के दूसरे राज्यों के लोग जम्मू-कश्मीर में ज़मीन नहीं ख़रीद सकते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- भारतीय संविधान की धारा 360 जिसके अन्तर्गत देश में वित्तीय आपातकाल लगाने का प्रावधान है, वह भी जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं होती।
- जम्मू और कश्मीर का भारत में विलय करना ज़्यादा बड़ी ज़रूरत थी और इस काम को अंजाम देने के लिये धारा 370 के तहत कुछ विशेष अधिकार कश्मीर की जनता को उस समय दिये गये थे। ये विशेष अधिकार निचले अनुभाग में दिये जा रहे हैं।

विशेष अधिकारों की सूची

1. जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता होती है।
2. जम्मू-कश्मीर का राष्ट्रध्वज अलग होता है।
3. जम्मू-कश्मीर की विधानसभा का कार्यकाल 6 वर्षों का होता है जबकि भारत के अन्य राज्यों की विधानसभाओं का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।
4. जम्मू-कश्मीर के अन्दर भारत के राष्ट्रध्वज या राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान अपराध नहीं होता है।
5. भारत के उच्चतम न्यायालय के आदेश जम्मू-कश्मीर के अन्दर मान्य नहीं होते हैं।
6. भारत की संसद को जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में अत्यन्त सीमित क्षेत्र में कानून बना सकती है।
7. जम्मू-कश्मीर की कोई महिला यदि भारत के किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से विवाह कर ले तो उस महिला की नागरिकता समाप्त हो जायेगी। इसके विपरीत यदि वह पाकिस्तान के किसी व्यक्ति से विवाह कर ले तो उसे भी जम्मू-कश्मीर की नागरिकता मिल जायेगी।
8. धारा 370 की वजह से कश्मीर में RTI लागू नहीं है, RTE लागू नहीं है, CAG लागू नहीं है। संक्षेप में कहें तो भारत का कोई भी कानून वहाँ लागू नहीं होता।
9. कश्मीर में महिलाओं पर शरियत कानून लागू है।
10. कश्मीर में पंचायत के अधिकार नहीं।
11. कश्मीर में चपरासी को 2500 रुपये ही मिलते हैं।
12. कश्मीर में अल्पसंख्यकों (हिन्दू-सिख) को 16% आरक्षण नहीं मिलता।
13. धारा 370 की वजह से कश्मीर में बाहर के लोग जमीन नहीं खरीद सकते हैं।
14. धारा 370 की वजह से ही कश्मीर में रहने वाले पाकिस्तानियों को भी भारतीय नागरिकता मिल जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धारा ३७० के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें

१) धारा ३७० अपने भारत के संविधान का अंग है।

२) यह धारा संविधान के २१ वें भाग में समाविष्ट है जिसका शीर्षक है–'अस्थायी, परिवर्तनीय और विशेष प्रावधान' (Temporary, Transitional and Special Provisions).

३) धारा ३७० के शीर्षक के शब्द हैं – जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में अस्थायी प्रावधान "Temporary provisions with respect to the State of Jammu and Kashmir").

४) धारा ३७० के तहत जो प्रावधान है उनमें समय समय पर परिवर्तन किया गया है जिनका आरम्भ १९५४ से हुआ। १९५४ का महत्त्व इसलिये है कि १९४३ में उस समय के कश्मीर के वजीर-ए-आजम शेख मुहम्मद अब्दुल्ला, जो जवाहरलाल नेहरू के अंतरंग मित्र थे, को गिरफ्तार कर बंदी बनाया था। ये सारे संशोधन जम्मू-कश्मीर के विधानसभा द्वारा पारित किये गये हैं।

संशोधित किये हुये प्रावधान इस प्रकार के हैं–

- (अ) १९५४ में चुंगी, केंद्रीय अबकारी, नागरी उड्डयन और डाकतार विभागों के कानून और नियम जम्मू-कश्मीर को लागू किये गये।
- (आ) १९५८ से केन्द्रीय सेवा के आई ए एस तथा आय पी एस अधिकारियों की नियुक्तियाँ इस राज्य में होने लगीं। इसी के साथ सी ए जी (CAG) के अधिकार भी इस राज्य पर लागू हुए।
- (इ) १९५९ में भारतीय जनगणना का कानून जम्मू-कश्मीर पर लागू हुआ।
- (ई) १९६० में सर्वोच्च न्यायालय ने जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध अपीलों को स्वीकार करना शुरू किया, उसे अधिकृत किया गया।
- (उ) १९६४ में संविधान के अनुच्छेद ३५६ इस राज्य पर लागू किये गये। इस अनुच्छेदों के अनुसार जम्मू-कश्मीर में संवैधानिक व्यवस्था के गड़बड़ा जाने पर राष्ट्रपति का शासन लागू करने के अधिकार प्राप्त हुए।
- (ऊ) १९६५ से श्रमिक कल्याण, श्रमिक संगठन, सामाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक बीमा सम्बन्धी केन्द्रीय कानून राज्य पर लागू हुए।
- (ए) १९६६ में लोकसभा में प्रत्यक्ष मतदान द्वारा निर्वाचित अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया।
- (ऐ) १९६६ में ही जम्मू-कश्मीर की विधानसभा ने अपने संविधान में आवश्यक सुधार करते हुआ–'प्रधानमन्त्री' के स्थान पर 'मुख्यमन्त्री' तथा 'सदर-ए-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रियासत' के स्थान पर 'राज्पाल' इन पदनामों को स्वीकृत कर उन नामों का प्रयोग करने की स्वीकृति दी। 'सदर-ए-रियासत' का चुनाव विधानसभा द्वारा हुआ करता था, अब राज्पाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होने लगी।

- (ओ) १९६८ में जम्मू-कश्मीर के उच्च न्यायलय ने चुनाव सम्बन्धी मामलों पर अपील सुनने का अधिकार सर्वोच्च न्यायालय को दिया।
- (औ) १९७१ में भारतीय संविधान के अनुच्छेद २२६ के तहत विशिष्ट प्रकार के मामलों की सुनवाई करने का अधिकार उच्च न्यायालय को दिया गया।
- (अं) १९८६ में भारतयी संविधान के अनुच्छेद २४९ के प्रावधान जम्मू-कश्मीर पर लागू हुए।
- (अः) इस धारा में ही उसके सम्पूर्ण समाप्ति की व्यवस्था बताई गयी है। धारा ३७० का उप अनुच्छेद ३ बताता है कि "पूर्ववर्ती प्रावधानों में कुछ भी लिखा हो, राष्ट्रपति प्रकट सूचना द्वारा यह घोषित कर सकते है कि यह धारा कुछ अपवादों या संशोधनों को छोड़ दिया जाये तो समाप्त की जा सकती है।"

इस धारा का एक परन्तुक (Proviso) भी है। वह कहता है कि इसके लिये राज्य की संविधान सभा की मान्यता चाहिये। किन्तु अब राज्य की संविधान सभा ही अस्तित्व में नहीं है। जो व्यवस्था अस्तित्व में नहीं है वह कारगर कैसे हो सकती है?

जवाहरलाल नेहरू द्वारा जम्मू-कश्मीर के एक नेता पं. प्रेमनाथ बजाज को २१ अगस्त १९६२ में लिखे हुए पत्र से यह स्पष्ट होता है कि उनकी कल्पना में भी यही था कि कभी न कभी धारा ३७० समाप्त होगी। पं. नेहरू ने अपने पत्र में लिखा है-

"वास्तविकता तो यह है कि संविधान का यह अनुच्छेद, जो जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा दिलाने के लिये कारणीभूत बताया जाता है, उसके होते हुये भी कई अन्य बातें की गयी हैं और जो कुछ और किया जाना है, वह भी किया जायेगा। मुख्य सवाल तो भावना का है, उसमें दूसरी और कोई बात नहीं है। कभी-कभी भावना ही बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है।"

सन्दर्भ

1. ↑ क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006) (Hindi में) स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास 3 (1 सं.) नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन प. 795 आई.एॅस.बी.एॅन. 81-7783-121-6. अभिगमन तिथि : 17 दिसम्बर 2013 "व्यावहारिक दृष्टि से यदि देखा जाये तो राजभाषा विषयक भाग २७ जिसमें ३४३ से लेकर ३४२ तक कुल ७ अनुच्छेद हैं तथा अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष उपबन्ध सम्बन्धी भाग २१ का अनुच्छेद ३७० - ये सभी अंश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नेहरु जी के विशेष हस्तक्षेप से तैयार किये गये थे। राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रभाषा और कश्मीर का मुद्दा आज तक समस्या बने हुए हैं।''

इन्हें भी देखें

बाहरी कड़ियाँ

- धारा – ३७० : मुद्दा जिसे सब भूले
- कश्मीर की स्वायत्तता (सुरेश चिपलूणकर)
- Get your Copy of Constitution of Jammu and Kashmir at JK Law Reporters
- भारतीय संविधान का भाग 21 (पृष्ठ 285 से 287 तक) – पीडीएफ (हिन्दी में भी उपलब्ध)
- भारतीय संविधान का भाग २१ (अंग्रेजी विकीस्त्रोत पर)

"http://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=धारा ३७०&oldid=2491215" से लिया गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डल झील की निरन्तर बदलती तटरेखा घटता आकार और उसके मुख्य कारण

कश्मीर जाने वाला सैलानी जहां रमणीय स्थल देखने का खाका बना कर घर से चलता है, वहीं उसके मानस पट पर झल झील में नौका विहार करने, हाऊस बोट में रात्रि व्यतीत करने का सुन्दर सा ख्वाब भी होता है। डल झील की सुन्दरता की असंख्य कल्पनाएं व उपमाएं प्रत्येक पर्यटक अपने जेहन में करता है। नव विवाहित जोड़े, प्रेमी जोड़े, पति-पत्नी का दुल्हनों से सजे शिकारों में डल झील में नौका विहार करना उन्हें अकथनीय, स्वर्गिक आनन्द व ताज़गी से भर देता है।

डल झील से निशात बाग जाने वाली बिल्बा रोड से और उत्तर पूर्व से हजरत बल की ओर से डल झील को घेरने वाली सड़क ने अपनी सीमाओं में बांधा है। डल के पूर्व-दक्षिण दिशा में कश्मीर शैव मत की स्थापना व हिन्दुओं के शैव मत की आस्था के मुख्य प्रतीक रूप में शंकराचार्य मन्दिर तथा शैवमत की भक्ति साधना, उत्तर दिशा में हारी पर्वत में मां शारदा की शक्ति पूजा, झील के उत्तर में उसके किनारे स्थित इस्लाम धर्म की एकनिष्ठता की आधारशिला हजरत बल मस्जिद और बौद्ध धर्म की करुणा की रस-धारा ने कश्मीर की धरा को धर्म-कर्म, ज्ञान, भक्ति, मानवता, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता, समानता से पावन बनाया था। ऐसा प्रतीत होता है-यह डल झील एक बड़ा पुनीत सरोवर सा है जिसमें भिन्न-भिन्न मत मतान्तरों के पीर, पैगम्बरों व उनके अनुयायियों ने मानव के तन-मन की प्यास को शांत करने को शीतल, चमत्कृत जल राशि से लबालब भर दिया है। जिसके स्पर्श व दर्शन से हरेक सैलानी को सुख-शांति-आनन्द और शीतलता मिलती है। मानव रूह को असीम शांति व खुशी प्राप्त होती है। जैसे स्वर्ग सुखों का त्याग कर कोई प्राणी वापिस धरा पर आने को तत्पर नहीं होता, वैसे ही इस झील का सानिध्य पा कर कोई पर्यटक इस से अलग होना नहीं चाहता। परन्तु प्रत्येक सैलानी की अपनी कायिक, आर्थिक, सामाजिक व घरेलू समस्याएं और सीमाएं होती हैं। जिनके कारण प्रत्येक सैलानी भरे मन से इससे विदा होता है। अपने-अपने निवास स्थान पर लौट जाने पर भी सैलानियों के मन की डोर इस झील की शीतलता, प्राकृतिक सौन्दर्य, आनन्द व अपनत्त्व के कारण जुड़ी रहती हैं। यह सब इन चारों मतों-मतान्तरों की ईश्वरीय ज्ञान जलधारा प्रवाहित करने से ही सम्भव हुआ है।

डल झील कवियों, साहित्यकारों, अभिनेता-अभिनेत्रियों, कला प्रेमियों को अत्यन्त प्रिय है। इसमें फिल्मों के अनेक दृष्य फिल्माए गए हैं। इस अद्‌भुत व स्वर्गिक झील

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के किनारे बैठकर न मालूम प्यार-मोहब्बत के कितने तराने गाए व लिखे गए हैं। कितने साहित्यकारों ने नॉवल व कहानियों को रोमांटिक रूप दिया है, कुछ कहना कठिन है। डल झील के इतिहास का लेखा जोखा कुछ इस तरह से है।

डल झील समुद्र तल से 1580 मीटर की ऊंचाई पर $25^{0}5'$ उत्तरी अक्षांश और $74^{0}5'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। ऊंचे ज़ाबेरवन पर्वत इस की पृष्ठभूमि में स्थित हैं। आसपास की जलौढ भूमि धान, मक्का, वनस्पति (शाक) और फलोद्यान को समर्पित है।

डल झील का लगभग 316 कि.मी. जलग्रह विभिन्न स्पष्ट रूप से दृष्य संग्रहण क्षेत्रों में विभक्त किया गया है। जिनके नाम इस प्रकार हैं–गागरीबल, बोड-झल (बड़ी झील), अस्तरावोल (हजरत बल बेसिन) तथा डल कोतवाल (दूदर पोखर)।

सुत्तू या सुत-इ-चोदरी नामक पक्की सड़क वाला तंग रास्ता झील की एक सिरे से शुरू होकर दूसरे सिरे तक जाता है। कारालियार के नायद-यार ब्रिज के छोर के नजदीक़ से शुरू होकर यह उत्यापित पक्की सड़क झील को उत्तर पूर्वी दिशा में पार करती हुई निशात बाग नामक स्थान के समीप इशीबुरी गांव के दक्षिण की तरफ समाप्त होती है।

वर्षा और हिमपात के इलावा डल झील के पानी के दूसरे बड़े स्त्रोत हैं–

1. तेलबल नाला और इसकी जलग्रह

2. झील के किनारों के आस पास असंख्य छोटी नदियां जो नज़दीकी क्षेत्रों से आऊट बाश लाती हैं।

3. डल झील के तले से उत्पन्न होने वाले अनगिनत झरने क्षेत्रीय विभाजन, खुलेपानी और कच्छ भूमि की सूची निम्न प्रकार से है–

	विभाजन	खुलापानी	कच्छभूमि	सम्पूर्ण क्षेत्र
1.	अस्तरवोल (हजरत बल बेसिन	5.6	3.2	8.8
2.	बोड डलबेसिन	4.2	....	4.2
3.	गागरी बल बेसिन	1.3	....	1.3
4.	बौलवर्ड बेसिन	0.3	0.2	0.5
5.	फलोटिंग गार्डन्स	0.3	4.5	4.8
	सम्पूर्ण क्षेत्र	11.7	7.9	19.6

मूल स्त्रोतः– बी.ए. कौल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सूची दर्शाती है कि झल झील के 19.6 वर्ग कि.मी. के सम्पूर्ण क्षेत्र में से सिर्फ 11.7 वर्ग कि.मी. या लगभग 60 प्रतिशत क्षेत्र ही खुले पानी का है और शेष 7.9 वर्ग कि.मी. (40 प्रतिशत) कच्छ भूमि और डेम्ब मैदान हैं। खुले पानी में भी 8 वर्ग कि.मी. से कम क्षेत्र है जिसकी औसत गहराई 2 मीटर से अधिक है। झील महाद्वीपीय जलवायु में स्थित है और चिहिन्त ऋतु परिवर्तन के साथ पानी के तापमान में तबदीली लगभग समताप व्यवस्था को सूचित करती है जो अप्रैल माह तक चलती है। तत्पश्चात् बढ़ते हुए पानी को तापमान की वजह से उष्मीय ढार जो कि उष्मीय स्तरीकरण को सूचित करता है, विकसित होता है।

तबदील होती तटरेखा की सीमा और खुले पानी के क्षेत्र में न्यूनता:–

ऐतिहासिक दस्तावेज, विवरण और यात्रियों के वृत्तांत दर्शाते हैं कि पूर्वकाल में डल झील परिमाप में काफी विशाल थी। परन्तु 12 वीं शताब्दी के बाद से इसकी तटरेखा निरन्तर बदलती जा रही है, जिसकी वजह से इसका क्षेत्र सिमट रहा है और झील की गहराई भी कम होती जा रही है। (डल झील का क्षेत्र छोटा और छिछला होता जा रहा है)

उपलब्ध ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर डल झील का वास्तविक विस्तार आगे दी जा रही सूची (सारणी) में है।

सारणी

डल झील: परिवर्तित होता क्षेत्र और परिमाप

काल	स्त्रोत नाम परिमाप	लम्बाई–चौडाई	खुलेपानी/वर्ग कि.मी.
1. छटी शताब्दी ए.डी.	नीलमत पुराण सुरेशवरी	....	....
2. वारहवी शताब्दी ए.डी.	कल्हण की/सुरेशवरी राजतरंगिनी/	....	....
3. पन्द्रहवी शताब्दी ए.डी.	सरीवारा का राजा सुरेशवरी वाली पताका	19×4 कि.मी.	76.00
4. उन्नसवी शताब्दी	लारेंस डलझील	6.4×4 कि.मी.	25.60
5. बीसवीं सदी (1930)	सर्वे आफ इंडिया डलझील	5×4 कि.मी.	20.00
6. 1981	सर्वे आफ इंडिया डलझील	3.98×2.94 कि.मी	11.70

स्त्रोत:– ऐतिहासिक दस्तावेज (राजतरंगिनी, आईने अकबरी, लारेंस)

ऊपर दी गई सूची की निरीक्षण स्पष्टतया प्रकट करता है कि मध्यकाल में डलझील का क्षेत्र 76 वर्ग कि.मी. था। लारेंस के अनुसार इसका क्षेत्र उन्नीसवी सदी के अंतिम भाग में 25 वर्ग कि.मी. था जो कि 1930 में कम होकर 20 वर्ग कि.मी. रह गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। सर्वे आफ इंडिया मैपस के अनुसार सन् 1961 में इसका क्षेत्र 13 वर्ग कि.मी. रह गया था। बीसवीं शताब्दी के दौरान जब अधिकतर गृह नौकाओं ने लंगर डाल दिया, तब सैलानियों के लिए बहुत अधिक संख्या में शिकारे बनाए गए। 1971 में झील के खुले पानी का क्षेत्र सिमट कर 12 वर्ग कि.मी. रह गया और 1981 में इसमें और कमी आई जब इसका खुले पानी का क्षेत्र सिर्फ 11.70 वर्ग कि.मी. रह गया।

केवल इतना ही नहीं कि झील का परिमाप (आकार) सिमट रहा है और इसकी तटरेखा लगातार बदल रही है। बल्कि क्षेत्र में आने वाली न्यूनता और उथलेपन की दर वस्तुत: त्वरित हुई है।

डल झील की क्षेत्रीय न्यूनता और इसके छिछलेपन की वजह के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं:-

जैसा कि पूर्ववर्ती परिच्छेद में वर्णित है कि झील की सभी दिशाओं में अनेक छोटी नदियां हैं जो अपने अकार्वनिक पदार्थ और पोषक तत्त्व झील में डालती हैं। इनमें से तेलबल नाला जो वृक्ष वंचित और अतिचारित जलग्रह से बहाव लाकर भारी मात्रा में तलछट और पोषक तत्त्व प्रतिवर्ष अस्तावोल बेसिन से खाली करता है। इसके इलावा धान के खेतों में प्राय: प्रयोग किए जाने वाले रासायनिक उर्वरक भारी बारिश होने पर उमड़ कर झील में आ जाते हैं और इसके पानी को और भी उपजाऊ बना देते हैं। ऐसा अनुमानित है कि नाईट्रेट के झील में औसत वार्षिक संचय 16 टन फास्फोरस और 325 टन नाईट्रोजन है। इसके अतिरिक्त 21 टन फास्फोरस और 145 टन नाईट्रोजन हर वर्ष दूसरे स्त्रोतों से घासपात (मोथा) को मिल जाती है।

परिणामत: झील में मैकरोफाईटस, फाईटोपलैनकटनस, जूपलैनकटनस, मछलियां और जीवाणुओं की अत्याधिक वृद्धि होती है।

पिछले कुछ दशकों में चावल की उच्च उपज को अपनाने से और ऐन.पी.के और कीटनाशकों के प्रयोग से डल झील का पानी और भी खारा हो गया है। पानी का PH गुण बोड-डल में 7.7 से अस्ताबोल बेसिन में 9.5 के बीच परिवर्तित होता है। लेकिन पानी उच्च PH गुण हर लिहाज से जलीय जीवन के लिए नुकसानदायक है।

दूसरा प्रभावशाली कारण जो डल झील की गिरावट के लिए जिम्मेदार है, वह है श्रीनगर का अनियोजित विकास। दुर्भाग्य से शहर में विस्तृत मल निपटान प्रणाली नहीं है।

झील का लगभग 5 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र फलोटिंग गार्डन्स (चल उद्यान) के अधिकृत है। ये चल उद्यान स्थानीय स्तर पर राढ़ के नाम से जाने जाते हैं। यह श्रीनगर की आबादी को ताजी सब्जियां प्रदान करते हैं। लेकिन इनके द्वारा उत्पादित कचरे और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपशिष्ट की भारी मात्रा झील के परिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के लिए अत्याधिक हानिकारक है।

डल झील उन सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है जो हाऊस बोटस (गृह नौकाओं) में रहना पसन्द करते हैं। यहां विभिन्न श्रेणियों की लगभग 400 गृह नौकाएं और 350 से अधिक डोंगास (अवासीय नौक़ाएं) हैं। इन गृह नौकाओं और अवासीय नौकाओं से मल का उ‌द्भव होता है जिसका डल झील में गिरने से पहले शुद्धिकरण नहीं किया जाता।

जाबेरवन की ढलानों पर वृक्षों की कटाई और अतिचारण ने भू-क्षरण की प्रतिक्रिया को वर्धित किया है। झील निवासियों की निर्धनता और निरक्षरता भी डल झील के रिक्तीकरण की वजह है।

निस्संदेह डल झील के पर्यावरणीय क्षरण की समस्या ने एक संकटमयी आकार धारण कर लिया है, जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावर्णीय आयोजन की निर्विवाद आवश्यकता महसूस हो रही है। अगर तत्कालीन उपचारी कदम नहीं उठाए जाएंगे तो वर्तमान पीढ़ी झील के लापरवाह प्रबन्धन के लिए भावी पीढ़ी द्वारा निन्दित की जाएगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरि पर्वत, छटी पातशाही का गुरुद्वारा, अवन्तिपुर, चार चिनारी व नेहरू पार्क को देखकर आनन्द उठाना

श्रीनगर और उसके आसपास के कई दर्शनीय ऐतिहासिक स्थानों को देखने का कार्यक्रम नाश्ते के समय बन गया था। समस्त साथियों की राय थी कि जो कुछ आज देखा जा सकता है, उसे देख कर कल सुबह श्रीनगर से प्रस्थान करना चाहिए। ड्राइवर अशोक दीवाना को हारी पर्वत की तरफ चलने को कहा गया था।

देशीय महाराजाओं में कल्हण ने निम्नलिखित नृपों का बड़े गर्व से वर्णन किया है –

'प्रवरसेन द्वितीय (समय सन् 580 ई.)–यह एक वीर विजेता के रूप में दर्शाया गया है। जब उसे सिंहासन पर आरूढ़ होने के लिए निमन्त्रण दिया गया, उस समय वह त्रिगर्त (कांगड़ा) में युद्ध कर रहा था ताकि उससे अपने पैतृक इलाके को वापस ले लें जो वहां के राजा ने बलपूर्वक हथिया लिया था। उसी ने कश्मीर की राजधानी ''प्रवरपुर'' (श्रीनगर) की नींव डाली थी। प्रतीत होता है कि नगर ''शारिकशैल'' के चारों ओर फैला था। क्योंकि कल्हण की साक्षी के अनुसार यह शारिका पर्वत (हारी पर्वत) नगर के बीच में बड़े माने से सिर उठाए खड़ा था– राजतरंगिनी–11/134

हरि पर्वत या ''प्रभु पर्वत'' पर स्थित देवी ''शारिका, जिसे मां दुर्गा के एक रूप में माना जाता है, का मन्दिर है। जो हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल है। सर्वप्रथम सन् 1592–98 में मुगल सम्राट अकबर द्वारा इस पर किला बनवाया गया था। तत्पश्चात् एक अफगान राज्यपाल अता मोहम्मद खान द्वारा 18 वीं शताब्दी में इसका विकास किया था। वर्तमान में यह किला एक खंडहर की स्थिति में है। लेकिन यह पहाड़ी वर्तमान में अपनी भव्यता को दर्शाती है। अप्रैल व मार्च के महीने में वसंत के आगमन के साथ ही इस किले के चारों ओर बादाम के बगीचों का सौन्दर्य और भी निखर जाता है। इसी पहाड़ी की ढलानों पर स्थित शाह मकदूम साहिब की ऐतिहासिक दरगाह भी प्रसिद्ध है और सभी धर्मों को मानने वाले लोग यहां आते हैं।

ड्राइवर अशोक दीवाना ने इस पर्वत के नीचे पैरों में गाड़ी खड़ी कर दी थी। अब ऊपर इस किले में पैदल ही पहुंचना था। कई छोटे-छोटे विश्राम लेकर हम सभी ऊपर पहुंच गए थे। थोड़ा सांस लेकर मां शारिका के मन्दिर में सभी ने बड़ी श्रद्धा, भक्ति भावना से माथा नवाया था। लव कुमार कुछ ज्यादा थका हुअ लग रहा था। अब वापिसी के लिए राकेश कुमार जोर देकर कह रहा था कि समय कम है। परन्तु सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की टांगें थक गई थीं। सभी का मन हो रहा था– यहां आधे पौने घंटे की नींद ली जाए। परन्तु सोचने से क्या होता है। सभी साथियों को पुनः मन मार कर वापिस चलना पड़ा था।

हमने अपने राह में छटी पादशाही गुरुद्वारा देखा तो सभी का मन गुरु चरणों में माथा टेकने को बरबस हो आयाथा, इस गुरुद्वारा का सम्बन्ध सिखों के छटे गुरु ''हर गोबिन्दसिंह'' जी से है। यह स्मारक काठी दरवाजे के पास रानी बाड़ी में स्थित है। यह गुरुद्वारा सिखों का एक पवित्र तीर्थ स्थान माना जाता है। इस गुरुद्वारे की शोभा अद्‌भुत है। कुछ समय गुरु चरणों में व्यतीत करके हम पुनः गाड़ी में आकर बैठ गए थे।

राकेश कुमार ने ड्राइवर अशोक दीवाना को अब अवन्तिपुर चलने को कहा था जो श्रीनगर से 29 कि.मी. की दूरी पर स्थित था।

राजा अवन्तिवर्मन का शासनकाल वस्तुतः कश्मीर की सुख-समृद्धि का स्वर्णयुग कहा जाता है। ललितादित्य के निर्बल उत्तराधिकारियों द्वारा देश की दशा बहुत ही दयनीय हो गई थी। अवन्तिवर्मन ने इसे अस्त-व्यस्त से लोगों को त्राण दिया। इस महाराज ने अवन्तिपुर नाम वाला नगर बसाया था।–

(तन्त्रालोक–44)

वहां पर पत्थर के बने मन्दिरों की स्थापना की गई। इन भव्य मन्दिरों के भग्नावशेष आजकल भी हजारों पर्यटकों का मन हरते हैं। इनमें से कई बहुमूल्य वस्तुएं श्रीनगर के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

(R.C. Kak, Ancient moments of Kashmir)

इस नृप के महामात्य ''शूर'' ने भी एक अन्य नगर शूरपुर (आज का हुरपोर) बसाया था। –राजतरंगिनी, 118

उसके राज्यपाल की चिरस्मर्णीय देन वितस्ता नदी के प्रवाह में गतिशीलता लाना था, जिसको ''सूय्य'' नामक एक इंजीनियर ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा से पूरा किया था। –राजतरंगिनी, 83

इस तरह कश्मीर में बाढ़ का प्रकोप सदा के लिए टल गया। और इस तरह जो धरती पानी के अन्दर से निकल आई उस पर ''सूय्य'' ने अपने नाम से ''सूय्यपुर'' (आज का सोपोर) बसाया। –राजतरंगिनी–118

महाराजा अवन्तिवर्मन का देहान्त ज्येष्ठेश्रर तीर्थ पर हुआ, जिसे आजकर ''जीठयार'' कहा जाता है। –राजतरंगिनी, 123

अवन्तिवर्मन के इस ऐतिहासिक शहर की स्थापना नौंवी शताब्दी में हुई थी। यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थान अवन्तिवर्मन के शासनकाल के खण्डहरों के दो विशाल मन्दिरों के अवशेष के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से बड़ा मन्दिर भगवान शिव-अवन्तिसारा को समर्पित है तथा छोटा मन्दिर भगवान विष्णु, अवन्तिस्वामी को समर्पित है।

"जीठयार" तीर्थ शाही चश्मे के समीप ही स्थित है। राजा अवन्तिवर्मन के दरबार में मुक्ताकण, शिवस्वामी, आनन्दवर्धन और रत्नाकर जैसे महापंडित और मेधावी रहा करते थे। डॉ. दयाराम साही के नेतृत्व में पुरातत्त्व विभाग की तरफ से यहां खुदाई का काम प्रारम्भ हुआ था।

–राजतरंगिनी, 126

यहां पहुंच कर दौलतराम, लव कुमार ने खण्डहर देखे तो क्रोधित हो गए। बोले–"यहां देखने वाला है क्या जिसे देखा जाए। वक्त बर्बाद कर दिया।" भतीजे अशोक कुमार ने उन्हें समझाया कि ऐसे स्थानों का सम्बन्ध भविष्य में नष्ट हुए नगरों से होता है। इसलिए तुम इन खण्डहरों को नहीं देखना चाहते तो आराम से गाड़ी में जाकर बैठो या चाय की दुकान पर चाय पियो। यह गुस्से से गाड़ी में जाकर बैठ गए थें। बाकी साथी अवन्तिपुर के खण्डहर देखने लगे थे। मेरे साथियों ने फोटोग्राफी भी की थी'।

लगभग डेढ़ घंटे तक हम अवन्तिपुर के खण्डहर देखते रहे थे। सभी थक गए थे। विश्राम चाहते थे। परन्तु पेट में जोर शोर से चूहे दौड़ने लगे थे। चाय की दुकान पर सभी आकर बैठ गए थे। दौलत राम व लव कुमार भी आ गए थे। समोसे, बिस्कुट के साथ गर्मागर्म चाय पी थी। सभी तरोताजा हो गए थे। अब वापिस श्रीनगर चलने के लिए गाड़ी में बैठ गए थे।

ड्राइवर ने बिल्वा रोड़ पर एक तरफ चार चिनारी के सामने गाड़ी खड़ी कर दी थी। सूर्यास्त होने में अभी लगभग 2 घंटे बाकी थे। राकेश कुमार का विचार था कि चार चिनारी देखा जाए। लव कुमार खुशी से उछल पड़ा था। बोला–"हुण मजा आऊगा। डिंग लक लक डिंग लक लक....आहा!" साथ वह कमर मटका कर नाचने लगा था। बूढ़े रीछ की तरह थुल-थुल करके नाचते हुए देख कर समस्त साथी हंसने लगे थे। दो शिकारे वालों से पैसे का मोल-तोल राकेश कुमार ने किया था। चार चार की गिनती में हम शिकारों पर बैठ गए थे। छप-छप-छप-छप करके चप्पू डल झील में चलने लगे थे। कुछ देर के पश्चात् हम डल झील के मध्य बने छोटे से भू-भाग पर शिकारों से आ गए थे। यहां चिनार के चार वृक्ष लगाए गए थे। यह दरख्त अभी कुछ फीट की ऊंचाई ही लिए हुए थे। मुझे स्मरण हो आया-सन् 1972 में जब मैं यहां चार-चिनारी देखने आया था, सरदार हरमित्र सिंह बी.एस.एफ. कर्मचारी मेरे साथ था। उस समय चार-चिनारों के भीमकाय वृक्ष यहां अपनी आन-शान से खड़े और सुरक्षित थे। फिर ऐसा कोई तूफान आया, जिसमें ऊंचे-भारी चिनार जमीन पर धराशाही हो गए थे। उन चिनारों के स्थान पर पुनः चार चिनार लगाए गए थे। परन्तु अब चार चिनारों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को बचपन, बाल्यवस्था, किशोरावस्था व प्रौढ़ावस्था में से गुजरना है। अभी यह चिनार बाल्यावस्था में थे। यहां बैठ कर हमने चाय की दुकान पर चाय पी थी और शिकारे वालों को भी पिलाई थी। पन्द्रह बीस मिन्ट तक वहां गप्पें लगाने के पश्चात् पुनः शिकारों में बैठ कर वापिस आ गए थे।

अब समस्त मित्र साथियों की इच्छा थी कि नेहरू उद्यान देखा जाए। ड्राइवर अशोक दीवाना ने राकेश कुमार के आदेशानुसार नेहरू उद्यान के सामने गाड़ी खड़ी कर दी थी। पुनः दो शिकारों पर बैठ कर नेहरू उद्यान पहुंच गए थे।

यह उद्यान भारत कें प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू की याद में डल झील के किनारे पानी के मध्य बनाया गया है। इसमें शिकारों व मोटर बोट के साथ-साथ खाने-पीने के लिए रेस्टोरेंट भी उपलब्ध हैं। इस उद्यान में लोगों की काफी भीड़ होती है। नवविवाहित जोड़ों की यहां अकसर भरमार होती है और वह जीवन के हसीन-रंगीन लम्हों की मधुर स्मृतियों को सदैव अमर रखने हेतु यहां इस स्थान पर आकर फोटोग्राफी करते हैं व अपने रोमांटिक लम्हे व्यतीत करते हैं। नेहरू पार्क में रात के समय जो रोशनी होती है वह पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

यहां पर बैठकर सभी साथियों ने गर्मागर्म चाय का लुत्फ उठाया था। अंधेरा अब गहराने लगा था। रिंग लीडर राकेश के हुक्म ती तामील करने को सभी साथी बाध्य थे। शिकारे वालों ने हमें डल झील के किनारे बने सीमेंट के पक्के घाट पर उतार दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डल झील में हाऊस बोट के मालिक हसन अली से विदा लेना, सन् 1972 में श्रीनगर में डॉ. मोहन लाल भट्ट के घर में मुझसे शुष्क व्यवहार, मेरा दामाद बन पुनः उसके घर जाना, मर्तांड में श्राद्ध और पितरों को पिंडदान करना

आज हमारा घर वापिसी का कार्यक्रम था। परन्तु श्रीनगर से 64 कि.मी. दूर पहलगाम मार्ग पर स्थित हिन्दुओं के पावन स्थान मर्तांड जा कर अपने पितरों के निमित श्राद्ध, पूजा-वन्दन करना चाहते थे। इसलिए आज यहां से जल्दी वापिसी करनी थी। हाऊस बोट के मालिक हसन अली को इस की सूचना रात्रिकाल को दे दी गई थी। मैंने सुबह जल्दी उठ कर नहा-धो लिया था। ध्यान-साधना व गीता का पाठ कर लिया था। बाकी साथी शौचादि से निवृत होने लगे थे। मैं हाऊस बोट के प्रांगण में सोफे पर बैठा प्रकृति-सौन्दर्य का दर्शन लाभ ले कर स्वयं को भाग्यशाली मानने लगा था। जैसे भूख-प्यास के समय अन्न-जल काया को सबल, स्फूर्ति, चेतना और सुख देती है, वैसे ही ग्रीष्म ऋतु में शीतल-मंद-वयार तन-मन को तरोताजा करके प्राणों में सुख-शांति-सुकून का नव्य संचार करती है। प्राकृतिक रमणीयता केसंग शीतल हवा ने मुझे खूब आनन्द, सुख व सौख्य प्रदान किया था।

सूर्योदय की लालिमा ने डल झील में अपने मायावी रंगों का सम्मोहन बिखेरना आरम्भ कर दिया था। डोंगियों पर रखे नाना प्रकार के पुष्प-गुच्छों का हाऊस-बोट में सजाने हेतु फूल बिक्रेता फूल बेच रहे थे। यह सब देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। खन्ने वाले दिन को घूमने फिरने का काम करके रात्रिकाल को अपने उसी हाऊस बोट में आ जाते थे। वह भी अब जाग गए थे।

प्रातः कालीन चिताकर्षक दृष्य देखने के उपरान्त मेरा मन सहसा उदास हो गया था। सोचने लगा था–'आज से तेरहा वर्ष पहले मैं इस शहर में दामाद रूप में अपने साले व सम्बन्धियों के घर मान-सम्मान के साथ आया करता था। अपने साले-सलहिज के पास एच.एम.टी. फैक्टरी जैनाकोट में लगभग हर वर्ष ग्रीष्मावकाश में सपरिवार कुछ दिनों के लिए अवश्य आता था। मुझे कश्मीरी मौसी-मामी सासुओं के व दूसरे रिश्तेदारों के घरों में आने के न्यौते आने लगते थे। ग्रीष्ममावकाश समाप्त हो जाती-परन्तु पूरे रिश्तेदारों के घर न जा पाता था। क्षमायाचना का सन्देश अपने साले साहिब के हाथ भिजवा देता व पुनः श्रीनगर आगमन पर निराश न करने का आश्वासन दे देता। मैंने इतनी रातें यहां हाऊस बोट में व्यतीत की हैं, किसी ने अपने घर आने का निमंत्रण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नहीं भेजा। कल मैं सैंकड़ों कश्मीरी मुसाफिरों का हिस्सेदार था। परन्तु अब! आज मैं एक अजनबी हूँ। सोचते सोचते मेरा मन और ज्यादा क्षोभ और उदासी से भर गया था। मेरे आठों साथी वापिसी को तैयार होकर मेरे समीप आकर खड़े हो गए थे। खन्ने वाले आंखें मलते व उबासिएं लेते हुए हमारे हाऊस बोट पर हमें अलविदा कहने को आ गए थे। सारा सामान हाऊस बोट के प्रांगण में लाकर रख दिया था। भतीजा अशोक कुमार अपना व मेरा सामान कमरे से ले आया था। तीन शिकारों वाले हमारे बैठने की प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही मैंने सोफे से उठ कर हाऊस बोट के मालिक की ओर स्नेह, अपनत्व से निहार कर आंखों की मूक भाषा में विदा चाही, हाऊस बोट के नौजवान मालिक हसन अली हमें हाथ जोड़ कर भर्राए गले से सलाम करते हुए कहा–"साहिब! अगली गर्मियों में फिर यहां आना। इस गरीब, नाचीज बंदे हसन अली का हाऊस बोट भूलना नहीं। अल्लाह आप सब के सिर पर मेहरभरा हाथ रखे। आप को महफूज रखे। किसी भी कमी, गुस्ताखी, बेआरामदायकी के लिए हसन अली माफी चाहता है.......।" आप जैसे नेक रूह इन्सान दुनिया में बहुत कम मिलते हैं। ऐसा लग रहा था कि हसन अली हमारे कुछ दिनों के व्यवहार से बेहद प्रभावित और खुश था। उसने अपनी आंखों में भर आए पानी को बड़ी मुश्किल से रोक रखा था।

"नहीं हसन अली–आपके हाऊस बोट पर हमें कोई कष्ट, बे आरामदायकी नहीं हुई है। तुम हमारे साथ निहायत अदब से पेश आए हो। अगर भगवान भोलेनाथ ने चाहा। बुलावा आने को भेजा–तो अमरनाथ यात्रा पर आने पर वापिसी में यहां तुम्हारे हाऊस बोट में ठहरने का पक्का वायदा करते हैं।" मैंने हसन अली को विश्वास दिलाते हुए कहा था। हसन अली मेरे व दूसरे साथियों के गरमजोशी के साथ गले मिला था व हाथ मिलाया था। खन्ने वाले भी हमारे एक-एक के गले मिले थे। अब समस्त साथी सामान सहित शिकारों में बैठने लगे थे। मैं सबके पीछे हो लिया था। एक सौ का नीला नोट हसन अली के कुर्ते की जेब में डालते हुए मैंने मंद स्वर में कहा–"बच्चों के लिए मिठाई ले जाना।"

कठिनाई से हसन अली बोला–"खुदा हाफिज़।"

फिर मैंने शिकारे में बैठ कर देखा–तो हसन अली की आंखों की कोरों में रुका हुआ सैलाब बह आया था। वह भावुक हो गया था। सम्भवतः उसे अपने मरे अब्बा की याद हो आई थी। डल के शिकारे वाले पानी में चप्पुओं से छपा-छप, छप, छप, छप करते हुए शिकारे खेह रहे थे। हसन अली व खन्ने वाले तीनों नौजवान हाथ हिला-हिला कर अलविदा कर रहे थे। खन्ने वाले भी बड़े मायूस से दिखाई दे रहे थे। मैं सोचने लगा था–'वियोग अल्प या दीर्घकाल का हो, प्राणी को दर्द, ग़म व दुःख देता है।' थोड़ी ही देर में हसन अली व खन्ने वाले आंखों से ओझल हो गए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिकारे डलझील के एक घाट पर आ कर रुक गए थे। राकेश कुमार ने शिकारे वालों को पैसे दे कर खुदा हाफिज़ कहा था। समस्त साथी टाटा सूमो में आकर सामान सहित बैठ गए थे। भतीजा अशोक कुमार ड्राइवर की बाईं ओर वाली सीट पर आगे बैठ गया था। ड्राईवर को मार्तंड मन्दिर (आज का मट्टन) में चलने को कह दिया था। सभी का विचार था कि वह मट्टन तीर्थ स्थान पर नहा-धोकर, श्राद्ध, पूजा-पाठ करने के पश्चात् नाश्ता वहीं किसी वैष्णो ढाबे पर करेंगे। साढ़े सात बजे के करीब हम श्रीनगर से चले थे।

ललितादित्य मुक्तापीड़ -(सन् 750 ई.), कल्हण ने इस नराधिप का उल्लेख बहुत ही अच्छी तरह विस्तार से किया है। इस राजा के बारे में विदेशी साक्ष्य विशेष कर चीनी और स्मारक-भवनों के अस्तित्व ने कल्हण के वृत्तान्त को सम्मानजनक प्रामाणिकता दी है। यह राजा योद्धा और विजेता था। इसने यशोवर्मन कन्नौज के अधिपति को पराजित किया था। (-राजतरंगिनी, 11/215)

तोखारियों (बदखशान) के राजा को भी हराया। वहीं से उसने मेधावी "चण्कुन" को लाया और उसे अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

(तन्त्रालोक-37)

इसी तरह उसने अन्तर्वेदी से अभिनवगुप्त के पूर्वज अत्रिगुप्त को कश्मीर में लाकर बसाया। (तन्त्रालोक-37)

तिब्बत और बल्तिस्तान को भी उसने अपनी छत्रछाया में लिया, बंगाल के राजा को भी उसने अपने अधीन किया था। (तन्त्रालोक-11/148)

अन्त में वह मध्य एशिया में "बालुकासागर" पार करते हुए इसी तुफान में अदृश्य हो गया था। (तन्त्रालोक-11/169)

यद्यपि इस युद्ध प्रिय नरेश का सारा जीवन संग्रामों में व्यतीत हुआ, फिर भी इसने समय निकालकर बहुत ही भव्य स्मारकों, मन्दिरों तथा नगरों का निर्माण करवाया था। सूर्य-मन्दिर मार्तण्ड (आज का मट्टन) उसकी शिल्पकला से अपूर्व अनुरक्ति का सबल प्रमाण हैं। (तन्त्रालोक-11/192)

परिहासपुर (आधुनिक परसपोर), ललितपुर (आज का ल्यतपोर) तथा लोक पुण्य (आधुनिक लूकबवन) नाम वाले नगरों की नींव भी रखी।

(तन्त्रालोक-194, 186)

इस राजा ने गांव की सिंचाई के लिए वितस्ता से पानी खींचने के लिए रहटों का भी अविष्कार करवाया। (तन्त्रालोक-11/191)

राजा ललितादित्यमुक्तापीड़ ने (7-8 वीं सदी) में स्वामी सूर्य का मन्दिर यहां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बनवाया था, जो भारत के कई महत्त्व पूर्ण मन्दिरों में से एक है, जो विशेष रूप से सूर्य देवता को समर्पित है। यह मन्दिर मध्यकालीन मन्दिर वास्तुकला का सुन्दर नमूना है।

भतीजा अशोक कुमार ड्राइवर के साथ वाली सीट पर बैठा अपनी किसी उधेड़ बुन में था। शेष साथी गप्पें हांक रहे थे। गाड़ी अपनी तेज़ रफ़्तार से चल रही थी। मुझे सन् 1972 का जून महीना स्मरण हो आया था। जब मैं प्रथम बार श्रीनगर में डॉ. मोहनलाल भट्ट के घर कानिया कदल में आया था। बड़े भैया किशन चन्द की छोटी साली श्रीमती अमृती देवी ने अपने पड़ोस में रहने वाली कश्मीरी कन्या पुष्पलता से एक पत्र उनकी माता श्रीमती लक्ष्मी श्री के नाम लिखवाया था कि मेरा देवर आप के पास आ रहा है, इसे कोई रहने खाने में परेशानी न हो।' उस समय मेरी सास (श्रीमती लक्ष्मी श्री) व छोटी साली गिरिजा (पप्पू) श्री नगर में थीं। मैंने बड़ी मुश्किल से डॉ. मोहल भट्ट का घर ढूंढा था। आठ-दस कश्मीरी लड़के मेरे भारी-भरकम अटैची को उठाए घर ढूंढने में मेरी सहायता को इधर-उधर पूछताछ करते हुए मेरे साथ चले थे। आखिर उन्होंने डॉ. मोहनलाल भट्ट का घर ढूंढ ही निकाला था। सोचता हूं–'वह समय कितना भला व विश्वस्त करने वाला था। उन कश्मीरी नौजवानों ने मेरेलिए कम-से-कम एक घंटे से ज्यादा समय बर्बाद किया व परेशानी उठाई थी। डॉ. मोहनलाल भट्ट का घर ढूंढ निकालने पर मुझ से ज्यादा खुशी उन कश्मीरी नौजवान साथियों को हुई थी। भगवान करे वैसा समय व परिस्थितियां पुनः कश्मीर में आ जावें।' जिस समय मैं डॉ. मोहनलाल भट्ट के घर पहुंचा, मैंने भाभी अमृती देवी का पत्र उनकी बड़ी बेटी वीणा के हाथ में थमा दिया था। पत्रहिन्दी भाषा में लिखा था। वीणा कुमारी ने अपनी मौसी की लड़की पुष्पलता (धर्मपत्नी) की लिखावट पहचान ली थी। दूसरी छोटी दोनों बहनों-निम्मी व महालक्ष्मी ने भी पत्र को बारी-बारी से पढ़ा था। उस समय मेरी सास व छोटी साली-पप्पू, मेरी बड़ी मौसी सास के घर जवाहर नगर में गई हुई थीं। उस वक्त टैलीफोन की सुविधा नाममात्र थी। मोबाइल तो सन् 2002 के बाद मैंने देखा सुना था। डॉ. के परिवार से जम्मू में मैं कभी मुखातिव न हुआ था। उनके लिए मैं निरोल अजनबी था। उसके साथ ही पंजाबी छोकरा था जो अक्खड़ लड़ाकू, गुस्सैल व आशिकी स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। डॉ. मोहनलाल भट्ट की बड़ी दरियादिली थी जिन्होंने घर पर तीन जवान लड़कियों की मौजूदगी में मुझे कमरे के अन्दर आदर-सत्कार से बिठाया था। चावलों के साथ मिर्चों वाले सब्जी खाने को मिली थी। मैं बचपन से ही बहुत कम मिर्च खाने का आदी रहा हूं। चावल खाते वक्त मेरे नाक और आंखों से पानी बह रहा था। रूमाल से नाक व आंखों से पानी पोंछते हुए मेरा बुरा हाल हो गया था। डॉ. भट्ट का परिवार मेरी दुरावस्था पर हंस रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आखिर कार मैंने पेट की अग्नि को शांत करने हेतु चीनी मांगी थी। चीनी मिला कर चावल खाकर पानी पिया था।

दूसरे दिन प्रातः काल का नाश्ता करवाने के साथ आदेश कें शब्दों में कह दिया था–''आप किसी होटल में रात बिताने का इन्तजाम कर लो। हम अपने घर में आपको ठहरने की इजाजत नहीं दे सकते। हां, अपना सामान बगैरा तब तक रख सकते हो, जब तक मुस्तकिल ठहरने का ठिकाना न बन जाए।'' डॉ. मोहनलाल भट्ट का शाही फरमान सुन कर मेरे पैरों तले ज़मीन खिसकती नजर आने लगी थी। इस प्रदेश में मुझे कोई जानता तक नहीं। कश्मीरी मैं कतई नहीं जानता था, जिसे इस घाटी में बोला जाता है। सुन कर परेशान हो गया था। आखिर कोई रात्रि व्यतीत करने को किसी होटल में प्रबन्ध तो करना था। दिन को मैं सारे कार्यक्रम जगह बगैरा देखने को छोड़ कर घर से निकल गया था। मुझे अभी तक यह मालूम नहीं कि वह स्थान कौन सा था, किस नाम से पुकारा जाता था। उस कदल का क्या नाम था, जिस में 'रिवर व्यू' नामक होटल स्थित था। पांच रूपये हर रात्रि व्यतीत करने के किराए के रूपं में वहां तय हुए थे। मैं प्रसन्न था। चलो रात्रि काटने को आशिआने का इन्तजाम तो हुआ। डॉ. भट्ट के घर में इस बात की इतलाह मैंने दे दी थी। नीचे बिछाने को उन्होंने मुझे बिस्तर दे दिया था। नौ बजे के लगभग मैं बिस्तर सिर पर उठाए होटल 'रिवर व्यू' पहुंचा था। घर से दस रूपये का नोट लेकर घर से निकला था। अटैची में अपना सारा सामान व पैसे डॉ. भट्ट के घर रख आया था। चौकीदार ने मुझ से पांच रूपये मांगे थे। मैंने उसे सुबह देने को कहा था। मैंने चौकीदार को समझाया कि मेरे पास दस का नोट है। सवेरे इसे तुड़ा कर पांच रूपये दे दूंगा। पता नहीं चौकीदार को क्या सूझा? उसने मुझे किसी भी कीमत पर होटल में ठहरने को इंकार कर दिया था। मैंने उसे एक रात्रि के दस रुपये देने को भी कहा। जेब में रखे दस रूपये देने को उसी वक्त तैयार था। परन्तु व पत्थर का देवता बन बैठा था। ज्यों-त्यों मिन्नतें, तरले करता, नर्म शब्दों का प्रयोग करता, भगवान का वास्ता तक उस बूढ़े चौकीदार को मैंने दिया था। उसकी एक ही जिद थी–'मैं तुम्हें किसी भी कीमत पर होटल में नहीं रहने दूंगा चाहे तू पांच सौ रूपये भी रात को देने पर राजी क्यों न हो जाए। मुझे दो चौकीदारों ने धक्के मार कर होटल से बाहर निकाल दिया था। वह बजुर्ग चौकीदार अर्ध पागल था या जाहिल, इस सम्बन्ध में मैं क्या कह सकता हूं। हां, तीनों चौकीदारों ने मेहरवानी करके बेगाना बिस्तर न छीना था। मैं सिर पर भारी बिस्तर का गठ्ठर सा उठाए होटल के गेट के एक ओर होकर खड़ा हो गया था। रात के 9:30 बज चुके थे। मैंने घर के बाहर आज तक एक रात्रि भी व्यतीत न की थी। फिर भाषा, वेश, संस्कृति से वह प्रदेश जो मेरे लिए एकदम भिन्न व अपरिचित था, परिस्थितियों ने मुझे बेचारा और लाचार बना दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रह-रह कर डॉ. मोहल लाल भट्ट पर गुस्सा आ रहा था। मैं सोचने लगा ''हो-न-हो, इसे अपनी पुत्रियों पर लेश मात्र भी विश्वास नहीं है। क्या यह लड़कियां मीठी टाफी या गोली हैं जो मैं उन्हें उठा कर मुंह में रख लेता? लगता है-इसकी इन तीनों लड़कियों से कोई चरित्रहीन व अवारा हो जो इस डॉ. मोहनलाल भट्ट के कहने में नहीं है। नहीं तो सैंकड़ों मील दूर से आए एक अजनबी को कोई क्यों रात काटने देने में आनाकानी करेगा। डॉ. मुझ से घर में रात काटने व नाश्ते के पेइंग गेस्ट के रूप में पैसे वसूल कर लेता। समझता हूं-यह कंजूस व शक्की किस्म का आदमी अब्बल दर्जे का होगा। जटिल परिस्थिति में मैंने मन-ही-मन भगवान को सहायता हेतु स्मरण किया था। मैं सिर पर बिस्तर उठाए लोगों की भीड़ से बच-बचा कर चला जा रहा था। परन्तु मैं जा किधर रहा हूं, यह मुझे मालुम न था। पन्द्रह बीस मिन्ट चलने के पश्चात् एक कश्मीरी नौजवान को जो खूब एजुकेट लग रहा था उससे पूछा था-'भाई साहिब इधर कोई होटल है?'

उस युवक ने मुझे समझाकर कहा था कि बिल्कुल सीधे चलते जाओ। आगे 'रोज़ होटल' आएगा। वहीं ठहर जाना। मैं अपनी तेज़ चाल में चला जा रहा था। जेहलम के किनारे आठ-दस किश्तियों वाले नौजवान खड़े थे। मैंने रुक कर उन्हें पूछा-''भैया 'रोज़ होटल' किधर पड़ता है?''

एक लड़के ने कश्मीरी नुमा हिन्दी में पूछा-''आए कहां से हो?''

''जम्मू से।''

''ख़ास जोम से।''

''नहीं, पंजाब स्टेट से।''

''क्या करने आए हो?''

''सैर सपाटा करने आया हूं।'' मैंने अपने हृदय की सच्चाई उगल दी थी।

उन लड़कों ने कश्मीरी जुबान में गिट-पिट की थी। मेरी समझ में कुछ न आ रहा था कि यह परस्पर में क्या बातचीत कर रहे हैं। एक किश्ती वाला बोला-''हम तुम्हें रोज़ होटल पहुंचाएंगे।'' दूसरा कश्मीरी लड़का पहले वाले को बाज़ू से पकड़ कर पीछे हटाता हुआ बोला-''नहीं बाबू जी, हम तुम्हें रोज़ होटल पहुंचाएंगे।''

कश्मीरी लड़के दो गुटों में बंट कर अपनी भाषा में एक दूसरे से झगड़ रहे थे। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा थाकि आखिर दोनों टोले मुझ से चाहते क्या हैं? मैं गांव का रहने वाला सरल-सीधे स्वभाव का नौजवान उनकी नीयत में खोट को समझ न पा रहा था।

तभी तड़ाक से लोहे का गेट खुला था। फौजी वर्दी में एक नौजवान सरदार बन्दूक लेकर मेरे पास आ कर बोला-''अरे जवान। कौन सी स्टेट है?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जी पंजाब।"

"जिला...........।"

"जी गुरदासपुर।" मैंने उस सुरक्षा कर्मचारी को ध्यान से देखते हुए उत्तर दिया। "उसने सुनकर मेरा बाजू पकड़ा और गेट के अन्दर ले आया था। झट से गेट को बंद कर मोटा सा ताला लगा दिया था। कश्मीरी लड़के सुरक्षा कर्मचारी से झगड़ते हुए कह रहे थे-" हमने इस बाबू को 'रोज़ होटल' पहुंचाना है। इसे गेट से वाहर निकाल दो। "उन्होंने सुरक्षा कर्मचारी से मुझे गेट के अन्दर लाते वक़्त जबरदस्ती रोकने की कोशिश की थी। परन्तु जैसे सरदार सुरक्षा कर्मचारी ने बन्दूक सीधी करके उन्हें ललकारते हुए कहा-"सालो! जो भी इस लड़के को हाथ लगाएगा, गोली से उड़ा दूंगा। दफा हो जाओ यहां से। कुत्ते, नमकहरामी, कातिल हरामजादे।" सिख सुरक्षा कर्मचारी के अंतिम शब्दों 'कातिल हरामजादे' ने मेरी आंखें खोल दी थीं। मानों मैं सपने से जागा था। किश्ती वाले बड़बड़ाते, घूर-घूर कर सुरक्षा कर्मचारी को देखते हुए वहां से चले गए थे। जाकर जेहलम के किनारे बैठ गए थे। मैंने सिर पर उठाया बिस्तर बैंच पर रखते हुए पूछा-"भैया मैं इस समय कहां हूँ और आपका परिचय.........।" वह सन्तरी मुझे बैंच पर बिठाता हुआ बोला-"आप इस वक्त, जम्मू कश्मीर हाईकोर्ट की इमारत के अन्दर हो। मैं बी.एस.एफ. का जवान हूं। इस टाईम सन्तरी की डियूटी पर तैनात हूं। मैं पंजाब के जिला होशियारपुर का रहने वाला हूँ। मेरा नाम सरदार हरमित्र सिंह हैं।"

"तो यह कश्मीरी लड़के आप से मेरे बारे में क्यों झगड़ रहे थे?" मैंने ना समझी में हरमित्र सिंह से पूछा था।

उसने मेरे प्रश्न को उलटते हुए पूछा-"किसी देवी देवता की पूजा अराधना करते हो?"

"जी, मैं दोनों वक्त भगवान श्री कृष्ण की ध्यान-साधना करता हूं।"

"मैं आपको, एक नये मिले जीवनदान के लिए बधाई देता हूं।" हरमित्र सिंह एक सांस में सब कुछ कह गया था।

"इसका मतलब यह है कि यह लोग गुंड़ा-बदमाश-कातिल किस्म के लोग थे। मैंने रुक-रुक कर हरमित्र को पूछा।

"हां, बिल्कुल सोलह आने ठीक समझे। यह लोग अजनबी का सामान व पैसे लूट कर और जान से मार कर जेहलम में फैंक देते हैं।" सुन कर मेरा मुंह आश्चर्य और भय से खुले-का-खुला रह गया था।"

इतने में लव कुमार ने मेरे कंधे पर हाथ रखे हुए मजाक में पूछा-"यश अंकल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी! क्या आंटी जी की याद आ रही है? कोई फिक्र न करो। हमने आज देर-सबेर से आपको आंटी के पास पहुंचा देना है।'' मेरी विचारधारा की बंधी लड़ी की डोर टूट गई थी। लव कुमार की बात सुन कर सभी साथी हंसने लगे थे। हंसे बिना मैं भी न रह सका था। घर वापिसी पर समस्त साथी प्रसन्न थे। वह परस्पर में पुनः अपनी बातचीत में व्यस्त हो गए थे।

ड्राईवर अशोक दीवाना गाड़ी को तेजगति से भगाए जा रहा था। मेरी भंग विचार धारा का टूटा तार पुनः जुड़ गया था। पुरानी स्मृतियां ताजा हो गई थी। कल्पना में मैं हरमित्र सिंह के बी.एस.एफ. के साथियों से मिला था। वहां डियूटी पर रहने वाले सुरक्षा कर्मचारियों से असीम स्नेह, अपनापन व पंजाबियत ने मुझे बड़ी प्रसन्नता दी थी। दूसरे दिन डॉ. मोहनलाल भट्ट के घर मेरे साथ हरमित्र सिंह भी गया था। उनका बिस्तर वापिस लौटाया था। एक रात्रि को ठहराने के लिए मैंने उनका धन्यवाद किया था। वहां रखा अपना अटैची उठा लाया था।

सुबह मैंने जिस स्थान को देखने हुए जाना होता-हरमित्र सिंह को कह देता था। सायंकाल को आकर हरमित्र सिंह व दूसरे साथियों के बीच बैठकर देखे गए स्थान की विस्तार से चर्चा करता। समस्त साथी प्रसन्न हो जाते थे। मेरे साथ घुलमिल गए थे। दस-बारह दिन मैंने श्री नगर में हाईकोर्ट के प्रांगण में व्यतीत किए थे। श्रीनगर से वापिसी पर एक दिन पूर्व मैंने व हरमित्र सिंह ने डल लेक, नेहरू पार्क, निशात बाग, शालामार बाग, चश्माशाही व चारचिनारी आदि रमणीय स्थानों को देखा था। फोटोग्राफी की थी।

दूसरे दिन घर वापिसी से पहले सभी बी.एस.एफ. के कर्मचारियों के गले मिलकर. विदाई ली थी। सभी साथियों के मुखों पर मेरे बिछुड़ने की, जुटाई की उदासी स्पष्ट झलक रही थी। हरमित्रसिंह मुझे बस पर बिठाने बस स्टैंड आया था। ज्यों ही बस रेंगने लगी, हरमित्र की आंखों से छम-छम करके आंसू बह निकले थे। मेरी आंखें भी छलछला आई तीं। आर्द्र कंठ से हरमित्र ने कहा-''यश! घर पुजदियां मैंने अपनी राजी खुशी दी चिट्ठी लिख देवीं।''

''हां, वीर जी, जरूर लिख दिआंगा.......।'' उसके बाद बस ने जैसे ही थोड़ी गति पकड़ी, खिड़की से हम दोनों के हाथ छूट गए थे। मेरा उससे वर्षों पत्र-व्यवहार होता रहा था। फिर पता नहीं क्या हुआ, हरमित्र सिंह का अड्रैस मुझ से गुम हो गया था। न हरमित्र सिंह ने मुझे कोई पत्र लिखा। दोनों ओर से पत्र व्यवहार बंद हो गया था। समय ने एक लम्बी चौड़ी खाई हम दोनों में खोद दी थी। पुनः मिलन न हो सका था। कौन जाने वह दुनिया में होगा या नहीं। परन्तु मैं हरमित्र सिंह के लिए शतायु होने की मंगल कामना करता रहता हूं। सयाने सच कहते हैं-'संयोग में अकथनीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुशी, जीने की चाह, आशा, जीवन में एक नई स्फूर्ति, ऊर्जा और नव्य चेतना होती है। 'यह संयोग नाम ही वस्तु विधाता उत्पन्न करता है। मानवीय जीवन पग-पग पर इसी संयोग-मिलन की कड़ियों से जुड़ा हुआ है। संसार का इतना बड़ा ढर्रा, इसी संयोग के ताने वाने से अत्यन्त बारीकी से बुना हुआ है। संयोग-मिलन का एक तंतु टूटता है, आठ धागे और जुड़ जाते हैं। इसी संयोग रचना से मृगतृच्छा समान जीवन व यह आलम-मधुर, सुखमय और अपना सा लगता है। नहीं तो संयोग के बिना यह जिन्दगी व दुनिया फीकी, कड़वी और उदास सी मालूम होती। रही वियोग की बात- इसमें तो उदासी, आंसू, आहें, उलाहने, वेदना, ग़म और पीड़ा निहित है। सुन्दर-सुखद संयोग-मिलन के साथ, आहत व पीड़ित करने वाला विछोड़ा दूसरे छोर पर खड़ा रहता है। सांसारिक लीला-संयोग वियोग के मक्कड़ जाल में उलझी पड़ी है।'

अतीत के कडुवे सच से मेरी आंखों से आंसू लुढ़क कर गालों पर आ गए थे। एक गर्म आंसू की बूंद ज्यों ही मेरे हाथ पर गिरा, मुझे अहसास हुआ कि मैं गाड़ी में दोस्तों संग यात्रा कर रहा हूँ। आंसुओं को मैंने चुपके से रूमाल से पोंछ दिया था। अशोक अभी भी दफतर के किसी काम के सम्बन्ध में अपने विचारों में उलझा पड़ा था।

मैं पुनः कल्पना के विहंग पर उड़ान भरने लगा था। सोचने लगा-'सन् 1993 के नवम्बर माह में मैं अपनी दोनों मासी सासुओं, साले वीरेन्द्र कौल व अनेक कश्मीरी सम्बन्धियों को हंसता-बसता छोड़ गया था। और आज सारे के सारे ससुराल की तरफ से रिश्तेदार जम्मू, देहली, कठुआ, पठानकोट व न जानें कहां-कहां भीषम परिस्थितियों में जीने को मजबूर हैं। वक्त का मनुष्य को कैसा कडुवा, प्रतिकूल, दुःखद और घिनौना उत्तर मिलता है। मानव तो प्रत्येक परिस्थिति में अपने किए कर्म का उत्तर इच्छाव मनोनुकूल चाहता है। परन्तु उस कर्म का फल विश्व नियंता के हाथ में है- कि वह मानव को किस समय क्या उत्तर दे? वक्त तो किसी राजा-रंक का गुलाम या बंधुवा नहीं है। समय व परिस्थिति इन्सान की झोली में जो कुछ डालती है- नर-नारी को स्वीकार करना पड़ता है। प्रभु-इच्छा ही जगत में बलवान व महान है।'

मुझे स्मरण हो आया-30 सितम्बर, 1976 को मेरा विवाह कश्मीरी कन्या श्रीमती पुष्पलता से सम्पन्न हो गया था। डॉ. मोहल लाल भट्ट का वही घर-जहां से मुझे अजनबी, खुराफाती, आशिक मिजाज और अविस्वासनीय समय कर घर से निकाल दिया था तथा कुछ दिन व्यतीत न करने दिए थे-वहीं से मैंने अपने गृहस्थी जीवन की शुरुआत की थी। धर्मपत्नी संग प्रथम मिलन की वेला में-सुहागरात यहीं मनाई थी। अब डॉ. मोहन लाल भट्ट व श्रीमती रूपा रानी भट्ट मेरे मौसा ससुर व मौसी सास थी और उनका घर-मेरा ससुराल था। कहां मिर्चों वाली सब्जी से एक अजनबी अतिथि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का आतिथ्य स्वीकार व सेवा हुई थी और अब तरह-तरह के मिष्ठान व नमकीन व्यंजनों की भरमार से मेरा सत्कार हो रहा था। तब मिर्चों वाली सब्जी खाने से मेरे नाक व आंखों से पानी बहा था और पूरा भट्ट परिवार मेरी नाजुक हालत पर हंसता था। परन्तु अब सालियां मुझे खूब हंस और हंसा रही थीं-जिससे हंसी में हंसते लोट-पोट होते खुशी के आंसू छलछला आए थे।

जून 1972 के अपने कठोर व्यवहार पर डॉ. भट्ट ने सपरिवार क्षमा याचना की थी और कहा था-''राजेन्द्र कुमार जी (मेरी सास द्वारा विवाहोपरान्त नामकरण) उस समय के व्यवहार को भूल जाइए। हम बहुत शर्मिंदा हैं जो आप से ऐसा बिहेव हम ने किया था। ऐसा होना नहीं चाहिए था.....।'' जब डॉ. मोहन भट्ट व उसका परिवार मुझ से क्षमा याचना कर रहा था, विश्व सूत्रधार किसी अज्ञात कोने में बैठा मुस्करा उठा था। श्रीनगर कानिया कदल का घर वही था-परन्तु परिस्थितियों व रिश्ते में जमीन-आसमान का अन्तर आ चुका था। मैं अपनी धर्मपत्नी की उपस्थिति में तीनों सालियों को छेड़ता हुआ कहता-''अरी मौसा-मौसी ने सोचा था-हमारी कश्मीरी लड़कियां सुन्दर, कमनीय व अल्हड जवान, गोरी-चिट्ठी, माखन सी मुलायम और मिश्री की डली सी मीठी हैं-कहीं यह पंजाबी छोकरा किसी छोरी को पटा-उड़ा कर न ले जाए। क्योंकि कश्मीरी पंड़ितों के दिलोदिमाग में यह बात घर कर गई है-पंजाबी बड़े आशिक मिजाज और लुंड किस्म के होते हैं। आखिर मैंने नाज़नीन, हुस्नपरी, कश्मीरी कबूतरी पटा ही ली।'' वह मेरी बातें सुनतीं तो खूब खुश होतीं। खिलखिला कर हंसती। मझोली साली-निम्मी विटा तो मेरी प्राईवेट सैक्रेटरी बन गई थी। वह मेरी हर बात का समर्थन करती। रिश्तेदारों के घर पर दावत व निमंत्रण आने पर उनके घर वहां जाने की तिथियां तय करती। बड़ी साली बीणा व छोटी साली महालक्ष्मी उससे बहुत चिढ़ती थीं।

नौ बजे के लगभग टाटा सूमो मार्तंड पहुंच गई थी। समस्त साथियों ने वहां पावन व शीतल जल से स्नान किया था। मार्ताण्ड मन्दिर अपनी भव्यता के साथ खड़ा अवश्य था, किंतु वहां से भाग गए कश्मीरी पंडों के पलायन पर मैं खिन्न व उदास था। मार्तण्ड के मन्दिर के चारों ओर जल था। पहाड़ी से पानी तालाब में भर रहा था व आगे की ओर उसका निकास हो रहा था। तालाब में बहुत ज्यादा मछलियां थीं। लोगों की ऐसी धारणा है कि यह मछलियां-पितरों के रूप में यहां विद्यमान हैं। राकेश कुमार, नरेश कुमार शर्मा, पवन कुमार व मैंने अपने पितरों के निमित्त पिंडदान, श्राद्ध किया था। पूजा-अर्चना की थी। जो थोड़े से पंडे वहां रह गए थे-वह बड़ी श्रद्धा, भक्तिभाव से, सेवा भावना से पिंड दान व श्राद्ध यजमानों से करवा रहे थे। पंड़ों का व्यवहार बड़ा मधुर व सहयोगी था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहां पर अब दूसरे देवताओं के मन्दिरों का निर्माण भी करवाया गया था, जिनमें-राधा कृष्ण मन्दिर, मां दुर्गाभवानी का मन्दिर और राम-सीता व लक्ष्मण के मन्दिर प्रमुख हैं। इसी प्रांगण में सिखों का गुरुद्वारा भी स्थित है। गुरुद्वारे में निशान साहिब के समीप एक सफेद संगमरमर की पट्टी लगी थी। जिस पर तीनों भाषाओं में सुन्दर लिखावट काले शब्दों में करवाई गई है-

ਮੰਦਰ ਗੁਰਦਵਾਰਾ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ

ਮਟਨ ਸਾਹਿਬ

GURUDAWARA

SH. GURU NANAK DEV JI

MATTAN SAHIB

गुरुद्वारा

श्री गुरु नानक देव जी

मट्टन साहिब

मेरे समस्त साथियों ने बड़ी श्रद्धा व भक्तिभाव से मन्दिरों व गुरुद्वारे में माथा टेका था। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुन्दरता और स्वच्छ वातावरण हेतु प्रसिद्ध है।

अब सभी को बड़ी जोर की भूख लग आई थी। एक ढाबे पर बैठ कर हमने नाश्ता किया था व चाय पी थी। समस्त साथी बेहद प्रसन्नचित थे। लव कुमार, नरेश कुमार शर्मा व दौलतराम बेरी नाग देखने को कहने लगे थे। यात्री दल का मुखिया अड़ गया था कि हम आज घर पर नहीं पहुंच सकते। अतः बेरी नाग देखने का प्रोग्राम नहीं बन सकता।

मैंने राकेश कुमार को समझाया कि काजीगुंड के समीप 6-7 कि.मी. पूर्व दक्षिण में बेरी नाग है। हमारे रास्ते से जरा सा हट कर स्थित है। ज्यादा वक्त वहां जाने और आने में नहीं लगेगा। अगले वर्ष कौन आएगा और कौन नहीं आएगा-इस बारे में कुछ ठीक से कहा नहीं जा सकता। अब समय है-बहती गंगा में हाथ धो लो। वक्त का लाभ उठाना ही बुद्धिमता है। मेरा कहना राकेश कुमार ने मान लिया था। सभी साथी प्रसन्न हो गए थे। बिलम्ब किए बिना सभी अपनी-अपनी पहले की सीटों पर बैठ गए थे। ड्राईवर अशोक दीवाना ने गाड़ी चला दी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता नदी का इतिहास व इतिहासिक तथ्यों द्वारा उनकी पुष्टि

समस्त साथी अपनी गप्पें मार रहे थे। मैं वितस्ता के इतिहास के समबन्ध में विचार मग्न हो गया था-

वैश्म्पायन महाराज जनमेजय को उचित ही कहता है-

पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तत्र नशधिप।

"हे राजन पृथ्वी पर जो भी तीर्थ हैं, वे सब (कश्मीर में पाए जाते हैं।)

-प्रत्याभिज्ञाहृदयम,सूत्र1,20 पंचस्तवी-11/31

विष्णुपुराण1, 17,11,4,2,1/1

बहुत प्राचीन समय से नदियों की पवित्रता सर्वमान्य रही है। भारत के उत्तर में जब आर्यो का अधिकार दृढ़ हो चला तो नदियों के तटों पर ही नगरों तथा उपनगरों का निर्माण किया गया। क्योंकि इस बारे में इन सरिताओं की उपयोगिता स्पष्ट थी। नदियों का आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक महत्व जोड़ा गया जिसे भुलाया नहीं जा सकता। वेदों में प्रकृतिपूजन का भी यही रहस्य है। ऋग्वेद में भी नदियों का विशद वर्णन किया गया है। पौराणिक तथ्य प्रमाण देते हैं कि पावन वेद की सरंचना सप्त सिंधु क्षेत्र में हुई थी। सप्त सिंधु क्षेत्र सात नदियों का क्षेत्र है। इसमें सरस्वती व सिंधु नदी के अलावा शतद्रू (सतलुज) व्यास (विपासा), वितस्ता (जेहलम), आस्किनी (चिनाब), और पारुसनी (रावी) नदियां शामिल हैं। वेदों की सूक्तियों में भी इसका जिक्र है। सप्त सिंधु में सतलुज और ब्यास नदियों के संगम पर ही वेद उदित होने के प्रमाण हैं।

महाभारत में कथा का उल्लेख श्री दंडी स्वामी धर्मसंघ संस्कृत महाविद्यालय के स्वामी देवव्रत जी महाराज के अनुसार सतलुंज और व्यास संगम पर समाधि की भाषा में भगवान विशिष्ट को वेद मंत्रों का साक्षात्कार हुआ था। इस संदर्भ में उन्होंने महाभारत की एक कथा का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया कि महर्षि विश्वामित्र ने वशिष्ट जी के सौ पुत्रों को मार डाला था। इस दुःख से दुःखी होकर विशिष्ट जी सतलुज में आत्महत्या करने के लिए गए थे। जब उन्होंने ऐसा प्रयास किया तो उसी समय सतलुज सौ धाराओं में बंट गई। इसी लिए प्राचीनकाल में सतलुज शतद्रू के नाम से विख्यात हुई। शतद्रू का अर्थ होता है सौ धाराएं। इस से ऋषि विशिष्ट मरे नहीं क्योंकि सतलुज की मुख्याधारा सौ धाराओं में विभक्त होने पर पानी ऋषि विशिष्ट के घुटनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक हो गया था। तब वे उठ कर नदी के किनारे चलने लगे। तब उन्हें वेद मन्त्रों की ध्वनि सुनाई दी। प्राचीनकाल में यह स्थान किसी और नाम से जाना जाता था। आधुनिक काल में यह स्थान हरिकेपत्तन है।

कश्मीर में रचित 'नीलमतपुराण' इस प्रदेश का सर्वप्रथम भोगौलिक तथा सांस्कृतिक इतिहास माना जाता है। इसमें वितस्ता के उद्‌भव के सम्बन्ध में विशेष सामग्री मिलती है। इसे ''नीलजा'' अर्थात नीलनाग की पुत्री नाम भी दिया गया है। कश्यप ऋषि ने सतीसर के अथाह जल का निकास करवा के इस प्रकार अर्जित भूमि को कश्मीर का नाम दिया। और इसका राज्य अपने पुत्र नीलनाग को सौंपा। इस तरह 'नीलपुत्री'- वितस्ता इस राजा को अपनी उपादेयता के कारण बहुत प्रिय थी।

(-नीलमत पुराण प्रो. कांजीलाल तथा प्रो. जाडू द्वारा संपादित)

कल्हण भी इस बात का समर्थन करता है।

नीलमत पुराण और राजतरंगिणी के पृष्ठों पर वितस्ता का उद्‌गम तथा उद्‌भव उस प्रकार समझाया गया है-'जब घाटी का सारा पानी रिक्त हो गया तो वह जलहीन-सी लगने लगी। कश्मीर का निस्तोंय बन जाना जीवन-यापन के लिए दुष्कर बनने लगा। यहां के आदि निवासी पिशाचों के साथ सम्पर्क होने के कारण भी ''नाग'' अपने आप को अपवित्र समझने लगे। अतः जीवन को सुगम बनाने के लिए नाग जनता की शुद्धि के लिए वितस्ता का जन्म हुआ।

ऋषि कश्यप ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि वे अपनी प्रिया पार्वती को कश्मीर में वितस्ता के रूप में बहने की प्रेरणा दें। देवी पार्वती ने अपने पति से अनुरोध किया कि वह भूमि में एक छेद करें ताकि उसमें से निकल कर वह प्रवाहित हो सके। इस पर भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से नीलनाग के समीप ही धरती में छेद किया। यह छेद एक वितस्त के बराबर था। अतः इसी में से स्वयं शिव ने दिया। कल्हण् सपष्ट कहता है कि यह ''नीलकुण्ड'' गोलाकार था, जो नीलानाग का मानो राजसी छत्र था। इस कुण्ड का आकार इस समय अष्टकोणी है, जिसका कारण इसका समय-समय पर जीर्णोदार करना है, विशेषता मुगलों द्वारा। (आप्टे -संस्कृत-अंग्रेजी कोष 1,28)

नीलमत पुराण में आठ नदियों का वर्णन है। परन्तु उनमें से ऊपर वितस्ता ही है। नीलमत में इस नदी का दो बार अन्तर्हित होना भी बताया गया है और इसने फिर बहना स्वीकार किया जिससे इस सिंधु नदी के रूप में गंगा, गोदावरी के रूप में ''गुदर'' और लक्ष्मी के रूप में ''विशोका'' (आज का वेशिव नदी) का साहचर्य प्राप्त है। यह विशोका नदी विश्व प्रसिद्ध ''अहरबल'' प्रपात से निकली है, जिसे उस समय ''आखुबिल'' चूहे का बिल कहा जाता था। वितस्ता के प्रवाह का दो बार रुक जाना, इस बात की ओर संकेत करता है कि इस नदी का एक से अधिक स्त्रोत भी रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होगा। दूसरी बार यह ''पन्चहस्त'' (आज का पंजिथ गांव) से बहने लगी। तीसरी बार यह नदी ''नरसिंहाश्रम'' से प्रकट हुई। वितस्ता महात्मय भी इसका दूसरा स्त्रोत ''वितस्तोत्र'' (आज का व्यथवोतुर) मानता है, यह स्थान वेरीनाग से दो-तीन मील नीचे उत्तर-पश्चिम की ओर है। इस प्रकार यह अनुमान सुकर बन जाता है कि वितस्ता नीलकुण्ड से निकल कर इन स्थानों के नदी-नालों का पानी भी लेकर अपने शरीर को पुष्ट करती गई। उसके प्रवाह का रास्ता इन्हीं जगहों से ही हो कर जाता है।

कल्हण् अपने इतिहास लेखन में वितस्ता का प्रवाह का वर्णन नीलमत पुराण के आधार पर ही करता है-

उद्यद्वैत्सतनिष्पन्द दण्ड कुण्डात पत्रिणा।

यत्सर्वनागाधीशेन नीलेन परिपाल्यते। (नीलमत पुराण, 1,28)

''यह (कश्मीर) सब नागों के महाराज नील से रक्षित हैं, जिसका राजसी छत्र (गोलाकार) नीलकुण्ड है, और इसमें से निकली हुई वितस्ता (उस क्षेत्र का)दण्ड है।''

सर्वप्रथम ये महात्मय वितस्ता का आदिस्त्रोत 'बेरी नाग' देते है. नीलनाग नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि महात्म्य मुगल काल में लिखे गए हैं। क्योंकि उन्होंने ही इस कुण्ड का नाम साथ में सटे 'वेर' नामक गांव से जोड़ दिया। इस नाम का उल्लेख सबसे पहले अबुल-फ़ज़ल करता है।

(आई ने अकबरी, 11 पृष्ठ 370)

अतः इससे सिद्ध होता है कि ये महात्म्य सतारहीं-अठारहवीं शताब्दी में लिखे गए है। क्योंकि सुल्तान शहाबुदीन ने (सन् 1354-1373) में वितस्ता के किनारे एक नगर ''शहाबुदीनपुर'' बसाया था, जो नाम आजतक बिगड़ते-बिगड़ते ''शादीपुर'' बन गया है। जोनराज अपनी द्वितीय राजतरंगिनी में शहाबुद्दीन पुर का निर्विवाद उल्लेख करता है। (जोनराजतरंगिणी,409)

हिन्दू-परम्परा असली नीलनाग को ही वितस्ता के उद्गम स्थान बराबर समझती आ रही है। वितस्ता का दूसरे नीलनाग से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं है। इस दूसरे नीलनाग से निःसृत दूधगंगा श्रीनगर से नीचे वितस्ता से ही मिल जाती है। तब तक बेरीनाग (असली नीलनाग) से श्रीनगर तक की लगभग अस्सी मील की यात्रा में वितस्ता से दूधगंगा का कोई भी संसर्ग नहीं हो पाता। स्वयं अबुलफज़ल ने लिखा है कि इस नीलनाग (वेरीनाग) के कुण्ड पर पत्थर से बहुत से शिवालय बनाए गए हैं। ये पत्थर बहुत भारी थे। परन्तु आजकल ये सब पत्थर गायब हैं। सम्भव है, मुगलों ने इस ऩाग (चश्मे) के जीर्णोदार में ये भारी पत्थर काम में लिये हों। आजकल यहां एक छोटा सा शिवाला मौजूद है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आजकल का शाहाबाद परगना ''अनन्तनाग'' जिले के अन्तर्गत उस समय वेर कहलाता था। अबुलफज़ल ने भी इसे यही नाम दिया है। इसलिए इस चश्मे का नाम आगे चल कर ''वेरनाग'' वेर परगने का पड़ गया। यही वेरनाग कश्मीर आजकल वेरीनाग कहलाता है। नीलनाग में साफ दर्ज है कि वितस्ता का जन्मदिन भाद्रपद शुक्लपक्ष त्रयोदशी को मनाया जाता था। इस पर्व का नाम इस ग्रंथ में ''वितस्तोत्सव'' दिया गया है। आज भी इस दिन वितस्ता में फूलमालायें तथा फल इत्यादि विसर्जित किए जाते हैं और असंख्य दीप प्रवाहित किए जाते हैं। कश्मीरी में वितस्ता को ''व्यथ'' और पर्व को ''वयथत्रुवाह'' कहा जाता है।

अनन्तनाग के समीप इसमें बहुत सी नदियां मिल जाती है, और वितस्ता की काया ढलने लगती हैं। सर्वप्रथम भृंगी नाला इस वितस्ता में खो जाता है। तब उत्तर पूर्व से ''आरपथ'' नद इसके साथ मिल जाता है। फिर खनाबल के पास ''अछाबल'' का पानी इसमें मिल जाता है। उत्तर से ''लेद्री'' हिमानी नदी बहुत अधिक शोर करती हुई वितस्ता का अभिनन्दन करती है। दोनों एक हो जाती हैं। इस तरह इस नदी-नालों का संयोग पाकर वितस्ता श्रीनगर की ओर शांत-गंभीर,धीर-मंथर चाल से बहने लगती है।

खनाबल से इसमें किशतियां, नावें इत्यादि चलने लगती हैं। यही जलमार्ग बहुत समय तक कश्मीर में आवागमन का एक सुलभ साधन रहा है। अत: इसके तटों पर नगर, तीर्थ तथा राजधानियां निर्मित की गईं। खनाबल से लगभग दो मील नीचे वितस्ता के दायीं ओर विजयेश्वर का प्रसिद्ध तीर्थ स्थापित किया गया था,जिसे आजकर ''व्यजबोर'' कहा जाता है। कल्हण की साक्षी के अनुसार यह प्रसिद्ध तीर्थ अशोक ने बनवाया था।

(-राजतरंगिणी,1,105)

''व्यजब्रोर'' अथवा ''बीजविहाड़ा'' से नीचे तीन चार मील की दूरी पर वितस्ता में कुलग्राम की तरफ से ''विश्व'' नदी और शुपियां की ओर से ''रम्बआर'' नदी इसमें मिल जाती है। इस संगम को पुराने समय में ''गम्भीरसंगम'' के नाम से पुकारा जाता था। (नीलमत में विशोका,रामायणटवी राज.)

राजतरंगिणी में लिखा है कि संगम पर महाराज चन्द्रापीड़ के गुरु मिहिरदत्त ने बहुत से मन्दिर बनवाये थे। परन्तु आजकल वहां कोई भी मन्दिर या भग्नावशेष, दिखाई नहीं देते। सम्भव है यदि खुदाई की जाए तो इन मन्दिरों का पता मिल सकता है।

श्री नगर से लगभग 29 कि.मी की दूरी पर अवन्तिपुर के भग्नावशेष दिखाई देते हैं। राजा अवन्तिवर्मन ने यह नगर बसाया था जो श्रीनगर-जम्मू राजमार्ग पर स्थित है। वितस्ता अवन्तिपुर के समीप बहती है। यहां अवन्तिपुर नगर के भग्नावशेषों में दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन्दिरों के भग्नावशेष दिखाई देते हैं। महाराज अवन्तिवर्मन के राज्यकाल में वितस्ता की सफाई की गई थी, ताकि इसका एक निश्चित मार्ग निर्धारित किया जाए। इसके दोनों ओर ऊंचे-ऊंचे सेतु बनाए गए थे ताकि पहले की तरह वितस्ता का निरंकुश पानी नदी के किनारे तोड़ कर बाढ़ और बर्बादी का कारण न बन सकें। इस योजना को अन्नपति सूय्या ने अपने हाथ में लिया था। इस तरह धान्य की एक खरवार (खरभार) जो पहले एक सहस्त्र दीनारों तक जाती थी, अब केवल छत्तीस दीनारों में बिकने लगी थी (जोनतरंगिणी,वितस्ता माहात्य अनुसार)

अवन्तिपुर के पांच-छ: मील नीचे केसर की टेकड़ियों पर ललितपुर नाम का उपनगर आता है। इसे महाराज ललितादिव्यमुक्तापीड़ के नगर निर्माण अधिकारी ने उसकी अनुपस्थिति में बनवाया था। परन्तु महाराज ने इस में कोई रुचि नहीं दिखाई और राजकीय संरक्षण के अभाव में यह उजड़ा-उजड़ा सा रहा। राजतरंगिणी के अनुसार अब किसी भवन के भग्नावशेष दिखाई नहीं देते। सम्भवत: खुदाई करने पर इस उपनगर के कुछ सबूत हाथ लगें। इस गांव को आज कल ''ल्यतपोर''कहा जाता है।

इन टेकड़ियों से उतरकर हम वितस्ता को पद्मापुर (आज का पम्पोर) के बहुत ही निकट बहते देखते हैं। यह उपनगर महाराज ललितादित्य की महारानी जयादेवी के भाई पद्म मे बसाया था। वहां पर एक विष्णु मन्दिर की भी स्थापना की गई थी। परन्तु इस मन्दिर के चिंह आजकल कहीं भी दिखाई नहीं देते। अनुमान है कि श्रीनगर के समीप होने के कारण सुल्तानों के शासनकाल में इसका भंजन किया गया हो या इसे मस्जिद में परिवर्तित किया गया हो।

यहां वितस्ता दायें होकर थोड़ा-बहुत मुड़ कर पुराणाधिष्ठान (कश्मीरी पांद्रेठन) नामक नगर के समीप बहती है। यह कश्मीर की प्राचीन राजधानी रही है। इसका निर्माण प्रवरसेन प्रथम ने किया था। इस स्थान पर बौद्धों, वैष्णवों और शैवों ने क्रमश: अपने बिहार और मन्दिर बंनवाए, जिसके भग्नावशेष पर दूर तक बिखरे मिलते हैं। (राजतरंगिणी)

बिल्हण की साक्षी के अनुसार यहां एक मन्दिर ''क्षेमगिरिवर'' बनाया गया था। इस महासरित को आजकर ''मार'' कहा जाता है और यह वास्तव में झील डल से निकाली गई मात्र एक नहर है। इसी मार के किनारे ''माक्षिक स्वामिन'' नाम का मन्दिर भी था, जिस स्थान को अब ''मायूसन'' कहते है। जैनतरंगिनी में श्रीवर इस महासरित को ''मारी'' नाम देता है। जो आगे चल कर ''मार'' हो गया।

गोपादि(शंकराचार्य पर्वत) के दामन में बने ''शुहरयार'' मन्दिर को ही इस नदी का राजधानी में प्रवेश करने के द्वार कह सकते हैं। हिन्दू शासकों ने नदी पार करने के लिए नावों के अस्थायी पुल बनवाए थे,जो शत्रु के आक्रमण के समय आसानी से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलग किए जा सकते थे और हमलावर पार जाने में कठिनाई अनुभव करता था।

वितस्ता पर स्थायी पुल सुल्तानों के शासनकाल में बने। सम्भवतः पहला स्थायी पुल ''जैनाकदल'' सुल्तान जैनुलआब्दीन ने बनवाया था। कल्हण हमें सूचना देता है कि वितस्ता के दोनों किनारों प्रर स्नानागृह, मज्जनावास और स्नानाकोष्ठ स्त्रियों के लिए सुरक्षित हुआ करते थे। स्नानाकोष्ठ से कश्मीरी ''स्नानाकोष्ठ'' आज भी नदी में देखे जा सकते है। यह लकड़ी के बने होते थे। इन स्नानागृहों का वर्णन कल्हण से पहले क्षेमेन्द्र भी करता है।

डॉ.स्टीन ने सदाशिव मन्दिर को आज का ''पुरुषयार'' माना है जो हब्बाकदल से थोड़ा दाएं को है। काष्ठलेश्वर बड़शाह कदल और हब्बाकदल के मध्य में है। यदि कोई मन्दिर काष्ठेलश्वर के ठीक सामने है तो वह ''गणपतियार'' ही हो सकता है। परन्तु यह सदाशिव नहीं, अपितु गणेश मन्दिर है। सम्भव है कि यह पूर्वकाल में शिव मन्दिर रहा हो।

कश्मीर में लकड़ी ही विशेषतयः भवन निर्माण में काम आती है। इस ''काष्ठल'' अथवा ''काठल'' मुहल्ले से जरा ऊपर दूसरा मुहल्ला ''टींकापोर''नाम का है। सम्भव है यह ''टंकनपुर'' रहा हो और राजाओं ने इसी अपने महलों के समीप ''टंकनशाला'' का निर्माण किया हो। कश्मीरी में आज भी मुद्रा को ''टींक'' कहा जाता है।

वितस्ता का शान्त प्रवाह पथरीले मार्ग पर हो जाने से सिर फटौल गति प्राप्त करता है और इसका अधिकतर जल अन्दर-ही-अन्दर विलीन होकर पश्चिमी पाकिस्तान में फिर से अपना विपुल शरीर पाकर ''जेहलम'' का नाम धारण करता है। वितस्ता का यह ''जेहलम'' नाम सर्वप्रथम श्रीवर ने प्रयुक्त किया है।

(जैनराजतरंगिणी)

यहां इन सपष्ट कारणों से वितस्ता का पाट बहुत संकीर्ण हो जाता है। अतःइसे ''कनिका माता'' (कश्मीरी कनि माऽज) का नाम दिया गया है। सम्भवतः यह नाम ''कन्'' धातु से बनाया गया है जिसका अर्थ कम होना, अथवा आकारक्षति माना है। इस स्थानपर इन्द्रद्वादशी का पर्व मनाया जाता रहा है। प्राचीन समय में आमोद-प्रमोद का दिन होता था। परन्तु अब यहां पर पितरों का श्राद्ध किया जाता है। यह दिन भाद्रपद शुक्लपक्ष द्वादशी को पड़ता है।

कल्हण् की राजतरंगिणी के अनुसार ''शाहहमदान खानकाह'' जो कभी पहले काली स्थान था, सम्भव है मस्जिदों में तबदील कर दिया गया हो। वितस्ता जहां ''छत्ताबल'' के समीप पहुंचती है, वहीं दायें किनारें पर महारानी दिद्दा (सन्980-1002 ई) ने एक मठ ''दिद्दामठ'' के नाम से बनाया था। इस मुहल्ले को ''द्यदमर'' कहा जाता है। श्रीनगर के इस भू-भाग का बार-बार वर्णन होता है। श्रीनगर की सीमा से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाहर होकर वितस्ता के तटों में एक अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई देता है। अब दायां तट दलदली बन जाता है और बायां पूर्ण रूप से सुदृढ़। यहीं पर दूधगंगा वितस्ता से मिल जाती है। कश्मीर में सिंधु को गंगा की पदवी दी गई है। नीलमत में वितस्ता को यमुना सिंधु को गंगा कहा गया है। अत: इसके संगम को प्रयाग की उपाधि देना समीचीन है-

गंगा सिन्धुस्तु, विज्ञेया वितस्ता यमुना यथा।

(नीलमतपुराण -297)

यह संगम बहुत ही प्राचीन समय से पावन माना जाता रहा है। यहां श्राद्ध और अस्थि विसर्जन किए जाते हैं। कल्हण् की साक्षी के अनुसार इस संगम का पुनरुद्वार "सूय्या" ने किया,जब वितस्ता के प्रवाह में गतिशीलता लाई।

इस तरह यह वितस्ता से जन्म लेकर, खनाबल में अपनी सखी सहेलियों को साथ लेकर खादनयार तक धीर-शांत गति से बहती जाती है। इसकी तरंगों की छल-छल में हमारी संस्कृति की मिठास समोई गई है। वास्तव में इसकी लगभग अस्सी मील की यात्रा हमारी संस्कृति के मील-पत्थर कहलाएंगे, जिन्होंने बहुत प्राचीन काल से आज तक हमारे उत्थान-पतन, पुण्य पाप, आचार-विचार के साक्षी बनकर भिन्नता में एकता का अमर संदेश दिया है। पानी को कोई भी नाम दिया जाए, उसकी पावनता व स्वच्छता में कोई अन्तर नही आएगा, जैसे गुलाब को हम किसी भी नाम से पुकारें, उसकी सुगन्धि सुरक्षित रहेगी।

वैशम्पायन महाराज जनमेजय अपने प्रवचन की पुष्टि हेतु कह उठता है-

तनमध्येन च निर्याता सीमान्तमिव कुर्वती।
वितस्ता परमा देवी साक्षाद हिमनगोद्भवा॥

(नीलमत पुराण 35)

"अर्थात् उन (नदी-नालों,नागों, सरों, झीलों तथा टेकड़ियों के बीच में से निकलकर,बहकर,यह परमदेवी वितस्ता, वस्तुत: हिमालय से जन्म लेकर (श्रीनगर:) किसी रमणी के केशों में वेणी की तरह, दो भागों में विभक्त करती है।"0

ज्यों ही मैं वितस्ता के उद्गम के इतिहास, स्थान, महत्त्व व यात्रा सम्बन्धी विचारों से मुक्त हुआ-काजीगुण्ड आ गया था। हमारे यात्री दल के प्रधान राकेश कुमार ने ड्राईवर अशोक दीवाना को गाड़ी यहां खड़ी करने का आदेश दिया था. गाड़ी खड़ी हुई तो हम सभी गाड़ी से निकल कर चाय हेतु एक दुकान पर आ बैठे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहासकार कल्हण

इतिहास-लेखन की कला कश्मीरी ब्राहमणों की बहुमुखी प्रतिभा का एक विशिष्ट अंग रही है। इतिहास-ग्रंथ और महात्य इस सत्य का अकाट्य प्रमाण है। इस कश्मीरी इतिहासकार ने स्पष्ट रूप से अपने ग्रंथ का शीर्षक ''राजतरंगिनी'' रखा है-राजाओं की प्रवाहमयी नदी। इस तरह उसने केवल राजाओं के इतिहास को अंकित करना अपना दायित्व समझा है। अतः मेक्डोनल का यह कथन कि राजतरंगिणी में शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री का अभाव है, सत्य की कसौटी पर पूरा नहीं उतरता।

(संस्कृत साहित्य का इतिहास)

ऐतिहासिक काव्यकारों में कल्हण की देन ठोस और वजनदार है। इसी लिए वह इस साहित्यिक विधा का सर्वप्रथम कवि होकर सर्वश्रेष्ठ भी है। इसके बाद आने वाले संस्कृत साहित्याकारों ने इसे अपना गुरु और आदर्श स्वीकार किया है।

(-जोनराज कृत राजतरंगिऩी,श्लोक-4)

स्पष्ट रूप में कल्हण शब्द संस्कृत से सम्बन्ध नहीं, लोक भाषा में इसका कोई-न कोई अर्थ अवश्य रहा होगा, जिसकी जांच करने में इस समय हम असमर्थ हैं। कश्मीरी साहित्यकारों ने प्रधान रूप से देशीय नाम की परम्परा अपनाई है। अतः बिल्हण, मम्मट, रुद्रट इत्यादि नाम इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। (श्रीवर कृत जैन राजतरंगिणी,1.1.7.4)

(''अमर गायक बिल्हण) (काव्य प्रकाशकार)

यद्यपि ध्वनियों के आधार पर '' कल्याण'' या अपभ्रंश रूप 'कल्हण'' हो सकता है। परन्तु इस दिशा में हमें डॉ. कीथ के निर्णय पर ही संतोष करना होगा कि इस प्रकार के तर्कों को बहुत ही सतर्कता से अपनाना ही उचित है।

(सर्ग 25,78-80)

''कल्हण'' अपने वृत के सम्बन्ध में मौन है। वह न अपने और न अपने वंश के सम्बन्ध में कुछ लिखता है। उसका नाम राज़तरंगिणी के प्रत्येक सर्ग तरंग के अन्त पर इस प्रकार दिया गया है-''इति श्री काश्मीर महामात्य चम्पक प्रभुसूनौः कल्हणस्य कृतौ राजतरंगिणी(अमुकः) तरंग।

सौभाग्यवश वह अपने पिता का नाम देता है और यह भी बताता है कि वे महामात्य (प्रधानमंत्री) थे। इस जागरुक इतिहास ने अपनी रचना को लिपिबद्ध करने का समय भी दिया है। यह लौकिक संवत् का 4224 वर्ष है, जो 1148-49 बैठता है। एक वर्ष के पश्चात् उसने यह तरंगिणी समाप्त की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(राजतरंगिणी, श्लोक-5)

अपने पिता चम्पक का वर्णन वह राजा हर्ष के प्रसंग में करता है। सम्भवत: वह उसका महामात्य रहा हो। क्योंकि वह राजा हर्ष को मन्त्रणा देते हुए बहुत बार दिखाया गया है। (क्लासिकल संस्कृत साहित्य का इतिहास)

इसके अतिरिक्त वह "द्वारपति" तथा मण्डलेश भी रह चुका था। प्रतीत होता है कि कल्हण ने अपने पिता की मृत्यु के बाद ही राजतरंगिणी का प्रणयन किया,क्योंकि जिस रचनाकाल की ओर उसने ऊपर इशारा किया है वह जयसिंह का है। अत: यह सिद्ध होता है कि चम्पक निसन्देह सन् 1136 ई.. तक जीवित थे,जो हर्ष की हत्या के बाद का पच्चीसवां वर्ष है और इस समय जयसिंह कश्मीर का शासक था। क्योंकि कल्हण लिखता है कि इस वर्ष 1136 ई. में भी वह अपने पिता के साथ नन्दि क्षेत्र की यात्रा को गया था।

(राजतरंगिणी,1/111.7)

(राजतरंगिणी,1/1179)

कल्हण अपने इतिहास ग्रंथों की मौलकिता के प्रति उदासीन है और बहुत ही विनम्र भाव से लिखता है-

पूर्वबद्ध कथावस्तु मयिभूयो निबध्याति।

प्रयोजनमनार्कण्य वैमुख्य नोचिंत सताम्॥

अर्थात् "पूर्वाकालीन साहित्याकारों से जो विषय लिपिबद्ध किए गए है, मैं उनको फिर से (संशोधित रूप में) लिखता हूं, मेरे प्रयोजन को सुने बिना सत्पुरुषों का मुझ से विमुख होना उचित नहीं है।"

उस प्रयोजन को सपष्ट करते हुए कल्हण इस प्रकार की वकालत करता है-

दाक्ष्यं किमदिदं तस्मादस्मित् भृतार्थवर्णने।

सर्व प्रकारं स्खलिते योजनाय ममोद्यम:॥

" इसमें वैसी चतुरता है कि पूर्वकालीन रचनाकारों की कृतियों को फिर से लिखें। मेरा प्रयत्न केवल इतना है कि जहां-जहां इनकी क्रमबद्धता में व्यवधान आया है, उसे पूर्णरूप से धारावाहिक बनाऊं।"

अत: हम कह सकते है कि कल्हण पुनरुक्ति के स्थान पर पुनर्व्याख्या से काम लेना चाहता है। क्योंकि पुराने इतिहास ग्रंथ या तो लुप्त हो चुके थे पर इनमें घटनाओं के क्रम में सावधानी नहीं बरती गई थी। अत: कल्हण ने इन विश्रृंखल रचनाओं को क्रमबद्ध इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया। इस दिशा में वह हमें सत्य से अवगत कराता है कि कश्मीर के पुराने इतिहास ग्रंथ बहुत ही विस्तीर्ण थे।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतः ''सुब्रत'' ने उन्हें एक ही रचना ''सुब्रत भारती'' में संक्षिप्त रूप से समो दिया। परन्तु यह पुस्तक आगे चलकर लुप्त हो गई। इसी तरह ''क्षेमेन्द्र'' की ''नृपाबली'' का भी यही हाल हुआ। फिर भी कल्हण ऐतिहासिक स्त्रोतों के प्रति जागरूक है और कहता है कि उसने राजकथा विषयक ग्यारह ग्रंथों का अवलोकन किया और इनके अतिरिक्त नीलमत पुराण का पूरी तरह अध्ययन किया। इतना ही नहीं, प्राचीन मन्दिरों के प्रतिष्ठापट्टों तथा प्रशस्ति पत्रों से भी उसने सहायता ली। ताकि उसका इतिहास-ग्रंथ दोष रहित बन जाए। इनमें दान-पत्र, शिलालेख इत्यादि भी शामिल थे।

पूर्वकाल के विश्व साहित्य में बिरले ही किसी व्यक्ति ने अपनी कृति को विश्वस्त बनाने हेतु इतना परिश्रम किया होगा।

इसके साथ ही कल्हण इतिहास-लेखन का यह मानदंड भी स्थापित करता है-

श्लाध्यः स राव गुणगान रागद्वेष वहिष्कृता।

भूतार्थ कथने यस्य स्थेययेव सरस्वती॥

(राजतरंगिणी, 1,11-15,वही, 1,7)

''केवल वही गुण प्रशंसनीय है, जो पूर्वकाल की घटनाओं का बिना रागद्वेष के वर्णन करें और जिसकी बृद्धि एक न्यायधीश की तरह (तटस्थ तथा मंजी हुई है) हो।''

राजतरंगिणी की अन्तर्साक्षी के आधार पर हम यह कहने में पूरी तरह सत्य का आश्रय लेंगे कि कल्हण ने बिल्हण कृत ''विक्रमांक देवचरित'' का अध्ययन किया था। उसने स्वछन्दता से उसकी शैली और भाग्भण्डार का प्रयोग किया है।

(राजतरंगिणी,1/111,378,11,995,937)

कल्हण अपनी ''राजतरंगिणी'' में भावों का गहरापन लाने का बहुत इच्छुक था। राजतरंगिणी की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि राजकीय रिसर्च पुस्तकालय में सुरक्षित है। यह शारदा लिपि में अंकित है। गणकाक द्वारा सम्पादित एक और पाण्डुलिपि भी वहीं पर है जिस पर पंडित साहिब राम ने टिप्पणियां भी दी हैं।

(डॉ. बूहलर-कश्मीर रिपोर्ट)

यहां यह भी बताना समीचीन होगा कि कल्हण ने अपने पंथ का प्रणयन शारदा लिपि में किया था। क्योंकि यह देशीय लिपि थी। इसे देवनागरी में परिवर्तित करने के लिए एक ऐसे महापंडित की जरूरत थी जो शारदा लिपि के जटिल लिपि-विन्यास और शब्द साम्य से पूरी तरह से अवगत हो। दुर्भाग्य से ऐसे लिपिकारों का अभाव होने से इसके देवनागरी रूपान्तरण में अशुद्धियां समो गई थीं। राजतरंगिणी का कलकत्ता संस्करण इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

(एशियाटिक रिसर्चस द्वारा सन् 1835 ई. में प्रकाशित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बिल्हण' को 'रिल्हण' बनाने के अतिरिक्त इसमें इतने दोष आ गए थे कि इसके अंग्रेजी अनुवाद ने बहुत से विरोधों को जन्म दिया था। डॉ. बूहलर ने हमारा ध्यान इस त्रुटि की ओर आकृष्ट किया था, फलतः कई विद्वानों ने इसके अपेक्षाकृत प्रामाणिक संस्करण की खोज आरम्भ की। डॉ० स्टीन इस अभियान में सफल हुए,जब उन्हें राजानक रत्नाकण्ठ द्वारा प्रणीत ''अनुक्रमणिका'' हाथ लगी। इसका रचनाकाल सन् 1648-1685 ई. है। इस अनुक्रमाणिका में राजतरंगिणी का प्रामाणिक संस्करण लिपिबद्ध किया गया था, जिस के अध्ययन से बहुत से विरोध शांत हुए। बहुत सी गांठे खुल गई थीं।

(राजतरंगिणी की भूमिका पृष्ठ 45)

डॉ. महोदय ने लाहौर के एक कश्मीरी पण्डित जगमोहन लाल हण्डु से भी राजतरंगिणी का एक संस्करण प्राप्त किया।

(राजतरंगिणी भूमिका एशियाटिक रिसर्चस-1/25,पृष्ठ 50,24)

यह अनुक्रमणिका में दिए संस्करण की प्रतिलिपि थी। इस प्रकार इसके प्रमाणिक होने में कोई भी संशय न रहा। वास्तव में राजतरंगिणी को संसार से परिचित कराने का श्रेय डॉ. विल्सन को है। सन् 1825 ई. में उन्होंने प्रथम छः तरंगों पर आधारित एक शोध प्रबन्ध प्रकाशित किया था।

(रा.त. भूमिका, स्टीन कृत)

मि.ट्रोयर ने आठों तरंगों का अंग्रेजी अनुवाद करने का भार अपने ऊपर लिया और इसे सन् 1840 ई. से 1852 तक पूरा किया।

(हिन्दी प्रचारक संस्थान.वाराणसी)

राजतरंगिणी की प्रस्तावना में कल्हण इतिहासकार की अपेक्षा कवि बना रहना अधिक श्रेयस्कर समझता है-

कोऽ्नयः कालमतिक्रान्तं नेतुं प्रत्यक्षतां क्षमः।

कवि प्रजापतीस्यक्तवा रम्यनिर्माणशालिनः॥

(काव्य प्रकाश,प्रथम उल्लास)

''प्रजापतिब्रह्मा के समान सौन्दर्य का निर्माण करने वाले कवियों को छोड़ कर किसमें इतना सामर्थ्य है कि यह अतीत को प्रत्यक्ष रूप में सामने प्रस्तुत करें।''

कल्हण सहज ज्ञान से तो कवि था परन्तु व्यवसाय से एक इतिहासकार ही है। उसका प्रधान ध्यान दायित्व कश्मीर के राजाओं का वर्णन करना था। काव्य इसका माध्यम बना। इतना सब कुछ होते हुए भी कल्हण का कवित्व प्रगल्म है और अनेक अवसरों पर यह कवि कल्पना के उत्कृष्ठ नमूने प्रस्तुत करता है-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निगर्ते मन्जरी कुन्जादपश्यत् पुरतः सती।
कन्ये नीलनियोलिन्यौ से केचिच्चारूलोचने॥
कर्णिकापद्मरागाब्जनाललीलायित स्पृशा।
मनोज्ञधवलापांगे तनीयोन्जनरेखया॥
हरिनेत्रान्चलैर्मनदमारूतान्दोलनाकुलैः।
सनथासयुगे रूपपताका पल्लवैरिव॥

अर्थात् ''नीले शाल पहनी हुई, सुन्दर-मधुर आंखों वाली दो कन्याओं को उसने (विशाख ने) मन्जरी कुन्ज से निकलते देखा। कामदेव के समान सफेद आंखों के कोनों की पतली अंजन -रेखा उनके कानों के कुण्डलों में ज़डे हुए पदमपराग मणि के साथ कमलनाल सदृश लग रही थीं। उनके दोनों कंधों पर हल्की बयार से हिलने 'वाले उनके मुंह चिपके हुए थे, जिनके अंचल उनके चंचल नेत्रों के रूप की पताका के पत्ते जैसे लग रहे थे।'' इन पद्यों में उपमाओं का प्रचुर ही नहीं, प्रांजल प्रयोग हुआ है।

इसी तरह तीसरे तरंग के मंगल-श्लोक में शिव और पार्वती की बातचीत हमें कालिदास के ''कुमारसम्भव'' की याद दिलाती है।

(राजतरंगिणी 111,979-981)

प्रसंग एक समान होते हुए भी शिव के तथाकथित अमंगल स्वरूप को कल्हण इस प्रकार उचित ठहराता है-

मुन्चे भाजिनमस्य कुम्भ कुहरे मुक्ताः कुचाग्रोचिताः।
कि भाल ज्वलनेन कज्जलमतःस्वीकार्यमक्ष्णोंःकृतेः।.
संधाने वपुर धर्मोः प्रतिवदन्नेवं निषेधेष्यहेः।
र्क्तव्य प्रिययोत्तरानुसरणीघू क्तो हरः पातु वः॥

(राजतरंगिणी ,1,19)

''वह शिव आप सब की रक्षा करें जो पार्वती के आक्षेपों का उत्तर इस प्रकार देता है-(पार्वती कहती है।''हाथी की खाल(ओढना छोड़ दे) (शिव का उत्तर)'' इसके माथे के गड्डे में वह मोती है, जो तुम्हारे स्तनों की नोकों को सजाने के उपयुक्त है।''(पार्वती कहती है)''तुम्हारे ललाट पर प्रज्जवलित आग का क्या लाभ?'' (शिव का उत्तर) '' इसी से काजल पाकर तुम अपनी आंखों पर लगाओगी।'' इसी पर अर्धनरीश्वर के विषय में उत्तर देकर, और अपनी प्रिया के सांप का निषेध करने पर, (वह शिव) उत्तर देने में प्रवीण है।

शब्दालंकारों पर भी विशेषकर श्लेष और यमक पर कल्हण का समूचा अधिकार इन पंक्तियों से झलकता है-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गृहोन्मुखी नागमुखापति भूरि पया स्वचिम।
गौरी यत्र वितस्तात्वं याताप्युज्झति नौचिताम्।।
(काव्य प्रकार चतुर्थ उल्लास)

"गौरी वितस्ता का रूप धारण करके भी अपनी आन्तरिक विशेषताओं को भी हाथ से जाने नहीं देती। क्योंकि वह नदी-रूप में गुहाओं के प्रति अभिमुख होती है वैसे ही जैसे गौरी-रूप में कुमार(स्कन्द) के प्रति, नदी के रूप में नाग उसके पर्याप्त पानी का अपने मुखों से जी भर कर सेवन करते हैं। वैसे ही जैसे हाथी के मुख वाला गणेश उसके प्रगल्भ दूध का। "

कल्हण ने कश्मीरी काव्य-शास्त्र की लीक से हट कर अपनी मौलिक चिन्तन-प्रणाली का प्रमाण दिया है, मम्मट मे केवल आठ रसों की गणना की है। यद्यपि वह निर्वेद को शांत रस का स्थायी भाव समझता है, परन्तु उसने इसे उल्लेखनीय मान्यता नहीं दी है। कल्हण की राजतरंगिणी में यद्यपि अनेक रसों का समावेश हुआ है। परन्तु वह शांत रस को सर्वोपरि समझता है। वीर, श्रृंगार, करुण, रौद्र और वीभत्स रसों का परिपाक इस इतिहास ग्रंथ में प्रचुर मात्रा में हुआ है। फिर भी कल्हण इन सबको परिणति 'शांत' में ही समझता है। क्योंकि चित के खेद को सहलाने को रामबाण औषधि है। इसलिए उसके इस काव्य में उपदेशात्मक तत्त्व प्रायः मुखर हो उठे हैं-

कुलिश सर्वलोहानामम्भसां शैलसेतवः।
अभेद्याः प्रतिभाव्वन्ते न किंचिदसतां पुनः॥
(राजतरंगिणी 1,6)

"अर्थात् सब प्रकार के लोहों के लिए हीरे,जल के लिए पत्थरों के सेतु अभेद्य होते हैं, परन्तु दुर्जनों के लिए कुछ भी अभेद्य नहीं।"

इस प्रकार यह बात साफ हो जाती है कि इतिहास-लेखन के दायित्व ने यद्यपि कल्हण की कवि-कल्पना के पंख काट डाले थे। परन्तु वह इस अद्भुत मेघा का परिचय पग-पग पर देता है, कि वह इतिहासकार होते हुए भी कवि-कौशल में किसी से कम नहीं है।

इतिहास की आत्मा वर्णन शैली होती है। इससे अभिप्राय केवल घटनाओं का अटूट प्रवाह ही नहीं, अपितु इतिहासकार की तटस्थ नीति भी है, पात्रों की वैयक्तिक, विचित्रता और इनके निजी गुण-दोष भी इसमें आते हैं। वर्ण्य-विषय की ऐतिहासिकता ही एकमात्र है जिस पर इतिहासकार की निपुणता परखी जाती है। अतः हम देखेंगे कि इस आदर्श का किस सीमा तक अनुगामी है।

कल्हण् सुस्सल से जयसिंह तक के राज्य का प्रत्यक्षदर्शी था। उसका पिता हर्ष का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
महामात्य था। परन्तु वह इस हर्ष को "तुरूष्क" नाम देने से कतराता नहीं। हर्ष के कुकृत्यों के प्रति कल्हण की असीम घृणा है और वह परवाह नहीं करता कि उसका पिता प्रधानमंत्री है। जयसिंह के दोषों को प्रकाश में लाने से भी वह नहीं डरता। क्योंकि सामयिक शासक उसे कड़ा दण्ड भी दे सकता था। दूसरी जयसिंह की पत्नी-भक्ति की भर्त्सना करते हुए कल्हण लिखता है-

स्थिर प्रसादे भूपाले निग्रहानुग्रहौ क्षणात्।
भुभूजामपि संवृत्ताबविच्छनी तदिच्छया।।
(राजतरंगिणी 1.56-57)

"महाराज के अटल प्रसाद के कारण, राजाओं को सजा देने या उन पर अनुग्रह करना उस (रड्डा देवी, उसकी पत्नी) की इच्छा से तुरन्त और बिना किसी अपवाद के पूरा किया जाता था।"इस प्रकार हम निस्संकोच् कह सकते हैं कि कल्हण की राजतरंगिणी प्रशस्ति पत्र नहीं। उसने यथासम्भव ऐतिहासिकता का दामन थामा है और पीतल को सोना कहने की धृष्टता या खुशामद नहीं की है। यही उसकी सबसे प्रमुख उपलब्धि है।

कल्हण् के अनुसार कश्मीर का पहला शासक गोनन्द प्रथम है, जो महाभारत के युधिष्ठिर का समकालीन है। कलियुग के 653 वें वर्ष को वह कश्मीर के इतिहास का पहला मील-पत्थर समझता है। यहां वह नीलमत पुराण का आधार साफ शब्दों में स्वीकार करता है। (राजतरंगिणी-1,16)

परन्तु गोनन्द तृतीय के बाद ही वह प्रत्येक राजा का शासनकाल देता है। इसके लिए वह एक तथ्यपूर्ण कारण यह देता है कि बावन राजाओं का वृतांत वह नहीं दे पाया है। क्योंकि इनके सम्बन्ध में कहीं कोई लिखित प्रमाण मौजूद न थे। फिर भी परम्परा और जनश्रृति के आधार पर वह इनमें से सत्रह का नाम लेता है परन्तु पैंतीस राजा मूल रूप से लुप्त ही माने गए हैं। इन सत्रह में वह सम्राट अशोक का नाम भी लेता है, जिसने कश्मीर को हस्तगत किया था। कल्हण् के वृत की पुष्टि शिलालेखों और चीनी पर्यटकों के यात्रा-ग्रन्थों से होती है। इसी महाराज अशोक ने "श्रीनगरी" (वर्तमान श्रीनगर की नींव रखी)-

स पानवत्या गेहानां लक्षर्लक्ष्मीसमुज्ज्वलैः।
गरीयसीं पुरीं श्रीमांश्चके श्रीनगरी नृपः।।
(राजतरंगिणी 1,186)

"उस तेजस्वी लोकाधिप ने बहुत ही प्रतिष्ठित श्रीनगरी का निर्माण किया, जिसमें छियानवें लाख घर धन-धान्य से सम्पन्न थे।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर पर कुशानों द्वारा अधिकार पा लेने के सम्बन्ध में कल्हण् ने विस्तार से वर्णन किया है। कनिष्क, हुष्क और जुष्क का नाम बड़े आदर से लेता है। कनिष्क ने बाराह क्षेत्र (बारहमूला) के समीप कनिष्कपुर जिसे आजकल'' कानिसपेर'' कहा जाता है, आबाद किया। इसी तरह हुष्क ने इसी कनिष्कपुर से जरा नीचे वितस्ता के तट पर हुष्कपुर नगर की नींव डाली। इसे आजकल 'बुष्कोर' नाम से पुकारा जाता है। जुष्क ने डल झील के किनारे नसीम बाग के निकट जुष्कपुरनगर बसाया यह आजकल ''जुकुर'' नाम से विख्यात है। इसी प्रसंग में कल्हण् बौद्ध दार्शनिक, नागार्जुन का भी वृत हमें देता है और कहता है कि वह ''षडर्हतवन'' में वास करता था। यह स्थान आजकल ''हार्वन'' नाम से प्रसिद्ध है। (राजतरंगिणी 1,310-322)

यहां की टेकड़ियों पर बौद्ध-बिहारों के अवशेष भी मिले हैं। देशीय महाराजाओं में कल्हण् प्रवरसेन द्वितीय, ललितादित्यमुक्तापीड़-2 का वर्णन किया है। अवन्तिवर्मन के शासनकाल को वस्तुतः कश्मीर की सुख समृद्धि का स्वर्ण युग कहा जाता है। उसने अवन्तिपुर नाम वाला नगर बसाया था।

उस नारी शासकों में जिन्होंने कश्मीर के इतिहास को एक स्वास्थ्य वर्धक मोड़ दिया, ''दिद्दा'' का नाम बड़े उत्साह से लिया जाता है। क्षेमगुप्त की महारानी होकर भी वास्तव में सारा राजकीय अधिकार उसके हाथों में था। वह लोहार (आज का लोरिन पुन्छ) के नरेश सिंह राज की दुहिता थी। अपने पति की मृत्यु के बाद उसने अपने पुत्र अभिमन्यु की संरक्षिका के रूप में राज्य किया। परन्तु स्वतन्त्र रूप में राज करने की लालसा इतनी बढ़ गई कि उसने अभिमन्यु के काल कवलित होने पर उसके बच्चों को जादू टोने से मरवा दिया और कश्मीर का राज्य संभाला। महारानी ''दिद्दा'' ने सुदृढ़ शासन स्वभाव की होते हुए भी उसने समूचे कश्मीर में शान्ति और सुचारू प्रबन्ध-व्यवस्था का सूत्रपात किया

(राजतरंगिणी 1/1,323)

कल्हण् ने कश्मीर के अन्तिम नरेश के रूप में जयसिंह का नाम लिया है। उसके राज्य का अधूरा ब्योरा देकर हीं राजतरंगिणी अकस्मात समाप्त हो जाती है। सम्भव है कल्हण् की मृत्यु हो गई हो जिस कारण उसने दिया कश्मीर के राजाओं का वृत यहीं रुक गया। कुल मिलाकर कल्हण् ने गोनन्द प्रथम से जयसिंह तक 109 राजाओं का वर्णन किया है, जिनका शासनकाल 1182 पूर्व मसीह से सन् 1149 ई. तक फैला हुआ है। उससे प्रयुक्त श्लोकों की संख्या 7126 है और ये आठ तरंगों में विभाजित हैं।

कल्हण् कश्मीर की धरती की पावनता के सम्बन्ध में उसका यह प्रवचन शतशः यर्थाथ है-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चक्रभूद्विजयेशादि केशवेशान भूषिते।

तिलांशोपि न यत्रास्ति पृथव्यास्तीर्थे बहिष्कृत:।।

''जहां मेरी जन्मभूमि में विष्णु और शिव चक्रभृत तथा इशान नामादि से विभूषित हैं, वहां धरती का एक तिलांश भी तीर्थों की पावनता से पृथक नहीं है।''

आज तक भी इस भूखण्ड पर हजारों मन्दिर, नाग तथा तीर्थ बिखरे पड़े हैं। यहां का प्रत्येक प्रस्तरखण्ड देवमहिमा से मण्डित है।

यद्यपि कश्मीर घाटी पर्वत मालाओं की गोद में आसीन है। फिर भी कल्हण ने इनमें बने ''द्वारों'' प्रवेश मार्गों का विशद वर्णन किया है। हर एक द्वार पर सेना एक ''द्वारपति'' के अधीन वहां पर चौकसी के लिए नीयत थी।

पीर पंचाल पर्वत श्रृंखला के पूर्व की तरफ बाणशाला का उल्लेख किया गया है। यह आजकल का बनिहाल है। यह कश्मीर घाटी का प्रवेशद्वार कहा जाता है। यहां पर स्पष्ट कारणों से उस समय एक सैनिक-गढ़ी निर्मित की गई थी। शुपियां के आगे हुरपोर में अवन्तिवर्मन के मन्त्री शूर ने एक नगरी बसाई थी, यह भी कश्मीर में प्रविष्ट होने का एक द्वार था। यहां भी सेना तैनात थी। क्षेमेन्द्र ने इसें ''नमक-पथ'' कहा है। क्योंकि इसी रास्ते में यहां नमक आयात किया जाता था। इसी तरह ''लोरिन'' और ''पुन्छ'' से आने-जाने के निमित ''कार कोट-द्रंग'' से काम लिया जाता था। यह रास्ता ''तोष मैदान'' से होकर जाता था। इसे ''मुगल -रोड़'' भी कहा जाता है। कल्हण ने ''द्रंग'' और '' द्वार'' का समानार्थक समझा है। सम्भवत: पुरानी कश्मीरी में ''द्रंग'' का यही अर्थ रहा हो। पर्वतों के दामन में बसे हुए गांवों को आज भी यहां द्रंग कहा जाता है।

कल्हण् द्वारा वर्णित उस समय के कश्मीर की सीमाओं का विवरण देना भी उचित होगा। घाटी के दक्षिण पूर्व में ''काष्टवाट'' आज का किशतवाड और भरदवाकाश (भ्रदवाह) स्थित थे। यहां स्थानीय हिन्दू राजाओं का राज था।

(राजतरंगिणी 1/111,501,509)

चम्पा (चंबा) के पश्चिम में, तथा भद्रवाह के दक्षिण में बल्लपुर नाम वाला नगर आबाद था। यह भी स्वतंत्र राजाओं के अधीन था। इसे आजकल बिलावर कहते हैं। कश्मीर के दक्षिण में ''दर्वाभिसार'' की पहाड़ी राजधानियां थीं। वास्तव में यह दर्व तथा अभिसार संयुक्त रूप है, जिसका उल्लेख महाभारत में किया गया। इस भूखण्ड का प्रधान नगर राजापुरी (राजौरी) थी। युद्ध नीति की दृष्टि से कश्मीर के राजाओं ने इसे अपने अधिकार-में लाने की हर समय कोशिश की है। राजपुरी के उत्तर-पश्चिम में लाहौर प्रदेश (लो़रिन) स़्थित है। इस समय यह पुंछ के अन्तर्गत रखा गया है, जबकि तब पुन्छ (पुरन्तोष) इसी में शामिल था। पुन्छ के उत्तर-पश्चिम में कश्मीर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की घाटी विद्यमान थी। वितस्ता इसके बीचोबीच बहती थी, जैसी अब भी है। पश्चिम से जरा दूर उर्श हजारा का राज्य था, जिस पर कश्मीरी नरेशों ने बार-बार चढ़ाई की है। यह ''कृष्णा गंगा'' घाटी कहलाती है।

(राजतरंगिणी11/217)

अब इस पर पाकिस्तान का अनधिकृत कब्जा है। इसी में प्राचीन कश्मीर का महातीर्थ ''शारदा'' विद्यमान था। उत्तर की ओर भाटिया प्रदेश था, जो स्वतन्त्र था। संक्षेप में कश्मीर के राजाओं के अधीन भू-भाग का व्यौरा इसी प्रकार का है। यही प्राचीन कश्मीर का भौगोलिक राजनीतिक स्थान वर्णन है।

सर्व प्रथम कश्मीरियों की प्रमुख विशेषता उनकी धार्मिक सहिष्णुता है। राजतरंगिणी में स्थान स्थान पर इस जीवन विश्वास के ज्वलन्त प्रमाण मिलते हैं। बौद्ध बिहार, शैव और वैष्णव मन्दिरों के साथ साथ निर्मित किए गए। परिहासपुर में विजेता योद्धा नरेश ललितादित्य ने भगवान बुद्ध की पावन स्मृति में एक गगनचुम्बी स्तम्भ का निर्माण करवाया, जबकि वह स्वयं वैष्णव था। महाराज अवन्तिवर्मन ने विष्णु-मन्दिरों की और उसके मन्त्री ने शिव मन्दिरों की स्थापना की। प्राचीन कश्मीर में किसी एक भी साम्प्रदायिक दंगे का वर्णन कल्हण् ने नहीं किया है।

कल्हण् की अपने देश-वासयों के प्रति की गई श्लाघा आज भी उतनी ही सत्य है, जितनी उस समय थी-

विजीयते पुण्यबलेबलेयन्तु न शारिस्त्रणाम्।
परलोकोत्ततो भीर्तियस्मिन्निवसतां परम्॥

''अर्थात् इस बस्ती को लोग पुण्य बल से, न कि शस्त्रों के बल से जीते ज़ा सकते हैं। इसीलिए (इहलोक की अपेक्षा) परलोक का बड़ा डर है।''

परलोक के इसी भय ने उनके व्यक्तित्व में सदाचार, शान्ति प्रियता, दानशीलता तथा भाग्यवाद का मधुर मिश्रण पैदा किया है। इस प्रांजल गुण की महक अभी भी बासी नहीं हो पाई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काजीगुंड मार्किट में ड्राईवर की पिटाई, ढाबे के मालिक की अंधी लूट व सीनाजोरी, ढाबे के मालिक पर पुलिस कारवाई और जेहलम नदी के उद्‌गम स्थल वेरी नाग को जाकर देखना

ड्राईवर अशोक दीवाना ने हमारे बाद चाय पीनी थी। ड्राईवर ने गाड़ी काजीगुंड की मार्किट में खड़ी की थी। इसी बात पर सुरक्षा कर्मियों ने उसे थप्पड़ों और बन्दूक की बट से खूब मारा-पीटा था। अशोक दीवाना ने पिटाई करवा कर गाड़ी मार्किट से दूर जाकर सूनी सी ढलान पर खड़ी कर दी थी। यहीं काजीगुंड की मार्किट में कुछ दिन पहले तीर्थ यात्रियों की गाड़ियों पर उग्रवादियों ने हमला किया था। काफी तीर्थयात्री व दूसरे लोग मारे गए थे और जख्मी हुए थे। इन दिनों सुरक्षा कर्मी काजीगुंड मार्किट में कोई भी गाड़ी खड़ी नहीं होने देते थे। हम अपनी गाड़ी और ड्राईवर न पाकर काफी परेशान व आश्चर्यचकित थे। तभी एक फल-विक्रेता दुकानदार ने सारा किस्सा बयान किया था। सुन कर हमें बहुत दुःख हुआ था। ड्राईवर को खाहमख्वाह पीटने की बजाए उसे जवानी कहा जा सकता था कि यहां मार्किट में गाड़ी खड़ी न करके और कहीं जा कर लगाओ। परन्तु अब कुछ हो नहीं सकता था। जो होना था-हो चुका था। ड्राईवर को जब हमने गाड़ी में देखा-तो वह रो रहा था। उस से हम सब ने हमदर्दी जताई थी।

मार्किट में अमरनाथ यात्रियों की बहुत भीड़ थी। सभी लोग दुकानों से बादाम, अखरोट, सेब और लकड़ी के सामान के साथ गर्म वस्त्र भी खरीद रहे थे। अब गुरदासपुरी टोले ने बादाम-अखरोट-सेब खरीदने का काम शुरू किया था। उन्हें जिस दुकान पर बादाम-अखरोट बगैरा पसन्द आता, मोल रास न आता था। एक दुकान से दूसरी दुकान पर माल व मोल को खूब आंका और जांचा जाने लगा था। मार्किट की पहली दुकान से शुरू होकर अब यह टोला काजीगुंड की ढलान पर फलों और सूखे मेवों की दुकान पर सरकते हुए आ पहुंचे थे। यहीं पर उन्होंने कम-से-कम अढाई घंटे बर्बाद कर दिए थे। मैं और भतीजा अशोक कुमार बोर हो कर खीज रहे थे। अशोक कुमार कहने लगा-''चाचा जी! इस गुरदासपुरी टोले से कोई अठन्नी नहीं कमा सकता। गाडी का ड्राइवर बेचारा नाहक पीटा गया। सुरक्षा कर्मियों को डंडा परेड इस गुरदासपुरी टोले की करनी चाहिए थी।'' इतने में नरेश कुमार हमारे समीप आकर खड़ा हो गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
थी। अशोक कुमार दोबारा कहने लगा–''नरेश कुमार जी! काजीगुंड की सारी मार्किट इन्होंने छान मारी है। इन का किसी दुकानदार से मोल नहीं बना। सारे अड्डे के दुकानदारों को चाहिए कि इन्हें जबरदस्ती पकड़ का गाडी़ में बिठा कर बाअदब दो तीन मील दूर तक जम्मू की ओर रुखसत कर आवें।''हम तीनों इस बात पर खूब हंसने लगे थे।

पंजाबी भाषा में नरेश कुमार कहने लगा–''शर्मा जी सच जानिओ! मैंनू तां राकेश कुमार नूं अपना सांढू कैंहदे बड़ी शर्म आऊंदी ए। पैसे–पैसे ते झूठ बोलना, कमीनियां गल्लां–हरकतां मैंनू पसन्द नईं। जे मैंनूं पता हुंदा कि मेरा इह बड्डा सांढू इस तरहां दा ए तां मैं उस घर विच्च विआह नईं सी करना।'' कह कर वह उदास हो गया था।

इतने में पंजाबी भाषा में ही अशोक कुमार कहने लगा–''भा जी मेरा तां इह मासी दी पुत्त भरा ए। सच पुच्छो तां इसनू सक्की मासी दा पुत्त–भरा कैहन नूं दिल़ नईं करदा। पर हुण असीं कर की सकदे आं।''

नरेश कुमार बोला–''किथ्थे एहनां दा बाप इक आदर्श अध्यापक, विद्वान, ज्योतिषी ते नेक इन्सान सी। ते कित्थे इह कनक विच्च कोआ बन के जन्म पए ने। रब्ब दी सौं–यकीन नईं हुंदा कि एह ओस बाप की औलाद ने।''

तभी राकेश कुमार अपनी तोंद पर हाथ फेरता हुआ हमारे तीनों के समीप आकर खड़ा हो गया था। बाकी टोला उसके पीछे आ रहा था। राकेश कुमार बोला–''शर्मा जी चलें! माल पसन्द नहीं आया। साले हमें ही लूटना चाहते थे। जैसे इन्हें लूटने को सुबह का गाहक मिला ही न हो।''

राकेश कुमार की बात सुनकर मैं मंद–मंद मुस्कुराता रहा। अभी कुछ कहना चाहता था कि भतीजा अशोक कुमार बोला पड़ा–''भा जी काजीगुंड अड्डे पर कोई दुकान रह तो नहीं गई। भुलेखे से कोई छूट गई हो तो उस दुकान से भी पता कर लो।'' अशोक कुमार का व्यंग्य सुन कर वह ही–हीं –ही –ही करके हंसने लगा था। काजीगुंड मार्किट से गुरदासपुरी नागरिकों ने कोई सामान न खरीदा था। अड्डे के दुकानदार हम सब को गुस्से से, खीज से देख रहे थे। बतियाते हुए हम गाड़ी में आकर बैठ गए थे। ड्राईवर बेचारा भूखा था। उसे पिटाई करवा कर भूख शांत करनी पड़ थी।

काजीगुंड से कुछ मील आने पर इलाके का बढ़िया सा स्थान आया था, वहीं से गुरदासपुरी टोले ने सेब और बादाम खरीदे थे। भतीजा अशोक कुमार धीरे से बोला–''चाचा जी! यह दुकानदार बड़ी किस्मत वाले हैं जिन्हें गुरदासपुरियों के पैसे नसीब हुए हैं।'' सुन कर मैं ठठा कर हंसने लगा था। अशोक कुमार मेरे साथ मुस्कुराने में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
साथ दे रहा था। सभी मेरी ओर देख रहे थे। गुरदासपुर वाले गाड़ी में सेब की पेटियां और बादाम रखने में मशरूफ थे। किसी ने मेरे हंसने का कारण न पूछा था। ड्राईवर ने गाड़ी चला दी थी। समस्त साथी शांत भाव से बैठे थे। कुछ दूरी अभी तय हुई थी कि लव कुमार बोला-'' भा जी मैंनू तां कुज खुआ -पिआ दिओ। भुख नाल जान निकलदी पई ऐ।''

इस समय सब को भूख लग आई थी। राकेश कुमार ड्राईवर अशोक दीवाना के पास बैठा था। ज्यों ही एक ढाबा आया, राकेश कुमार ने गाड़ी खड़ी करवा दी ली थी। ढाबे के अन्दर बड़ी तरतीव से मेज-कुर्सियां लगी थीं। समस्त साथी आकर कुर्सियों पर बैठ गए थे। ड्राईवर अशोक दीवाना भी हमारे साथ भोजन को बैठा था। नरेश कुमार ने ढाबे के मालिक से पूछा था कि ढाबे में क्या चीज खास है? उसने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया था-''परौंठे, दही और मक्खन।'' यह ढाबा कश्मीरी मुसलमान का था।

नरेश कुमार ने पुनः पूछा-'' एक परौंठे के साथ दही लेने का क्या चार्ज करते हो?

ढाबे का मालिक बोला-''एक परौंठे के साथ दही और मक्खन की टिक्की देने पर तीस रुपये के हिसाब से चार्ज करते है।''

''अगर हम मक्खन की टिक्की न लें तो परौठा और दही लेने पर क्या चार्ज करोंगे?''

'' आप मक्खन टिक्की साथ लो या न लो हम एक परौंठा व दही का तीस रुपया चार्ज करते हैं।'' ढाबे के मालिक ने सीधी सी बात करके नरेश कुमार को समझा दिया था। नरेश कुमार ने दस परौंठे के साथ दही और मक्खन टिक्की देने का आर्डर दे दिया था।

समस्त साथियों ने तीन-तीन, चार-चार परांठे के साथ दही और मक्खन टिक्कियां ली थीं। जब बात ही फलैट रेट की थी, फिर माखन खाकर यात्रा की हुई गर्मी-खुश्की और थकावट दूर क्यों न करते। बाद में एक-एक कम चाय का पिया था। ढाबे के एक नौकर ने खाने का बिल सौंफ-मिश्री की प्लेट में रख कर राकेश कुमार के सामने रखा था। इस बिल में मक्खन टिक्कियों के पांच सौ रूपये अलग से लगाए गए थे। नरेश कुमार ने बिल लेकर ढाबे के मालिक के पास जाकर उससे मक्खन टिक्कियों के अलग पैसे लगाने के बारे में पूछा था।

ढाबे के मालिक बड़े अहं में तुनक कर बोला था-''यहां तो ऐसे ही चलेगा। जो चाहेंगे चार्ज करेंगे। यह पांच सौ तो हमने चार्ज करना ही है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अगर हम यह पांच सौ रुपये जो आपने कहकर, मानकर, सब कुछ तह करके फालतू लगाए है' हम न चुकता करें तो।" नरेश कुमार ने बड़े आराम से ढाबे के मालिक रहमतुल्ला को कहा था।

रहमत तुल्ला लाल-लाल आंखे दिखाता हुआ, कमीज के बाजू ऊपर उठाता हुआ बदमाशी के अन्दाज में बोला-"हमें रकम बसूल करनी आती है।"

नरेश कुमार ने अपने सांढू राकेश कुमार को आंख मारकर, बिल के मुताबिक पैसे चुकता करने को कहा था।

ढाबे के साथ लगती दो-तीन दुकानें छोड़ कर पी.सी.ओ था। नरेश कुमार की डायरी में जम्मू-कश्मीर के डी.आई.जी का फोन नंबर था। वह गुरदासपुर के एस.एस.पी. का सीनियर वायरलैस ओप्रेटर था। इस इलाके के डी.आई.जी की बात अपने जिले गुरदासपुर के एस.एस.पी. से बीसों बार करवाई थी। नरेश कुमार ने सीधी फोन डी.आई.जी से मिला कर पहले अपना परिचय दिया था। डी.आई.जी नरेश कुमार की आवाज को पहचानता था। नरेश कुमार से उसने बड़े प्यार से व अपनेपन से बात सुनी थी। साथ ही नरेश कुमार को आश्वस्त किया था-"आप लोगों से सीना-जोरी नहीं होने दी जाएगी। दस-पन्द्रह मिंट तक अगले एक्शन का इन्तजार करो। ढाबे वालों से उलझना नहीं है। इस समय आप हमारे मेहमान हैं...।"

नरेश कुमार कुछ देर तक पी.सी.ओ में बैठा रहा था। डी.आई.जी ने इस ढाबे के समीप पड़ने वाली पुलिस चौकी के इंचार्ज को सारी बात समझा कर तुरन्त एक्शन लेने को कहा था। साथ ही वायरलैस पर नरेश कुमार शर्मा नाम के एस.एस.पी गुरदासपुर के ओप्रेटर से बात करवाने की ताकीद भी की थी।

दस मिन्ट से भी कम समय में एक जीप में सवार आठ-दस हथियारबंद सिपाहियों नें ढाबे को चारों तरफ से घेर लिया था। एस.एच.ओ ने ढाबे के अन्दर जाते ही पूछा था-"यहां अमरनाथ यात्रा पर पंजाब के गुरदासपुर जिला के एस.एस.पी के ओप्रेटर नरेश कुमार शर्मा जी कौन हैं?" हम सब पुलिस इंस्पैक्टर को देख कर भयभीत हो गए थे। सब मुंह बाये धक-धक करते हृदय से खड़े हो गए थे। नरेश कुमार ने पुलिस को ढाबे पर घेरा डालते देख लिया था। ढाबे के अन्दर से जब कोई उत्तर न मिला तो वह पीछे बाहर की ओर मुड़े-नरेश कुमार ने एस.एच.ओ को जय हिन्द कह कर अपना परिचय दिया था। फिर सारी खाने पीने की बात कह सुनाई थी। ढाबे के मालिक रहमतुल्ला से परांठे, दही, मक्खन टिक्की की बात पूछी, तो उसने भी अपनी जुबानी नरेश कुमार की बात को दुरुस्त कहा था। नरेश कुमार ने खाने का बिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एस.एच.ओ के हाथ में थमाते हुए बताया-" जब एक परांठा, दही और मक्खन की टिक्की का चार्ज तीस रुपये है। या परांठा-दही लो,तब भी रेट चार्ज तीस ही होगा। फिर माखन टिक्कियों के अलग से पांच सौ रुपये क्यों और किस हिसाब से इसने धमकाकर बसूल किए?"

" क्यों वे! एक परांठे, दही और मक्खन के तीस रुपये के हिसाब से ज्यादा बसूल करने वाला तू होता कौन है? यहां काऊंटर से नीचे आकर बात सुनो।"

लाल आंखे दिखाता, गुर्राता सलीम अख्तर ने रहमतुल्ला से पूछा।

एस.एच.ओ के तेवर देखकर रहमतुल्ला काऊंटर से जैसे ही उतरा, तीन चार थप्पड़ सलीम अख्तर ने उसकी गाल पर रसीद कर दिए थे।

"नहीं जी माफी दे दो। गलती हो गई। आईंदा ऐसा नहीं होगा।"थर-थर कांपता हुआ ढाबे का मालिक शेर से मेमना बना तुतलाता हुआ कह रहा था।

"बदमाश बनते हो। यात्रियों से सीनाजोरी करते हो। इन्हीं लोगों से कमाते हो और इन्हें ही धमकाते हो।" इतना कह कर एस.एच.ओ ने एक और करारा सा थप्पड़ ढाबे के मालिक की गाल पर रसीद किया था।

"चलो ढाबा बंद करो। सब जो यहां काम करते हैं-चलो पुलिस चौकी। कैसे गुंडे और हरामियों को हम बच्चू बनाते हैं, वहीं चल कर बताएंगे।"

"जी पैसे वापिस ले लो। हम देने को तैयार है।"

"पहले तुमने बसूल क्यों किए? तुम कातिल-बदमाश-गुंडे बनते थे। हमें पैसे बसूल करने आते हैं। कहा था न तूने! क्यों वे बोलता नहीं अब? बोलती क्यों बंद हो गई है?

नीची नजर किए रहमतुल्ला मन-ही-मन पश्चताप् कर रहा था कि क्यों नाहक इतना जुल्म करके पैसे बसूल किए। यह धंधा तो वह कई वर्षों से करता आ रहा था। किंतु सेर को सवा से कभी-न-कभी पाला पड़ ही जाता है।

"लाओ दो इनके पैसे!" कड़क कर एस.एच.ओ ने हुक्म किया था।

रहमतुल्ला फुर्ती से काऊंटर पर जाकर पांच सौ का नोट ले आया था।

"जनाब नरेश कुमार शर्मा जी-ले लो अपने पांच सौ रुपये।" कहा एस.एच.ओ ने।

" नही जनाब! पैसों की बात नहीं। बात तो उसूल की है। यह लोग बेउसूल चलते हैं। तभी मेरे मन में आया कि जरा इन्हें ला एंड आर्डर का थोड़ा सा करिश्मा तो दिखा दें। जनाब पैसे हमने नहीं लेने अब। इन्हें नसीहत मिलनी चाहिए थी, सो वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मिल गई है।'' नरेश कुमार ने पांच सौ रुपये ढाबे के मालिक ने वापिस न लिए थे। डी.आई.जी का केस था। एस.एच.ओ ने भी अपने पूरे नम्बर बनाने थे। ढाबे के मालिक को जीप में बिठा दिया था। वह उसे चौकी में ले जा कर माफी मांगने व आगे से ग्राहकों का इस तरह लूटने और धमकाने का काम करने को लिखित रूप में आश्वासन लेना चाहते थे। रहमतुल्ला ने सलीम अख्तर की बड़ी मिन्नतें-तरले किए थे कि उसे पुलिस चौकी न ले जाया जाए। परन्तु एस.एच.ओ न माना था।

एस.एच.ओ सलीम अख्तर ने नरेश कुमार शर्मा की डी.आई.जी से वायरलैस पर बातचीत करवाई थी। नरेश कुमार ने अब अपने साथ हुए इन्साफ पर संतोष व्यक्त करते हुए धन्यवाद किया था. हमें अब नरेश कुमार ने गाड़ी में बैठने का आदेश दिया था। गाड़ी में बैठने से पूर्व एस.एच.ओ ने हम सब से गर्मजोशी से हाथ मिलाया था। नरेश कुमार ने एस.एच.ओ से गले मिलकर थैंक्स किया व गर्म जोशी से हाथ मिलाया था। हमारी गाड़ी चल पड़ी थी। परन्तु पुलिस रहमतुल्ला को गाड़ी में बिठाए अभी वहीं ढाबे पर खड़ी थी। रहमतुल्ला पर पुलिस अब कतई रहम न करने वाली थी। पुलिस-चौकी में ले जाकर उससे क्या बर्ताव किया,यह तो नीली छतरी वाला ही जानता है।

मैं सोच रहा था-''यह नरेश कुमार शर्मा नाम का ए.एस.आई जो एस.एस.पी गुरदासपुर का सीनियर वायरलैस ओप्रेटर है- किसी बहुत अच्छे खानदान का नौजवान है। इसके माता-पिता ने इसे कितने अच्छे विचार व संस्कार दिए हैं। कितने दिनों से यह हमारे साथ यात्रा कर रहा है। इसकी वाणी व व्यवहार से पुलिसिया रवैया और गंदी-शोहदी बातें तथा बर्ताव नहीं झलकता। अगर पंजाब का हर पुलिस कर्मचारी नरेश कुमार जैसा बन जाए तो पंजाब से-नशों,चोरियों,रिश्वत खोरी व दूसरे अपराध समूल समाप्त हो जाएं। इसके व्यवहार से लगता ही नहीं-यह पंजाब पुलिस विभाग का जिम्मेदारी के पद पर काम करने वाला सभ्य,न्यायप्रिय, साहसी व धार्मिक वृति रखने वाला एक आदर्श कर्मचारी है।''

इस समय सभी नरेश कुमार से ढाबे के मालिक के सम्बन्ध मे बातें कर रहे थे। मुझे सन् 1998 का दिसम्बर माह का वह वाकया स्मरण हो आया, जब मैं रावी नदी से एक ट्रैक्टर के ट्राले पर अपने गांव बहादुरपुर की जमीन से शीशम व दरेक की लकड़ी लाद कर अड्डा सुन्दर चक्क वाले मकान के लिए ले जा रहा था। रात्रि साढ़े आठ का वक्त हो गया था। मैं व मेरा भानजा बिक्रम सिंह, साथ में दो नौकर पानी से ट्रैक्टर निकाल कर दूसरे किनारे पर पहुंचे तो वहां पुलिस चौकी पर तैनात हवलदार व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एस.एच.ओ ने हमें रोक लिया था। एस.एच.ओ ने टार्च की लौ करके ट्राले पर लकड़ी लदी देखी तो मुझे पूछा–''किथ्थों आए ओजी?''

''साब जी मैं सरकारी सीनियर सेकेडरी स्कूल कीड़ी खुर्द बिखे बतौर मास्टर हां ते अपने सुन्दरचक्क मकान लई, पिंड बहादुर पुर तों अपनी जमीन विच्चों लक्कड़ कटा के लिजा रहा हां।''

''तुहानू पता ई ऐ मास्टर जी, पई ऐस इलाके वास्ते चो एक्ट लागू हुंदा ए। लकड़ी कट्टन तों पैहलों जंगलात महकमे तों परमीशन लैनी पैंदी ए। कोई परमीशन वाला कागज पत्तर पल्ले है बै।'' उसने मुझे कानून समझाना शुरू किया था।

मैंने उसे सहज स्वभावाविक उत्तर दिया–''साब जी एह लक्कड़ असीं किसे तों खरीदी नईं जी। अपनी जमीन दी लक्कड़ ते अपने घर वास्ते बरतनी ए। फेर परमीशन दी लोड ई की ए।''

''नई मास्टर जी! भोलियां गल्लां न करो। पढ़े लिखे ओ। कानून तां कानून है। तुसीं सरकारी स्कूल पढ़ाऊंदे ओ, तुहाड़े कोल कोई अपना पहचान पत्र है।'' मुझे कोई इस बात का इल्म न था कि इन जल्लादों के पंजे में फंस जाउंगा।

''साब जी मैं तां अपना पैन कार्ड लै के नई आइया।'' मैंने उत्तर दिया।

''चलो, कथलौर पिंड तो कोई वाकिफकार आदमी लै आओ जो तुहानूं चंगी तरहां जानदा होवे। मैंनू की पता ऐ कि तुसीं मास्टर बी है ओ जां ऐवीं सानू उल्लू बनाऊंण लई सरकारी मास्टर कई जांदेओ।''

एस.एच.ओ को हवलदार ने टैंट के अन्दर भेज दिया था। चायपानी की डिमांड करने लगा था। सोचा–'यदि मैं छौंडियों से मैथ मास्टर राजेन्द्र सैनी को ले भी आया तो फिर भी यह खूंसखोरी बिना नही मानेंगे। रात्रि के नौ बजे चुके थे। दिसम्बर महीना था वह इस समय आराम कर रहा होगा। अपने अध्यापक साथी को क्यों परेशान करूं। मैंने जेब से सौ–सौ के दो नोट हवलदार के हाथ में थमा दिए थे। टार्च की लौ में उसने देखा तो बोला–''एह तां घट्ट ने। असीं चौकी बिच्च नौ जने हां। पंजाह–पंजाह तां हिस्से आ जान।'

मैंने उसे कहा कि मेरे पास यहीं है। हवलदार ने शिमला में जाखू मन्दिर के राह में बन्दरों की तरह मेरी कमीज–पैंट की तलाशी लेनी शुरू कर दी थी। पैंट की पिछली जेब में मैंने रास्ते में चाय–पानी के लिए पचास रूपये रखे थे, हवलदार ने जेब से निकाल कर मुझे दिखाते हुए नसीहत देते हुए कहा–''मास्टर जी तुसीं झूठ बोल दे सी। है वेखो पंजाह दा नोट। हुण तुसीं जाओ। ठंड़ पैरों–पैर बद्ध रेई ए।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भानजे बिक्रम सिंह ने ट्रैक्टर स्टार्ट करके चला दिया था। हवलदार रिश्वत व सीनाजोरी से अढ़ाई सौ रूपये प्राप्त होने पर भी अन्दर से प्रसन्न नहीं था। अब कानून के सारे कागज तैयार हो गए थे। चो एक्ट कुएं में चला गया था।

मेरे सामने नरेश कुमार बैठा था। बोला–शर्मा जी! क्या आप को वैरी नाग जाने वाले रास्ते का पता है?''

''नहीं तो। किसी से पूछ लो।''

सड़क के किनारे एक जगह दो तीन दुकानें थी। वहीं से वैरी नाग का रास्ता पूछा था। उसने हमें समझाया था कि थोड़ा सा आगे जा कर पूर्व दिशा की ओर जाने वाले रास्ते की जानकारी दी थी। हम वैरी नाग वाले रास्ते पर हो लिए थे। यह रास्ता गांवों के बीचोबीच वैरी नाग को जाता था। लगभग बीस मिंट के लघु अन्तराल में हम वैरी नाग आ पहुंचे थे।

मैं यहां अपने परिवार संग सन् 1985–86 में आया था। अब यहां हर चीज की दुकानें खुल गईं थीं। पूरी मार्किट बन गई थी. जिसमें पर्यटकों की अच्छी–खासी भीड़ थी। समस्त साथी हुमहुमा कर उमंग व उत्सुक्ता से वैरी नाग चश्मे पर पहुंच गए थे। अष्टकोण चश्मा, अथाह नीलजल से परिपूर्ण था। चारों ओर से काफी ऊंचाई तक पक्की इंटों से इसे घेरा गया था। इस चश्मे के पीछे ऊंचा–लंबा पर्वत देवदार वृक्षों को अपने भीमकाय देह पर धारण किए सौन्दर्य से परिपूर्ण किसी ब्रहमनिष्ठ संन्यासी सा मौनावस्था में विचारमग्न खड़ा था। चश्मे की पक्की दीवार के साथ लोगों ने शिव लिंग रूप में पत्थर रखे हुए थे। वेरी नाग में स्थित चश्मा जेहलम नदी का उद्‌गम स्थान माना जाता है। इस स्थान का निर्माण मुगल बादशाह जहांगीर के शासनकाल में शुरू हुआ और शाहजहां के शासनकाल में पूरा हुआ था। यहां चश्मे की पश्चिमी दीवार के साथ मुगलकाल के बने पंडाल और गुसलखानों के अवशेष देखे जा सकते हैं।

वेरी नाग चश्मे की पीठ दक्षिण दिशा की ओर है और इस चश्मे का पानी एक सीमेंट से बने छोटी सी नहर से बाहर उत्तर दिशा की ओर बहता है। चश्मे की नहर के मुख्य निकास स्थान पर, नहर के दोनों ओर पूर्व पश्चिमी किनारे पर एक–एक वृद्ध–भारी–गगनचुम्बी चिनार के पेड़ खड़े हैं। लगता है–इन बूढ़े चिनार के वृक्षों ने वेरी नाग के स्थान पर मुगलकाल में यहां चश्मे पर काम होते देखा है। यह पेड़ मुगलकालीन निर्माण कार्य के साक्षी हैं। नहर के दोनों ओर कई बीघे पार्क है जिसमें नाना प्रकार के फूलों की क्यारियां बनाई गई हैं। और फूल हवा के झोंकों में झूम–झूम कर सैलानियों का अभिनन्दन अपनी मौन–मोहक–सौन्दर्य से करते हैं। यहां के पार्क में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और भी कई चिनार के वृक्ष हैं जो पर्यटकों को गर्मी से राहत देने के लिए लालायित रहते हैं। वेरी नाग चश्मे की नहर के दोनों ओर बिजली के लैंपपोस्ट लगे हैं, जो काफी पुरानी किस्म के हैं और अंग्रेजों के समय के लगते हैं। नहर का पानी उत्तर दिशा की काफी ऊचाई से गिर कर चिताकर्षक जल प्रपात बनाता है। नहर के पूर्व की ओर जलाशय बना कर मछली पालन का काम सरकार ने आरम्भ किया है। यहां छोटे-छोटे सात जलाशय बनाए गए हैं-जिनमें मछली पालन किया जाता है। सरकारी कर्मचारी इस काम को दिन-रात देखते हैं।

चश्मे के मुख्य जल निकास के पूर्वी किनारे पर छोटा सा शिवालय बनाया गया है, जहां आने वाले सैलानी श्रद्धा-भक्ति से पूजा-अर्चना करते हैं।

आधे घंटे में समस्त साथियों ने इस स्थान को देख कर आनन्द उठा लिया था। राकेश कुमार मे सभी को अब गाड़ी में बैठने का आदेश सुना दिया था। सभी साथी गाड़ी में प्रसन्नता से बैठ गए थे। अब ड्राईवर अशोक दीवाना जवाहर टॅनल के समीप जाकर मिलने वाली रोड़ पर चल पड़ा था। ड्राईवर ने भगवान अमरनाथ की महिमा की कैसेट लगा दी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाकिस्तान के ओप्रेरशन टोपाक के अन्तर्गत कश्मीर में उग्रवाद का नंगा नाच, लोगों द्वारा अपनी मातृभूमि से विस्थापित होना और यात्री मित्रों से विदा लेना

बेरी नाग से लिंक रोड़ सीधी आकर जवाहर टनल के पास राजमार्ग पर मिल गई थी। बेरी नाग से मैं मौनावस्था में हरित खेतों और घाटी की सुन्दरता को आंखों के माध्यम से पी रहा था। प्रसन्न हो रहा था। दूर-दूर तक फैली कश्मीर घाटी को निहार कर, विहवल् हुआ घाटी को अलविदा कह रहा था। पुनः जीवन में इस सुरम्य घाटी के दर्शन होंगे या नहीं, यह तो भगवान अमरनाथ जानते हैं। गाड़ी ज्यों ही सुरंग में घुसी, मेरा कश्मीर घाटी से कायिक सम्बन्ध टूट गया था। समस्त साथी मौन थे। मेरे मानस पटल पर श्रीनगर के पुराने दिन चलचित्र से चलने लगे थे। वक्त ने करवट बदली थी। उग्रवाद का दौर आरम्भ हुआ था। पाकिस्तान देश की हुक्मरान प्रधानमंत्री मोहतरमा बेनजीर भट्टो ने उग्रवादियों को ओप्रेशन टोपाक के अन्तर्गत कश्मीर घाटी में 'गोली चलाओ-गोली चलाओ' कह कर उकसाया था। धन, समर्थन व राजनैतिक सरंक्षण उग्रवादियों को पाकिस्तान से मिला था। उग्रवादी खून-खाक का गंदा खेल खेलने लगे थे। कश्मीर घाटी के हर गांव, कस्बे, नगर, मुहल्ले और गली-गली में ताबड़तोड़ गोलियों की बौछार होने लगी थी। बच्चे, बूढ़े और नौ जवानों की लाशों के ढेर कब्रिस्तानों और श्मशानों में पहुंचने लगे थे। प्रत्येक चे़हरे पर घनी उदासी के बादल और आंखों में आंसुओं की धार बहने लगी थी। यहां कभी हंसी के फव्वारे फूटा करते थे, वहां अब मातम मनाया जाने लगा था। प्रत्येक नर-नारी का हृदय आहत और लहुलुहान था। लोग घर, खेत, दुकान और अपने कारोबार छोड़कर कश्मीर घाटी को छोड़ने पर विवश किए जा रहे थे। लोग अपने बाल-परिवार को लेकर, जान बचा कर भागने लगे थे। जिन लोगों के घर खाली होते-शरारती लोग उन्हें जला कर राख कर देते थे। गुंडे वहां अपना कब्जा जमा लेते थे। वाह रे वक्त! तेरे मिजाज को कौन समझे! किसी शायर ने कितने बढ़िया अल्फाज में शे'र कहा है-

मिजाजे वक्त बड़ा काफिर, बदलता रंग कई हर रोज।
किसी के होंठ मुस्काए , किसी की आंख रोई है।

कश्मीर निवासी-स्वयं सैलानियों के रूप में ठोकरें खाने को बाध्य हो गए थे। सन् 1994 में डॉ.मोहन लाल भट्ट अपने परिवार के साथ फरवरी माह में जम्मू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में-वन तालाब नामक इलाके में आकर ठहर गए थे। जून का महीना था। मुझे धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा ने डॉ. मोहन लाल भट्ट के परिवार की कुशल-क्षेम पूछने को भेजा था। जहां डॉ.परिवार ठहरा हुआ था. मैं वहां पहुंचा तो क्या देखता हूं-'पथरीली जमीन तांबे की तरह लाल हो गई थी। बिजली गुल थी। पूरा परिवार पसीने से तर-व-तर था। उनके गोल-मटोल -गुलाबी चेहरे स्याह हो गए थे। वह हसीन सपने जो उन्होंने कभी देखे थे, संजोए थे-कहीं खो गए थे। खाक में मिल गए थे। उनकी ऐसी दुरावस्था देख कर मुझे गहरा आघात लगा था।

श्रीनगर में यहां कभी घर में मेहमानों की भीड़ जुटी रहती थी। सारा दिन चहल-पहल रहती थी। सारा दिन डॉ.मौसा के घर गैसी -चूल्हे पर तेल की कड़ाही चढ़ी रहती थी। जब भी कोई चीज़ बनाने में तेल की आवश्यकता होती, पीपे को उठा कर तेल डाला जाता। घर में तरह-तरह के व्यंजन पकते थे। घर पर पूरी रजबाड़ाशाही थी। किंतु अब! किलो तेल लाया जाता था। भारी कंजूसी में उसका सब्जी में इस्तेमाल होता था।

मौसा डॉ.मोहन लाल मेरे समीप बैठ कर चाय पी रहे थे। वह हर बात हंस कर करते थे। मैंने उन्हें मायूस कभी न देखा था। उनकी हंसोज प्रकृति बड़ी पसन्द थी। भगवान का भजन-ध्यान किया थी। श्री नगर के समीप ही किसी गांव में उनकी अच्छी-खासी प्रैक्टिस थी। उनका बेटा-दीपक (गाछा) ने अलग से क्लीनिक खोल रखा था। तीन-चार स्पैस्टिलिस्ट डॉ.अपने अपने निर्धारित समय पर आकर वहां मरीजों को देखते थे। बाप-बेटा रात को 5-6 हजार की कमाई करके लाते थे। परन्तु अब उनका कारोबार चौपट हो गया था। कश्मीर घाटी से पलायन करके डाक्टरी पेशे वाले जगह जगह आ बसे थे। जम्मू के गांवों में आर. एम.पी. पहले से ही बहुत थे। वैसे भी गांवों में मरीजों की गिनती होती ही कितनी है। चाय पी चुकने के पश्चात् मैं और डॉ. मौसा उनकी दुकान पर आ बैठे थे। दुकान की हालत देख कर मैंने मौसा जी से पूछा-"मौसा जी दिन को दुकान पर कितनी सेल हो जाती है?"

झिझकते हुए वह बोले-"दो से पाच रुपये।" सुन कर मेरे अतीव कोमल हृदय पर बज्र सा प्रहार हुआ था। मेरी आंखों से टप-टप करके आंसू निकलने लगे थे। डॉ.मौसा मुझे सान्त्वना देते हुए बोले-"बेटा हमारी ऐसी नाजुक हालत पर रोओ मत। जो हमारे नसीब में होगा, अवश्य मिलेगा।" कह कर उन्होंने मुझे छाती से लगा लिया था।

मैं जब भी जम्मू अपने ससुराल आता, डॉ.मौसा व मौसी सास श्रीमती भट्ट से अवश्य मिलता। जब यह लोग श्रीनगर में थे तो मैं अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा जी को चिढ़ाया करता। मैं कहता-" तुम्हारी डॉ.वाली रूपा मौसी तो हाथी का बच्चा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है।'' श्रीमती रूपा का गोल-मटोल सेब सा लाल-गुलाबी रंग का मुखड़ा था। खूब मोटी-ताजी थी। सच-मुच में रूप रानी थी। उनके होंठों पर सदैव हंसी नाचती रहती थी। उनके सिर के बाल घने काले थे। चेहरे पर झुर्री नाम की कोई चीज न थी। वह अपनी नौजवान बेटियों मे बैठी हुई उनकी मां नहीं, बहन सी लगती थी। किंतु वक्त के इस करारे तमाचे ने मौसी को हड्डियों का चलता फिरता कंकाल बना दिया था। देखने वाला उन्हें पहचान न सकता था कि वही श्रीमती भट्ट है या कोई और। डॉ.मोहन लाल भट्ट व श्रीमती रूप रानी-जो कल को श्रीनगर में रइसजादे थे, अब फकीर हो गए थे। वह लोग तिनके से हल्के और पानी से पतले हो गए थे। दो वर्ष में ही दोनों पति-पत्नी काल के गर्भ में समा गए थे। कैसा था यह विधि का विधान? कैसी थी प्रभु लीला?? यह उनके किस जन्म का फल था, कोई इस सम्बन्ध में क्या कह सकता है?

इसी तरह जवाहर नगर वाली मौसी प्रभा जाडू की कहानी थी। मौसा-श्री सोमनाथ जाडू जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट में रजिस्ट्रार थे। श्रीनगर की पाश कलोनी जवाहर नगर में उनकी डेढ़ कनाल में कोठी थी। वह भी वहां सब छोड़-छाड़ कर जम्मू घुटन भरे कमरों में समय व्यतीत कर रहे थे। यह दम्पत्ति भी काल कवलित हो चुकी है। इसी तरह लगभग हर कश्मीरी परिवार की विपत्कथा एक जैसी थी। मैं आन्तिरिक रूप से आहत हो उठा था। आंखों में सैलाब रिस कर गालों पर आने लगा था। इतने में भतीजे अशोक कुमार ने मुझे आवाज देकर पुकारा-''चाचा जी!''

''हां अशोक, कहो.......।'' मैंने मुंह नीचा करके गालों पर लुढ़क आए आंसुओं को पोंछ डाला था।

''मंकान बनकर कितना तैयार हुआ है।''

''अरे इसे तो मकान नहीं कह सकता बेटा। सिर छुपाने के लिए छोटा सा घौंसला बना लिया है। अभी तो मकान का ढांचा ही खड़ा किया है। अन्दर बाहर से तैयारी होनी अभी बाकी है।''

''तब तो अभी लम्बा-चौड़ा काम पैंडिंग है।''

''हां! और क्या?'' कह कर हम चुप्पी साध गए थे।

बनिहाल तक मौसम ठंड़ा-ठंड़ा था। थोड़ी सी गाड़ी आगे निकली थी तो मौसम का मिजाज गरमाने लगा था। हम दोनों चाचा भतीजा ड्राईवर की सीट के साथ बैठे थे। पीछे से गुरदासपुर वाले परस्पर में लाल-पीले होने लगे थे। राकेश कुमार ने ड्राईवर को गाड़ी रोकने को कहा था। गुरदासपुरी टोला गाड़ी के बाहर आ गया था। वह दो दलों में बंट कर अपनी कमीजों के बाजू फोल्ड करने लगे थे। ऐसा लग रहा था कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह लोग किसी विशेष अखाड़े में उतर कर अपनी शक्ति व हुनर का प्रदर्शन करने वाले हैं। दोनों भाई पवन कुमार और विनोद कुमार सूर्य पुत्र दानवीर कर्ण और विश्व प्रसिद्ध तीरअंदाज अर्जुन की भांति आज आमने-सामने दो चिर प्रतिद्वंद्वियों की तरह आ डटे थे। वह रणक्षेत्र में भिड़ने को तत्पर थे। विनोद कुमार, रोहित कुमार का पक्ष ले रहा था। जो सरासर अनुचित था। रोहित कुमार राह में लव कुमार को बहुत तंग करता आ रहा था। पवन कुमार और राकेश कुमार ने रोहित को समझाया कि ऐसा न करे। रोहित का साथ अब विनोद कुमार भी देने लगा था। वह भी लव कुमार को अच्छा बुरा कहने लगा था। इस बात पर पवन कुमार और विनोद कुमार में मैं-मैं तूं-तूं होने लगी थी। विनोद कुमार एक बड़े भाई के साथ बेअदबी से पेश तो आ ही रहा था, उसके साथ-साथ गंदे-असभ्य शब्दों का प्रयोग करके पेशे से अध्यापक होना भी भूल गया था। हम चाचा-भतीजा गाड़ी से बाहर निकले थे। नरेश कुमार भी हमें देख कर गाड़ी से बाहर आ गया था। तीनों ने दो गुटों को शांत किया था। फसाद होते-होते टल गया था। गाड़ी में हम पुनः बैठ गए थे। मैंने हंसते हुए कहा-"अच्छा हुआ यहां तकरार वाली जगह पर कोई प्रैस रिपोर्टर नहीं था। नहीं तो कल हम सब की अखबार के पहले पन्ने पर तस्वीर के साथ समाचार छप जाता। ख़बर का शीर्षक होता-'अमरनाथ यात्रियों में खूनी संघर्ष।' सुन कर सभी हा-हा करके हंसने लगे थे।

एक जगह पर हम पहुंचे थे जिसका नाम खूनी नाला था। यहां पर पहाड़ों से बहुत ज्यादा पत्थर गिरते हैं, जिस के कारण बसों व ट्रकों को भारी नुकसान हुआ करता था। काफी लोग यहां मारे जाते थे। कुछ लोगों का ऐसा कहना था कि यहां एक फौजी दुर्घटना में मरा था। उसकी रूह यहां भटकती है। पहले तो पहाड़ के साथ से गाड़ियां निकलती थीं, मरा हुआ सैनिक ड्राईवर गलत दिशा का संकेत देता था और गाड़ी नीचे गहरी खाई में गिर जाती थी। अब इस खूनी नाले पर बहुत बढ़िया पुल बना दिया गया है। नाले के दोनों किनारों के पहाड़ों पर लम्बी लोहे की मोटी तारों के साथ ऊंची सी लोहे की मोटी राड़ें लगा दी गई हैं। पहाड़ से गिरने वाले पत्थर अब इन लोहे की राड़ों से टकरा कर नाले के उस पार ही गिर जाते हैं और यात्रियों का जानी नुक्सान नहीं होता।

सभी यात्रियों को बड़ी गर्मी लग रही थी। रास्ते में 'अनोखा फाल' आया था। गाड़ी यहां रोक दी गई थी। लगभग आधे घंटे तक हम यहां शीतल जल से नहाने का लुत्फ उठाते रहे थे। गर्मी से काफी राहत मिली थी।

उत्तर की दिशा वाले पहाड़ों पर छोटे-छोटे जल प्रपात हमारे चित को प्रसन्नता दे रहे थे। ऊंचे पहाड़ों पर हल्के-हल्के रूप में रिसने वाले पानी से उस पर बनने वाली लंबी सफेद सी लकीर ऐसे लगती थी मानो किसी सांप ने अपनी केंचुकी उतारी हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ों की चोटियों पर लोगों ने एक-एक, दो-दो करके घर बना रखे थे। इन का जीवन यापन यहां कितना कठिन होगा-यह तो सोचने से परे की बात थी।

रामबन आकर हमने चाय के साथ नमकीन खाया था। भूख कुछ शांत हुई थी। मैंने अपने छोटे सांढू मिस्टर अशोक कुमार से फोन पर बातचीच की थी। उसने आज की रात्रि जम्मू उनके निवास स्थान पर गुजारने की पुरजोर गुजारिश की थी।

उधमपुर पहुंचे तो सूर्यास्त हो चुका था। अब अंधेरा घना होने लगा था। मैंने अशोक कुमार और बाकी यात्री साथियों को बता दिया था कि मैंने आज की रात्रि अपने सांढू के पास व्यतीत करनी है। इसलिए मुझे जम्मू बस स्टैंड के सामने उतार दिया जाए।

जम्मू बस स्टैंड के एक ओर करके जैसे ही गाड़ी ड्राईवर ने रोकी, मेरा सांढू कार लिए खड़ा था। मैंने व सांढू अशोक कुमार ने सभी साथियों को आज की रात्रि उनके निवास स्थान पर गुजारने को अनुरोध किया था। परन्तु उन सब की एक ही रट थी- नहीं जी आज हमें जैसे-कैसे घर पहुंचना है। घर पर फोन कर रखे हैं। हमारा भोजन तैयार कर रखा है। इंतजार हो रहा है। रुकना अब ठीक नहीं है। तहेदिल से कहने के लिए आपका बहुत -बहुत शुक्रिया। '' नरेश कुमार शर्मा ने ऐसा कह कर दोनों हाथ जोड़ दिए थे।

मेरा सामान भतीजा अशोक कुमार गाड़ी से उतार कर सांढू की कार की डिग्गी में रखने लगा थी। राकेश कुमार और पवन कुमार ने मुझे पूछा '' शर्मा जी! हमारे साथ कई दिनों की अमरनाथ यात्रा कैसे रही?''

कुछ देर सोचने के बाद मैंने उत्तर दिया-''यदि आप मुझे अपना बुजुर्ग मानते हो- तो यह यात्रा कुल मिलाकर बहुत अच्छी रही। किंतु अगर आप राह में गालियां न बकते, लड़ते-झगड़ते नहीं और अपनी मर्यादा का कुछ पालन करते जो तुम भूल बैठे थे-यात्रा और भी रसमय, आनन्ददायक, रोचक और यादगारी बनती।''

मेरी बातों को सुनकर समस्त साथियों ने यात्रा में हुई भूलों को अनुभव किया था। किन्तु अब क्या हो सकता था? वक्त बीत चुका था। मार्ग पीछे छूट चुका था। सभी ने हाथ जोड़ कर जाने-अनजाने नें हुई अपनी भूलों के लिए मुझ से माफी मांगी थी। और वायदा किया था कि अगर पुनः अमरनाथ यात्रा पर या और कहीं तीर्थ यात्रा इकट्ठे करने का सुअवसर मिला तो दोबारा ऐसी गलतियां न होंगी। विनोद कुमार, रोहित कुमार और लव कुमार राह में हुई करारी सी तकरार को भुलाकर परस्पर में मजाक करने लगे थे मानों कोई बात हुई ही न हो। वह मजाकिया बातों से सब को हंस और हंसा रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभी मुझ से आयु व तजुर्बे में छोटे थे। वह मेरे चरण स्पर्श करके बारी-बारी गले मिले थे। हाथ जोड़ कर अपनी भूलों के लिए क्षमा याचना की थी। उनकी आंखें बिछुड़ते हुए छलछला आई थीं। मेरी आंखों से भी नीर बह निकला था। सभी साथी गाड़ी में बैठते हुए हाथ हिला कर अलविदा कह रहे थे। उनकी गाड़ी चल पड़ थी। मैं सड़क पर खड़ा दूर कर उनकी गाड़ी को जाते हुए मोहवश देखता रहा था। जैसे ही गाड़ी मेरी आंखों से ओझल हुई, मैं अपने सांढू की कार में उसके साथ रूमाल से आंसू पोंछता हुआ बैठ गया था। कार सड़क पर रेंगने लगी थी।

मुझे रामदरस मिश्र की कविता की सारगर्भित पंक्तियां सहसा स्मरण हो आई थीं-

'प्यारे जू है जग की यह रीति।
विदा के समै सब कंठ लगावैं।।

मैं अभी मन से अपने प्रिय साथियों से विदा न हुआ था। मन की डोर उनकी यादों से बंधी थी। सोचने लगा था-'कुछ दिनों के संग ने हमें परस्पर में अपनत्व,प्रेम, सहयोग के धागे में कितनी दृढ़ता की गांठ में बांध दिया है। सचमुच -संयोग में अथाह,अक्षत रसमाधुर्य होता है। और वियोग में कितनी असहय पीड़ा, घुटन और हल्का-हल्का ग़म-दर्द होता है, यह तो भोगने वालों को ही अहसास होता है।'

इतने में घर का मुख्य द्वार आ गया था। कार रुक गई थी। मैं अपने साथियों की स्मृतियों के सघन जाल से मुक्त हुआ था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवाहर टॅनल

जवाहर टॅनल (सुरंग) या बनिहाल टॅनल (सुरंग) जम्मू और कश्मीर में सड़क के ऊपर बनाई गई सुरंग है। यह प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के नाम से इस सुरंग का निर्माण अलफ्रेड कुंज और सी बारसेल द्वारा (दोनों जर्मन मूल से) 1954 और 1960 के बीच धरातलीय परिवहन के लिए किया गया था। जवाहर टॅनल (सुरंग) 22 दिसम्बर,1956 से कार्यरत है। सुरंग की लम्बाई 2.85 किलो मीटर (1.77 मील), इसकी ऊंचाई 2,194 मीटर (7,198 फुट) है। इसकी प्रत्येक दिशा में एक ही सड़क है। यह बनिहाल और काजीगुंड के मध्य ऐच वन पर स्थित है। जिसको पुनः बदल कर ऐन एच 44 अंक दिया गया है। सुरंग वर्ष भर श्रीनगर और जम्मू को निर्विध्न जोड़ती है।

बाद में बॉर्डर रोडज़ ऑरगनाईजेशन ने बेकन योजना के अधीन 1960 में सुरंग को नया रूप दिया। इसका निर्माण प्रतिदिन प्रत्येक दिशा में 150 वाहनों के आवागमन के लिए किया जाता है। लेकिन वाहनों की दोनों तरफीय संख्या बढ़कर 7000 हो गई है। पुननिर्माण के उपरान्त सुरंग के अन्दर द्वितरफीय वायु संचालन, प्रदूषण और तापमान निरीक्षक, रोशनी के प्रबंध के अतिरिक्त आपातकालीन दूरभाष व्यवस्था भी है जो बॉर्डर रोडज़ ऑरगनाईजेशन द्वारा सहायता उपलब्ध करवाती है। सेना चौबीस घंटे इस पर चौकसी रखती है। सुरंग के अन्दर फ़ोटोग्राफी या चलचित्र लेना निषेध है। एक बार सुरंग के अन्दर प्रवेश करने के लिए सी.सी.टी.वी कैमरों की व्यवस्था है।

सन् 2009 तक मध्यरात्रि से प्रातः 8 बजे तक सुरंग को आम नागरिकों के लिए बंद कर दिया जाता था। लेकिन अब यह 24 घण्टे कार्यरत रहती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जम्मू में स्थानीय धार्मिक स्थानों के दर्शन करना व पुण्य-लाभ अर्जित करना।

रात्रिकाल को भोजन करने के पश्चात् सांढू अशोक कपूर, साली गिरिजा कपूर व दोनों बेटे-अंकुर, रचित (बीरू) मेरे समीप आकर बैठ गए थे। वह मुझ से यात्रा-सम्बन्धी लम्बी-चौड़ी जानकारी हासिल करना चाहते थे। परन्तु यात्रा के सफर में मुझे थकावट हो गई थी। मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से कह दिया था कि मैंने अब विश्राम करना है। मुझे नींद आ रही है। आप मुझ से कल जो भी यात्रा सम्बन्धी पूछना चाहोगे, विस्तार से बता दूंगा।

दूसरे दिन मैं चौबारे पर अभी सोया ही था कि मेरी मझोली साली व सांढू-वीणा कुमारी और कमलराज अपने बेटे अनमोल (शिब्बू) के साथ सुबह आ पधारे थे। ऊंची-ऊंची बातें होने लगी थी। मेरी आंख खुल गई थी। मैं नहा-धो कर तैयार होकर नाश्ते के मूड़ में नीचे सीढ़ियां उतरा था। रसोई के सामने मेज के साथ दो कुर्सियां लगी थीं। मैं वहीं कुर्सी पर बैठ कर रसोई की ओर झांकने लगा था। गिरिजा रसोई घर में थी। उसने मुझे अन्दर आते देख लिया था। वह मेरे हाथ में दूध का गिलास पकड़ाते हुए बोली-"जीजा जी! हमने जम्मू में स्थित कुछ धार्मिक स्थानों पर जाकर वहां दर्शन करने व पूजा-अर्चना करके पुण्य कमाने का प्रोग्राम बनाया है। छोटी (वीणा कुमारी) व जीजा कमलराज को भी हमने रात को फोन से आने को सूचित कर दिया था। वह आ गए हैं। बैठक में चाय पी रहे हैं। अब इन्कार मत करना। एक दिन की तो बात है। इकट्ठे मिल कर देव स्थानों पर जाने का अपना ही आनन्द व खुशी है।" कह कर उसने मेरी प्रतिक्रिया जाननी चाही। मैंने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया था। चुपचाप दूध पीता रहा। अंकुर और बीरू (रचित) को स्कूल भेज दिया था। नाश्ता व दोपहर का भोजन दो बड़े टिफिन में पैक करके गाड़ी में रख दिए थे। मेरा कार्यक्रम आज घर वापिस आने को था। परन्तु अब दोनों सांढू-सालियों को नाराज नहीं किया जा सकता था। आठ बजे के करीब हम गाड़ी में बैठे थे। ड्राईविंग सीट पर अशोक कपूर बैठे थे। मैं उनके साथ वाली सीट पर बैठ गया था। बाकी गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ गए थे।

महाकाली मंदिर (बाबे वाली माता) के स्थान पर पहुंचे तो इस स्थान के विकास को देखकर आश्चर्यचकित व प्रसन्न था। किले के बाहरी भाग के प्रवेश द्वार पर तो अब बड़ा लम्बा-चौड़ा बाजार बन गया था। बाजार के दोनों ओर माता के प्रसाद, गोटे वाली चुनरियां, सिंदूर, भेटा आदि की दुकानें थी। दुकानों पर माता के भजनों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कैसटें बज रही थीं। और वस्तुओं-खिलौने, फल, कपड़े और हलवाइयों की दुकानें भी सज गई थीं। मुझे स्मरण है-इससे पहले मैं सन् 1977-78 को जब आया था-यहां हाट-बाजार का नामोनिशान नहीं था। यहां वृक्ष होते थे और बन्दर उस पर कूदने व धमाचौकड़ी मचाने का काम करते थे। आज मंगलवार व रविवार नहीं था। इसलिए भक्तों की भीड़ ज्यादा नहीं थी।

जम्मू से ढाई किलोमीटर दूर दुर्ग में महाकाली देवी का मन्दिर प्रतिष्ठित है। ऐतिहासिक और क़लात्मक दृष्टियों से यह मंदिर अति महत्वपूर्ण है। मंदिर की सीमा रेखा बड़ी विशाल है। पहले मंदिर का भीतरी हिस्सा काफी विशाल था। परन्तु अब मुख्य मंदिर का प्रसार अधिक जगह में हो गया है।

मंदिर की परिधि का आरम्भ कार-पार्किंग वाले मैदान से प्रारम्भ होता है। और फिर मंदिर के लिए पैदल चलने का रास्ता भी काफी लम्बा है। इसके दोनों ओर फल-फूल, चढ़ावे, मिठाई के अलावा मनेआरी, देवी की मूर्तियों, कपड़ों और खाने-पीने के सामान की दुकानें हैं। इस रास्ते के खत्म होते मंदिर का पहला प्रांगण शुरू होता है। यहां दाएं-बाएं आने-जाने के लिए रास्ते बने हैं और उनके मध्य फूलों की क्यारियां है जहां अक्सर भिखारी बैठे रहते हैं। बंदर सेना आते जाते भक्तों का स्वागत करती है। इसके उपरान्त 10-12 सीढ़ियां चढ़कर मन्दिर का तीसरा हिस्सा आता है। यहां श्रद्धालुओं की भीड़ नियंत्रित करने के लिए पुलिस तैनात की जाती है जो पुरुष और महिलाओं को अपनी-अपनी कतार में आने पर व्यवस्थित ढ़ंग से दर्शन करने के लिए देवी के मंदिर में भेजती है।

मंदिर का गर्भद्वार अच्छे ऊंचे स्थान पर बना हुआ है, जिस पर अंदर की उतरी दीवार पर तीन देवताओं के कोष्ठक बने हुए हैं। इनमें से मध्य वाले कोष्ठक में महाकाली की मूर्ति स्थापित है। यह मूर्ति काले रंग की है और देखने में आर्कषक है। देवी के हाथ में तलवार और दूसरे में खप्पर है। इस मूर्ति के माथे और आंखों पर सोने के टीके हैं। जिस कारण इसका आकर्षण और भी बढ़ गया है। मूर्ति के दोनों ओर चांदी के छत्तर हैं और सिर पर सोने का मुकुट है। यह मूर्ति गहनों, कपड़ों से लदी होती है। मात्र इसका मुख ही दिखाई देता है। बड़ी बात यह है कि मूर्ति जिस सिंहासन पर प्रतिष्ठित है वह सोने का है।

इसके दाईं ओर वाले कोष्ठक में लाल रंग के पटल पर लक्ष्मी की मूर्ति उकरित है जो सोने के सिंहासन पर सुशोभित है और बाईं ओर के कोष्ठक में माता के त्रिशूल और सांकल सुशोभित हैं।

इस मंदिर में पहले देवी को पशुबलि दी जाती थी। परन्तु अब ऐसा करना वर्जित है और इसकी जगह बकरियों को जल-फल आदि से पूजा जाता है। मंदिर का यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किला प्राचीन है। परन्तु मंदिर निर्माण महाराजा गुलाब सिंह ने करवाया था। महाकाली की मूर्ति की स्थापना उन्होंने करवाई थी। इस मंदिर में हर रविवार और मंगलवार को भक्तों की इतनी भीड़ होती है कि दर्शनों के लिए अपनी बारी के लिए काफी लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ता है। नवरात्रों में यहां बड़े-बड़े मेले लगते हैं और उनके लिए अच्छे प्रबन्ध किए जाते हैं।

धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा मुझे बताया करती थी-"सन् 1965 व सन् 1971 की लड़ाइयों के जंगी जहाज जब बम फैंकने जम्मू पर आते थे तो उन्हें जम्मू शहर नज़र न आता था। बस-एक कन्या दिखाई देती थी। यह बात जंगी हवाई जहाज के पायलटों ने पाकिस्तानी सरकार को बतायी थी। माता बड़ी शक्ति वाली है।"

हमें महाकाली के मंदिर में बड़े अच्छे और खुले रूप में दर्शन हुए थे। मंदिर के पूर्व की ओर साथ लगते ही और देवी-देवताओं के मंदिर भी भव्य ढ़ंग से सजाए गए थे। हमनें इन मंदिरों में भी देव-मूर्तियों के दर्शन करके माथा नवाया था। प्रसाद लेकर हम अपनी गाड़ी के पास आ गए थे। एक हलवाई की दुकान पर बैठ कर नाश्ता किया था और चाय पी थी। वहां आधा घंटा विश्राम करने के पश्चात् वापिस जम्मू की ओर चल पड़े थे।

अब सांढू कमल राज मि. अशोक कपूर की ड्राइविंग सीट पर बैठा था। मैं पिछली सीट पर दोनों सालियों के समीप बैठा था। छोटी साली गिरिजा कपूर ने मुझे पूछा-"जीजा जी! ऐसा मुझे पापा जी ने सुनाया था कि पूरे भारत में भगवान शिव के बारह पवित्र शिवलिंग है जिन मे मुझे सिर्फ दो ही की जानकारी है-एक सौराष्ट्र (गुजरात)में सोमनाथ और दूसरा हिमालय में स्थित (उतराखंड)में केदारनाथ। शेष दस के बारे में जानते हैं तो नालेजसेक बनाने की मेहरबानी करें।" उसकी बात सुन कर मैंने मन-ही-मन संस्कृत के श्लोक को स्मरण करने का बार-बार प्रयास किया था। श्लोक पूर्णतयः स्मरण हो आया था। मैंने गिरिजा को (पप्पू) श्लोक सुनायाः-

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैलेमल्लिकार्जुन।
उज्यिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम्।।
केदारं हिम वत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्।
वाराणास्यां च विश्व्रेशं त्रयम्बकं गौतमी तटे।।
वैद्यनाथं चिताभूमो नागेश दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं तु शिवालये।।
द्वादशैतानि नामामि प्रातरुत्थाय यः पठेत।
सर्वपापैर्विनिमुवतः सर्वासिद्धिफलं लभेत्।।

(शिव पुराण कोटिरूद्र संहिता 1/21-24)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थात् सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैलपर-मल्लिकार्जुन, उज्जैनी में -महाकाल, ओंकारतीर्थ में-परमेश्वर, हिमालय शिखर पर- केदरानाथ, डाकिनी में-भीमशंकर, वाराणसी में-विश्वनाथ, गोदावरी तट पर- त्रयंम्बक, चिताभूति-वैद्यनाथ, दारुणवन में नागेश, सेतुबन्ध में रामेश्वर और शिवालय में घुश्मेश्वर नामक पवित्र शिवलिंग हैं। इन शिवलिंगों के दर्शन व पूजा-अर्चना से मनुष्य के सारे पाप धुलते हैं और मनुष्य को सर्वसिद्धि का फल प्राप्त होता है।''

सुनकर दोनों बहनें प्रसन्न हो गईं थीं। इतने में अशोक कपूर ने गाड़ी शालामार सड़क के एक ओर श्री रणबीरेश्वर मंदिर के समीप खड़ी कर दी थी।

यह शिवमंदिर उत्तरी भारत के शिवमंदिरों में सबसे बड़ा है। श्री रणबीरेश्वर मंदिर का शिवलिंग सभी शिवलिंगों से बड़ा है और इसकी लम्बाई सात फुट है। यह काले रंग का बना है। मंदिर के मुख्य हाल या गर्भ-गृह के दोनों ओर बड़े-बड़े हाल बने हैं। जिन में पक्के बने-चबूतरों पर सवा लाख बानालिंग स्थापित हैं। कहते हैं यह बानालिंग नर्मना नदी से लाए गए हैं। मंदिर के आगे एक बड़ा बरामदा है। जिस में गणेश और कार्तिकेय के मंदिरों में उनकी बड़ी-बड़ी मूर्तियां स्थापित हैं। इस बरामदे में इन मंदिरों के सामने और मुख्य मंदिर की तरफ अभिमुख नंदीगण की पीतल की बड़ी मूर्ति स्थापित है, जो मैसूर से बनवाई गई है। श्री रणबीरेश्वर मंदिर के गर्भ-गृह मे पार्वती परमेश्वर की संगमरमर की बनी अति सुन्दर दो मूर्तियां अलग-अलग सिंहासनों पर विराजमान हैं और बाईं ओर पंचमुखी शिव की प्रतिमा है जो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की प्रतीक है। सिंहासन के नीचे दोनों ओर ऋद्धि और सिद्धि की मूर्तियां हैं।

इस मंदिर में ग्यारह-ग्यारह शिवलिंगों के दो समूह हैं। एक समूह बिल्कुल सिंहासन के सामने है जो बिल्लौरी पत्थर के हैं और एक बहुत बड़ी सी जलैहरी में स्थापित है। इस समूह का सब से बड़ा सात फुट ऊंचा शिवलिंग, जिसका पहले भी उल्लेख किया गया है, गर्भ गृह के मध्य में है और बाकी के दस शिवलिंग उसके आस-पास एक व्यवस्थात्मक तरीके से स्थापित किए गए हैं।

मंदिर का गर्भगृह मंदिर की तीसरी मंजिल पर है। इसलिए श्रद्धालु भक्तों को इस मंदिर में पहुंचने के लिए तीन बार सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यह मंदिर जम्मू शहर के व्यस्त स्थान शालामार मार्ग पर है। इसे सन् 1876 ई में महाराजा रणबीर सिंह ने बनवाया था। इसलिए इस का नाम रणबीरेश्वर मंदिर रखा गया।

वैसे तो प्रतिदिन यहां श्रद्धालु भक्त पूजा-पाठ के लिए आते हैं। परन्तु सोमवार को यहां भक्तों की काफी भीड़ होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिवरात्रि के दिन इस मंदिर में बहुत बड़ा मेला लगता है। भक्तजन दूर-दूर से शिव को जल चढ़ाने आते हैं और दूध-दही, फल, बिल्व-पत्ते आदि अर्पण करते हैं और शिव को स्नान करा कर पूजा-अर्चना करते हैं। इस दिन रात को शिव स्तुति में 'चारपूजा' भी होती है और जंगम शिव पार्वती का विवाह भी पढ़ते हैं। मंदिर को खूब सजाया जाता है जैसे कोई विवाह वाला घर हो।

इस मंदिर में मैं पहले भी अपने परिवार के साथ तीन-चार बार आ चुका था। परन्तु हर बार यहां आकर सब कुछ नया-नया लगता है। मन-हृदय आनंदविभोर हो उठता है। यहां हम एक घंटे से भी ज्यादा समय मंदिर में रहे और शांति प्राप्त करते रहे।

अगला कार्यक्रम इन का पीर खोह में जाने का था। इस गुफा में मुझे पत्नी पुष्पलता शर्मा ले कर आई थी। यह मंदिर जम्मू नगर के प्रसिद्ध शिवालयों में से एक है। यह मंदिर जम्मू शहर के बीच प्रवाहित होने वाली तवी नदी के दाईं ओर एक प्राकृतिक गुफा में स्थित है। कई इतिहासकार इस गुफा का सम्बन्ध रामायण काल से जोड़ते हैं। उनका कहना है कि रामायण के रीछ योद्धा जामवंत यहां रहते थे।

इस गुफा के अंदर एक मंदिर है जिसमें शिवलिंग के अलावा नंदी, गणेश और पार्वती की मूर्तियां प्रतिस्थापित हैं और यह शिवलिंग आपशम्भू हैं। गुफा के दक्षिण प्रवेशद्वार के बाईं ओर एक बड़ा मंदिर है जिस पर पत्थर के ग्यारह रुद्र एक जलैहरी में स्थापित हैं। मुख्य मंदिर के चारों ओर संगमरमर की दो फुट चौड़ी दीवार है। जिसके आखिर में ऊपर काले रंग की शिवमूर्ति है। गुफा का आखिरी छोर गुबंद के आकार का है। इसके तीनों ओर तीन आले बने हुए हैं। सामने वाले आले में कोई डेढ़ फुट ऊंची पत्थर की श्रीगणेश जी की मूर्ति है। गुफा का फर्श संगमरमर का बना है।

गुफा के आगे आंगन में दाईं ओर संगमरमर की कोई दो फुट दीवार बनी हुई है और इस पर एक बने आले में छोटा सा नगाड़ा रखा हुआ है। यह नगाड़ा मंदिर में पूजा के समय बजाया जाता है। इसके साथ ही एक बड़ा मंदिर जिसमें भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण की मूर्तियां हैं। जो गहनों से सुसज्जित हैं। इस मंदिर का फर्श और दीवारें भी संगमरमर की हैं।

यहां पर भी दूर-दूर से सैंकड़ों लोग पूजा-अर्चना के लिए प्रतिदिन आते हैं। बाहर से आए हुए यात्रियों के लिए यह विशेष रूप से आर्कषण का केन्द्र है। पीर खोह मंदिर में बहुत बड़े उत्सव होते हैं और मेले लगते हैं।

इस गुफा में हम सभी काफी समय तक बैठे रहे। इस गुफा में शांति थी। मन चाहता था-बस यहीं आंखे मूंदे ध्यानस्त हो जाऊं। बाहर आने को मन नहीं कर रहा था। अनमोल (शिब्बू) वहां टिक नहीं रहा था। आखिर हमें यहां से चलने का मन बनाना ही पड़ा। समय अब दो बजे दोपहर का होने को था। भूख सब को लग आई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
थी। राजेन्द्र बाजार आकर हमने एक परिचित हलवाई की दुकान पर खाना खाया था। कुछ मिठाई भी खरीदी थी। अब नींद आने लगी थी। गिरिजा और वीणा कुमारी-दोनों का विचार था कि रघुनाथ मंदिर जाकर भगवान के दर्शन किए जाएं। मैं अब ड्राइविंग सीट के साथ वाली सीट पर बैठ गया था। शिब्बू मेरी गोद में बैठ गया था। शेष सभी पीछे बैठ गए थे। अशोक कुमार की कार रघुनाथ बाजार की ओर रेंगने लगी थी।

उत्तरी भारत के प्रसिद्ध और बड़े मंदिरों में श्री रघुनाथ मंदिर का महत्वपूर्ण स्थान है। यह मंदिर जम्मू के प्रसिद्ध स्थल रघुनाथ बाजार में स्थित है। इसके अंदर कई देवी -देवताओं के मंदिर हैं जिनके लिए यह मंदिर अपने आप में एक मंदिर-समूह है।

मुख्य मंदिर का गर्भ गृह बड़ा सुन्दर और सुसज्जित है। इसमें एक ऊंचे सिंहासन पर श्री राम चन्द्र, सीता माता और लक्ष्मण की मनुष्य आकार की मूर्तियां स्थापित हैं। इन मूर्तियों के पीछे वाली दीवार पर सोने के पत्ते जड़े हुए है। जिससे इस मंदिर की शोभा दोगुनी हो जाती है। इस मंदिर की परिक्रमा में इन्द्र, वरूण, अग्नि, यम आदि दिकपालों की और पूर्व आदि दिशाओं की मूर्तियां हैं।

श्री राम मंदिर के मुख्य द्वार पर सुन्दर अक्षरों मे यह दोहा लिखा हुआ था:-

"जग मंगल गुण ग्राम राम के।
दानि मुकुति धन धरम धाम के ।।

श्री राम मंदिर से बाहर इसकी परिक्रमा आती है। इस परिक्रमा में शेषनाग की सेज पर विष्णु भगवान, श्री गणेश, श्री भरत, श्री शत्रुघ्न, श्री नृसिंह, श्री राधा कृष्ण, वाराह अवतार, वामन अवतार, महालक्ष्मी, मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, श्री विराट भगवान, पार्वती परमेश्वर और श्री सत्येश की मूर्तियों से सुसज्जित चौदह बड़े-बड़े मंदिर हैं। मंदिर के द्वार के बाईं और दाईं ओर वेद तथा नटराज मंदिर के अलावा महाराजा गुलाब सिंह, रणबीर सिंह और अमर सिंह की समाधियां बनी हुई हैं। वास्तुकला की दृष्टि से रणबीर सिंह की समाधि खास है और कला की दृष्टि से उत्कृष्ट। इस मंदिर की दूसरी परिक्रमा एक विशाल मंडप में समाप्त होती है। इस परिक्रमा के आरम्भ में मंडप में प्रवेश करते ही हनुमान जी की बड़ी सुन्दर मूर्ति के दर्शन होते हैं।

मंदिर के परिसर में आठ अहाते हैं, जिनके अलग-अलग नाम हैं और जिनके अलग-अलग देवी-देवताओं के मंदिर या फिर हजारों की संख्या में शालीग्राम स्थापित हैं। मंदिर की तीसरी, चौथी, और आखिरी परिक्रमा के मध्य खाली स्थानों पर बगीचे बनाए गए हैं। चौथी परिक्रमा में पुजारी नगर, श्री रणबीर संस्कृतनुसंधान पुस्तकालय, तारामति धर्मशाला, हरि भवन, श्री रणबीर यात्री भवन आदि भी उल्लेखनीय हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस तरह यह मंदिर इतना विशाल और अद्‌भुत है कि इसकी हर एक वस्तु का वर्णन करना असंभव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है। यह मंदिर वास्तुकला, मूर्तिकला की दृष्टि से डुग्गर का उल्लेखनीय स्मारक है। इसकी आधार शिला महाराज गुलाब सिंह ने रखी थी। पर इस सुन्दर मंदिर का निर्माण कार्य महाराज रणबीर सिंह ने करवाया था।

इस मंदिर में सुबह-शाम बड़ी संख्या में लोग पूजा-अर्चना करने आते हैं। रोज सुबह-शाम यहां भजन-कीर्तन और उपदेश भी होते हैं। यहां नवरात्रों में रामलीला होती है जिसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। रामनवमी और श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर इस मंदिर से भगवान जी की रथ यात्रा बड़ी धूमधाम और श्रद्धा से निकलती है। बसंत पंचवी और होली के त्योहारों पर पहले यहां संगीत-सभा भी होती थी। परन्तु आजकल सुरक्षा के कारणों से ऐसे कार्यक्रम कम हो गए हैं। जन्माष्टमी को यहां श्री कृष्ण का जन्मदिन मनाया जाता है और कृष्ण-कन्हैया के लिए रेशमी डोरों से बना झूला भी लगाया जाता है। इस दिन रात को बारह बजे तक कीर्तन होता है और फिर कृष्ण जन्म के बाद ''सुंढ-पनीरी'' का प्रसाद बांटा जाता है।

इस मंदिर पर हुए आंतकी हमले के कारण बहुत से श्रद्धालु भक्त मारे गए थे। तब से यहां की सुरक्षा में अर्धसैनिक बल को तैनात किया गया है। सुरक्षा बलों द्वारा बड़ी गहनता से तलाशी ली जाती है। मोबाइल बगैरा बाहर रखवा लिए जाते हैं।

थोड़ा-थोड़ा समय देकर रघुनाथ मंदिर के दायरे में सभी मंदिर में विराजमान देवी-देवताओं को माथा नवाया था। एक बार जो मुझे अच्छी लगी-' वह श्री राम मंदिर में पुजारी द्वारा प्रत्येक श्रद्धालु भक्त का नाम पूछना, उसके माथे पर टीका लगाना और श्रद्धालु तथा उसके परिवार की सुख -समृद्धि के लिए भगवान से मंगल कामना करना।'

मैं तो कई दिनों की यात्रा पर था। मैं बहुत थक गया था। सांढू और सालियां भी बैठ कर अपनी टांगें दबाने लगी थीं। सभी थक कर चूर हो गए थे। हमें रघुनाथ मंदिर में ही सूर्यास्त हो गया था। अब घर पहुंचने की सब को जल्दी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जम्मू से घर को वापिसी व कश्मीर के सम्बन्ध में महान साहित्यकार 'अब्दुल अहद आज़ाद' द्वारा अद्‍भुत काव्य रचना करना

दूसरे दिन मैं अपने सांढू अशोक कपूर के साथ अभी नाश्ते की मेज पर बैठा ही थी कि फोन की घंटी घनघनाने लगी थी। टैलीफोन मुझ से ज्यादा दूर न था। ज्यों ही मैंने रिसीवर को उठा कर हैलो किया तो दूसरी ओर से गृहमंत्री श्रीमती पुष्पलता बोल रही थीं-'' क्या बात है? घर आने को मन नहीं कर रहा?''

''बस नाश्ता करके घर को चल पडूंगा।

''मुझे तो नहीं लगता कि आप इतनी जल्दी आने वाले हो।'+

मैंने आश्चर्य से पूछा-''क्यों? न आने वाली ऐसी कौन सी विशेष बात है।''

वह हंसती हुई कहने लगी-''एक तो आपकी छोटी साली-पप्पू (गिरिजा कपूर) आप को ज्यादा पसंद व प्यारी है। दूसरे वह आलू और अनारदाने के परांठे बहुत बढ़िया बनाती है। उसके हाथ के बने व्यंजन और विशेष कर खीर, छोड़ कर जीजा महाराज भला क्यों आएंगे। खीर और आलू वाले परांठे आपकी कमजोरी है।'' सुनकर मैं ठहाका मार कर हंसने लगा था। पप्पू ने दो प्लेटों में आलू परांठे, मक्खन, आचार व दही नाश्ते की मेज पर रख दिए थे। मैंने हंसते हुए फोन का रिसीवन अपनी साली पप्पू को पकड़ा दिया था। दोनों बहनों में फोन पर खूब करारी बातें होने लगी थीं। पप्पू खिलखिला कर हंसी जा रही थी। फिर उसने फोन का रिसीवर फोन के आधार पर रख दिया था। पप्पू ने भी बैंक जाना था। सांढू अशोक कपूर ने अपने ठेकेदारी के काम में भी बाहर जाना था। हम तीनों गाड़ी में बैठ गए थे। सांढू साहिब ने मुझे जनरल बस स्टैंड पर उतार दिया था। दोनों मियां-बीबी ने घर पहुंचने पर अपनी कुशलता की सूचना फोन से देने और पुनः सपरिवार जम्मू आने की ताकीद की थी। जालन्धर वाली बस मुझे जल्दी में ही मिल गई थी।

मेरे मानस पटल पर विगत काल की स्मृतियों का रेला बह आया था। मेरे स्वर्गीय ससुर लक्ष्मी नारायण शास्त्री जी जम्मू-कश्मीर में सरकारी हाई स्कूल में बतौर संस्कृत अध्यापक के रूप में काम करते थे। जब मैंने उन्हें अपना पहला उन्हें अपना पहला उपन्यास ''मंजिल और गर्दिश'' भेंट किया तो वह बहुत प्रसन्न हुए थे। उपन्यास पढ़ने के पश्चात् उन्होंने मुझे लेखन कार्य सम्बन्धी कुछ बातें समझाई थीं, जो सफल लेखन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए अत्यावश्यक थीं। मुझे उन्होंने खूब परिश्रम से साहित्य साधना करने की नसीहत दी थी। वह संस्कृत और ज्योतिष के प्रकांड विद्वानों में से एक थे। उन्हें इस बात की असीम खुशी थी कि उनका दामाद साहित्याकारिता का गुण रखता है। वह मुझे अकसर कहा करते थे-

साहित्यसंङ्गीत कला विहीन: साक्षात्पशु, पुच्छविषाण हीन:।

कश्मीर के एक अध्यापक साहित्यकार से उनका विशेष रूप से परिचय था। उनका जिक्र उन्होंने मुझ से अनेक बार किया था। वह इस साहित्यकार पर बहुत गर्व करते थे और कहा करते थे-''साहित्यकार हो तो 'अब्दुल अहद आज़ाद' सा हो जो हृदय की सच्चाई को कहने में नहीं चूकता है।'+

उन्होंने कश्मीर व साहित्यकार 'अब्दुल अहद आज़ाद' के सम्बन्ध में इस तरह बताया था-''प्रकृति ने कश्मीर जैसी नवोढ़ा दुल्हन के लावाण्यमय तन पर पुष्पों से एक अनबूझी कविता गूंथ डाली है। कश्मीर सुन्दरी की हृदय-धड़कन में नदियों का चिर शाश्वत संगीत ध्वनित हो रहा हैं। इस खूबसूरत कामिनी की चंचल चितवन में न मालूम कितने समधुर गीतों का रहस्य समाया हुआ है और इसके मादक यौवन से अनगिनत बुझे, हारे हुए दिलों को नया जोश, ऊर्जा और रंगीन जवानी मिलती है। अपनी मातृभूमि कश्मीर के अकथनीय सौन्दर्य में विशेष योगदान रहा है। आज़ाद ने विदेशी सरकार, शोषण तथा मानव की अपनी कमजोरियों को उत्तरदायी समझा है। वह मुस्लमान और हिन्दू के नाम में संबोधित करने की बजाय मानव ही रहने देना चाहते हैं।

आज़ाद पेशे से अध्यापक थे और आजीवन आर्थिक चक्की में पिसते रहे। उसने अपनी मूलभूत आस्थाओं से समझौता नहीं किया। आज़ाद ने 'महाराजा सरकार' की प्रशंसा में कसीदे न पढ़े थे। आज़ाद के समकालीन साहित्यकारों ने महाराज के शाही खजाने को दोनों हाथों से उसके कृपा पात्र बन कर लूटा था। परन्तु अब्दुल अहमद आज़ाद ने आमरण ऐसा कोई समझौता न किया था। उसने अपनी आत्मा का हनन न किया था। अत: जीवन की विषम परिस्थितियों और तलख हकीकतों से समझौता करने की बजाए विद्रोही बन गया था। उसकी कविता में कश्मीर के जनमानस की धड़कनें समोई हुई हैं। अपना बुंझा हुआ मन लेकर भी उसने अपने होंठों पर उदासी की रेखा न आने दी और मुस्कान को मिटने न दिया था। अतएव उसकी कविता की धारा में कोयल पक्षी की हूक के बदले बुलबुल की मिठास घोलने वाली चहकार मिलती है। उसकी पीड़ा, ग़म और वेदना व्यक्तिगत नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के अभावों का मातम है। आर्थिक शोषण और सामाजिक असमानता के प्रति जबरदस्त विद्रोह है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज़ाद का मानना था कि राजनैतिक आज़ादी आर्थिक स्वतंत्रता के बिना निरर्थक है। राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ आर्थिक आज़ादी अर्जित करके ही रामराज्य की स्थापना की जा सकती है। आजाद की सतत साधना कश्मीरी काव्य में अद्वितीय है। इसी लिए आज़ाद को 'नव-चेतना का अग्रदूत' भी कहा जाता है।

आज़ाद के पिता 'सुल्तान डार' स्वयं एक सूफी थे। वह अपने बेटे को कुरान शरीफ पढ़ाया करते थे। ताकि वह एक सूफी बन सके। मगर भगवान को ऐसा मंजूर नहीं था। आज़ाद के शब्दों में -''क्योंकि परमात्मा ने मनुष्य का काम नियत कर रखा होता है।'+

आज़ाद सदैव रोगग्रस्त ही रहे। कभी बुखार, कभी पेट रोग और कभी निमोनिया से पीड़ित रहे। अन्त में उदर रोग ने उनकी जान ले ली थी। 4 अप्रैल,1948 को सायं साढे चार बजे यह कलकंठी बुलबुल सदा के लिए मौन हो गई।

आज़ाद ने जनजागरण के प्रशस्त गीत लिखे। स्वदेश प्रेम की दुहाई दी। मानव का मानव से परचिय करवाया। आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय को समाप्त करने के लिए कवि की लेखनी ने तलवार से अधिक प्रभावशाली ढ़ंग से काम किया और यही समाज और समय की मांग थी।

अब्दुल अहमद आज़ाद ने अपनी कविता में स्वदेशी आकार दिया और अपनी धड़कनों को स्ववांछित संगीत दिया-

अश्क छु फरान कमन कमन तप र्‍येशन त आलमन
अशक करान मोसमन पोश बदन कजालियो।
गार गायिच्ये खौरदसाली यार बनान छि यार वालि
मीर बुछुम बनान फचाली दात बनान सवालिये।

निदार हातिफी कविता नं 19 पृष्ठ 235

''यह प्रेम बड़े-बड़े ऋषियों और बुद्धिमानों की पूंजी हर लेता है। वे सभी अपने मन को वश में नहीं रख पाते। प्रेम निष्कलुष सुन्दुरियों के फूलों के समान लुभावने और कोमल शरीरों पर कालिख पोत देता है। और मेरी प्रेमिका, तू चढ़ते यौवन के द्वार पर खड़ी हो। अतः तुमने मुझ गरीब को छोड़ कर धनवानों के साथ याराना करने की तृष्णा की। मगर तुम्हें मालूम होना चाहिए कि बड़े-बड़े धन-कुबेर मुहताज बन जाते हैं और दानवीर स्वयं दान लेने पर विवश हो जाते हैं।''

अब कवि-मानव को अपनी पहचान ~~कसके~~ दीन और धर्म की दरारों को पाटने के लिए प्रेरित करता है। भेद-भाव को त्याग कर उसे एक हो जाने का सार्थक प्रयास करता है-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यि तै दुग्न्यारूकुय रंगा
त यकसानुक तरानै बजि।
नमुन ह्यौत ब्राहमणी काबस।
मुसलमान चायि बुतखानस।

"कुल्याति आज़ाद"

अर्थात् यह जो भेद-भाव, द्वैत का जो चलन तुमने अपनाया है, उसे बरबस विदा कर, एक हो जा, अद्वैत भावना प्राप्त करने का मंत्र मुझ से सीख। यह मन की एकता तब स्थापित होगी जब ब्राहमण काबा की ओर झुकेंगे और मुसलमान मन्दिरों में प्रवेश करेंगे।"

कवि आज़ाद की कल्पना उस सारे सौन्दर्य को आत्मसात करना चाहती है जो सृष्टि के श्रृंगार मानव को जन्म से मिला हुआ है। यदि वह देवता होकर राक्षस वृति बनना चाहे, मानव होकर पशुता अपनाए तो दोष उसका अपना है-

चू ओसुख गाटजागरुक नूर, चें लोगुथ नार इन्सानो।
करथ इन्सानियत बदनाम, हा बेअर इन्सानो।

"कुल्याति आजाद पृष्ठ 70"

"अर्थात् हे मानव! तुम विवेक के प्रकाश स्तम्भ हो। परन्तु तुम आग बन गए हो। तुम्हारी दयाहीनता ने इन्सानियत को बदनाम किया है।"

अब्दुल अहमद आज़ाद ने धर्म के ठेकेदारों पर गहरी चोट करते हुए कहा कि परमात्मा ने जो दायित्व निभाने के लिए तुम्हें गढ़ा था, यहां भेजा था। परन्तु तुमने उसके विपरीत जाकर मानवता को ही नीलामी करने का निंदनीय कुकृत्य करने लगे-

मुहब्बत बागाराबुन क्युत, करयोनक कोंदरतन पादा।
च्ये लोगुत दीन ईमानस, करुन बापार इनसानो।
थण्योनै कोदरतन पनन्यन, खजानन ठानु मुचरारिथ
च्ये आसुय बागरापिथ ख्योन, बन्योख शाहमर इन्सानो।

"पैयामि आजाद"

" तुम्हें परमात्मा ने प्यार बांटने के लिए पैदा किया था। परन्तु तुमने दीन ईमान का व्यापार करना शुरू कर दिया।"

"प्रकृति ने तुम्हारे लिए खजानों का मुंह खोल रखा था। तुम्हें इनसे सामूहिक रूप से लाभ उठाना था। सब से मिल बांट कर स्वाद लेना था। परन्तु तुम फुफकारते सांप बनकर इन खजानों को अपने लिए सुरक्षित रखने लगे। किसी दूसरे को इन कुदरती खजानों की ओर फटकने नहीं देते।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे ख्यालों में डूबे हुए बस सांबा पहुंच गई थी। ज्यों ही कंडक्टर ने बस रोकने के लिए ड्राइवर के लिए जोर से सीटी बजाई,मेरी विचार श्रृंखला भंग हो गई थी। कुछ सवारिएं बस पर चढ़ी थीं। बस दोबारा चल पड़ी थी। मैं पुनः कवि आज़ाद की कविता के कडुबे-सच्चे व मानवतावादी सन्देश की रौ में बह निकला था। आज़ाद ने महात्मा गांधी की मृत्यु पर इन शब्दों में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

जहालत त्रावि नूरान, गछन अद हूर देवान।
विधुय नुन्दबोन अफताबा, छुरुजिथ यथ गुबारस मंज।

"अर्थात् संसार को वह अपने दिव्य आलोक के प्रकाश से भर देगा। तब अप्सराएं बौरा जाएंगी, वैसा ही मनभावन सूर्य इस समय झुटपुटे की ओट में खड़ा है।

साहित्यकार आज़ाद ने श्रीनगर के प्रसिद्ध बागों के सम्बन्ध में बहुत सुन्दर शब्दों में इस प्रकार लिखा है-

छिस बागारान मुहब्बत।
बुलबुल कुमिर करान गथ।
छिस प्याल ह्यथ अथन क्यथ।
पोशे चमन मुबारक।

बादे वतन -कविता नं 3 पृष्ठ 183

"बुलबुलें यहां प्यार बांटती हैं। कोयलें इसकी परिक्रमा में मग्न हैं। मुबारक हो यह वतन जिसके बाग बगीचे हाथों में प्याले उठाए सब का स्वागत करते हैं।"

कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य को वह देश-प्रेम के परिवेश में इस प्रकार मुखरित करता है-

पम्पोश डल छु खामोश
ज़न रूठमत रटिथ बोश।
पांचाद्रन पिवान जोश।
प्यठ संगरन मुबारक।

बादे वतन-कविता नं3 पृष्ठ 184

"अर्थात् कमल के फूलों से डल झील मौन है। जैसे रूठ गई हो और मान कर रही हो। मेरा वतन मुबारक है जहां पर्वतों से निकलते हुए प्रपात सिरफटोल गति से नीचे उतरते हैं।"

अब्दुल अहद आज़ाद साम्प्रायिक सौहार्द का हामी है। वह ऐसे समाज की कल्पना करता है-जहां प्रेम,भाईचारा, समता, स्वतंत्रता और मानवता की निर्मल-पावन धारा बहती हो-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तातिं आसन न योनि न माल
कुफुर दीनकि कीन मलाल।
न अमीरी न गदागरिये
रोज़ि दमाह पांचादरये।

"कुल्याते आजाद"

"उस प्रदेश में जहां से तुम आती हो, ए आवश्ग, धर्म के बाहरी नाम पर न यज्ञोपवीत होंगे और न तस्बीहें, न वहां पर 'कुफ़र' और 'दीन' के साम्प्रदायिक झगड़े होंगे। न वहां कोई धनवान होगा और न दरिद्र। इसलिए हे झरने! कुछ क्षणों के लिए रुक जाओ।"

इसी प्रकार भाव प्रवणता में कवि आज़ाद वितस्ता मधुर-गंभीर प्रवाह में साम्प्रदायिक सौहार्द की बात करता है। वह वितस्ता की जलधारा से कश्मीर में दोनों साम्प्रदायों को एकता का संदेश देता हुआ मंगल कामना इस प्रकार करता है-

दोग्न्यारन माऽर्य कशिरये
हमछनावतक कुनिरुक सोज़।
चिम ति गछ़ ह्यन तार तरतरिये
सोन्दरिये बाजि म्यान्य जार।।

"मनाज़रि कुदरत"

"हे सुन्दरी! मेरा विलाप सुन लो-ये कश्मीरी इस समय साम्प्रदायिक टोलियों में बंटे हुए हैं। उन्हें तू ऐकता का दर्दीला गीत सुना दे, जिससे इनका इहलोक और परलोक सुधर जाएंगे।"

इस तरह का सुन्दर भाव "नदी" के इस गीत में समोया हुआ हैं-

अनान त्रेशिहत्यन आलव करिथ
छुस साल चावान त्रेश।
फों ल्यखना दिल जिगर शेहल्यख
चल्यख पकनुक त थकनुक वेश।
गहे जोयन कोलन गाह
सरबन्दन नलकन नलन अन्दर
यिवान छुम जिन्दगी हुन्द रोज
सफरन मंजिलन अन्दर।।

मनाज़रि कुदरत

"अर्थात् मैं (नदी) तृषियों को बुला-बुला कर उन्हें बड़े प्यार से और आदर से पानी पिलाती हूं। ताकि उनका दिल प्रसन्न हो जाए। उनके निरन्तर चलने से थकावट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूर हो जाए। इस प्रकार का परोपकारी रूप मैं कभी सरिताओं, कभी सरों और कभी नलकों का आकार धारण करके अपने लिए सजाती हूं। क्योंकि मुझे जीवन का आनन्द लक्ष्य की ओर निरन्तर चलने में ही मिलता है।''

हमारी बस लखनपुर आकार रुक गई थी। मेरी विचार श्रृंखला भंग हो गई थी। कुछ सवारियां वहां उतर गई थीं। खाने पीने का सामान खरीदने लगी थीं। दस मिन्ट के पश्चात् बस पुनः चल पड़ी थी। बस सुजानपुर पहुंची तो मैंने अपना सामान बस की अगली खिड़की के पास रख कर मलिकपुर आने की प्रतीक्षा करने लगा था। मलिकपुर आकर बस कंडक्टर ने सीटी बजाई तो ड्राईवर ने बस रोक दी थी। सामान के साथ मैं बस से उतर गया था। कुछ और सवारियां भी उतरी थीं। अब बेसब्री से सुन्दर चक्क की लोकल बस का इन्तजार करने लगा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा व दोनों बेटों द्वारा 'श्री अमरनाथ यात्रा' संस्मरण लिखने का अनुरोध करना

रात्रिकाल को भोजन करने के उपरान्त दोनों बेटों-कुणाल शर्मा, करुणेश शर्मा व धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता शर्मा मेरे समीप बैठ कर यात्रा व स्वास्थ्य जानकारी लेने लगे थे। मैंने तीनों मां-बेटों की ओर देख कर कहा-''भगवान अमरनाथ की अनुकम्पा से अपना स्वास्थ्य ठीक-ठाक होने और यात्रा सफल, सुखद, और रोमांचकारी होने से-मैं उन का शत्-शत् बार हृदय से कृतज्ञ हूं और लाखों बार नमन करता हूं। भगवान भोलेनाथ की महिमा अपरम्पार है। वह परम दयालु और भक्त वत्सल हैं। यात्रा में किसी तरह का कोई कष्ट न हुआ। मैं पूरी यात्रा मे एकदम हिट ऐंड फिट रहा। यह अमरनाथ भगवान की कृपा दृष्टि का ही कमाल है।''

''यात्रा से आप सीधे घर क्यों नहीं आए? पप्पू के पास (छोटी साली गिरिजा) के क्यों चले गए थे?'' पुष्पलता शर्मा ने मुझे जो टूक शब्दों में पूछ लिया था। मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। कुछ देर सोचता रहा। मौन बैठा रहा। मैंने उत्तर में कहा-''अपनी प्रिय साली के घर ही तो गया था। उनका अनुरोध था कि इधर मिलते जाइए। मैं उन्हें इन्कार न कर सका। क्यों? ऐसी क्या बात है कि तुझे मेरे वहां जाने पर इतराज हुआ है।''

''तीर्थ यात्रा में आदमी को सीधे अपने घर आना चाहिए, ऐसा बजुर्ग लोग कहते हैं। यात्रा का पुण्य-प्रताप गृहस्थी का उपकार और मंगल करता है। क्या आप को इन बातों का ज्ञान न था?'' कहा श्रीमती पुष्पलता शर्मा ने।

''न जी, मुझे इस इल्म की जानकारी होती तो मैं कभी साली-सांढू के घर न जाता। चलो आगे से ऐसी भूल नहीं होगी।'' कह कर मैंने मजाक में अपने कानों को हाथों से पकड़ कर तौबा का अभिनय किया तो तीनों-मां व बेटे खिलखिलाकर हंसने लगे थे। उन्हें देखकर मैं भी मुस्कराता रहा।

मेरी ओर देखकर गंभीर स्वर में पत्नी बोली-''मेरी एक प्रार्थना भी है और सुझाव भी। अगर स्वीकृति के लिए हां करते हो तो निवेदन करुं। उम्मीद है-आप इन्कार नहीं करोगे।''

''अरे कुछ पता तो चले मामला है क्या? मेरी सामर्थ्य में होगा- वहमैं अवश्य करुंगा। परिवार के प्रति मेरी जो भी जिम्मेदारी होगी, मैं ही तो करूंगा।'' मैंने उत्तर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''अरे यहां फैमिली की बात नहीं, साहित्य सम्बन्धी बात है। आप अमरनाथ यात्रा पर एक संस्मरण लिखिए। बहुत अच्छा रहेगा। श्री अमरनाथ यात्रा में अपने अनुभवों, कश्मीर के सम्बन्ध में और यात्रा में संग रहे सहयोगी मित्रों के सहयोग और हंसी-मजाक लिख कर अपनी यात्रा को अमर बना दीजिए। मेरी विनती और सुझाव पर आप की क्या राय है?'' मुस्करा कर उसने मेरी ओर देखा।

दोनों बेटों कुणाल व करुणेश ने भी ऐसा ही अनुरोध किया-'' पिता श्री! आप श्री अमरनाथ भगवान की यात्रा संस्मरण अवश्य लिखिए।'' सुनकर मैं पलभर के लिए मौन साध गया था। फिर मैंने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा-''साहित्य रचना तो मां सरस्वती करती है। साहित्यकार केवल निमित्त बनता है। मां सरस्वती व भगवान श्री अमरनाथ की इच्छा हुई-तो अमरनाथ यात्रा का संस्मरण अवश्य लिखा जाएगा।'' इतना कह कर मैं सोने के लिए अपने कमरे में चला गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्कूल पहुंचकर अध्यापक साथियों व विद्यार्थियों से मिलना और अजीतपाल शर्मा द्वारा जम्मू-कश्मीर सम्बन्धी नई जानकारियां उपलब्ध करवाना

प्रातःकाल आंख खुली तो स्वयं को पूर्णतया स्वस्थ, हलका और प्रसन्न पाया था। मैं स्नानादि से निवृत हुआ ही था कि चपरासी प्रेम चन्द मेरी जानकारी लेने घर पहुंच गया था। उसने गेट के अन्दर आते ही स्वाभानुसार ऊंची आवाज में पुकारा था-पंडित जी! पंडित जी!!

"प्रेम चन्द चले आओ!" मेरी आवाज सुनकर वह मेरे कमरे में आ गया था। वह फिर बोला,-"पंडित जी जै सिया राम! जै अमरनाथ जी की।"

मैंने भी उसी लहजे में उत्तर दिया-"जै श्री राम। जै अमरनाथ भगवान जी की।"

मुझे देख कर उससे रहा न गया था। उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया था। मुझे उसके मिलन से अपनेपन और खुशी का अहसास हो रहा था। फिर हाथ जोड़ कर प्रेमचन्द बोला-"पंडित जी सेहत कैसी है? यात्रा कैसी रही?"

मैंने उसकी ओर मुस्कराते हुए देख कर कहा-"चंगा भला तुम्हारे सामने खड़ा हूं। रही यात्रा की बात-भगवान अमरनाथ जी की कृपा से बहुत ही बढ़िया रहे।"

"शर्मा जी आपके लिए हम बड़े चिंतित रहे। मैं तो हर रोज़ घर आकर दो-तीन बार आप का पता कर जाया करता था। आप को अब सामने देखकर मेरी चिंता खत्म हुई कि आप घर पर सही सलामत पहुंच गए हैं। जिस दिन से आप अमरनाथ यात्रा पर गए हैं- सुबह-शाम भगवान के सिमरन में आप की कुशल मंगल और कामयाब यात्रा की प्रार्थना करता रहा हूं।"

"इस बात के लिए आप का बहुत-बहुत धन्यावाद प्रेम जी।"

इतने में तश्तरी में चाय का प्याला, नमकीन-मिष्ठान रखे श्रीमती पुष्पलता शर्मा कमरे में आ गई थी। बाहर लॉबी में मेज पर तश्तरी रखते हुए प्रेमचन्द चाय पीने लगा था। वह मेरी ओर उन्मुख होते बोली-"प्रेम चन्द जी तो हर रोज दो तीन बार आपके बारे में फोन पर शर्मा जी ने क्या कहा, कैसे हैं-बगैरा-बगैरा पूछ लिया करते थे।

"जिस दिन टीवी पर नुनगांव में अमरनाथ यात्रियों के बेसकैंप पर उग्रवादियों के हुए हमले की ख़बर आई थी- उसी समय सुजानपुर से डॉ. लेखराज, डॉ.सोमदत्त, कंस राज,प्रि संसार चंद,सुदर्शन सिंह (सुन्नी बाबा), ठाकुर गुरदयाल सिंह, ड्राईंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मास्टर अमरजीत सिंह, रानी देवी, पुनीता भाटिया और निर्मल कांता आदि अध्यापकों के फोन आप की कुशलता सम्बन्धी जानकारी लेने को धड़ाधड़ आने लगे थे। दूसरे दिन सीनियर सैकेंडरी स्कूल कीड़ी खुर्द का सारा स्टाफ आकर मुझे हौसला दे गया था। जब तक आप का फोन कुशल-मंगल के बारे में न आया-आपके प्रिय मित्र, स्टाफ सदस्य व रिश्तेदार, बनी लोधी से आपकी धर्मबहन दर्शना कुमारी बराबर आते रहे और हमें दम दिलाता देते रहे। मैं और बेटा कुणाल तो बुरी तरह से घबरा गए थे। सच कहते हैं-दु:ख और परेशानी के वक्त में-मित्र, स्नेही और सज्जन व्यक्ति ही काम आते हैं।

मैंने प्रेम चन्द के समीप तख्तपोश पर बैठते हुए उत्तर दिया-"अरी मैडम! दु:ख की घड़ी में अपने यार-बेली, स्नेही और सज्जन काम आते हैं। बेगाना कौन किसी की सुध लेता है? उन सब अध्यापक साथियों, मित्रों और सज्जनों का हृदय की अतल गहराई से धन्यवादी हूं-जिन्होंने आप का ढ़ाढ़स बंधाया, सांत्वना दी और मेरी कुशलता के लिए परम पिता परमेश्वर से विनती की थी।"

चाय का खाली प्याला मेज पर रखता हुआ प्रेमचन्द बोला-"शर्मा जी अब मैं स्कूल को चलूंगा। आप तैयार हो कर स्कूल आ जाइए।"

"बस, मैं आपके पीछे-पीछे ही आ रहा हूं।"

प्रेमचन्द नीचे सीढ़िया उतर गया था। मैं मन्दिर में धूप-दीप करने को बैठ गया था।

स्कूल पहुंचा तो विद्यार्थी मेरा सत्कार करते हुए स्वास्थ्य सम्बन्धी, अमरनाथ यात्रा सम्बन्धी जानकारी लेने लगे थे। मुझे मिल-देख कर बच्चे बड़े प्रसन्न थे। स्टाफ रूम के बाहर कंस राज, ठाकुर गुरदयाल सिंह और सुदर्शन सिंह खड़े थे। मैं अभी स्टाफ रूम से काफी पीछे था। तीनों मित्रों ने दो-दो गुलाब के फूल मेरे हाथों मे देते हुए मेरी जिन्दगी व स्वास्थ्य के लिए ढेर सी शुभकामनाएं दी थीं और बड़ी गर्मजोशी से मुझे गले से लगा लिया था। प्रि. संसार चन्द, अमरजीत सिंह बारी-बारी मेरे गले मिले थे। बाकी अध्यापकों ने भी भगवान अमरनाथ यात्रा से सकुशल वापसी के लिए खुशी प्रकट की थी और स्वास्थ्य और सफल, सुखद, शांत जीवन हेतु भगवान से मंगल कामना की थी।

स्कूल में जो अध्यापक साथी मिलता या मैं जिस भी कलास में पीरियड लगाने जाता-लड़के लड़कियां यात्रा सम्बन्धी जो भी सुना देखा-सुनाने को कहते थे। मैं उन्हें अमरनाथ यात्रा, कश्मीर के सम्बन्ध में, डल झील और शालीमार बाग व निशांत बाग के सम्बन्ध में वर्णन करता था।

तीन बजे के करीब घर पहुंचा तो कामवाली श्रीमती निर्मली देवी (निम्मा) मेरा हाल जानने को पत्नी के समीप बैठी थी। निम्मा ने मुझे तीर्थयात्रा सम्बन्धी व घर कुशल से पहुंचने पर बधाई दी थी। अभी निर्मला देवी (निम्मा) उठने को तैयार होने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगी थी कि इतने में धर्म बहन दर्शना कुमारी बनी लोधी से मुझे मिलने को आ पहुंची थी। मुझे देखते ही वह स्नेह और अपनत्व भाव से भावुक हो उठी थी। उसकी आंखों से प्रेमाश्रुओं की धारा बह निकली थी। वह बड़ी देर तक यात्रा सम्बन्धी बातचीत करती रही थी। जैसे ही मैं बहन जी को मैं व धर्मपत्नी मुख्य द्वार तक छोड़ने आए, मेरे चाचा जी का लड़का पंकज कुमार शर्मा व भतीजा अजीत पाल शर्मा मुझ से मिलने पहुंच गए थे। उन दोनों के चायपान करने के पश्चात् यात्रा सम्बन्धी बातें होती रही थीं। कश्मीर के बारे में खुल कर बातें होने लगी थीं। अजीत पाल शर्मा मुझे जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में नई जानकारी देने लगा था। वह बता रहा था-

(1) जम्मू भूभाग के छम्ब क्षेत्र से 1947 और 1965में लड़ाई के समय लोग विस्थापित हो गए थे। फिर 1971 में शिमला समझौते में इस क्षेत्र की 18000 एकड़ भूमि अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में पाकिस्तान को दे दी गई थी। स्थायी तौर पर रहते लोगों को उजाड़ा गया था। इस क्षेत्र से विस्थापित हुए एक लाख के करीब लोगों का पुनर्वास तो भारत सरकर की जिम्मेदारी थी। इंडिया हकूमत ने वादे के अनुसार न तो भूमि अथवा उसकें बदले में कीमत दी। मकान, दुकान व पशुओं आदि के लिए भी एक परिवार को 8500 रु देकर निपटा दिया था।

(2) पश्चिमी पाकिस्तान के शरणार्थी लोग जिनकी आबादी लगभग दो लाख है। यह लोग अभी तक जम्मू-कश्मीर के वाशिंदे नहीं बनाए गए हैं। नागरिकता के सभी मूल अधिकारों, उच्चशिक्षा, वोट, एजुकेशन में बच्चों का दाखिला, सरकारी नौकरी, जमीन - जायदाद खरीदने का हक और स्कालरशिप बगैरा से पूर्णतया: वंचित हैं।

(3) उग्रवाद के दौर में सन् 1989-91 में कश्मीर छोड़ कर आए हिन्दुओं की संख्या लगभग 3.5 लाख है। कश्मीर से भागे लोग ऐसा सोचते हैं कि वह देश, समाज, सरकार सभी से पूरी तरह अलग-थलग हो गए हैं। उनको दोबारा कश्मीर में पुनार्वास करने की बातें होती हैं, परन्तु बसाया नहीं जा रहा है। वह इन दिनों जम्मू के कैंपों में बदतर जिन्दगी जी रहे हैं।

(4) जम्मू और लद्दाख से अब्दुल्ला सरकारें पूरा-पूरा भेदभाव करती आई हैं। जैसे-जम्मू में प्रति विधानसभा मतदाता 84270 और कश्मीर में 62673 निश्चित किए गए हैं। जम्मू में लोकसभा सीट 15.29 लाख मतदाता और कश्मीर में 9.61 लाख रखी गई है। जम्मू में कोई (एनआईटी) नहीं है, जबकि कश्मीर में 9 केन्द्रीय संस्थान हैं। टूरिज्म पर जम्मू क्षेत्र पर 10 प्रतिशत और कश्मीर में 85 प्रतिशत खर्च किया जाता है।

(5) उमर अब्दुल्ला, पीवी चिदम्बरम के और तीन सदस्य वार्ताकारों दिलीप पडगांवकर, राधा कुमार और एमएम अंसारी नेताओं ने ऐसा माहौल बना दिया कि शायद जल्दी से ठीक अलगाववादियों की इच्छानुसार निर्णय होते जा रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(6) असल में अमेरिका अपने हितों को अफगानिस्तान से पाकिस्तान से समर्थन प्राप्त करके अस्थिर जम्मू-कश्मीर के माध्यम से मध्य एशिया में अपनी परमानैंट उपस्थिति को पूर्ण करना चाहता है। और 1950 में अमेरिका ने ही शेख अब्दुल्ला को 'आजाद कश्मीर' के लिए उकसाया था।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(7) पंडित जवाहर लाल नेहरू को महाराजा हरिसिंह द्वारा कोहाला पुल पर रोक लिया गया था और रियासत से वापिस भेज दिया था। जिसका बदला नेहरू ने राजा हरि सिंह से तो लिया ही, माऊंटबेटन के साथ मिलकर सम्पूर्ण कश्मीर के विलय को उलझा दिया था। जिसकी कीमत वीर सैनिकों के बलिदानों से हर रोज चुकानी पड़ रही है। अखंड व अभिभाज्य राष्ट्र की और संविधान की कसम लेकर प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्री बनने वालों ने इस शपथ को तोड़ कर राष्ट्र,संविधान और भारतीय लोगों से छल-फरेव, और धोखा किया है।

(8) जब भी किसी महफिल में जम्मू-कश्मीर की समस्या की चर्चा होती है तो पंडित जवाहर लाल नेहरू को लेडी माऊंटबेटन के साथ जोड़ा जाता है। लोगबाग कहते है-''जवाहर लाल नेहरू की लेडी माऊंटबेटन के प्रति आसक्ति, मोह व वासना ने नेहरू जी को इस मामले में गुमराह किया था। वायरलास लार्ड माऊंटबेटन ने जवाहर लाल नेहरू की इस कमजोरी का प्रतिशोध जम्मू-कश्मीर के रूप में भारत से लेकर अपनी धर्मपत्नी के माध्यम से पाकिस्तान को भरपूर फायदा पहुंचााया था। पंडित नेहरू जी व लेडी माऊंटबेटन का परस्पर में मोहब्बत का खुलासा अनेक समाचार पत्रों व मैगजीन में प्रकाशित हो चुका है। नेहरू जी तो चीन की सरकारी यात्रा पर जो चीन के नेताओं से गुप्त राजनैतिक बातें व समझौते होते थे उन्हें भी उस लेडी के साथ बेवाक हो कर सुनाया करते थे।'' स्त्री-पुरूष के प्रेम-सम्बन्धों में अकसर भावुकता अधिक होती है और उस में लिए गए फैसले गलत साबित होते हैं। क्योंकि वासना व रूपासक्ति में नर-नारी बुद्धि-विवेक में अंधे-बहरे हो जाया करते हैं। इसमें ऊंच-नीच , सबल-निर्बल,धनी-निर्धन का विचार प्रायः शून्य होता आया है। जैसे रजिया बेगम का अस्तबल के इंचार्ज से प्रेम-सम्बन्ध। ऋषि विश्वामित्र का अप्सरा मेनका की रूपासक्ति से तप भंग होना। रावन का सीता के प्रति मोह व रूपासक्ति होना। राजा भतृहरि की छोटी रानी का रथवान से शारीरिक सम्बन्ध होना। रानी लूणा का अपनी सौतन इश्रां के नौजवान व रूपवान पुत्र-पूर्ण पर दिल फिदा हो जाना। संसार की ऐसी असंख्य उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है। फिर विधुर पंडित जवाहर लाल नेहरू लेडी माऊंटबेटन की रूपासक्ति व प्यार में लुट कर कश्मीर पर धोखा खा गए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

दूसरी बात-पाकिस्तान की 1971 की इंडो-पाक लड़ाई में शर्मनाक परायज के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाद उसने भारत को बर्बाद करने व कश्मीर में आतंकवाद का खून-खाक का खेल आप्रेशन 'टोपाक' के अन्तर्गत शुरू किया था। इसी कड़ी में पंजाब में खालिस्तान को हवा देने में उग्रवादियों को पाकिस्तान में पनाह, असलाह-ट्रेनिंग दे कर खून-खाक का नंगा नाच यहां करवाने में इस देश का सीधा-सीधा हाथ था। बड़े दु:ख और अफसोस की बात है कि सन् 1984 में गोल्डन टैंपल पर सेना के ब्लू स्टार आप्रेशन के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की निर्ममता से हत्या उनके ही अंगरक्षक ने करना- पाकिस्तान अपरोक्ष रूप से जिम्मेदार था।

पाकिस्तान 'जम्मू-कश्मीर' को अपनी शाहरग कहता आ रहा है। वह शाहरग उसके 1971 के युद्ध में बंदी बनाए 93 हजार कैदियों के बदले शिमला समझौते के समय पूरी तरह काटी जी सकती थी। किंतु श्रीमती इंदिरा गांधी की इतनी बड़ी भूल, नादानी व भावुकता अंततः उनकी मृत्यु का कारण बनी। क्या यह सच नहीं है?

इन सारी मोटी मोटी बातों का जवाब पचास वर्ष तक केन्द्र में काबिज रही कांग्रेस से तल्ब करना चाहिए। और-तो-और मजे की बात है कि जवाहर लाल नेहरू से लेकर अब तक कांग्रेस सरकारों ने पूरी तरह समर्पित होकर पाकिस्तान के हक में ही बहुत कुछ किया व भारतीय भू-भागों को बाअदब दिया है। चाचा जी मेरा ऐसा मानना है- भाजपा पार्टी के प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के शासनकाल में 1999 में कारगिल पर हुए युद्ध की जगह यदि कांग्रेस हकूमत सैंटर में होती तो उसने यह इलाका खुशी-खुशी के साथ पाकिस्तान को बिना किसी विरोध के दे देना था। क्योंकि इतिहास कहता है कि केन्द्र की कांग्रेस सरकारों ने थोक के भाव से सम्मानजनक ढ़ंग से पाकिस्तान को भारत की आज़ादी के पश्चात् इलाके भेंट किए हैं। देश की भौगोलिक सीमाओं को भारतीय सैनिकों के बलिदानों ने सुरक्षित रखा है, पाकिस्तानी बड़े भूभाग जीते हैं। परन्तु राजनेताओं ने दरियादिली,संविधान व अखंड भारत की कसम को निर्ममता से तोड़ कर वापिस किए हैं।

इन सब बातों का उत्तर भारतीय नागरिकों को पूछने का अधिकार है कि आखिर कांग्रेस सरकारों ने यह सब क्यों किया और कश्मीर में होने दिया। मेरा ख्याल है- कश्मीर की समस्या का हल जम्मू-कश्मीर में नहीं, नई दिल्ली की केन्द्रीय सरकार में निहित है। अब समय आ गया है कि कांग्रेस की अंधी-बहरी नेहरूबादी सोच के स्थानपर भारतीय संविधान की मूलभावना एकजन-एकराष्ट्र को कायम किया जाए। अलग संविधान, अलग झंडा (निशान), अनुच्छेद 370 जैसी अलगाववादी मानसिकता को बढ़ावा देने वाली व्यवस्थाओं को जड़ से खत्म किया जाए। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को उसके खाली करवाने को हर हरबा इस्तेमाल किया जाए। और यह काम तुरन्त होना चाहिए ताकि उमर अब्दुल्ला, मीरवायज, गिलानी हुर्रियत टोला,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसिया अंद्राबी, फारूख अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती जैसे जो मुस्लिम वोट के भूखे, स्वार्थी, सत्तालोलुप लीडर कोई और नई उलझन, राष्ट्रविरोधी हालात देश के सामने खड़े न कर दें।''

''आप लिखारी हैं चाचा जी, आपको यह सारे विचार लोगों तक पुस्तक रूप में जरूर पहुंचाने चाहिएं।'' कहते-कहते अजीत पाल शर्मा का चेहरा तमतमा आया था। उसने उठ कर एक गिलास पानी पिया था। अंधेरा काफी हो गया था। फिर वह पंकज कुमार शर्मा को साथ लेकर गाड़ी में बैठ गया था।

मैं अपने उसी स्थान पर बैठे-बैठे विचारमग्न हो गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानस पटल पर यात्रा व कश्मीर सम्बन्धी अनेक दृष्यों का अवलोकन व भगवान से अनुनय-विनय

रात्रिकाल को भोजनोपरान्त मैं अपने बिस्तर पर आ कर लेट गया था। यात्रा की थकावट अभी काया में शेष बनी हुई थी। आज तो सारा दिन अध्यापक साथियों, विद्यार्थियों, सम्बन्धियों, दोस्तों, सहानुभूति व प्रेम रखने वालों के साथ मिलते-बातचीत करते हुए और श्री अमरनाथ यात्रा के अपने अनुभव सुनाते हुए तथा उनकी शुभकामनाएं, आर्शीवाद को अपने हृदय रूपी तिजौरीमें सहेजते हुए व्यस्तता से व्यतीत हुआ था।

मेरी आंखें बंद थीं। मेरे मानसपट पर यात्रा व कश्मीर सम्बन्धी दृष्य चलचित्र से आने लगे थे। मैं इन्हें साक्षी रूप में देखता जा रहा था। लौहपुरुष सरदार पटेल को जम्मू-कश्मीर की रियासत के सम्बन्ध में चिंतित व दुःखी भाव में बैठे हुए देखा था। मुहम्मद शेख अब्दुल्ला, गोपाल स्वामी अयंगर और कुछ अपरिचित चेहरों को इस रियासत की समस्या की गांठों को उलझा कर रखने में खिलखिलाकर हंसते व जश्न मनाते हुए देखा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू व लेडी माऊंटबेटन चाय की मेज पर बैठे हुए मुस्करा कर बातें कर रहे थे। जनाब मुहम्मद अली जिन्ना और लार्ड माऊंटबेटन कश्मीर पर कानाफूसी कर रहे थे।

घोड़े वाली लड़की नगीना रहमान मुझे घोड़े पर बिठाए हुए टिटकारी मारते हुए सोच व उदासी के आलम में चली जा रही थी। शेषनाग के मर्मस्पर्शी दृष्य मुझे कुछ क्षणों के लिए रोमांचित कर गए थे। भगवान श्री अमरनाथ गुफा का नजारा मुझे हृदय की असीम गहराईयों तक आत्मिक आनन्द, आस्था व भक्ति भावना से परिपूर्ण कर गया था। बालटाल की वापिसी की रात्रिकाल की यात्रा के दृष्य ने मुझे अन्दर तक भयभीत कर दिया था। डलझील में नव विवाहित जोड़ों को सजे संवरे शिकारों में बैठे हुए नजारे ने मेरे मन हृदय को प्रसन्नता प्रदान की थी। उसके पश्चात् मैंने करवट बदल ली थी।

डलझील के किनारे चाय बेचने वाला नौजवान-अशरफ मुझे उग्रवाद के दिनों की दास्तान रो-रो कर सुना रहा था। निशात बाग, शालमार बाग, चश्माशाही, परी महल व नेहरू पार्क की मनोहरता के दृष्यों ने सुकून से भर दिया था। खिलनमर्ग में मुस्लिम बच्चे को अपनी गोद में भर कर लाड-प्यार किया था। ऐसे लगा था- जैसे मैं खंडाला में केवल कार पर न बैठ कर, बादलों के ऊपर बैठा हुआ नीलाम्बर में उड़ा जा रहा हूं और मेरे यात्रा-साथी तथा अन्य लोग जमीन पर खड़े हुए विस्मित नेत्रों से मुंह बाये देख रहे हों। बादलों की गड़गड़ाहट और वर्षा में भीगने तथा ठंडी हवा के झोकों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे कंपा दिया था, जिसके ख्याल में मैंने पास वाली बड़ी चादर को अपने बदन पर कस कर ओढ़ लिया था।

खंडाला से गुलमर्ग जाते समय घोड़े वाले बजुर्ग मुस्लिम भाई-गुलाम नवी की मन की पीड़ा की बातें हौले-हौले मेरे कानों से टकरा रही थीं और उन्हें बड़े ध्यान से सुन रहा था। वह वर्तमान समय की फारूख अब्दुल्ला की सरकार की गुस्से में बड़े कड़े शब्दों में आलोचना कर रहा था। मेरे मानसपटल पर गुलमर्ग में शिव मंदिर आ गया था। शिव मन्दिर में सकीना की अद्भुत इबादत व प्रार्थना का एक -एक शब्द मेरे हृदय की गहराइयां में उतर कर शांति व सुकून भर रहा था। भगवान शिव सकीना के सम्मुख खड़े थे। वह उसकी इबादत व प्रार्थना को मुस्कराते हुए कबूल करके जम्मू-कश्मीर में पुन: शांति बहाली को आश्वस्त करते नजर आ रहे थे।

मैं देखता हूं- हजरत मुहम्मद, लल्लेश्वरी, महात्मा गौतम बुद्ध, नुन्दऋषि, शंकराचार्य, माता शारिका व गुरु नानक देव जी को कश्मीर की रक्त-रंजित हुई धरती पर लोगों में युगों-युगों से चले आते भाईचारे, प्रेम, समानता, सहयोग और धार्मिक सौहार्द कायम करने हेतु गंभीर वार्तालाप में परस्पर में बातें करते हुए देखा था। इन अवतारों व महान आत्माओं के दर्शन करके स्वयं को भाग्यशाली मानने लगा था।

कभी -कभार मुझे ऐसा अहसास होता कि हमारा नौयात्रियों का लघु दल पैदल पहाड़ी मार्ग पर 'श्री अमरनाथ' भगवान के जयकारे बुलाता हुआ चला जा रहा है। मोटे दिमाग वाले लवकुमार की हंसोड़ बातें सुनकर मुस्कराते हुए मेरे दांत बाहर आ रहे थे। ड्राइवर अशोक दीवाना की कैसेट बज रही थी-बिल्ली मार दियांगे-डिंग लक...डिंग-लक-लक.....।

वितस्ता के शीतल जल व मधुर संगीत के कल-कल छल-छल ने मेरे सन्तप्त हृदय को शीतल और आनन्दित कर दिया था।

एक स्थान पर मैंने हुर्रियत टोले को कुछ पाकिस्तानी एजैंटों से घिरा हुआ देखा था। कश्मीर में बदअमनी, पत्थरबाजी, साड़फूंक, हड़तालें, नारेबाजी, लोगों को गुमराह करने, पाकिस्तानी झंडे फहराने और पाकिस्तान के हक में नित्य नए बयान देने तथा अलगाववाद का राग अलापने के एवज में भारी मात्रा में नोटों की गड्डियां हासिल करके हंस-हंस कर बातें करते हुए उनकी बातों को अमली जामा पहनाने के लिए पाक एजैंटों की हां-में-हां मिला रहे थे।

उग्रवादियों के भय से अपने सम्बनधियों और दूसरे लोगों को जान बचाने की खातिर छोटे-नन्हें बाल-बच्चों सहित सिर पर सामान की गठरियां उठाए, घर से, मातृभूमि से बिछुड़ते समय जारोजार रोते, आहें भरते हुए घरों से निकलते देखा तो मेरी आंखों से बरबस नीर बह आया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने आंसू पोंछ कर करवट बदल ली थी। बाहर वर्षा के साथ तेज हवा भी चल रही थी। ठंड बढ़ गई थी। मैंने चादर को सिर से पांव तक ओढ़ लिया था। दृष्य बदल गया था। मैं मानस-पट पर देख रहा था-जम्मू नगर के रघुनाथ मंदिरों की भव्यता ने मुझे आत्मिक आनन्द से सरावोर कर दिया था। मन्दिरों की घंटियों की मधुर आवाजें मेरे कानों में निरन्तर गूंज रही थीं। किसी बात पर मेरी छोटी साली गिरिजा (पप्पू) मेरे साथ चुहलबाजी करके मुझे हंसा रही थी। फिर हम दोनों जीजा-साली हंसी में लोट-पोट हुए जा रहे थे।

मेरी आंखें अब नींद से बोझिल होने लगी थीं। मैंने विश्व का कल्याण करने वाले त्रिलोकी नाथ श्री अमरनाथ भगवान को मन-ही-मन स्मरण किया था। सच्चे मन-हृदय की अतल गहराई से अपने अन्तर्नेत्रों के समक्ष साक्षात खड़े पाकर मूकवाणी से प्रार्थना की थी-'हे भगवान शिव! मेरे देश भारत वर्ष में सुख -शांति हो। खुशहाली हो। खेत-खलिहान अनाज से भरपूर हों। अन्नदाता-किसान सुख-सम्पदा से समृद्ध हों। मेरे देश की एकता व अखंडता बरकरार रहे। प्रत्येक नागरिक के दिल में प्रेम और राष्ट्रीय-निष्ठा की शुभ भावना कूट-कूट कर भर दो। हरेक भारतीय प्रातःकाल मधुर कंठ से गा उठे-

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज-शीतलम्
शस्य श्यामला मातरम्........
वन्दे मातरम्।

भारत वर्ष की धरा से आतताइयों, नक्सलियों और उग्रवादियों का समूल नाश हो।

जम्मू कश्मीर के स्वर्गिक आनन्द सुख देने वाले भूभाग पर शांति स्थापना हो। यहां उग्रवाद का सफाया हो। धारा 370 समूल खत्म हो। अलगाववादी व विध्वंसक तत्वों का सर्वनाश हो। कश्मीर घाटी से पलायन करके गए कश्मीरी पंडित पुनः अपनी जन्मभूमि पर अपने घरों में लौट आवें। यहां का प्रत्येक नागरिक सुख-शांति-समृद्ध हो। धार्मिक सहिष्णुता कायम हो। पुनः लल्लेश्वरी के भजन सन्तप्त पीड़ित हृदयों में शांति और आनन्द भर दें। हब्बा खातून के रोमानी गीतों से जन साधारण के मन-हृदय के बुझे अरमानों के चिराग रौशन हो उठें। सभी सम्प्रदायों के लोग परस्पर में भाईचारा, प्रेम, सहयोग से मिलजुल कर रहें।

हे शिव! हे त्रिलोकी नाथ!! भारत देश के नेतागण पुत्रमोह, स्वार्थ, अहं व कुर्सी मोह से मुक्त हों। इनके मन-हृदय राष्ट्रीय भावना, त्याग व सेवाभाव से परिपूर्ण हों। इनका जीवन लोक कल्याण को समर्पित हो। यह सदैव, नवयुवकों-नवयुवतियों, किसानों, वैज्ञानियों और सेनानियों के हित में निशि-दिन कार्य करते रहें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने अनुभव किया कि हल्की-फीकी रोशनी में भगवान अमरनाथ अपना दायां हाथ उठा कर मुझे मंद-मंद मुस्कराते हुए आर्शीवाद देते हुए आश्वस्त कर रहे हैं कि तुम्हारी अनुनय-विनय को स्वीकार कर लिया गया है।

सोने से पहले मैंने यह मंत्र उच्चारण करना आरम्भ किया था-

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगतकारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिमं।
वन्दे सूर्यशशांकवन्हि नयनं वन्दे मुकुन्द प्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वन्दे शिवम् शंकरम्।

अर्थात् श्री पार्वती जी के प्रति, देवताओं में श्रेष्ठ , जगत के कारण रूप, चन्द्रमा तथा शेषनाग जी को आभूषण रूप में धारण करने वाले नन्दीश्वर के स्वामी, नेत्रों से सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति से प्रकाशमान, श्री विष्णु भगवान को प्रिय, भक्तों के आश्रय स्थान तथा श्रेष्ठ वरदाता भगवान शंकर की मैं वन्दना करता हूं।

फिर धीरे-धीरे निंदिया रानी ने मुझे अपने आगोश में लेकर, अधरों से मदिरापान करवा कर, अलसित करके निद्रा के खुमार में धकेल दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिक्रियाएं

यश पाल शर्मा साहित्य की प्रमुख विधानों के रचनाकार हैं। 'आस्था के सोपान' कश्मीर की घाटी की व्यथा-कथा, यात्रा वृतांत के आधार पर उन्होंने इतिहास,संस्कृति एवं भौगोलिक परिस्थितियों को केन्द्र में रख कर सहज और सरल शैली में लिखी है। एशिया के देशों की जिज्ञासा सर्वाधिक कश्मीर के बारे में जानने की रही है।, इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी पाठकों के विश्वास का पात्र बनेगी तथा जम्मू-कश्मीर के बारे में संपूर्ण विचार रेखांकित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इनकी लेखनी से मैं सदा प्रभावित रहा हूं. अतः इस कृति के लिए मैं उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं।

-डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी,
कुलाधिपति,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

यशपाल शर्मा साहित्य विधाओं में बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इन्होंने अपनी नई रचना 'आस्था के सोपान' यात्रा संस्मरण में जम्मू-कश्मीर के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक विषयों को आधार बना कर सरल तथा सहज शैली में लिखा है। यह प्रयास वास्तव में अनूठा और प्रशंसनीय है। अनेकानेक शुभकामनाएं।

डॉ. फकीर चन्द शुक्ला,
शिरोमणि साहित्यकार,
बी.आर.एस. नगर लुधियाना (पंजाब)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुमुखी प्रतिभा के धनी यशपाल शर्मा जी ने जीवन-संघर्षों के साथ अपनी रचना 'आस्था के सोपान' को परिष्कृत किया है। उन्होंने अपनी कृति के द्वारा वर्तमान सांस्कृतिक परिदृष्यों को समाहित किया है। अमरनाथ व अन्य स्थानों का वर्णन उनके जीवन की उपलब्धि है। अनुपम भाषा शैली के साथ भगवान शिव व अन्य स्थानों का वर्णन सरल और सहज रूप में किया है। लगता है हम खुद शर्मा जी के साथ यात्रा करते हुए शिव व अन्य धार्मिक स्थानों के दर्शन कर रहे हैं। इतना अद्‌भुत चित्रण उनके यात्रा वृतांत में उपलब्ध है। यह क्रम जारी रखते हुए परम्परा की अभिव्यक्ति बरकरार रहे। इस मंगल कामना के साथ.............।

डॉ. अनीता कर्पुर,

एसोसिएट प्रोफ़ैसर बंगलौर।

अपने क्षेत्र में यशपाल शर्मा उपन्यास, कथाकार व कवि के रूप में परिचित हैं। श्रम, लग्न और प्रतिभा के प्रकाश में इनके पाठकों ने ही शर्मा के साहित्य को पढ़ा पहचाना ही नहीं, उसे पसंद भी किया है। संस्मरण स्मृति का यात्रा वृतांत के रूप में इन्होंने जम्मू-कश्मीर को खंगाल कर इस दिशा में खोज की है, हमें क्षेत्र या रिसर्च दिलचस्पी का विषय हो, सभी संस्मरणनोत्तम वृतांत दिलचस्प कहलाता है। यश पाल शर्मा ने यहां अध्याय-दर-अध्याय जो लिखा है, पाठक उसे पसंद करेंगे (शुभकामनाएँ)

प्रो. फूलचन्द मानव

केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा 2014 में पुरस्कृत

239 दशमेश एंक्लेव,ढकौली, जीरकपुर (समीप चंडीगढ़)

मो. 9316001549

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलम के धनी,साहित्य की हर विद्या में प्रांगत जीवन की अनेकानेक बाधाओं से दो-दो हाथ से जूझने वाले जुजारू साहित्यकार की यह नवकृति यात्रा संस्मरण अपने आप में जम्मू-कश्मीर के दस्तावेज हैं, जिसके लेखक स्वयं ही चश्मदीद गवाह हैं। जिसमें उन्होंने देवभूमि कश्मीर के धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक तथा पर्यटन स्थलों, वहां के वाशिंदों का रहन-सहन, दरपेश समस्याओं, आतंक जैसी त्रासदी एवं सीमापार से प्रतिदिन दुश्मन से जूझते भारतीय रणबांकुरों की व्यथा का वर्णन देखते ही बनता है। धरती के स्वर्ग कश्मीर पर आंतक के ग्रहण का वर्णन बड़ी सहज एवं रसमयी शैली में किया है। पाठक घर बैठे ही कश्मीर यात्रा का आनंद उठा पाएँगे, ऐसा मेरा निश्चय है। इस नवकृति पर मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

डॉ. केवल कृष्ण शर्मा (राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत)
न्यू शास्त्री नगर पठानकोट (पंजाब)
मो. 94640-67513

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिचय

नाम यशपाल शर्मा

जन्मस्थान गांव बहादुरपुर, डाकघर-नरोट जैमल सिंह, तहसील व जिला पठानकोट (पंजाब)

जन्मतिथि 12 अगस्त, 1948

पिता श्री श्री रसीला राम

शिक्षा एम.ए., बी.एड.

संप्रति पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग से अध्यापक पद से सेवानिवृत, अब स्वतंत्र लेखन

लेखन विधाएं उपन्यास, कविता, कहानी, यात्रा संस्मरण

शौक पहाड़ी क्षेत्रों की यात्राएं

प्रकाशित कृतियां उपन्यास—'मंज़िल और गर्दिश', 'नीड़विहीन', 'रोशनी की ओर' 'उड़ान', 'एक टुकड़ा आकाश' 'बुद्ध की ज्ञान गंगा', 'एक है मलाला।

कविता—चिराग़, कविता के साथ साथ

कहानी—दूसरी पारी वाला आदमी

यात्रा संस्मरण—आस्था के सोपान

शीघ्र प्रकाश्य—आंचल की छाया (काव्य)

गतिविधियां समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन।

सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ाव।

रेड़ियो व दूरदर्शन से कार्यक्रमों का प्रसारण।

पुरस्कार एवं सम्मान :

* गुरू नानक देव विश्वविद्यालय द्वारा उपन्यासों पर 'पंडित श्रद्धाराम फिलौरी' सम्मान।
* भाषा विभाग पंजाब द्वारा सर्वोत्तम पुस्तक 'उड़ान' पर सुदर्शन पुरस्कार से सम्मानित।
* निम्बार्क शोध संस्थान, हिम्मत नगर, गुजरात से सम्मानित।
* उपन्यास 'रोशनी की ओर' के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा वर्ष 2014 का 'राष्ट्रीय पुरस्कार'।
* पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) में गवर्नर श्री गंगा प्रसाद के कर कमलों द्वारा डॉ. महाराज कृष्ण स्मृति सम्मान से सम्मानित।
* दिशा साहित्य मंच सुजानपुर (पंजाब) द्वारा 'हिन्दी साहित्य सेबी' सम्मान।
* प्रीत साहित्य सदन लुधियाना द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान।
* साहित्य संगम ट्राईसिटी जीरकपुर (चंडीगढ़) द्वारा 'साहित्य गौरव' सम्मान।

संपर्क सूत्र : 710/2 पंजाब माता नगर, गली नंबर-4, पक्खोवाल रोड, लुधियाना (पंजाब)
पिन-140002, मोबाइल: 094174-20396, ई-मेल: sharma.yash948@gmail.com

DEEPAK PUBLISHERS
Mai Hiran Gate,
JALANDHAR-144 008
E-mail:deepakpublisher@yahoo.com
ISBN 978-93-85646-54-6

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant